# उपोद्घात

---

प्रकट हो कि जब हमने इस ग्रंथको आरंभ करनेकेलिये लेखनी उठाई तो मनका यह संकल्प था कि एक छोटीसी पुस्तक ऐसी रचे, जिससे बालकोंको यह सारा भूगोल हस्तामलक हो जाय; पर होते होते विस्तार बहुत बढ़ गया, चार सौ पृष्ठकी इतनी बड़ी पुस्तक में भी पूरा न पड़ा, और केवल एशिया का वर्णन होने पाया. यदि शरीर वर्त्तमान है, और ईश्वरेच्छा अनुकूल, तो दूसरा भागभी शीघ्र बनकर छपजायगा, और फरंगिस्तान अफरीका अमरिका और टापुओंका जो शेष रहगए हैं उसमे वर्णन होगा. यदि बालक भिन्न युवा और वृद्ध भी इस ग्रंथको पढ़ेंगे तो निश्चय है कि उनका परिश्रम व्यर्थ न जायगा; वरन हमारे देशके राजा बाबू और महाजनो को, जो हिंदी छोड़कर और कुछ भी नहीं जानते, और न उनकी ऐसी अवस्था है कि पाठशालामे जाके अब अंगरेज़ी और पारसी सीखे, यह ग्रंथ बड़ाही उपकारी होगा; परंतु जहां कहीं इसमें कोई बात लड़कपन की देखने मे आवे तो ग्रंथकर्त्ता को न हँसें, क्योंकि वास्तव में यह पुस्तक लड़कोंही के लिये लिखी गई—हमने इस ग्रंथमे कवियो की नाई बढ़ावा अथवा

अत्युक्ति अरु वाक्यबाहुल्य कहीं नहीं किया, जैसी जो बात है वैसा ही लिख दिया, यहां तक कि जो कहीं लिखा देखो कि ऐसी जगह सारे संसार मे नहीं है तो निश्चय जानना कि दूसरी नहीं है. अत्युक्ति और बढ़ावा कभी मत समझना.—मानचित्रो मे हमने उतनेही नाम लिखे जो ग्रंथमे हैं, अधिक नहीं लिखे, परन्तु ग्रंथमें जितने नाम है, वह मानचित्र मे सब आगए कुछ भी शेष नहीं छोड़े; ऐसा न होने से पुस्तक के लिखे हुए नाम चित्रोंमे ढूंढने के समय बड़ा कष्ट पडता है·—ग्रंथके अन्त मे वर्णमाला के क्रमसे भी सब नाम लिखदिए है, और जिस जिस पृष्ठ मे उनका वर्णन आया है उसका अङ्क भी लिख दिया है; जिस नामके पहले दो लकीर खिची है जानो कि उस स्थान को हमने अपनी आंखो से देखा है जिस पृष्ठाङ्क के पीछे दो लकीरें लिखी हैं जानो कि उस पृष्ठ मे उस नामका पूरा वर्णन है और दूसरी पृष्ठों मे केवल किसी कारणसे नाम मात्र आगया है; जिस नदी पहाड़ झील नगर गांव घर राजा इत्यादि का कुछ विवरण देखना हो, कोश की रीति वर्णमालाके क्रमसे इस अनुक्रमणिका मे उसका नाम निकालकर उसके साम्हने लिखेहुए पृष्ठाङ्को के अनुसार समुदित वृत्तान्त देख लो लड़कों की परीक्षालेने मे परीक्षकों को इस अनुक्रमणिका से बड़ा सुभीता पड़ेगा ॥

कितने मित्रोंकी सम्मति थी, कि यह पुस्तक छुट हिन्दी बोली मे लिखी जावें, फारसी का कुछ भी पुट न आने पावे, परन्तु हमने जहां तक बन पड़ा बैतालपचीसी की चाल पर रखा, और इसमे यह लाभ देखा, कि फारसी शब्दों के जानने से लड़कों की बोल चाल सुधर जावेगी, और उर्दू भी जो अब इस देशकी मुख्य भाषा है सीखनी सुगम पड़ेगी, ॥

एशियाटिकजर्नल और सैक्लोपीडिया के व्यतिरिक्त जिन ग्रन्थकारों के ग्रंथों से इस पुस्तक में बहुत बातें ली गई हैं उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं ॥

हमिल्टन । रीनोल्ड । थारटन । मीयर । टाड । टर्नर । मालकाम । मकफर्सन । मकफार्लेन । हम्बोल्ट । मालब्रन । वाल्बी । ईवार्ट । निकल्स ह्यूजल । वाइन । मूर्क्राफ्ट । जिराई । टेवर्निथर । एलियट । प्रिंसिप । कनिङ्गहम् । हीवर । मरे । मार्शमेन । वालेशिया । इत्यादि ॥

## सोरठा

जे जन होहु सुजान । लीजो चूक सुधार धरि ॥
बालक अति अज्ञान । हौं अजान जानत न कछु ॥

शि०

---



सूचीपत्र

# CONTENTS
OF THE
# FIRST VOLUME.

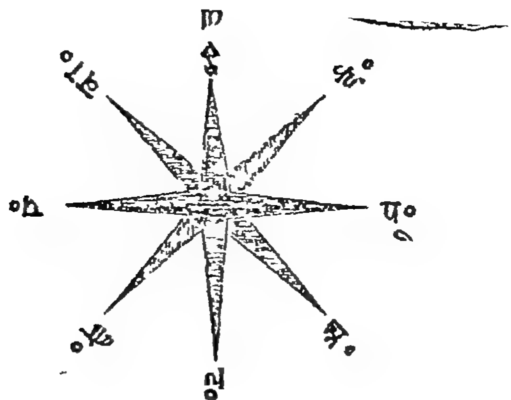
## INTRODUCTION



## ASIA

Page

HINDUSTAN




# भूगोल हस्तामलक

जो कभी कोई आदमी किसी बड़े आलीशान मकान के दर्मियान जा निकले, तो क्या उसका दिल इस वात को न चाहेगा, कि उस मकान के एक एक कमरे और कोठरी को घूम घूम कर देखे, और उन मे जो वस्तु अद्भुत और अपूर्व रक्खी हों सब को अच्छी तरह ध्यान करे ? लेकिन सोचो कि यदि उस मकान में वहुत से कमरे ऐसे हो, जिन में अजनवी आदमियों के जाने की रोक टोक और मनाही रहे, या इसी सैर करनेवाले को विलकुल कमरो में जाकर हरएक चीज़ देखने की फुर्सत न हो, और कोई आदमी उस मकान की वातो से जानकार इस सैरकरनेवाले को उन सव कमरों का हाल ब्योरेवार वतला देना कवूल करे, तो क्या यह सैरकरनेवाला खुश होकर इस वात को गनीमत न समझेगा ? निदान जव लोगों को मकानो के कमरों का हाल मालूम होने से उनका दिल इतना खुश होता है, जो हम उनको इस दुनिया के सव मुल्क पहाड़

नदी झील और शहर और उन मुल्कों मे जो पदार्थ उत्पन्न होते है, या जो जों बातें ऐसी अनोखी और चमत्कारी हैं, कि न कभी कानों सुनी न आंखों देखीं, सारे उनके समाचार और वहां के लोगों की भाषा चाल चलन और व्यवहार पतेवार बतला देवे तो क्या उनका मन प्रसन्न न होवेगा ? ऐसा तो कोई बिरला ही सुस्त और अल्पबुद्धी आदमी होगा जिसका दिल ऐसी बातों की खोज करने को न चाहे, या जो कोई पुरुष उसको उन्हें बतला दे तो वह उसका उपकार न माने । मतलब हमारा इस भूमिका के बांधने से यह है, कि अब हम इस ग्रन्थ मे कुछ वर्णन भूगोल का करते हैं, परन्तु जैसे उस मकान के कमरों का हाल सुनने से पहले सैर करनेवाले को मकान के हिस्सो के नाम और उनकी सूरत जान लेनी बहुत अवश्य है, कि दर्वाजा कैसा होता है, और खंभा किसको कहते है, और दालान क्या है, और कोठरी किसका नाम है, निदान जब तक वह सैर करनेवाला इन बातो से बेखबर रहेगा, उस मकान के कमरों का हाल किसी के समझाने से भी न समझ सकेगा, इस वास्ते पहले हम ज़मीन के हिस्सों के नाम लिखते हैं जिनको याद रखने से इस भूगोल का सारा हाल ध्यान में आ जावे ॥

जानना चाहिये कि यह भूगोल जो नारंगी सा गोल है, और विना किसी आधार के अधर मे सूर्य के गिर्द घूमता ( १ ) है, दो तिहाई से अधिक अर्थात् १००० में ७३४ हिस्से पानी से ढपा हुआ है । अनाड़ियों को इस बात के सुनने से बड़ा आश्चर्य होगा, कि

---

( १ ) पृथ्वी का घूमना ऋतु का बदलना और दिन रात का घटना बढना यह इस किताब के अंत मे वर्णन होगा ॥

पृथ्वी विना किसी आधार के अधर मे किस तरह रह सकती है, उनको इस बात पर अच्छी तरह ध्यान करना चाहिये, कि जो वे किसी चीज़ को पृथ्वी का आधार मानेंगे तो फिर उस आधार के ठहराव के लिये भी कोई दूसरा आधार अवश्य मानना होगा, और फिर इसी तरह एक के लिये दूसरे का आधार वरावर ठहराते चले जाना पड़ेगा, यहां तक कि आखिर थककर यही कहेंगे कि सव से पिछले आधार का कोई भी दूसरा आधार नहीं है, वह ईश्वर की शक्ति से आपही अधर मे ठहर रहा है। निदान जव यही वात है तो इतना वखेडा न करके पहले ही से यह वात क्यों न कह देवे, कि जैसे सूर्य चन्द्र और तारे अधर मे हैं, उसी तरह पृथ्वी भी ईश्वर की शक्ति से विना आधार अधर मे ठहर रही है, और यही वात हिन्दुओं के ज्योतिष शास्त्र मे लिखी है, अंगरेजो ने विद्या और दूरवीन इत्यादि यंत्रों के वल से प्रत्यक्ष सावित कर दिखाई। ये पहाड़ जो देखने मे वहुत वडे मालूम पड़ते हैं, जव पृथ्वी के डील डौल पर ध्यान करो, कि जिसका घेरा पच्चीस हजार वीस मील (१)

---

(१) दो मील का एक पक्का कोस होता है, सड़क पर जहां पत्थर गड़े है, वे मील ही के हिसाव से गड़े हैं हमने इस पोथी में कोस का हिसाव इस वास्ते नहीं लिखा, कि वे किसी जिले में छोटे और किसी जिले में वडे होते हैं, वरन पहाड़ी लोग वोझ पर और चलनेवाले की ताकत देखकर कोसों का हिसाव करते हैं, वही मंजिल जो वोझेवाले को वे दस कोस की वतलावेगे खाली आदमी के लिये पांच कोस की कहेंगे, और जो कभी वह आदमी घोड़े पर सवार होजावे तो फिर वे उस मंजिल को दो ही कोस की गिनेंगे॥

का है तो ऐसे जान पड़ेंगे जैसे नारंगी के छिलके पर कहीं कहीं रवे अथवा दाने दाने से रहा करते हैं। यद्यपि हिन्दुओं के ज्योतिष शास्त्र में भी पृथ्वी को गोल ही बतलाया है, पर अब अंगरेज़ी जहाजों के समुद्र मे चारो तरफ घूम आने से इस बात में कुछ भी सन्देह बाक़ी न रहा, क्योंकि जब वह जहाज़ जो बराबर सीधा एक ही दिशा को मुंह किये चला जाता है, चलते चलते कुछ दिनों पीछे बिना दहने बाएं मुड़े फिर उसी स्थान पर आजाता है, जहां से चला था, तो इस हालत मे पृथ्वी का आकार सिवाय गोल के और किसी प्रकार का भी नहीं ठहर सकता, और सच है जो पृथ्वी गोल न होती तो हिमालय पहाड़ के ऊंचे ऊंचे शृङ्ग हिन्दुस्तान के सारे शहरो से क्यो न दिखलाई देते, अथवा उन शृङ्गो पर से दूरबीन लगाकर, कि जिससे लाखों कोस के तारों की सूरतें दिखलाई देती हैं, शरद ऋतु के निर्मल आकाश में सारा हिन्दुस्तान क्यों न देखलेते, वरन समुद्र के तट पर खड़े होकर जो किसी आते हुए जहाज़ को देखने लगो तो पहले उसका मस्तूल अर्थात् ऊर्धभाग और फिर पीछे से जब जहाज कुछ समीप आजायगा तो पतवार अथवा अधोभाग दिखलाई देवेगा, क्योंकि जब तक जहाज समीप नहीं आता, पृथ्वी की गुलाई के कारण उसका अधोभाग जलकी ओट में छिपा रहताहै यह पानी जिस्से दो तिहाई से अधिक पृथ्वी ढकी हुई है, समुद्र अथवा सागर कहलाता है खारा सब जगह है लेकिन कहीं कम कहीं ज़ियादः थाह उसकी सवापांच मील तक तो मालूम होसक्ती है परन्तु गहरा वह कहीं कहीं इस्से भी अधिक है। लहरें उसकी बाईस फुट तक ऊंची नापी गई है। यद्यपि समुद्र इस भूमंडल पर एकही है, पर जैसे हवेलियों का ठिकाना मिलने के लिये शहर को मुहल्लोंमे बांट देतेहैं,

वैसेही समुद्र में द्वीप और जहाजों का सहजसे पता लगजाने के वास्ते उसके पांच हिस्से करके पांच नाम रखदिये हैं। पहले हिस्से को जो अमेरिका के महाद्वीपसे फरंगिस्तान और अफरीका के मुल्क तक फैला हुआ है, अटलांटिक समुद्र कहते हैं। दूसरे हिस्से को जो अमेरिका महाद्वीप और एशियाके मुल्क के बीचमें है, पासिफिक समुद्र बोलते है। तीसरा हिस्सा जिसकी हद अफरीका के मुल्क से लेकर हिन्दुस्तान और आस्ट्रेलिया के टापू तक है उसका नाम हिन्द का समुद्र रक्खा गया है. और चौथे और पांचवें हिस्सो को जो उत्तर और दक्षिण ध्रुवके गिर्द है, उत्तर समुद्र और दक्षिण समुद्र पुकारते हैं। इन पिछले दो समुद्रोंका जल शीतकी अधिकाई से जमकर सदा यख अर्थात् पाला बना रहता है, जो ध्रुव के समीप है वह तो कभी नही गलता, और बाकी गर्मियो के मौसिम मे जहां कही गलता है तो यखके टुकड़े पहाडोंकी तरह वहां जलमें तिरने लगते हैं। जहाजों को इन समुद्र में बड़ा डर है, जो कभी यखके टुकडोके बीच मे फस जावें, तो फिर उस जगह से उनका निकलना बहुत कठिन है। ह्वेल मछली जो समुद्र के सब जीवोंसे बडी, प्रायःसाठ हाथ लम्बी होती है बहुधा इन्हीं में रहती है। इन पांचो समुद्र के जो छोटे टुकडे दूर तक थल के भीतर आगये हैं, वे खाड़ी कहलाते है। और खाडियों के नाम अकसर उन शहर अथवा मुल्को के नाम पर बोले जाते हैं, जो उनके समीप अथवा किनारे पर होते है। बन्दर वह स्थान है, जहा जहाज समुद्रकी कोल मे आकर लंगर डालते हैं। इस भूगोल का एक तिहाई जो जल से बाहर थल अर्थात् सूखा है, कुछ एकही ठौर नही, वरन कई जगह टुकडा टुकड़ा समुद्रके बीच बीच में प्रगटहो रहाहै जैसे निर्मल नीले आकाश मे मेह बरस जाने के बाद बादल के टुकड़े दि-

खलाई देते है। इन जमीन के टुकडो मे दो टुकड़े वहुत वड़े हैं, और इसी वास्ते वे महाद्वीप कहलाते हैं, वाक़ी छोटे छोटे टुकडे द्वीप अथवा टापू कहे जाते हैं। ज़मीन के हिस्से जो दूर तक समुद्र मे निकलगये है, अर्थात् तीन तरफ उनके पानी है और एकतरफ महाद्वीप से मिलेहुए हैं, उनको प्रायद्वीप वोलते हैं, और उसी प्रायद्वीप का सिरा अर्थात् अग्र भाग अन्तरीप है, और पिछला भाग जहां वह महाद्वीप से मिलता है, जो तंग और छोटा हो तो डमरुमध्य कहा जायगा, क्योंकि जैसे डमरु का मध्य उसके एक हिस्से को दूसरे से जोड़ता है, उसी तरह यह भी ज़मीन के एक हिस्से को दूसरे से मिलाता है। यह भी जानना अवश्य है, कि ज़मीन अर्थात् थल सभी जगह वरावर एक सी वट्टा ढाल मैदान नही है, किसी जगह वहुत ऊंची होगई है। ऊंची जमीन का नाम पहाड है और जिन पहाडो के अन्दर से आग निकलती है वे ज्वालामुखी कहलाते हैं। पहाड़ो के झरने और मेह का पानी जो इकट्ठा होकर मैदान में बहता हुआ समुद्र को जाता है, उसे नदी कहते हैं, पर जो नदी वहुत वडी होती है उस को दर्या भी पुकारते है, और जो वहुत ही छोटी होती है वह नाला कहलाती है, और जो नदी से काटकर किसी दूसरी जगह पानी ले जावे, तो उसे नहर वोलते हैं। जव कभी इस मेह के पानी को वहने की राह नही मिलती और किसी नीची जमीन मे इकट्ठा होजाता है तो वही ताल और झील है। जिस तरह पर कोई माली या ज़मींदार किसी वडे वाग या खेत को जुदा जुदा क़िस्म के फूल वा अन्न वोने के लिये तख़्ते चमन और क्यारियो मे हिस्से करता है उसी तरह यह पृथ्वी भी जुदा जुदा क़ौम के आदमी और जुदा जुदा वादशाह राजे और क़ादीरो की वादशाहत राज और क़ादीरी के कारन जुदा जुदा हिस्सो

मे बटी हुई है । मुल्क अथवा देश छोटे और बड़े सब हिस्सों को कह सकते हैं, पर विलायत उसी वडे हिस्से को कहेंगे, जिस में निराली क़ौम बसती हो, और जहां का चाल चलन और व्यवहार जुदा ही वरता जाता हो । यह विलायते बमूजिब अपनी लंबान चौड़ान के सूबो मे और सूबे जिलों मे और जिले परगनों मे बटे रहते हैं, और फिर हरएक परगने मे कई एक मौजे अर्थात् गांव बसा करते हैं। जो बस्ती बहुत बड़ी होती है अर्थात् जिस मे हजारो आदमी बसते है, और पक्के संगीन वडे वडे मकान बने होते है, उसको शहर और नगर कहते हैं। शहर से छोटा और गांव से बड़ा कसबा कहलाता है।

अब यहां इस किताब के पढ़नेवालों को यह भी सोचना चाहिये, कि यद्यपि उस आलीशान मकान के सब कमरो का हाल जिस को सैर करनेवाला आप नही देख सकता, किसी जानकार आदमी से सुनकर अवश्य उसके दिल को खुशी हासिल होवेगी, लेकिन जो वह आदमी उसको उन कमरो का नमूना या तसवीर भी दिखला-देवे तो फिर उस सैर करनेवाले को कैसा मजा मिलेगा, और कितना आनन्द हाथ लगेगा । निदान इसी तरह जानकार आदमियो ने भूगोल विद्यार्थियों के देखने के वास्ते जमीन का नमूना और उसकी तसवीर भी बना दी है। भूगोल के नमूने को भी भूगोल ही कहते है और ठीक भूगोल के डौल पर गोल बनाते हैं, और तसवीर वह है कि जिस को नकशा कहते है, पर इस तसवीर में भेद है, हम उसी एक मकान की तसवीर कई तरह से खीच सकते है, जो किसी छोटे से कागज पर खींचे, तो उस मकान का डौल तो निस्सन्देह मालूम हो जावेगा, लेकिन उसके दर दीवार अच्छी तरह न जाहिर हो सकेंगे, और जो वडे कागज पर बनावे तो दर दीवार अवश्य

मालूम हो जावेंगे, पर फिर भी उनकी नक्काशी और बारीकी तभी भले प्रकार प्रकट होवेगी, कि जब उनके जुदा जुदा हिस्सों की जुदा जुदा तसवीर खीची जावे, इसीतरह भूगोल का नकशा भी जो छोटा होता है, उस्से उसका डौल मात्र, और जो ज़रा बडा रहता है उस्से केवल इतना कि कौन मुल्क किस तरफ है मालूम होसकता है, लेकिन गांव और शहर और पहाड और नदी और सड़कोका ब्योरा पतेवार तभी जाना जायगा, कि जब जुदा जुदा विलायत वरन जुदा जुदा परगनों का जुदा जुदा नक्शा खीचा जावे। जानना चाहिये कि ज़मीन नारंगी की तरह गोल है, और समुद्र और टापू उसकी चारों अलंग पड़े हैं और तसवीर में हर एक चीज़ की एकही अलंग दिखलाई देती है, दोनों अलंग कदापि दिखलाई नही दे सकती, इसवास्ते भूगोल के नकशे मे उसकी दोनो अलंगो की दो तसवीरें लिखी हैं, जैसे आदमी के चिहरे की कोई तसवीर खैंचकर उसकी सब अलंगों को दिखलाना चाहे, तो अवश्य उसको दो तसवीरें लिखनी पडेगी, एक में तो आंख नाक कान और मुंह इत्यादि नजर पडेगे, और दूसरी मे चिहरे की पिछाडी, अर्थात् गुद्दी और सिरके बाल दृष्टि मे आवेंगे, लेकिन भूगोल की तसवीर देखकर कोई ऐसा न समझे कि वह चक्कीके पाटों की तरह चिपटा है, वह तसवीर मे चिपटा इस कारण मालूम होता है कि तसवीर में किसी चीज की भी उंचाई प्रत्यक्ष प्रकट नही होसकती। यह भी बखूबी समझ लेना चाहिये, कि सहज में गांव और शहर इत्यादि का पता लगने के वास्ते, और इस बात के लिये कि जो किसी विलायत का जुदा नकशा खिचा हो, तो तुरंत यह जान सके, कि वह विलायत भूमण्डल के किस खण्ड मे कौन कौन सी विलायत से किस किस तरफ को पड़ती है, भूगोल के नकशेमे ठीक

बीचो बीच पूर्व से पश्चिम को एक लकीर, जिसका नाम विषुवत् रेखा है, खींचकर भूगोल को बराबर दो हिस्सों मे अर्थात् उत्तर और दक्षिण बांट दिया है (१) और उस विषुवत् रेखाको ३६० अंशों मे, जिसे अरबी मे दर्जा कहते हैं, भाग करके प्रत्येक अंश से एक एक लकीर उत्तर और दक्षिणकी तरफ खींच दी है और फिर उन लकीरों को ३६० अंशों में भाग देकर हर एक अंशमें पूर्व से पश्चिम को लकीरें खींच दी हैं, (२) निदान इन लकीरों से तमाम भूगोल के नक़शे पर इस तरह के खाने बनगये है, कि जैसे चौपड और शतरंज मे घर बने रहते है, और इन्हीं घर अर्थात् लकीरो के अंशों की गिनती से भूगोल के सब स्थानो का पता लग जाता है, और एक जगह का दूसरी जगह से फासिला (३) भी मालूम होजाता है। जो लकीरें पूर्व से पश्चिम को खिंची है उन्हें अक्षांश और जो उत्तर से दक्षिण को उन्हे देशान्तर कहते हैं। अक्षांश की गिनती विषुवत् रेखा से करते है, और देशान्तर उस लकीर से गिनते हैं जो नक़शे मे इंगलिस्तान के दर्मियान ग्रीनिच नगर परसे खींची गई है। जैसे चौपड और शतरंज मे घर की गिनती बोलने में उस स्थान का अ-

---

(१) भूगोल का नकशा देखो ॥

(२) नक़शा छोटा होनेके कारन प्रत्येक अंशसे लकीर न खींच कर दस दस अंशके बाद लकीरें खींची है ॥

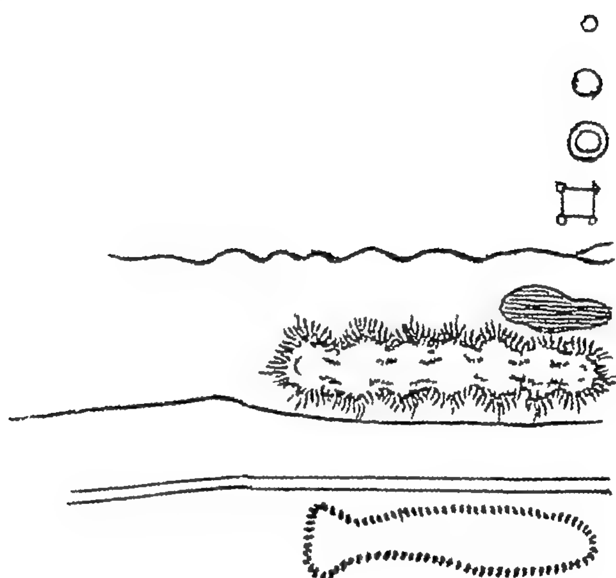
(३) पृथ्वी के घेरे को, जो २५०२० मील किसी जगहमे लिख आये है, ३६० दर्जों मे बाटने से एक एक दर्जा ६९॥ मीलका पडेगा जब किसी जगह से फासिला जानना मंजूरहो फौरन परकार से नाप कर देख लेवे कि उन दोनो के बीच कितने दर्जे का तफावत् है ॥

नुभव होता है, उसी तरह अक्षांश और देशान्तर के अंश की गिन-
ती कहने से नक़्शे मे उस जगह के गांव शहर इत्यादि का ज्ञान हो
जाता है। गिनती अंशो की नकशे मे उन्हीं अंशों पर लिखी रहती
है, और अंश के साठवे हिस्से को कला, और कला के साठवे हिस्से
को विकला कहते हैं। ध्रुव भूगोल में विषुवत् रेखा से उत्तर और
दक्षिण उन दो स्थानो का नाम है, जहां देशान्तर की सारी लकीरें
इकट्ठी होकर आपस में मिल जाती हैं। भूगोल के नक़्शे मे सिवाय
ऊपर लिखी हुई लकीरों के और भी चार लकीर के निशान विन्दी
विन्दी देकर पूर्व से पश्चिम को वने रहते हैं, प्रयोजन उससे इस बात
का बतलाना है, कि इन विन्दी की पहली दोनों लकीरें, जो विषुवत्
रेखा से २३॥ अंश के तफावत पर उत्तर और दक्षिण की तरफ
खिची है, उनके दर्मियान के मुल्क मे, सदा सूर्य के साम्हने रहने से,
निहायत गर्मी होती है इसी वास्ते वह मुल्क गर्म सेर अथवा ग्रीष्म
प्रधानक कहलाता है, और वाक़ी विन्दी की दो लकीरें जो दोनो
ध्रुवों से २३॥ अंश के फासले पर दोनों तरफ खिची हुई हैं, उन
के अन्दर सर्दसेर मुल्क अथवा शीतप्रधानक देश है, क्योंकि उस पर
सूर्य की किरनें सदा तिरछी पड़ती हैं। इन सर्द सेर और गर्म सेर
मुल्क के दर्मियान मोतदल अथवा अनुष्णाशीत मुल्क वसा है अ-
र्थात् जो न बहुत गर्म है न सर्द ॥

हम अभी ऊपर लिख आये हैं कि जिस तरह मकानों की तस-
वीर बन्ती है उसी तरह बुद्धिमानों ने भूगोल का नक़्शा भी रचा
है, परंतु मकान इत्यादि के चित्रों में तो उनके अवयव ज्यों के ज्यों
उतार देते हैं, अर्थात् द्वार की जगह द्वार का आकार वनाते हैं, और
दीवार की जगह दीवार का और भूगोल के नकशों मे उन नक़्शों

का विस्तार वहुत वढ़जाने के भय से शहर नदी पहाड़ सड़क झील इत्यादि की जगह नीचे लिखे हुए चिन्ह लिख देते हैं, उनका पूरा आकार नहीं वनाते, नक़शे में इन्हीं चिन्हों को देखकर उनका अनुभव कर लेना चाहिये ॥

गांव
शहर
वड़ा शहर
क़िला
नदी
झील
पहाड़
कच्चीसड़क
पक्कीसड़क
देशसीमा



यह भी वात याद रखने की है कि किसी समय में इस सारी पृथ्वी पर ईश्वर की इच्छा से समुद्र का पानी छागया था, और ऊंचे से ऊंचे पहाड़ उस से डूव गए थे, इस वात को सारे मजहव और सव मुल्क के आदमी मानते है कोई उसका नाम तूफान वतलाता है, कोई प्रलय कहता है, पर समय में उसके तकरार है, जुदा जुदा मुल्क के आदमी जुदा जुदा काल उसके वास्ते ठहराते हैं, अव तक भी पहाडों पर समुद्र की मछलियों का हाड़ और सीप और शंख और घोंघे जो मिलते है, किसी काल में इस तूफान के आने की गवाही देनेकेवास्ते वहुत हैं। यह भी किताव और पोथियों के देखने से मालूम होताहै कि एक

ही स्त्री पुरुष से हम सब पैदा हुए है मुसलमान और अंगरेज़ उस पहले पुरुष को नूह और हिन्दू वैवस्वत-मनु कहते है। ज्यों ज्यो औलाद बढ़ती गई मनुष्य संसार मे फैलते गये, और नए नए गांव और नए नए नगर बसने लगे, जब लोग दुनिया मे सब तरफ़ बसगये तो बमूजिब मुल्कों की गर्मी सर्दी और पैदायशों के जुदा जुदा क़ौमो के जुदा जुदा चाल ढाल और व्यवहार हो गए, जैसे सर्दमुल्कवाले सदा ऊनी कपड़े और पोस्तीनों मे लिपटे रहते है, और गर्म मुल्कवाले केवल धोती दुपट्टेही से अपना काम चलाते है। सूरते भी आब हवाकी तासीर से तबदील होगई, एशिया के पश्चिम भाग और फ़रंगिस्तान के आदमी सब से अधिक सुन्दर और बुद्धिमान है, पर जो देश उत्तर अलंग अर्थात् ध्रुव से समीपहै, वहांवाले नाटे होतेहैं, एशिया के पूर्व भागियों की नाक चिपटी गाल चौड़े और आंखें तिरछी और छोटी और अफरीकाके रहनेहारों की नाक फैलीहुई रङ्ग काला बाल घूंघरवाले और होंठ मोटे रहते हैं, और अमेरिका के असली बाशन्दों का रंग तांबे का सा लाल है। मज़हब भी इस अर्से में कई तरहके हो गए, और राजे भी हर एक क़ौम ने दूसरी क़ौमों के जोर जुलम से बचने के लिये अपने अपने जुदा बना लिये। निदान अब हम एक एक मुल्क का हाल जुदा जुदा पतेवार पढ़नेवालों का चित्त प्रसन्न करने के लिये इस ग्रन्थ में लिखते है। थल अर्थात् ज़मीन के उन दो बड़े टुकड़ो से, जो महाद्वीप कहलाते हैं, एक का नाम तो अमेरिका है, जिसे बहुधा नई दुनिया और नया महाद्वीप भी बोलते हैं, और दूसरे अथवा पुराने महाद्वीप के तीन खण्ड तीन नाम से पुकारे जाते हैं, पूर्व का खण्ड एशिया, पश्चिम का यूरुप अथवा फरंगिस्तान और दक्षिण का अफरीका। इन सबमें टापुओं समेत अटकल से प्रायः नव्वे करोड़ आदमी बसते है. और

उनकी भाषा भिन्न भिन्न प्रकार की कुछ न्यूनाधिक दो सहस्र होवेगी। इन नव्वे करोड आदमी मे से प्राय: पच्चीस करोड़ तो ईसाई मजहब रखते हैं, अर्थात् क्रिस्तान हैं, पैंतीस करोड़ बुद्धका मत मानते है, दस करोड मुसलमान हैं, और दसही करोड के लगभग हिन्दू होवेगे, बाकी दस करोड़ मे और सब मजहब के आदमी सोच लेने चाहिये ॥

---

## एशिया

यह नाम यूनानी है, संस्कृत नाम हम लोगो को पृथ्वी के इन विभाग और मुल्क और नदी पहाडो के नही मिलते, इसी वास्ते नाचार अंगरेजी और फारसी काम में लाने पड़े और प्लक्ष शाल्मलीक कुश क्रौञ्च शाक पुष्कर ये द्वीप, और दही दूध मधु मदिरा और इक्ष रस के समुद्र और सोने चांदी के पहाड, जो संस्कृत ग्रन्थो मे लिखे भी हैं तो अब उनका कहीं पता नही लगता, न जाने इन लिखने वालो ने क्या समझ के ऐसा लिखा था, पण्डित लोग कहते हैं कि बातें तो ग्रन्थों मे सब सत्य लिखी हैं, पर अब उनके ठीक अर्थ का समझानेवाला नहीं मिलता। जो कुछ हो, लेकिन हम तो वही लिखते है जो जब जिसका दिल चाहे अपनी आंखों से देखलेवे। जिस तरह खेत और गांव का सर्हद-सिवाना है उसी तरह बड़े मुल्कों की भी सीमा होती है। इस एशिया की सीमा उत्तर तरफ उत्तर समुद्र, और दक्षिण तरफ हिन्द का समुद्र, और पूर्व तरफ पासिफिक समुद्र, और पश्चिम तरफ रेडसी नामक समुद्र की खाड़ी और स्वीज़ का डमरूमध्य अफरीका से, और मेडिटरेनियन और बलाकसी—नामक समुद्र की खाड़ी और डन और वलगा नदी और यूरल पहाड़ यूरुप से उसे जुदा करते है, और २ से लेकर ७७ उत्तर अक्षांश और २६

पूर्व देशान्तर से लेकर १७० पश्चिम देशान्तर तक विस्तृत है। इस का लम्बान पूर्व से पश्चिम को अधिक से अधिक प्राय: ७५०० मील और चौड़ान उत्तर से दक्षिण को प्राय: ५००० मील और विस्तार एक करोड़ पछहत्तर लाख मील मुरब्बा अर्थात् वर्गात्मक (१)

---

(१) वर्गात्मक उसे कहते हैं जो चारों तरफ बराबर हो, अर्थात् जितना चौड़ा हो उतनाही लम्बा, इसलिये जब हम किसी देश का विस्तार वर्गात्मक मीलों मे बतलावें, तो समझलो कि जितने वर्गात्मक मील हमने लिखे उतने ही टुकड़े एक एक मील के लम्बे और एक एक मील के चौड़े उस देश के हो सकते है जैसे कोई कपड़ा सोलह गिरह लम्बा और चार गिरह चौड़ा हो, तो हम उस कपड़े का विस्तार चौसठ गिरह वर्गात्मक बतलावेंगे, और फिर जो तुम उस कपड़े से गिरह गिरह भर लम्बे और गिरह गिरह भर चौड़े टुकड़े काटने लगो तो चौसठ ही टुकड़े काटे जावेंगे, देश की धरती का प्रमाण जानने के लिये यह हिसाब बहुत अच्छा है, नही तो एक एक जगह की लम्बान् चौडान बतला देने से उन के विस्तार का कदापि ठीक अनुमान न हो सकेगा, क्योंकि देश किसी जगह मे कम लम्बे चौड़े रहते है और किसी जगह में अधिक, कुछ पोथी के पत्रे की तरह सब तरफ बराबर नही होते। निदान जिस तरह गाव को बीघे से नापते हैं, उसी तरह देशों को वर्गात्मक मीलों से नापते हैं। अस्सी हाथ लम्बा और अस्सी हाथ चौडा बङ्गाली बीघा होता है, एक मील लम्बा और एकही मील चौड़ा, अर्थात् ३५२० हाथ लम्बा और ३५२० हाथ चौड़ा, एक वर्गात्मक मील होता है, इसी वर्गात्मक को अरबी मे मुरब्बा कहते है॥

मील है। आदमी उस मे अटकल से सवा चव्वन करोड़ बसते हैं। आवादी उसकी इस हिसाव से फी मील मुरव्वा ३१ आदमी की पड़ती (१) है और एक सौ तेतालीस से अधिक भाषा बोली जाती हैं। पृथ्वी के इस भाग में ऐसे सर्द मुल्कों से लेकर जहां समुद्र भी जम जाता है, इतने गर्म सेर तक बसे है, कि जिस में आदमी सूर्य के तेज से काले हो जाते हैं। मुसलमानो का मजहव वहुत दूर दूर

(१) यह पड़ता फैलाने की तर्कीब मुल्क की आवादी जानने के लिये वहुत अच्छी है, मिरज़ापुर के ज़िले मे सन् १८४८ के बीच खान:शुमारी के समय ८३१३८८ आदमी गिने गये थे, और वनारस के ज़िले में कुल्ल ७४१४२६। अव अनाड़ी लोग इस बात के सुनने से यही समझेंगे कि मिरज़ापुर वनारस से अधिक आवाद है, पर विद्वान लोग दोनों जिलों का विस्तार देख फी मील मुरव्वा पड़ता फैला लेते हैं, और इस हिकमत से सहज मे जानलेते है, कि वनारस मिरज़ापुर से कुछ कम पचगुना अधिक आवाद है, क्योंकि मिरज़ापुर का विस्तार ५२८४ मील मुरव्वा है, और वनारस का कुल २०९५ मील मुरव्वा पड़ता फैलाने से मिरज़ापुर में फ़ी मील मुरव्वा १५८ आदमी पड़ते है, और वनारस मे ७४५ आदमी यह वही हिसाव है कि जैसे एक के खेत मे ४ मन गेहूं पैदा हुआ और दूसरे के में १० मन, पर जव मालूम हुआ कि दस मनवाले खेत में बीस बीघे धरती है, और चारमनवाले में दो ही बीघे तो साफ प्रकट होगया, कि चार मनवाले की धरती अधिक उपजाऊ है क्योंकि उसको फी बीघे दो मन गेहूं पड़े और दस मनवाले को फी बीघे कुल आध मन अर्थात् बीस सेर॥

तक फैला है, पर गिन्ती में बुद्ध के माननेवाले अधिक हैं। हिन्दुस्तानवाले वैदिक धर्म रखते है, और ईसा का मत अब तक पृथ्वी के इस विभाग मे बहुत नही चला। एशिया का मुल्क अगली तवारीख और इतिहासों मे बडा प्रसिद्ध है, क्योंकि पहला आदमी जिससे हम सब मनुष्य उत्पन्न हुए, पृथ्वी के इसी भाग मे पैदा हुआ था, और पृथ्वी के इसी भाग से सारी बाते बुद्ध विवेक और सुख की निकलनी शुरू हुई। पहले ही पहल पृथ्वी के इसी भाग मे प्रतापी और बलवान राजे हुए, और सब से पूर्व पृथ्वी के इसी भाग में लक्ष्मी और विद्या का पैर आया। सिवाय इसके जैसे नदी पहाड़ जंगल और मैदान पृथ्वी के इस भाग में पडे है, और जैसे फल फूल औषधि अन्न पशु पक्षी धातु रत्न इत्यादि इस मे पैदा होते हैं, ऐसे कदापि दूसरे खंडों में नहीं मिलेंगे। एशिया में नीचे लिखी हुई विलायतें बसी हैं। आदौ हिन्दुस्तान, उसके पूर्व बर्म्हा, उसके दक्षिण स्याम, उसके दक्षिण मलाका, स्याम के पूर्व कोचीन, बर्म्हा के पूर्व और उत्तर चीन, उसके उत्तर एशियाईरूस, चीन के पूर्व जापान के टापू, हिन्दुस्तान के पश्चिम अफग़ानिस्तान, उसके पश्चिम ईरान, चीन के पश्चिम तूरान, ईरान के पश्चिम अरब उसके उत्तर एशियाईरूम। बादशाहत इन सब विलायतों में स्वाधीन स्वेच्छाचारी है, और सदा से ऐसी ही चली आई, अर्थात् बादशाह जो चाहे सो करे, कोई उसको रोक नही सकता, बादशाह के मुंह से निकला वही आईन है, मुल्क चाहे बर्बाद हो चाहे आबाद, प्रजा की सामर्थ्य नहीं कि उसकी आज्ञा टाल सके। इस ढब के राज्य मे जब राजा धार्मिक और नैयायिक होता है, तब तो प्रजा को सुख चैन मिलता है, और नही तो लूट मार और बे इन्तिज़ामी मची रहती है, और तैमुर

और नादिर ऐसे बादशाह एक एक दिन मे लाख लाख आदमी मर्द औरत और बच्चे बेगुनाह कटवा डालते है । केवल एक हिन्दुस्तान के बीच हम लोगों के भाग्यबल अब कुछ दिनों से आईनी बन्दोबस्त हुआ है, अर्थात् बादशाह का मकदूर नहीं कि आईन के बखिलाफ कुछ भी काम करसके। आईन बादशाह और रैयत दोनों की सम्मति साथ बनता है, जब तक रैयत राजी न हो बादशाह अपनी तरफ से कोई भी आईन जारी नहीं कर सकता, और रैयत काहे को ऐसे किसी आईन पर राजी होगी, कि जिस्से उसका नुकसान है, पस इस बन्दोबस्त से बादशाह चाहे अच्छा हो चाहे बुरा इन्तिज़ाम मे खलल नहीं पड़ता, और मुल्क की दिन पर दिन उन्नति होती जाती है। विशेष वर्णन इस आईन और पार्लीमेण्ट का अर्थात् जहां आईन बनता है, यूरूप देश के अन्तर्गत इंगलिस्तान की विलायत के साथ होगा, क्योंकि अब हिन्दुस्तान उसी बादशाह के ताबे है। हम लोगो को इतनी बुद्धि न होने के कारण कि अपने मुल्क के लिये आप आईन बनाव वहांवाले अपनी तरफ से कई बड़े योग्य साहिबों को चुनकर कौंसिल के नाम से यहा मुक़र्रर करते हैं, कि जिस में वे सम्मत होकर प्रजा के हितकारी आईन बनावे। इस कौंसिल का वर्णन हिन्दुस्तान के साथ होगा ॥

---

## हिन्दुस्तान

यह मुल्क एशिया के दक्षिण भाग मे ८ अंश से ३५ अंश उत्तर अक्षांश तक और ६७ अंश से ९२ अंश पूर्व देशान्तर तक चला गया

है। हिन्द और हिन्दुस्तान इस मुल्क का नाम मुसलमानों ने रक्खा, और इंडिया अङ्गरेज़ लोग पुकारते हैं, जड इन दोनों नाम की सिन्ध नदी मालूम पडती है, क्योंकि अंगरेज़ लोग तो अब भी उस नदी को इंडस कहते हैं। संस्कृतवालों ने उसका नाम भारतवर्ष इसलिये रक्खा कि उनके मत बमूजिब किसी समय में राजा भरत ने यहां एक छत्र राज किया था। सीमा इस देश की जुदा जुदा समय में जुदा जुदा तरह पर रही है, कभी लोगो ने ब्रह्मा स्याम मलाका और कोचीन को भी इसी में गिना, और कभी काबुल क़न्दहार और तिब्बत को इस मे मिलाया, पर हम यहां वही सीमा लिखते हैं जो अब इस काल में बरती जाती है और अंगरेज़ी नक़्शों में लिखी रहती है, और इसी सीमा के अन्तर्गत देश को हिन्दुस्तान कहना चाहिये क्योंकि ब्रह्मा और काबुल इत्यादि देशवाले अपना चाल चलन मज़हब और राज्य इन दिनो हम लोगों से ऐसा जुदा रखते हैं कि अब उनको जुदा ही विलायत कहना उचित है। निदान यह हिन्दुस्तान जो पान की तरह कुछ त्रिकोणसा और नोक उसकी दक्षिण को निकली हुई नक़्शे मे देख पड़ता है, दक्षिण तरफ समुद्र से घिरा है और उत्तर तरफ़ उसके हिमालय का पर्वत पडा है, पश्चिम तरफ सिन्धु पार जिसे अटक का दर्या भी कहते हैं सुलैमान पर्वत है और पूर्व तरफ उसके मनीपुर के जंगल-पहाड़ो से परे ब्रह्मा का मुल्क है। इसकी लंबान कुमारी-अन्तरीप से, जो दक्षिण मे सेतुबन्धरामेश्वर के भी अगाडी है, कश्मीर तक प्रायः अठारह सौ मील होगी, और चौड़ान मुंज-अन्तरीप से जो कराची-बन्दर से भी बढ कर पश्चिम मे है और जिसे वहांवाले रासमुआरी भी कहते है ब्रह्मा देश की सीमा तक प्रायः सोलह सौ मील है। विस्तार इसका कुछ न्यूनाधिक बारह लाख मील मुरब्बा बन-

लाते हैं, और आदमी इसमे अटकल से चौदह करोड़ वस्ते है। पड़ता फ़ैलाने से फी मील मुरव्वा कुछ ऊपर ११६ आदमी पड़ेंगे॥

हम अभी ऊपर इस ग्रन्थ में किसी जगह एशियाकी बड़ाई लिख आये हैं पर जानना चाहिये कि एशियामे भी यह देश सबसे अधिक प्रख्यात था। यह देश किसी समय में विद्या और धनके लिये सब मे शिरोमणि गिना जाता था। सारे पृथ्वी के मनुष्य इस देश के देखने की अभिलाषा रखते थे, और जो वणिक् बेवपारी यहां तक आते थे जन्मभरको रोटियों से निश्चिन्त होजाते थे। यहां के राजाओं से सारे बादशाह दबते थे और इनका वे लोग सब तरह से मन रखतेथे। देखो इन फरंगिस्तान वालोंने, जो अब विद्याको भी विद्या सिखाते हैं, पहले ही पहल रूमिया से पढ़ने लिखने की सुधबुध पाई, रूमी यूनानियो के चेले थे, और यूनानी और मिसरवाले हिन्दुस्तान में आकर यहां के पंडितों से विद्या उपार्ज्जन कर गये थे। केवल सिन्धु नदी के तटस्थ दो चार जिले इस देशके जो कुछ दिन ईरान के बड़े बादशाह दाराशाह के कब्जेमे रहे तो कहते हैं कि जितनी आमदनी सारे ईरानके मुल्क की उसके खज़ाने मे आतीथी उसकी एक तिहाई निराले इन जिलो से उसे हाथ लगती थी, वरन ईरानवाले सब उसे कर मे चादी देते थे और इन जिलों के ज़मीदार सोना पहुंचाते थे। इस टूटे हालमें भी सन् १७३९ के दर्मियान नादिरशाह यहां से सत्तर करोड़ का माल लेगया कि जिसमे केवल एक तख़्त ताऊस बादशाह के बैठने का सात करोड़ से अधिक का था। जब तक राह न मालूम थी तो फ़रंगिस्तानवाले समुद्र से इस मुल्क मे जहाज़ लाने के वास्ते कैसे अधैर्य्य और व्याकुल थे, कितने जहाज़ उनके इस राह की खोजमें मारे गये और कितने आदमी इसी लालसा में समुद्र की

मछलियों के ग्रास हुए। सिकन्दर ऐसा महीपाल इस मुल्क लेने की कामनाही में मरा, और बाबिल के स्वामी सिल्यूकस और ईरान के अधिपति नौशेरवां जैसे बादशाहो को इस देश के राजाओ के लिये अपनी बेटियां देनी पड़ी। सिल्यूकस की बेटी महाराज चन्द्रगुप्त को आई थी और नौशेरवां की बेटी उदयपुरके राणाने व्याही। निदान इस देश की अभिलाषा सारे देशो के लोग रखते थे, और चारों तरफ से दौड़ दौड़ कर यहां आते थे, और यहांवाले और सब देशो को तुच्छ जैसा समझ कर कभी बाहर न जाते, और सदा अपनेही स्थान में स्थिर बने रहते कौन ऐसी वस्तु थी जो इस देशमे न हो और ये उसकी खोज के लिये बाहर जावे, ईश्वर की कृपा से इनको इसी जगह सब कुछ मौजूद था॥

पहाड़ इस मुल्क मे कम है और मैदान बहुत, और उन मैदानो में नदियां इस बहुतायत से बहती हैं कि सारा मुल्क मानो बागकी तरह सिच रहा है। हिमालय पर्वत जो इस मुल्क की उत्तर सीमा है दुनिया के सब पर्वतो से ऊंचा है। पूर्व में उस स्थान से जहां ब्रह्मपुत्र, पश्चिम से उस स्थान तक जहां सिन्धुनदी इसे काट कर तिव्वत से हिन्दुस्तान में आती है, इस पहाड की लम्बान प्रायः दो हजार मील होवेगी (१) और चौड़ान अनुमान कुछ कम चारसौ मील। हिमा-

---

(१) इस पहाड की अवधि इतनी ही मत समझना जितनी यहां लिखी गई। यहां उतना ही लिखना उचित है जितना हिन्दुस्तान के साथ मिला है और हिमालय के नाम से पुकारा जाता है बाक़ी का हाल दूसरी विलायतो में लिखा जावेगा यह पर्वत समुद्र तक चला गया है॥

चल और हिमाद्रि भी उसी का नामहै। हिम संस्कृत मे वर्फ को कहते है। इस पहाड के शृंग सदा बारहो महीने वर्फ से ढके रहते है, जो कभी कहीं से कुछ वर्फ हट जाती या गिर पडती है, तो सैकडो हाथ ऊचे केवल वर्फ के करारे दिखलाई देने लगते हैं जो कोई आदमी हिन्दुस्तान के मैदान से इस कोहिस्तान में जावे, तो पहले उसे छोटे पहाडो पर चढ़ना उतरना पडता है ज्यों ज्यों वह उत्तर को इन पहाडो में वढ़ता जाता है पहाड़ो की उचान भी वढती जाती हैं, यहां तक कि जाते जाते दस पन्दरह अथवा वीस दिन मे वह उन पहाड़ो की जड़ मे पहुंच जाता है कि जिनके शृंग सदा हिम से आच्छादित रहते हैं। इन पहाडो पर मनुष्य तो क्या पशु पक्षी भी नही पहुच सकते, वरन वादल भी कटिमेखला से उनके अधोभागही में लटकते रहजाते है, शृङ्ग तक कदापि नहीं चढ़ सकते। हट्टू से पहाड पर, जो शिमलासे तीन मंजिल आगे दस हजार फुट समुद्र ( १ ) के जल से ऊंचा है

---

( १ ) पहाड़ उचान समुद्र के जल से इस वास्ते लिखते है कि पृथ्वी कही ऊंची कही नीची, हिसाव सव जगह मे ठीक नहीं वैठता, और समुद्र का जल सव स्थान मे वरावर है। वहुत अनजन आदमी पहाड़ों की उचान चढ़ाई के हिसाब से वतलाते है, पर याद रखो कि इस ढव से कदापि उसकी उचान का ठीक अनुमान नहीं हो सकता क्योंकि किसी पहाड़ मे ढालो थोड़ा रहता है और किसी में वहुत इस लिये हमने सव जगह पहाड़ो की खडी उचान का हिसाव लिखाहै, जैसे देखो कसौली के पहाड को कालका से सड़ककी राह छकोस चढाई लगती है, परजो सड़क छोड कर कोई आदमी दूसरी तरफ से उस पर सीधा जा सके तो उसे अनुमान दो कोस से अधिक

किसी दिन जब आकाश निर्म्मल हो चढ के इन वर्फीपहाड़ों की शोभा देखनी चाहिये पूर्व पश्चिम और दक्षिण को जहां तक निगाह जाती है सौ सौ दो दो सौ मील तक पहाड़ ही पहाड़ सवा सवा सौ हाथ तक ऊंचे और बीस बीस हाथ तक जड़ मे मोटे पेड़ों के जङ्गलों से मानो हरे कपड़े पहने हुए जिन मे नदियों का पानी जगह जगह पर उनकी जड़ो में सूर्य्य की आभा से चमकता हुआ कनारी गोटा लगा है समुद्र के तरङ्ग की तरह ऊंचे नीचे दिखलाई देते हैं और उत्तर दिशा में अर्द्धचन्द्राकार कोई दो सौ कोस के पल्ले तक वर्फी पहाड़ नजर पड़ते हैं ऐसे ऊंचे कि मानो ई-श्वर ने आकाश के सहारे के लिये यही खम्भे रचे, धूप के तेज से ऐसे चमकते कि मानो पृथ्वी के हाथ मे यह उजले हुए चांदी के कङ्कण पड़े हैं, और फिर जो अपने पैरों के नीचे निगाह करो तो बाग की क्यारियों की तरह सैकड़ो रंग के फूल खिल रहे हैं, बरन बागों में वे फूल कहां पाइए पहाड़ो के पानी के गिरने का शोर और ठंढी ठंढी हवा की झकोर यह शोभा देखेही बन आवे लिख के कोई कहां तक बतावे । जो लोग इन पहाड़ो को पार होकर हि-

---

न चढ़ना पड़ेगा. और हिसाब से उस की खड़ी उचान समुद्र के जल से कुल कुछ ऊपर चार हजार हाथ अथवा छ हज़ार फुट है, अर्थात् जो कसौली के शृंग पर कोई कूआ खोदना चाहे तो जब चार हजार हाथ गहरा खुद चुकेगा तब उसकी हाथ समुद्र के जल से बराबर गिनी जायगी, अथवा कसौली के बराबर ऊंचा कोई मनार समुद्र के ठीक तट पर बनाना चाहे तो चार हज़ार हाथ ऊंचा बनाना पड़ेगा तीन फुट का एक गज़ होता है और एक गज मे दो हाथ होते है ॥

न्दुस्तान से तिब्बत को जाने चाहते हैं, वे उन नदियों के किनारे किनारे, जो इन पहाडों को काट कर तिब्बत से हिन्दुस्तान में आई है, पहाड़ों की जड ही जड में चल कर, अथवा उन घाटियों पर, जो किसी किसी जगह मे ऐसी ऊंची नहीं हैं जिन पर जान न वच सके, चढ़ कर पार हो जाते हैं। शृंगो पर, अर्थात् इन पहाड़ों की चोटियो पर, कदापि कोई नहीं जासकता। सव से ऊंचा शृंग उसका धवलगिरि जहा से गंडक नदी निकली है समुद्र के जल से कुछ ऊपर अठाईस हज़ार फुट ऊंचा है। जमनोत्री का पहाड़ जिसके नीचे से जमना निकली है प्रायः छव्वीस हज़ार फुट, और पुरगिल पहाड़, जो पित्ती और सतलज नदी के वीच मे है, प्रायः तेईस हज़ार फुट ऊंचा है। नीति-घाटी, जिसे लीति भी कहते हैं, वदरीनाथ से ईशान कोन की तरफ दौली नदी के किनारे कुछ ऊपर सोलह हज़ार फुट समुद्र से वलन्द है। कमाऊं-गढ़वाल-वाले इसी घाटी से हिमालय पार होकर तिब्बत और चीन को जाते है। श्रेणी हिमालय पहाड़ की सिन्धु से लेकर ब्रह्मपुत्र तक एक ही चली गई है, पर उसके जुदा जुदा टुकडे और जुदा जुदा शृंग जुदा जुदा नाम से पुकारे जाते हैं, जैसा अभी ऊपर शिमला हट्टू धवलगिरि जमनोत्री पुरगिल इत्यादि लिख आये। इन पहाडो मे प्रायः तेरह हज़ार फुट की ऊंचाई तक तो जङ्गल भी होता है और आदमी भी वसते और खेती वारी करते हैं। फिर तेरह हज़ार फ़ुट से ऊपर वर्फ ही वर्फ रहती है, जो पहाड़ तेरह हज़ार फुट से कम और सात हज़ार से अधिक ऊंचे है उन पर केवल जाड़े के दिनो मे थोडी वहुत वर्फ गिर जाती है। अजव महिमा है सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की, ज्यो ज्यो ऊपर चढते जाओ दरख्त झाडी फल फूल और खेतियों की सूरत वदलती जाती है, कहां तो

अभी उनकी जड़ मे गर्म मुल्क के पेड़ आम इमली इत्यादि देखे थे, और कहां थोड़ी ही दूर वढ़ कर सर्द मुल्क की पैदाइशेवान् वरास चील केलो देवदार इत्यादि दिखलाई देने लगे, यहां तक कि फिर वर्फ की हद के पास सिवाय भोजपत्र के और कुछ भी नहीं उपजता। एकही निगाह में गर्मी सर्दी वरसात तीनो मौसिम नजर पड़जाते हैं। अधोभाग में गर्मी और गर्मी की खेतियां, जो पहाड़ी लोग सीढियों की तरह पहाड़ो पर दर्जा बदर्जा बोते चले जाते है और झरनो के पानी से अनायास सिचा करते है, मध्य में जो वादल घिर आये तो वरसात और गरजना तड़पना, और ऊपर फिर जाड़ा और वर्फ है। दस कोस के तफावत मे तीनो मौसिम की चीज़ पैदा होसकती हैं। जोराई साहिव पुरगिल पहाड पर वीस हजार फ़ुट तक ऊंचे चढ़े थे, इस्से अधिक ऊंचे इन पहाडो पर किसी आदमी का जाना अव तक सुनने मे नही आया। पन्दरह हजार फुट से आगे वढ़ने पर सांस रुकने और सिर और छाती मे दर्द होने लगता है। शिमला मंसूरी इत्यादि स्थानों मे जहा सर्कार ने पत्थर काटकर सडक निकाल दी है वहां चढ़ाव उतराव तो अवश्य रहता है पर लोग वे खटके घोड़े दौड़ाते चले जाते है। वाक़ी और सव जगह मे, जहां सडके नही, रस्ता इन पहाड़ो मे वहुत विकट है, कही दीवार की तरह खडे पहाडो मे उन की दरारो के दर्मियान खूंटियां गाड कर और उन खूंटियोंपर लकडियां रखकर उन लकडियो के सहारे से चलते हैं, और कही घास की जड़ पकड पकड़ कर वन्दरो की तरह हाथके वल इन पहाडो पर चढ़ते है, जो पैर के तले निगाह करो तो कई सौ हाथ नीचे दर्या का पानी इस जोर के साथ पत्थरो से टकरा रहाहै कि जिसे देखकर सिर घूमे, और जो सिर पर नजर उठाओ तो वह पहाड दीवार सा

इतना ऊंचा दिखलाई देवे कि जिसे देखके आंख तिरमिरा जावे, ऐसी विकट राहों का हाल भी सुनने से रोंघटे खड़े होते हैं चलनेवालों का तो जी ही जानता होगा । हिमालय के सिवा इस मुल्क मे और भी जो सब पहाड़ वर्णन योग्य हैं उनमें से विन्ध्याचल इस देश के मध्य में पड़ा है खम्भात की खाड़ी से नर्मदा नदीके उत्तर उत्तर ज़िलै भागलपुर मे गंगा के किनारे तक चला आया है; पर उंचाई उसकी अनुमान दो अढाई हजार फुट से अधिक कहीं नहीं । सह्याद्रि विन्ध्य के पश्चिम सिरे से लेकर समुद्र के तट से निकट ही निकट कुमारी अन्तरीप तक चला गया है । अंगरेज़ लोग इसे पश्चिम घाट बोलते हैं । मलयागिर इसी के दक्षिण भाग का नाम है । सह्याद्रि के साम्हने बंगाले की खाड़ी के निकट कावेरी से विन्ध्यके पूर्व सिरे तक पहाड़ों की जो एक छोटी सी श्रेणी गई है उसे पूर्व्वघाट बोलते हैं । इन पश्चिम और पूर्व्वघाट के बीचमे दक्षिण तरफ़ जो पहाड़ उसका नाम नीलगिरि है । यद्यपि इन पहाड़ो मे पानी और जंगल की बहुतायत से बड़े बड़े रम्य और मनोहर स्थान हैं, पर शृंग उन के पांच छ हजार फुट से अधिक ऊंचे कोई नही, केवल एक मूरचूर्तिवेत नीलगिरि में कुछ ऊपर आठ हजार फुट ऊंचाहै ॥

अब उन नदियों का बयान सुनो जो इन पहाड़ों में से निकलती हैं । मुख्य उनमे गंगा जमना सरयू गण्डक शोण कोसी तिष्टा चम्बल सिन्धु झेलम चनाव रावी व्यासा सतलज ब्रह्मपुत्र नर्मदा तापी महानदी गोदावरी कृष्णा और कावेरी है । गंगा इस देशकी प्रधान नदी जिसे संस्कृत में भागीरथी जान्हवी इत्यादि बहुतेरे नामो से पुकारते हैं, हिमालय से निकलकर पन्दरह सौ मील बहनेके बाद अनेक मुंहाहों से बंगाले की खाड़ी मे गिरती है । जिस स्थान से यह निकली है

उसे गंगोत्री अथवा गंगावतारी और गोमुख भी कहते है, वहां कोई तीन सौ फ़ुट ऊंचा एक वर्फ का ढेर है, उसी के नीचे एक मोखे से इस गंगा की धारा कुछ न्यूनाधिक अठारह हाथ चौड़ी और अनुमान हाथ या दोहाथ गहरी निकलती है, कि जोफिर और नदियोंका पानी लेकर पांच कोस के पाट से समुद्र में मिलती है। गंगाका उत्पत्तिस्थान अर्थात् गंगोत्री समुद्र के जल से कुछ कम चौदह हज़ार फ़ुट ऊंचा है। जिस जगह में यात्रियों के दर्शन के लिये मन्दिर वना है वहा से यह स्थान ग्यारह मील आगे है। हरिद्वार से, जो समुद्र के जल से एक हज़ार फ़ुट ऊंचा है, यह नदी पहाडो को छोड मैदान मे वहती है। राजमहल से कुछ दूर आगे वढ़कर इस गंगा की कई धारा होगई, पर ज़ो कलकत्ते के नीचे होकर भागीरथी और हुगली के नाम से सागर के टापू के पास समुद्र से मिलती है हिन्दू उसी को असली गंगा समझते हैं, और जहां इसका समुद्र से संगम हुआ वड़ा तीर्थ मानते हैं। वहां कपिल मुनि का एक मन्दिर वना है, और जो धारा सव से वड़ी पूर्व मे ब्रह्मपुत्र के साथ मिलकर दखन शहवाज़पुर नाम टापू के साम्हने समुद्र में गिरती है उसे पद्मा पद्मावती और पद्दा भी कहते हैं, और उसका माहात्म्य असली गंगा के वरावर नहीं मानते इस सौ कोस के तफ़ावत मे जो इन दोनो धारा के वीच पड़ा है गंगा की और सव सैकड़ों धारा समुद्र से मिलती है। पानी की वहुतायत से इस जगह में वड़ा दलदल और अति सघन जंगल रहता है। इसी जंगल का नाम सुन्दर वनहै, कि जो वृक्षों की शाखा पर कलोलें करते हुए वंदर लंगूर और रंग वरंग के मधुर मंजुल शब्द करनेवाले पक्षियों की वहुतायत से पथिक जनो का जिनकी नावें उस राह से आती हैं, मन लुभाता है. और अति सुन्दर और मनोहर मालूम पड़ता है, पर जिस

मे सर्प सिंह इत्यादि दुष्ट जीव जन्तु भी इतने रहते हैं कि ऐसा साहस-
वाला कोई नही जो अपनी नौका से उतर कर इस जगल के भीतर
घुसे, बरन नौकामें भी, जो बीच धारा मे लंगर पर रहती है, रात को
चौकस रहना पड़ता है, नही तो आश्चर्य नही जो कोई शेर पानी मे
तैर कर नाव से किसी आदमी को उठा ले जावे। आवहवा भी इस
जंगल की निहायत खराब है। बरसात मे गंगा का पानी दस ग्यारह
हाथ ऊंचा वढ़ जाता है और वंगाले के मुल्क मे इस नदी के दोनों कि-
नारो पर पचास पचास कोस तक जलही जल दिखलाई देने लगता है।
धानो के खेत मे नावे चलती हैं और गांव जगह जगह पर पानी के वीच
में टापुओ की तरह देख पड़ते हैं। हिन्दुओ का यह मत है कि गंगा
में नहाने से सारे पाप धो जाते हैं, और कहते है कि उसका पानी चाहे
जितने दिन रक्खो बिगड़ता कभी नही, वरन उसका पीना वहुत गुण-
कारी समझते है। अबदुल हकीम खां जो सन् १७९२ मे बीजापुर के
जिले के दर्मियान शाहनूर का नव्वाव था मुसलमान होकर भी सिवाय
गंगा जल के कभी कोई दूसरा पानी न पीता. और पांच सौ कोस से
इस नदी का पानी मंगवाता, जो कुछ हो गंगा से इस देशवालो का
बड़ा उपकार होता है, लाखो वीघे खेती केवल इसी के जल से होती
है, और करोड़ो काम इन लोगो के इसमें नाव चलने से निकलते हैं,
केवल जलंघी भागीरथी और माथाभंगा इसकी इन तीन धारा की
राह मे कम से कम अस्सी हजार नाव साल भरमें आती जाती हैं, वरन
कलकत्ते तक तो इस नदी मे समुद्र से जहाज भी आते है। जमना जिस
का शुद्ध नाम यमुनाहै, और जिसे संस्कृत में कालिन्द्री इत्यादि नामो
सेभी पुकारते हैं, गंगोत्री से कुछ दूर पश्चिम हिमालय मे जमनोत्री
के पहाड़ से निकलकर कुछ कम आठ सौ मील वहती हुई प्रयाग

के नीचे, जिसे इलाहाबाद भी कहते हैं, गंगा में मिल जाती है। इन दोनों नदियों के संगम को हिन्दू लोग त्रिबेनी कहते हैं, और बहुत ही बड़ा तीर्थ मानते हैं। अगले समय में ये लोग दूसरे जन्म में अपना मन वाञ्छित फल पाने के निश्चय पर अक्सर इस तीर्थ में अपना सिर आरे से चिरवा डालते थे, शाहजहां बादशाह ने यह काम बुरा समझकर मौकूफ कर दिया, और वह आरा भी तुड़वा डाला। कपतान हजसन साहिब जमनोत्री का हाल इस तरह पर लिखते हैं, कि जमनोत्री के पहाड़ की नैर्ऋत अलंग में कुछ ऊपर दस हज़ार फुट समुद्र से ऊंचे एक बर्फ के टुकड़े के नीचे से, जो उस समय साठ गज चौड़ा और तेरह गज़ मोटा था, यह नदी कोई गज भर चौड़ी और पांच चार अंगुल गहरी निकलती है, उस बर्फ़ के टुकड़े में एक मोखा था, कपतान साहिब उस मोखे की राह उस के अंदर चले गए, तो वहां जाकर क्या देखते हैं, कि उस बर्फ की छत के नीचे पहाड़ के पत्थरों में बहुत से छेद हैं, और उन छेदों में से अदहन की तरह खौलता हुआ पानी निकलता है। निदान यही पानी जमना का जड़ है, पर पहाड़ छोड़ कर जब यह मैदान में पहुंचती है, तो फिर इतनी बड़ी है कि बड़े बड़े नाव बेड़े इसमें चलते हैं। सरयू जिसे शरयू सरजू घर्घरा घाघरा देविका और देवा भी कहते हैं, और गण्डक अथवा गण्डकी, और कोसी जिसका शुद्ध नाम कौशिकी है, और तिष्टा जिसे संस्कृत में तृष्णा और त्रिस्रोता भी कहते हैं, ये चारों नदियां हिमालय के बर्फी पहाड़ों से निकल कर पहली छपरे से कुछ दूर ऊपर, दूसरी पटने के साम्हने, तीसरी भागलपुर से कुछ दूर आगे बढ़कर, और चौथी करतोया को लेती हुई नवाबगंज के पास, गंगा से मिलती है। गण्डक में सालग्राम

मिलते हैं इसलिये उसे सालग्रामी भी बोलते है। कहते है कि हिमालय के उत्तर भाग मे मुक्तिनाथ के पास गण्डक के किनारे जो एक पर्व्वत है यह नदी सालग्राम को उसी मे से बहालाती है। हिन्दू तो सालग्राम को साक्षात विष्णु का अवतार समझते है, और अंगरेज लोग उसे अमोनैट कहते है, और बतलाते है कि जिस को हिन्दू चक्र का चिन्ह जानते है वह तूफान के समय मे जो सव समुद्र के जीव पहाडो मे दवगए थे उनमे से एक प्रकार के छोटे से जानवर का निशान है। इस जाति के जानवर अव तक भी समुद्र मे मौजूद है और इस प्रकार के अङ्कित पत्थर और भी बहुत पहाडो मे मिलते है। गण्डक मे तैरना और करतोया मे नहाना हिन्दुओ के मत वमूजिव मना है, और इसी तरह कर्मनाशा का, जो एक छोटी सी नदी बनारस और विहार के जिलो के वीच वह कर गंगा मे गिरती है, पानी छूने के लिये मनाही है। चरबल जिसे सस्कृत मे चर्मण्वती लिखा है, और सोन अथवा शोण, यह दोनों विंध्याचल से निकल कर पहली तो इटावे से वारह कोस नीचे जमना मे गिरती है और दूसरी शरयू और गण्डक के मुहानों के बीच मे छपरे के साम्हने दक्षिण से आकर गंगा मे मिलती है। सिन्धु नदी, जिसे अटक का दर्या और अंगरेज लोग इण्डस कहते है, हिमालय के पार गारू-शहर के पास कैलास पर्व्वत की उत्तर अलङ्ग से निकली है, और सत्तरह सौ मील से ऊपर वह कर कई धारा हो, कि जिस मे सव से वड़ी का पाट मुहाने पर छ कोस से कम नही है, हिन्दुस्तान की पश्चिम दिशा मे समुद्र से मिलती है। अटक के नीचे पहाड़ो मे जगह की तंगी से यह दरिया वड़े ज़ोर शोर से वहता है, पाट वहां पर कुछ ऊपर पांच सौ हाथ होगा, पर पानी वहुत गहरा और नावो को उस जगह मे वड़ा ही डर रहता है. जो कही पहाड़ से

टक्कर खावें तो एक दम में टुकड़े टुकड़े हो जावें। हिन्दुओं के धर्मशास्त्र में सिन्धु-पार जाना मना है, लेकिन काम पड़ने से सब जाते हैं, बरन अगले ज़माने में हमारे देश के राजाओं ने सिन्धु पार उतरकर बहुत मुल्क फतह किये हैं। झेलम चनाव रावी व्यासा और सतलज ये पाचों नदियां हिमालय से निकलकर सब की सब इकट्ठी पञ्चनद के नाम से मिट्ठनकोट के नीचे सिन्धु मे गिरती हैं, और इन्ही पांच नदियों से सिंचा हुआ देश पंजाब अथवा पंचनद कहलाता है। इन मे से एक सतलज तो हिमालय के उत्तर भाग मे मानसरोवर के पास रावण ह्रद से निकली है, और बाकी चारो हिमालय की दक्षिण अलंग से निकलती है। झेलम, जिसे शास्त्र मे वितस्ता लिखा है, और कुछ ऊपर चार सौ मील बहकर झंग से दस कोस नीचे चनाव मे मिल जाती है, और रावी भी जिसका संस्कृत नाम ऐरावती है, कुछ ऊपर चार सौ मील बहती हुई मुलतान से बीस कोस ऊपर इसी चनाव से आमिलती है। व्यासा जिसे विपाशा भी कहते हैं, अभयकुण्ड से निकल अनुमान दो सौ मील बहकर हरीके पत्तन के पास सतलज से मिलती है, उसकी थाह मे चोरवालू अकसर जगह है इस कारन जाड़ो में जब पानी घट जाता है पायाब उतरने मे बहुत खबरदारी रखनी पड़ती है बरन किनारो पर संभल संभल के पैर धरते हैं, पग-डंडी से कदापि बाहर नही जाते, नही तुरत बालू में गड़ जावें, और सतलज, जिसका शुद्ध नाम शतद्रु है, कुछ ऊपर आठ सौ मील बह-कर बहावलपुर से बीस कोस नीचे चनाव से मिल पञ्जनद के नाम से अनुमान तीस कोस बह कर मिट्ठन कोट के नीचे, जैसा कि अभी ऊपर लिख आए हैं, सिन्धु में जा गिरती है। चनाव, जिसे संस्कृत मे चन्द्रभागा कहते हैं, हिमालय मे अपने निकास से मिट्ठन कोट

तक कुछ ऊपर छ सौ मील लम्बी है। पहाड़ो में इन नदियो के द-
मियान जहा पत्थर से पानी टकराने के सबब नावो का गुजर हर्गिज
नहीं हो सकता झूले अथवा छीके पर पार होते है, या मशकों पर
चढ़कर उतर जाते हैं। झूला उसे कहते है कि जो नदी के एक
किनारे से दूसरे किनारे तक बराबर कई रस्से बांधकर उन्हे तख्तो से
पाट देते है, आदमी उन तख्तो पर अपने पाव से चलकर पार हो
जाते हैं, यद्यपि अजनबी आदमी को इन पर से जाने में बड़ा डर
लगता है, क्योंकि चौड़ान उसकी बहुधा हाथ दो हाथ से अधिक
नही रहती, और पाट नदियों का सौ सौ दो दो सौ हाथ होता है,
और सहारा हाथ से थामने को केवल उन्ही रस्सों का मिलता है,
पर छीका इस से भी बुरा है वह एक रस्सा होता है, इस पार से
उस पार बंधा हुआ, और उसमे एक छीका लटका हुआ, और फिर
छीके में एक रस्सी बधी हुई आदमी उस छीके मे बैठ जाता है,
तब मल्लाह उसे उस रस्सी से, जिसका एक सिरा उस छीके मे
बंधा हुआ और दूसरा दूसरे किनारे पर उनके हाथ मे, रहता है,
खींच लेते हैं; जब छींका बीच मे पहुँचकर रस्सी के झटको से हि-
लने लगता है और नीचे दर्या समुद्र की तरह पत्थरो से टकराता
हुआ देख पड़ता है, तब अनजान आदमी का तो होश उड़ जाता है,
और क्योंकर न उड़े, कि जो रस्सी टूटे, तो मीयां बीच ही मे लट-
कते रह जांय और जो रस्सा टूटे तो फिर दर्या में ग़ोते खांय।
मशक पर ऐसी दहशत नही है, जहां पानी का जोर बहुत नही होता
वहां मल्लाह, जिसे पहाड़ मे दर्याई कहते हैं, अपनी मशक पर पेट
के बल पड़ जाता है और पार होनेवाला उसकी पीठ पर दुजानू हो
बैठता है वह मल्लाह अपने पैरो की तो पतवार बनाता है, और दोनों

हाथो मे दो चप्पू रखता है, उन्हीं से खेकर पार पहुँच जाता है। यह मशक रोभ्फ अथवा बैल के चमड़े की बनती है और बहुत बड़ी होती है। ब्रह्मपुत्र जिसे तिब्बतवाले सापू कहते हैं, मानसरोवर के पास हिमालय की उत्तर अलंग से निकलकर कुछ ऊपर सोलह सौ मील बहता हुआ समुद्र के पास आकर गंगा मे मिल जाता है। नर्मदा शोण के उद्गम-स्थान से पास ही निकलकर ७०० मील बहती हुई भड़ौंच के पास खम्भात की खाड़ी मे जा गिरती है; और उसके मुहाने से कुछ दूर दक्षिण सूरत से दस कोस नीचे तापी भी जो बैतूल के पास पहाड़ से निकली है, साढ़े चार सौ मील बह कर समुद्र से मिल गई है। महानदी नागपुर के इलाक़े से निकल कर पांच सौ मील बहती हुई कटक के पास कई धारा होकर समुद्र मे गिरी है। गोदावरी पश्चिम घाट में त्रिम्बक से निकलकर बरदा और बानगंगा को, जो दोनों नदियां गोंदवाने के इलाके से निकली हैं, लेती हुई नौ सौ मील बहके राजमहेन्द्री के नीचे समुद्र से मिली है। कृष्णा भी उन्हीं पहाड़ों मे सितारे के नजदीक महाबलेश्वर से निकलकर मालपर्व गतपर्व भीमा, जिसे संस्कृत में भीमरथी लिखा है, तुंगभद्रा इत्यादि नदियों को, जो उन्हीं पश्चिम घाट के पहाड़ों से निकली है, लेती हुई सात सौ मील बहके मछलीबन्दर के पास समुद्र से मिल गई है। जितने क़िस्म के क़ीमती पत्थर हीरा लसनिया इत्यादि इस नदी के बालू मे मिलते है उतने और किसी में भी हाथ नहीं लगते! और कावेरी नीलगिरि में उतकमन्द अथवा उटकमण्ड से निकलकर कुछ ऊपर चार सौ मील बहती हुई तिरुच्चिनापल्ली से थोड़ीदूर आगे समुद्र में खप गई है। दक्षिण के पहाडों मे इन कृष्णा कावेरी इत्यादि नदियों के दर्मियान जहां नाव का गुज़र नहीं हो सकता, बांस की

टोकरी में, जो चमड़ों से मढ़ी रहती है, बैठकर पार उतरते हैं। निदान मुख्य नदियां तो यहीं हैं जिनका वर्णन हुआ, और बाक़ी छोटी छोटी तो इतनी हैं कि जिनकी गिनती बतलाना भी कठिन है, पर उन में से बहुत इन्हीं ऊपर लिखी हुई नदियों में मिल गई हैं। हिन्दुस्तान की नदियां बरसात में सब बढ़ती हैं, पर जो हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ से निकली हैं, वे गर्मी में भी बर्फ़ गलने के सबब कुछ थोड़ी बहुत बढ़ जाती हैं। नक़शे में नदियों का बहाव देखने से देश का ऊंचा नीचा होना भी बख़ूबी मालूम हो जाता है, जहां से नदियां निकलती हैं वहां अवश्य पहाड़ अथवा ऊंची धरती रहती है, और जिधर को वे बहती हैं वह उस से नीची और ढाल होती है॥

नहर बड़ी इस मुल्क में दोही हैं एक तो जमना की जो पहाड़ से काटकर दिल्ली में लाये हैं, और जिसका एक सोता पश्चिम में हरियाने तक पहुंचकर वहां रेगिस्तान में खप जाता है, और दूसरी गंगा की, जो हरिद्वार से काटकर दुआबे में लाए हैं। पहली तो फ़ीरोज़शाहतुगलक, जो सन् १३५१ में तख़्त पर बैठा था, पहाड़ से सफेदों के परगने तक जो दिल्ली से अनुमान तीस कोस होवेगा, और शाहजहां सफ़ेदों से दिल्ली तक लाया था, लेकिन फिर बहुत दिनों तक बेमरम्मत पड़ी रहने से बिलकुल ख़ुश्क होगई थी, सो अब सरकार अंगरेज़ी ने बख़ूबी मरम्मत करा दी, और पानी उसी तरह से जारी हो गया, लोगों को बड़ा आराम हुआ दिल्लीवालों के मानों सूखे खेत फिर लहलहाए और दूसरी सरकार की तरफ़ से बनकर तैयार हुई है। इस नहर के तैयार होजाने से अब दुर्भिक्ष अन्तर्वेद में कभी न पड़ेगा॥

झील हिन्दुस्तान में बड़ी कोई नही और छोटी छोटी भी बहुत कम हैं। चिलका कटक के पास चौंतीस मील लम्बी आठ मील चौड़ी है, पानी खारा, और कुछ न्यूनाधिक दो लाख मन नमक हर साल उस से वहां तैयार होता है पल्लीकाट अथवा पलियाकट जिसे कोई मलयघाट भी कहता है इतनी ही बडी करनाटक अथवा कर्णाट देश मे है कोल्लेरू कृष्णा और गोदावरी के बीच मे छयालीस मील लम्बी और चौदह मील चौडी होगी। सांभर जयपुर और जोधपुर की अमलदारी के बीच में बीस मील लम्बी और दो मील चौड़ी है। सांभर नमक उसी में पैदा होता है जब गर्मी में उसका पानी सूखता है तो उसके किनारों पर यह नमक जम जाता है, लोग खोद कर उठा लाते हैं, और बहुधा उसके किनारों पर क्यारियां बनाकर उन मे उसका पानी ले आते हैं वही पानी सूखकर नमक बन जाता है ऊलर कश्मीर के इलाके में सोलह मील लम्बी और आठ मील चौड़ी और गहरी इतनी कि अब तक किसी ने उसकी थाह नही पाई वितस्ता एक तरफ से उसका पानी लेती हुई बही है सिंघाड़े उस मे बहुत होते है॥

अब सोचना चाहिये कि जिस देश में इतनी नदियां बहती हैं और पानी की ऐसी इफरातं है फिर ज़मीन उपजाऊ और उर्वरा क्यो न हो, और यहीं कारन है कि जो इस देश की धरती शस्यजनक और बहुफला होना सारे संसार मे प्रख्यात होगया, बरन और उपजाऊ देशो का इसे उपमा ठहराया यहां साल में दो फसल और कहीं तीन तीन फसल भी काटते हैं, और ऐसी विरली वस्तु है कि जो यहां पैदा न हो। बर्फिस्तान और रेगिस्तान मैदान और कोहिस्तान, समुद्र से निकट, और समुद्र से दूर, गर्म और सर्द खुश्क और तर,

सब तरह के मुल्कों के अन्न फल फूल और औषधि यहां मौजूद है, मनुष्य की सामर्थ्य नहीं जो यहां के जंगल पहाड़ों की जड़ी बूटियों का सारा भेद जानलेवे, या जितने प्रकार के वृक्ष उनमें होते हैं सब की गिनती करे, केवल वे सब, कि जो सदा हम लोगों के काम में आते हैं उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं। खेत में यहां जव गेहूं चावल चना ज्वार बाजरा मूंग मोट मक्की उर्द मसूर मटर कौदो किराव अरहर मरुआ तिल तीसी राई सरसों ज़ीरा सौंफ अजवायन धनियां काहू कासिनी मेथी कंगनी सांवां चैना कोलथ बाथू फाफरा रगी सोंठ हलदी सन तमाकू मजीठ मिरचा कुसुम कपास पोस्त नील ऊख केसर कचूर रेंडी अरवी शकरक़न्द ज़मीक़न्द रतालू वंडा खीरा ककड़ी तुरई आरिये कद्दू कोहड़ा पेठा तरबूज़ ख़रबूज़ा भिंडी वेड़ा सेम आलू गोभी पलवल करेला मूली गाजर शलगम पयाज लहसन हींग चुक़न्दर आदीचक्र बैगन और बाग और जंगल पहाड़ में सेब नाशपाती बिही गिलास बादाम पिस्ता अंगूर आलूचा आलूबुख़ारा शाहदाना शफ़तालू शहतूत जर्दआलू अखरोट आम अमरूद अनार आमला कौला सन्तरा जामन गुलाबजामुन लुकाट लीची फालसा खिरनी केला कमरख अंजीर शरीफा नीबू चकोतरा अनन्नास पपीता कटहल बड़हल करौंदा हड़ बहेड़ा बेर बेल इस्टाबरी मको रसभरी कैफल ताड़ खजूर नारियल सुपारी तेजपात छोटी बड़ी इलायची जायफल जावत्री दारचीनी क़हवा सागू चन्दन रक्तचन्दन कालीमिर्च कबाबचीनी कपूर जटामासी अगर गुग्गुर धूप लोबान मुसब्बर सागौन साल सीसों तुन नीम इमली महुवा कीकर पाकर खैर तीखुर चिरौंजी पलास रीठा सेमल बड़ पीपल कदम्ब कचनार कैत आमड़ा जलपाई अमलतास मौलसिरी चम्पा हारसिंगार चील चिलगोजा केलो का-

यल-रौ वान वरास देवदार कक्कड़ महरू भोजपत्र वेदमुश्क चनार सफेदा सर्व्व वांस वेत नर्कट कुश क़लम दूव वनफशा चाय मिहदी भाग धतूरा पान टेटी फोक करील आक झड़वेरी, फुलवारियों में गुलाव केवड़ा वेला चंवेली जाही जूही सेवती मदनवान मेगरा रायवेल नर्गिस सुगन्धेरा सेवती सोसन गेंदा गुलदावदी गुलमेंहदी गुलदुपहरिया गुलअव्वास गुलखैरू लटकन झूमका इमरैलिस डेलिया, और पानी मे कमल कमोदनी मखाना शोला सिघाड़ा कसेरू इत्यादि वहुतायत से होते है। सिवाय इनके वहुत से फल फूल के वृक्ष अव अंगरेज लोगों ने दूसरे मुल्कों से लाकर इस देश मे लगाए है, और लगाते जाते है, कि जिन का हिन्दी मे नामही नही मिल्ता। डाकतर वालिच साहिव ने चार सौ छप्पन प्रकार की लकड़ी, जिन से यहां काठ की चीजें वनती हैं इकट्ठी की थीं। सहारनपुर मे सर्कारी वाग़ के दर्मियान पांच हजार क़िस्म से ज़ियादः और कलकत्ते में सर्कारी वाग़ के दर्मियान जिसका घेरा प्रायः तीन कोस का होवेगा, दस हज़ार क़िस्म से अधिक वृक्ष विरुध लगाये हैं और डाकतर वैट साहिव केवल मन्दराज़ हाते से लाख किस्म से ऊपर पेड़ वूटे इकट्ठे करके इंगलिस्तान को ले गए। गेहूं नागपुर का प्रसिद्ध है। चावल वाड़े का सा, जो पिशौर के जिले में है, कहीं नहीं होता, पुलाव वहुत सुस्वाद और सौगन्ध वनता है, सेर भर चावल सेरही भर घी सोखता है, और फूल कर चार सेर के वरावर हो जाता है। चैना कोलथ वाथू फाफरा ये चारों अदना क़िस्म के अन्न केवल हिमालय के पहाड़ी-देशों में होते है और रगी दाक्षिण के पहाड़ों में। तम्वाकू भिलसा सा कहीं नही होता, इस पेड़ का यहां पहले कोई नाम भी नही जानता था, जहांगीर वादशाह के इश्तिहार से जिसका जिकर उसने अपनी किताव में

लिखा है मालूम होता है कि यह काम की चीज़ पहले ही पहल उसके अथवा उसके बाप अकबर के समय मे फरंगी लोग अमरिका से लाए। अब तो इतनी फैलगई कि लोगों को इस बात का निश्चय आना भी कठिन है। कपास यद्यपि अमरिका में भी होता है, परन्तु पुराने महाद्वीप के सब मुल्कों मे इसी भारतवर्ष से फैली। सिकन्दर जब सतलज तक आया था तो उसके साथवालों ने कपास के पेड़ देखकर बड़ा अचरज माना, और अपनी किताब मे उसका नाम ऊनका पेड़ लिखा, और उसकी यह टीका की कि यूनान मे जो ऊन भेड़ियो की पीठपर जमता है वह हिन्दुस्तान में पेड़ों के बीच फलता है बेचारो ने रूई पहले कभी न देखी थी, केवल पोस्तीन और ऊनी वस्त्र पहनते थे। यहा रूई मालवे के दार्मियान बहुत पैदा होती है। पोस्त जिस्से अफयून निकलती है मालवे मे बहुत होताहै, और वहां की अफयून अव्वल क़िस्म की गिनी जाती है, सिवाय इसके बनारस और पटने के आस पास भी बोया जाता है। नील तिरहुत मे बहुत होती है। ऊख इसी जगह से बहुत विलायतों मे फैली है। पुराने यूनानियोंने इस मुल्क की चाशनी खाकर बड़ा आश्चर्य माना, और किताबों मे लिखा कि हिन्दुस्तान के आदमी भी मक्खियों की तरह पेड़ो के रस से शहद बनाते है। केसर की खेती कश्मीर के पामपुर परगने मात्र मे होती है, और कहीं नहीं जमती, वहां केसर ऊंची जमीन पर बोते हैं जिस में पानी बिलकुल न ठहरे और सींचते कभी नही, जड उसकी पयाज के गट्ठे की तरह होती है, और वही गट्ठे बोए जाते है पेड़ और पत्ते उसके कुश घास से मिलते हैं, और फूल ऊदे रंग का क्वार कार्तिक में खिलता है, उसी फूल के भीतर पीली पीली यह केसर रहती है। कश्मीर में केसर पन्द्रह रुपये सेर मिलती है, और चालीस पचास

हज़ार रुपये की पैदा होती है। तरबूज़ मधुरता में इलाहाबाद का प्रसिद्ध है, और खरबूज़े जमाली आगरे के। आलू और गोभी भी हिन्दुस्तान की तरकारी नहीं हैं, तम्बाकू की तरह अमरिका से आ गई। शलगम भुटान में बहुत बड़ा और मीठा होता है। पयाज़ बम्बई की प्रसिद्ध है। हींग का पेड़ सिन्ध और मुलतान की तरफ होता है। सेब नाशपाती बिही गिलास बादाम पिस्ता अंगूर आलूचा आलू बुखारा शाहदाना शफ़तालू शहतूत जर्दालू अखरोट ये सब कश्मीर में बहुत अच्छे और कई प्रकार के होते हैं, और हिमालय के तटस्थ दूसरे ठंढे मुल्कों में भी मिलते हैं पर गिलास कश्मीर के सिवाय और कहीं नहीं होता बहुत नाज़ुक और वहां के मेवों का सर्दार है, फसल उसकी पन्दरह बीस रोज से अधिक नहीं रहती, सावन के महीने में फलता है। अंगूर कश्मीर में, किशमिश बहुत अच्छा होता है, बीज बिलकुल नहीं गुच्छे का गुच्छा शर्बत की घूंट की तरह निगल जाओ पर कनावर सा इस विलायत में कहीं नहीं होता, गुच्छे और दाने भी बहुत बड़े और मीठे होते हैं और वहां सस्ते भी इतने कि चार पैसे को एक आदमी का बोझ लेलो। शफ़तालू चम्बे से बिहतर दूसरी जगह नहीं फलता। आम बम्बई के बराबर कहीं नहीं होता, पर बनारस और मालदह का भी बहुत प्रसिद्ध है, इस मुल्क का खास मेवा है, दूसरी विलायत में नहीं मिलता, और दुनिया के सब मेवों का सिरताज है, इसका नाम अमृतफल लोगों ने बहुत ठीक रक्खा, अमृत भी उस से अधिक सुस्वाद न होगा, बड़े आम सेर सेर से भी ऊपर वज़न में उतरते है। आमला और अमरूद बनारस में बहुत तोहफ़ा होता है। कौला सिलहट सा उमदा और मीठा कहीं नहीं पाया जाता, और वहां इसके जंगल के जंगल खड़े है, रुपये

के हज़ार हज़ार तक बिकते हैं। कटहल इतना बड़ा होता है कि शायद ऐसे वैसे कमजोर आदमी से तो उठ भी न सके। इसटावरी मको रसभरी और कायफल उत्तराखण्ड के देशों में अच्छे होते हैं। हड़ बिलासपुर की मशहूर है, पर सूखी हुई दो तोले से भारी नहीं होती। ताड़ दक्षिण पाईं-घाट में इतने बड़े होते हैं कि उसके दो तीन पत्तों से छप्पर छा जावे। नारियल और सुपारी समुद्र के तटस्थ देशों में जमते हैं दूर नहीं होते। तेजपात इलायची जायफल जावुत्री दारचीनी क़हवा सागू चन्दन रक्तचन्दन और कालीमिर्च के दरख़्त दक्षिण देश में विशेष करके तुलव केरल कच्छी और त्रिवङ्कोड़ू के दर्मियान होते हैं। तेजपात और बड़ी इलायची नयपाल में भी इफरात से उगती है। सागू के दरख़्त की टहनियां काटकर उन्हें पानी में कूटते भिगाते और धोते हैं, उनका जो सत निकलता है उसी को चलनी से गर्म तवों पर चलाते हैं, वह भुनकर दाने दाने सा हो जाता है और सागूदाने के नाम से बिकता है। चन्दन और रक्तचन्दन के पेड़ वहां पश्चिमघाट में मलयागिर पर बहुत हैं, चन्दन में जो वस्तु रहे उस से कहते हैं कि कीड़ा और मोर्चा नहीं लगता, इसलिये हथियार इत्यादि चीज़ों के रखने के लिये जिस में मोर्चा अथवा कीड़ा लगने का डर है अमीर लोग चन्दन के सन्दूक़ बनवाते हैं। पथरैली-धरती में चन्दन के पेड़ अच्छे होते हैं, और सब से अधिक उत्तम चन्दन उन पेड़ों में उस स्थान का है जो धरती के नीचे और जड़ों से ऊपर रहता है, और जिसका रंग ख़ूब गहरा होता है। चन्दन काटकर महीने दो महीने तक वहां मिट्टी में दाब रखते हैं। हिक्मत उस में यह है कि ऊपर का छिलका जो नाकारा होता है बिलकुल दीमक खालेती हैं. और खुशबूदार गूदा बिलकुल बाकी

रह जाता है। कालीमिर्च आशाम में भी वोते हैं, और कपूर का दरख्त मनीपुर मे जमता है। अगर सिलहट के जगल में और गुग्गुर अर्थात् गूगल सिन्ध में होता है। लोवान के पेड त्रिवाङ्कोड़ू में और मुसव्वर के दरख्त कांगड़े मे वहुतायत से हैं। सागौन की लकड़ी के जहाज वनते हैं। इसलिये वह बड़े कामकी चीज़ है, यह वृक्ष वहुधा पश्चिम घाटपर और चित्र गांव में समुद्र के निकट होता है और साल जिसका हरिद्वार के पास पहाड़की तराई में बड़ा भारी जंगल है अक्सर इमारत के काम में आता है। खैर तीखुर चिरौंजी वहुधा विन्ध्य के पहाड़ मे और चील चिलगोजा, अर्थात् नेवज़ा, केलो कायल रौवान वरास देवदार ककड़ महरू भोजपत्र हिमालय के पर्व्वत में होते हैं। चील का गोंद विरोज़ा और तेल तारपीन कहलाता है, पहाड़ी लोग मशाल और वत्तीकी जगह रात को उसीकी लकड़ी जलाते हैं। केलो कायल और देवदार ये तीनों सनोवर की क़िस्म है, और सात सौ हाथ से भी अधिक ऊंचे होते हैं। वान को अंगरेज़ी में ओक कहते हैं। वरासके फूल लाल लाल बहुत बड़े और सुहावने होते है। भोजपत्र उसी जगह होता है जहा से वर्फिस्तान का आरम्भ है, वारह हज़ार फुट से नीचे कदापि नहीं उगता। वेदमुश्क चनार और सफ़ेदा ये कश्मीर के वृक्ष हैं, वेदमुश्क से केवड़े की तरह अर्क़ निकालते हैं, वह केवड़े से भी अधिक गुण रखता है। वेत पश्चिम घाटके पहाड़ों में २२५ फुट तक लम्बा होता है। चाय के पेड़ अव सर्कार की आज्ञानुसार देहरादून और कांगडे के पहाडो में लगने लगे हैं, पहले चाय चीन के सिवाय और कहीं नहीं होती थी, पर अव जान पड़ता है कि इन उत्तराखण्ड के पर्व्वतों में भी वैसी ही हो जायगी। सर्कार ने इस वात के लिये वहुत

रुपया खर्च किया है, और उसकी तैयारी के वास्ते चीन से बुलाकर वहां के आदमी नौकर रक्खे हैं. क्योंकि जब पेड़ से पत्ते तोड़ते हैं तो उनको आग पर गर्म करके हाथों से मसलने में बड़ी चतुराई चाहिये, कई बार उनको आग पर सेकना पड़ता है और कई बार हाथों से मलना, अनाड़ी आदमी से यह काम कभी नहीं बन पड़ता, आशाम के ज़िले में भी बोई जाती है। पान इस मुल्क की तोहफा चीज़ों में गिना जाता है, बरन यह भी एक रत्न कहलाता है। मखाना पुरनिया के तालावों में फलता है। गुलाब ग़ाजीपुर और अजमेर में बहुत होता है, और चंबेली जौनपुर और बाढ़ में। पर सब से अधिक आश्चर्य का पेड़ हिन्दुस्तान में बड़ है कि जिसकी प्रशंसा दूसरी विलायत वालों ने अपनी किताबों में बहुत ही लिखी है जिस किसी स्थान में जल के समीप कोई पुराना बड़ रहता है और उस पर मोर और बन्दर नाचते कूदते हैं अतिरम्य और सुहावना होता है और उसकी बहुत सी टहनियां जो धरती में जड़ पकड़ती हैं मानो दालान और बारहदरियां बन जाती हैं, एक बड़ का पेड़ जिसे लोग तीन हज़ार बरस का पुराना बतलाते हैं, नर्मदा नदी के किनारे भड़ौच के पास इतना बड़ा है कि जिस के नीचे सात हज़ार आदमी अच्छी तरह आराम से डेरा कर सकें, उसका घेरा प्राय चौदह सौ हाथ का होवेगा, और उसकी टहनियां जो धरती में जड़ पकड़ गई हैं तीन हज़ार से कम नहीं। नाम उसका वहांवाले कबीर बड़ कहते हैं। सिवाय इसके छपरे से पश्चिम जहां सरयू गंगासे मिलती है मांझी—नाम बस्तीके पास एक बड़का पेड़ इतना बड़ा है कि जिस की छाया गर्मियों में दो पहर के समय १२०० फ़ुट के घेरे में पड़ती है॥

जानना चाहिये जहां तृण और जलकी ऐसी बहुतायत होगी वहां

पशु पक्षी भी अधिक रहेंगे। जंगली जानवरोंमें सिंह बाघ बघेरा चीता हाथी गैंड़ा अरना रीछ सूअर भेड़िया हिरन बारहसिंहा रोझ पाढ़ा साही गीदड़ लोमड़ी खरगोश सियाहगोश बनबिलाव ऊदबिलाव तरह बतरह के बन्दर और लंगूर कस्तूरिया बरड़ कक्कड़ सकीन घोड़ल सुरागाय ईल गिलहरी नेवला गिरगिट, और घरेलुओं में घोड़े गधे ऊंट खच्चर गाय भैंस भेड़ी बकरी दुम्बे कुत्ते बिल्ली, और पक्षियों मे मनाल जीजूराना खलीज पलास कस्तूरा ओंकार नूरी बांधनू चकोर तीतर बटेर मुर्ग मुर्गाबी सारस बगला बतक चकवा लाल बुलबुल लवा तोता मैना काकातूआ मोर कोकिला अगिन श्यामा कोयल पपीहा बाज़ बहरी शिकरा शाहीन गिद्ध चील कौआ हुदहुद खञ्जन बया गौरय्या पिडकी कबूतर, इनके सिवाय चूहे छछूंदर चिमगादड़ सांप अजगर बिच्छु गोह कनखजूरा मच्छर पिस्सू मक्खी शहदकी मक्खी भिड भौंरा जुगनू तितली दीमक, और रेशम क्रिमिज़ और लाखके कीडे भी इस देश में बहुत होते हैं। नदी और तालाबों मे मछली मेंडक जोक और कच्छुए रहते हैं। और बड़े दर्याओ में मगर और घड़ियालों का डर है। दक्षिण में समुद्र के किनारे कौडी और मोतीवाले सीप भी होते हैं। हमने सिंह और बाघ भिन्न भिन्न लिखाहै, यद्यपि बहुतेरे लोग बरन कितनेही कोशकर्त्ताभी इन दोनों के बीच भेद नहीं करते पर सिंह वह है जिसे संस्कृत में केसरी और फारसी में, शेरबब्र और अंगरेज़ी मे लायन कहते है। उसकी गर्दन पर केसर अर्थात् घोड़े की यालों के से बहुत से झबड़े झबड़े बाल रहते हैं और शेर से अत्यन्त अधिक बल पराक्रम और साहस रखता है, ये जानवर अब बहुत कम रहगए, कभी कभी हरियानेके जंगलों में मिल जाते हैं। और बाघ वह है जिसे फारसी में शेर कहते हैं और जिससे

तमाम तराई और सुन्दरबन भरा पड़ा है। चीता यहां के राजा लोग हिरन मारने के लिये पालते हैं। शिकार के समय इस जानवर की आंखों मे पट्टी बांध वहली पर बिठा साथ ले जाते हैं, जब किसी तरफ़ हिरनों का झुण्ड निकलता है तो तुरन्त उसकी आंखसे पट्टी हटा देते हैं; और वह बिजली की तरह लपक कर उन में से एक को जा ही दबाता है। हाथी और गैंडे रंगपुर सिलहट आशाम, त्रिपुरा और चटगांव के जंगलों मे बहुत हैं, पर हाथी दक्षिण के जंगल में बहुत अच्छा होता है, और हिमालय की तराई मे जो पकडा जाता है वह ऐसा बड़ा और उसका चिहरा इतना उभरा हुआ नही रहता। हाथी—पकड़ने के लिये जंगलो में गढ़े खोदकर मिट्टीसे वे मालूम ढक देते हैं, जब हाथियों का झुण्ड उधर आता है तो जो उनमें गिर रहता है उसी को पकड़ लाते हैं। पर सुन्दर बनके पास जमीन दलदल होने के कारन गढ़ा खोदना कठिन है, इसलिये हाथी के पकड़नेवाले चालीस पचास आदमी इकट्ठे होकर पलेहुए हाथियों पर सवार बड़े बड़े मज़बूत रस्सो के फन्दे बनाकर जंगल में जाते हैं, जब जंगली हाथी इनके हाथियो के मारने के लिये हल्ला करके आते हैं तो ये उनको फन्दे में फसा लेते हैं, कोई उसकी गरदन में रस्सा डालता है और कोई उसकी सूंड़ फसाता है और कोई पैर कस लेता है, निदान उन रस्सो का एक एक सिरा उन पले हुए हाथियों की कमर में बंधे रहने के सबब फिर वे जंगली हाथी भाग नहीं सकते और चारो तरफ़ से जकड़ जाते है। पर उस काम में जानजोखों बड़ी है इसलिये अक्सर हाथी पकड़ने वाले एक बड़ा बाड़ा बनाते हैं, खूब मजबूत लकड़े गाड़ कर और उसके गिर्द खाई खोद देते है, अन्दर जाने को केवल एक दरवाज़ा रखते है, लेकिन वह भी इस ढब का कि जैसे जंगलो में जाने की राह रहती

हैं, जो हाथी को मालूम पड़जाय कि यह दरवाज़ा आदमी का बनाया है तो कदापि उसके अन्दर पैर न धरे, क्योंकि यह जानवर बड़ा होशयार होता है, और उस बाड़े से मिलाहुआ उसी तरह का एक ऐसा छोटा बाड़ा रखते हैं कि जिस मे जाकर फिर हाथी घूम न सके निदान जब वह बाड़े तैयार हो जाते हैं तो बहुत से आदमी उन जंगलों को जा घेरते हैं कि जिनमें हाथी रहते हैं, और दूर दूर से इस तरह पर ढोल इत्यादि की आवाज़े करते हैं, और आग जलाते हैं कि उन हाथियों का झुण्ड हटते हटते उसी बाड़े के दरवाज़े पर आ जाता है, और जब सारे हाथी उस बाड़े के अन्दर चले जाते हैं तो ये लोग तुरन्त उसका दरवाज़ा बड़ी मज़बूती से बन्दकर देते हैं, जब हाथी कोई राह निकलने की नही पाते उस वक़्त जो उनको गुस्सा होता है वह तमाशा देखने लाइक़ है, निदान कुछ दिनमें भूख प्यास और दौड़ने से वे सुस्त और काहिल होजाते हैं तब अन्दर से उस छोटे बाड़े का दरवाज़ा खोलते हैं, और ज्यों हीं एक हाथी उसके भीतर आ जाता है तुरन्त उसको बन्दकर देते हैं, इस छोटे बाड़े के गिर्द मचान बंधे रहते हैं, हाथी जगह की तंगी से घूम भी नहीं सकता बिलकुल बेकाबू हो जाता है ये मचानों पर चढ़कर अच्छी तरह उसे रस्सों से जकड़ लेते हैं, और उन रस्सों को अपने सधेहुए हाथियों की कमर से कसकर तब उसे बाहर निकालते हैं और किसी पेड़ से बांध देते है. इसी तरह एक एक करके जब सब हाथियों को निकाल चुकते हैं तब फिर धीरे धीरे उनको खिला पिलाकर आदमियों से परचा लेते हैं। आगे यहां के राजा और बादशाह लड़ाई के वक़्त दुश्मन की फौज के साम्हने अपने सधाए हुए मस्त हाथियों की सूंड़ों मे दुधारे खाड़े देकर हुलवा देते थे, पर अब तोप के आगे बेचारे हाथी की क्या पेश जासकती है केवल सवारी और बार-

दारी के काम में आते हैं । पुरु राजा ने झेलम के किनारे पर दस
ार जंगी हाथियो के साथ सिकंदर का मुक़ाबला किया था । आसि-
ौला के पास सब से बड़ा हाथी जो त्रिपुरा के जंगल से पकड़ागया
साढ़े दस फुट ऊंचाथा, पर स्काट साहिब के लिखनेसे मालूम हुआ
उन्होंने उस जंगल में बारह फ़ुट दो इंच तक ऊंचा हाथी सुना
। रूस के बादशाह बड़े पीटर को ईरान के बादशाह ने जो हाथी
ोहफ़ा भेजा था, और जिसकी खाल अब तक वहां के अजाइबख़ा-
में रक्खी है, सोलह फुट ऊंचा था मालूम नहीं कि इसी जगह से
या था या किसी दूसरे मुल्क से आया । गैंडे से मजबूत दुनिया में
ोई दूसरा जानवर नही, इसका चमड़ा ऐसा कड़ा होताहै कि उस
र सिवाय गोली के तीर तलवार और कोई भी हथियार कुछ काम
हीं करता, ढाल अच्छी उसी के चमड़े की बनती है, इस जानवर
न शेर लड़ना चाहता है और न इसको हाथी छेड़ता, इसे जंगल
ा चक्रवर्ती राजा कहना चाहिये, यदि डील डौल में हाथी से छोटा
, पर जब उसके पेटमें अपनी खाग मारता है तो फिर हाथी चित्त
ी गिर पड़ता है और गैंडे का कुछ भी नहीं कर सकता. यह जान-
वर केवल घास पत्ते खाता है और जब तक कोई इसे न सतावे तो
यह भी किसी जीव को कुछ दुख नही देता । अरना भैंसा भी बड़ा
भयानक जानवर है, किसी किसी के सींग दश फुट तक लम्बे होते
हैं । कस्तूरिया-हिरन हिमालय के पहाड़ो में होता है, लोगों ने यह
बात बहुत गलत मशहूर कर रक्खी है कि उसके पैर की नलीमें जोड़
नहीं होता और वह बैठ नही सकता, जैसे और सब जानवर
फिरते दौड़ते बैठते हैं इसी तरह वह भी सब काम करता है,
में जब ऊंचे पहाड़ों पर बर्फ बहुत पड़ जाती है तब यह

रता है, उन्हीं दिनों मे इसका शिकार होता है, इस जानवर की नाभी मे एक छोटी सी थैली रहती है जिसको नाफ़ा कहते हैं उसी के अन्दर कस्तूरी है, जब उसे मारकर उसके पेट से नाफा निकालते हैं, तो कस्तूरी उसमे लहू मास की तरह गीली रहती है, धूपमे रखकर सुखा लेते है, जो कस्तूरी खाने मे बहुत कड़वी और तीखी हो उसे असल और जो कसैली या दूसरे मज़े पर हो उसे बनावट समझना चाहिये, और भी इसकी बहुत परीक्षा हैं। बरड कक्कड सकीन घोड़ल सुरागाय और ईल ये सब जानवर बर्फी-पहाड़ों के पास होते हैं। सकीन एक तरह का जंगली भेड़ा है, लेकिन सींग उसके ऐसे भारी होते हैं कि एक आदमी से नहीं उठ सकते। गाय को सुरा और बैलको याक कहते हैं, इनके बदन पर रीछ की तरह बड़े लंबे लंबे बाल रहते हैं और उनकी दुमका चवर बनता है, वहां के लोग इन याक-बैलो पर सवारी भी करते हैं, जिन कठिन पहाड़ों में घोड़ा टट्टू नहीं जा सकता वहां वे याक पर चढ़कर बखूबी चले जाते हैं। ईल एक प्रकार की गिलहरी है, जो चिमगादड़ की तरह उड़ती है। घोड़े यहां दक्षिण मे भीमा नदी के किनारे जो तेलिये कुमैत सियाह जानू होते हैं बहुत उमदः है और काठियावाड़ और लक्खी जंगल भी घोड़े के वास्ते मख्यात है, काठियावाड का घोड़ा कूदने फांदने में खूब चालाक होता है, कहते है कि उस किनारे पर कभी किसी अरब का जहाज़ ग़ारत हो गया था उसी के घोड़ों के फैलने से वहां उन की नसल दुरुस्त हुई है, और लक्खी जंगल का घोड़ा डील डौल मे बहुत बड़ा रहता है, पांच पांच हजार तक भी उसका दाम उठता है। ऊंट जोधपुर का मसिद्ध है, सौ कोस तक एक दिन में जा सकता है। गाय भैंस गुजरात हरियाना सिन्ध मुलतान इत्यादि प

श्चिम देशों की दूध बहुत देती हैं, और बैल भी वहां के प्रसिद्ध है। ये जानवर दक्षिण मे बहुत खराब होते हैं, कदके छोटे और दूध भी थोडा देते हैं। बर्फी—पहाडोमे भेड़ी का ऊन बहुत अच्छा और बकरी के बालके अन्दर पश्मीना होता है! दुम्बे सिन्धु के तटस्थ—देशों मे होते है। पक्षियोंके दर्मियान मनाल जीजूराना खलींज और पलास बर्फिस्तान के तटस्थ पहाड़ो में, और कस्तूरा और ओंकार कश्मीर में होता है। मनाल देखनेमें मोरकी तरह खूब सूरत, पर दुम उसकी सी नही रखता। जीजूराना नूरी और बाधनू ये भी बहुत सुन्दर होते है। ओंकार के सिर में सियाह परों की एक अच्छी लम्बी कलगी रहती है कि जो इस देशके अक्सर बादशाह राजा और सर्दार अपनी टोपी और पगड़ियो मे लगाते हैं। चकोर बटेर मुर्ग लाल बुलबुल लबा लड़ने में और तोता मैना काकातूआ आदमी की बोली—बोलने मे प्रख्यात हैं, नूरी बांधनू और तोते इत्यादि सुन्दर—बन और तराई के जंगल मे जियादः मिलते हैं। मोर कोकिला अगिन श्यामा कस्तूरा कोयल और पपीहे का शब्द बहुत मधुर होताहै। बाज़ बहरी शिखरा और शाही अमीर लोग चिड़ियोंका शिकार करने के लिये पालते है। बया अपना घोंसला बड़ी कारीगरी से बनाता है, चटाई की तरह बुनता है और तीन उसमें घर रखता है बाहर नरके लिये बीच का मादा के लिये और अन्दरवाला बच्चे के लिये, और पेड़ की ऐसी पतली टहलियों से बल्कि खजूर के पत्तो से उसे लटकाता है कि जिस में अण्डो तक साप न पहुँच सके, बहुधा जुगनू कीड़े उठा लाता है कि जिस में रात को घोंसले के अन्दर उजाला रहे, सच पूछो तो पक्षियों में ऐसी होशयारी किसी में नहीं यह छोटी सी चिड़िया आदमी के सिखलाने से बड़े बड़े काम कर दिखलाती है,

तोप पर चोंच से बत्ती लगा देती है बदकार आदमी चुहल के लिये औरतों की टिकलियें दिखला कर इशारा कर देते हैं यह फौरन उतार लाती है, धन्य है सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर जिसने ऐसी ऐसी चिड़ियों को यह समझ दी। सांप इस मुल्क में वाजे ऐसे जहरीले हैं कि जिनका काटा आदमी फिर पानी न मांगे। और अजगर दक्षिण के जंगलों में चालीस फ़ुट तक लम्बे होते हैं। मछलियों में कलकत्ते के बीच तपस्या-मछली की बडी तारीफ़ है, कहते हैं कि उसके स्वाद को कोई नहीं पहुँचती। मलवार में मछलियों की इतनी बहुतायत है कि बाजे वक्त घोडों को दाने के बदल मछलियां खिला देते हैं। जोंक दक्षिण के घाटों में बहुत होती हैं, यहां तक कि बर्सात मे मुसाफ़िर को राह चलना मुशकिल पड़ जाता है। घड़ियाल गंगा मे बीस हाथ तक लम्बे होते है। कौड़ियां समुद्र के किनारे इस बहुतायत से मिलती हैं कि समुद्र के तटस्थ देशों में चूना भी कौड़ी जलाकर बनता है। मोतीवाले सीप दक्षिण देश के नीचे समुद्र में होते है, लोग गोतामारकर बहुत से सीपजानवर सैकडों बरन हजारों समुद्र की थाहसे निकाल लाते हैं और गढ़े खोदकर मिट्टी से दाब देते है, जब थोड़ी देर बाद वे सब मर जाते हैं तब एक एक को उस गढ़े से निकाल कर चीरना शुरू करते हैं, बहुत तो खाली जाते हैं किसी में मोती निकल आता है। सांप और सिंह को सब कोई बुरा कहताहै, पर सोच कर देखो तो इस मनुष्य का चित्त तुष्ट करने के वास्ते कितने जीव सताए जाते हैं॥

खान इस मुल्क में लोहा तांबा सीसा सुरमा गन्धक हरिताल नमक कोयला मर्मर यशम बिल्लौर अक़ीक़ इन सब चीज़ों की मौजूद है, और हीरा भी बहुत अच्छा और बेशक़ीमत निकलता है।

महा नदी के किनारे सम्भलपुर के इलाके में बुंदेलखण्ड मे पन्ने के दर्मियान दक्षिण में कृष्णा के किनारे कोलूर इत्यादि स्थानों में इस की खान हैं और वह प्रसिद्ध बड़ा हीरा कोहनूर जो सर्कार कम्पनी ने दलीपसिंह से लेकर महारानी विक्टोरिया को नजर दिया, शाहजहां के समय में इसी कोलूर की खान से निकला था, और मीरजुमला ने वह उस बादशाह को भेट किया था, उस समय में इसका मोल पछत्तर लाख रुपया आंका गया था। पत्थर के कोयलों की कदर आगे तो कोई नही जानता था और न यहां कभी किसी को इसकी खानका कुछ गुमान था, पर जब से अंगरेज़ोने धूएं के जहाज़ चलाए तो यह कोयला भी अब एक बड़े काम की चीज़ ठहरा वीरभूम के जिले में इसकी खान जारी है, और नर्मदा-किनारे के ज़िलों में भी इसका होना साबित है, सिवाय इन के और अनेक प्रकार के बहुतेरे रंग बरंग के पत्थर मिलते हैं कि जो अक्सर साहिब लोग अपने गहनों मे लगाते है॥

मौसिम हिन्दुस्तान मे तीन हैं जाडा गर्मी और बरसात, और हरएक ऋतु अपने अपने समय पर अच्छी बहार दिखलाती है, समुद्र के तटस्थ-देश में विशेष करके दक्षिण के घाटो पर बरसात बहुत होती है, यहा तक कि किसी किसी जगह मे नौ नौ महीने के लिये सारा सामान गृहस्थी का घर में इकट्ठा कर रखना पडता है, मेह की शिद्दत से बाहर निकलना नही होता। और हिमालय के पहाड़ों में सर्दी अधिक रहती है, जहां बर्फ नही होती वहां भी जो पहाड़ चार पांच हजार हाथसे ऊंचे है उन पर जेठ बैसाखमें आग तापनी पड़ती है। कनावर और कश्मीर में बरसात नही होती, क्योंकि उन इलाकों के चौगिर्द ऐसे ऐसे ऊंचे पहाड आगये है कि बादल जो समुद्र की

तरफ़ से आते हैं पहाड़ों की जड़ों ही में लटकते रह जाते हैं पार होकर उन इलाक़ों में नहीं पहुँच सकते। और बाक़ी सब ज़िलों में ग्रीषम ऋतु अति कठिन होती है, लूएं चलने लगती हैं और धरती तपने, अमीर लोग तहखाने और खसखाने में बैठकर पंखे झलवाते हैं, और गरीब बेचारे सूर्य के प्रचण्ड ताप से व्याकुल होते हैं॥

आदमी हिन्दुस्तान के जवांमर्द और दयावान् होते हैं यहा तक कि बहुतेरे लोग पशु पक्षी तो क्या बरन वृक्ष को भी नहीं सताते, गर्म मुल्क के सबब मिहनत कम करते हैं, और बहुधा सुस्त और काहिल बरन आराम तलब रहते हैं, यहां तक कि अक्सर लोग इसी मसल पर चलते हैं ॥ दोहा ॥

चलिवे ते ठाढ़ो भलो बातें बैठ्यो जान ।
बैठे ते सोवो भलो सोवे ते मर जान ॥१॥

पर बडा ऐब इन मे यह है कि सर्वजन हितैषी और सर्व मंगलेच्छक नहीं होते, अपना नाम बढ़ाने के लिये अवश्य कूए तालाब और पुल इत्यादि बनवाते है, पर जो काम ऐसा हो कि इन से अकेले न बन सके और दस पांच आदमी मिलकर उसे चन्दे के तौर पर बनवाना चाहे तो उसमे उनको एक पैसा भी देना भारी पड़ जाता है, निदान यहां के आदमी जो काम करते हैं सो केवल अपने नाम के लिये, यदि उसमे दूसरों का भी भला हो जावे तो आश्चर्य नहीं, पर केवल दूसरे आदमियों के भले के लिये ये कदापि कोई काम न करेंगे, चिहरा इनका बादामी आंखे लम्बी पुतलियां काली, नाक तीखी, कद मयाना, कमर पतली, और बाल लम्बे और काले रहते है। इस मुल्क मे कुल को बहुत बचाते हैं, बहुधा जैसे कुल के आदमी होते हैं वैसा ही रूप और स्वभाव रखते है. उच्च कुल के आदमी सुन्दर और भले

मानस होते हैं, और इसी तरह नीच-कुलवाले कुरूप और खोटे होते हैं, पर यह बात कुछ सब जगह नहीं है, कहीं कहीं इसका विपरीत भी देखने मे आता है। जातिभेद केवल इसी मुल्क मे है, यह बात दूसरी किसी विलायत मे नही, प्रधान तो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र ये चार हैं, पर अब इन से सैकड़ो निकल गई। रुपया इस मुल्क के आदमियो का शादी गमी मे बहुत खर्च होता है, अर्थात् लड़का लड़की के विवाह मे और मा बाप के क्रिया क्रर्म मे। सिवाय इसके जो लोग सुबुद्धी है वे अपना धन तीर्थ-यात्रा और दान-धर्म-करने मे और मन्दिर धर्मशाला कुवा तालाव पुल सरा इत्यादि बनाने मे उठाते हैं, और सदावर्त बिठलाते हैं, और कपूत और कुबुद्धी नाच रंग और तमाशबीनी में उसे उड़ा देते हैं। बाक़ी गुज़ारा इनका बहुत थोडे से में होजाता है, खाने पहने और रहने के लिये इनको बहुत नही चाहिये, गहना पहन्ना और नौकर बहुत से रखना यही बहुधा धनी और दरिद्री का भेद है। स्त्री यहां की लाज करती है, और पर्दे मे रहती हैं, आगे यह बात न थी जब से मुसलमानो की अमलदारी आई तब से यहां यह रस्म जारी हुई, आगे रानी लोग राजाओं के साथ सभा में बैठती थीं। विवाह इस देश में बहुत छोटी उमर में करलेते हैं, और इसी से पुरुष बहुधा दीर्घायु और बलवान् नही होते। पातिव्रत धर्म इस मुल्क का सा और कहीं भी नहीं, यहां उच्च कुल की स्त्री कदापि दूसरा विवाह नही करती, वरन अपने पति की लाश के साथ चिता पर बैठकर जल जाती थी। सर्कार ने अब इस सती होने की बुरी रस्म को मौक़ूफ कर दिया। आगे लौंडी गुलाम भी यहां बेचे और मोल लिये जाते थे, पर सर्कार के प्रताप से अब यह भी अन्याय दूर होगया। केवल एक बुरी

बात अब तक जड़ से नहीं गई, यद्यपि सर्कार उसके मिटाने में बहुत उद्यम और परिश्रम कर रही है, तथापि होही जाती है, अर्थात् कोई कोई दुष्ट रजपूत अपनी लड़कियों को मार डालते हैं कि जिस में किसी का सुसरा न बनना पड़े। पहले तो जीव का सताना ही बुरा है, तिस में पंचेन्द्रिय आदमी को मारना, तिस में भी स्त्री को, और तिस में भी ऐसी अवस्था में कि जिसे देख के राक्षस को भी दया आवे, और जिसका हाल सुन कर पत्थर भी पसीज जावे, और तिस में भी अपनी आत्मजा लड़की को। हम नहीं जानते कि ऐसे आदमियों को कैसी सज़ा देनी चाहिये, फांसी तो इनके वास्ते कुछ भी नहीं है, ये अपनी पूरी सज़ा को तभी पहुंचेंगे जब रौरव नर्क की अग्नि में जलेंगे। हिन्दू मुर्दों को आग में जलाते हैं, और मुसलमान मिट्टी में दाबते हैं, पर पारसी लोग न जलाते हैं न दाबते, वे अपने मुर्दों को एक खुले मकान के बीच जो केवल इसी काम के लिये बना है, धूप में रख देते हैं। भील गोंद चुवाड धागड कोल इत्यादि को जो जंगल पहाड़ों में बस्ते हैं, अंगरेज़ लोग इस मुल्क के क़दीमी बाशिन्दे अर्थात् भूमिये ठहराते हैं, और कहते हैं कि ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य उत्तर अथवा पश्चिम से आकर पहिले सारस्वत देश अर्थात् कश्मीर लाहौर मुलतान और सिन्ध इत्यादि में बसे, और फिर धीरे धीरे सारे हिन्दुस्तान में फैल गए, और इस बात के साबित करने के लिये बड़ी बड़ी दलीलें लाते हैं। निदान यह तो हमने वे बातें लिखीं जो प्राय सारे हिन्दुस्तान में मिलेंगी, पर याद रखना चाहिये कि यह ऐसी बड़ी विलायत है कि इस में एक एक सूबे के दर्मियान कई तरह के आदमी बस्ते हैं, और जुदा ही रंग रूप पहनावा और चाल ढाल रखते हैं। उत्तराखण्ड के

आदमी विशेष करके गंगा और सिन्धु के बीच गोरे सुन्दर और सीधे सादे सच्चे होते हैं, स्त्रिया वहां की ऐसी रूपवती कि मानो कहानी क़िस्से की परियों को पर काटकर छोड़ दिया है। कश्मीर की सदा से प्रसिद्ध रही है पर कमर उनकी जरा मोटी होती है। जम्बू चम्बा कांगड़ा और कहलूर इन इलाक़ों की सब से बढ़कर है, पर यह हम उन्ही लोगो का हाल लिखते है जो वर्फिस्तान से इधर नीचे पहाड़ों मे बसते है, और नहीं तो हिमालय के उत्तर भाग मे वर्फिस्तान के दर्मियान भोटिये लोग महा गलीज और अति कुरूप होते हैं, प्यास बुझाने के लिये भी झरनों मे गाय बैलो की तरह मुंह लगाकर पानी पीते है हाथ से नहीं छूते, फिर बदन धोने की कौन बात है। पोशाक मे कश्मीर की औरतें केवल एक पीरहन अर्थात् गले का कुरता पर एडी तक लटकता हुआ पहनती हैं, और सिरसे एक तिकोना रूमाल पट्टी की तरह बांध लेती है। गंगा से पूर्व नैपाल इत्यादि उत्तराखण्ड के देशो मे लोग नाटे होते हैं, और उनकी छाती और कन्धा चौड़ा, बदन गोल गोल और गठीला, चिहरा चकला आंखें छोटी और नाक चपटी होती है, उत्तराखण्ड के मुल्कों में स्त्रिये लाज कम करती हैं, और सिवाय कुलीन आदमियो के उन सब को वहां इख़्तियार है कि चाहे जितने विवाह करें और चाहे जिस पुरुष के पास जा रहें, जब कोई स्त्री एक पुरुष को छोड़ कर दूसरे के पास जाती है तो वह पहला पुरुष उस दूसरे से कुछ रुपये जो उसने विवाह के समय ख़र्च किये थे अवश्य ले लेता है। और इसी तरह जब वह स्त्री दूसरे को छोड़ कर तीसरे के पास पहुंचती है, तो वह दूसरा अपने रुपये उस तीसरे आदमी से वसूल कर लेता है। औरत क्या यह तो दर्सनी हुंडी ठहरी। और जब कई भाई

हिन्दुस्तानियों की बनाई हुई कोई नहीं पूछता, बरन हिन्दुस्तानी लोग भी अपने सब काम उन्हीं विलायती चीजों से चलाते हैं, इस देशकी बनी हुई चीज़ से राज़ी नहीं होते, अगले ज़माने मे ईरान तूरान और रूम यूनान इत्यादि देशो के सौदागर खुश्की पिशावर की राह से ऊंटों पर माल ले जाते थे, और मिसर और अरब के वेवपारी समुद्र की राह जहाज़ लाते थे, पर यह जहाज़ उतनी ही दूर मे चलते थे, जिसे अरब की खाड़ी कहते हैं, वे लोग तब जहाज–चलाने की विद्या मे ऐसे निपुण न थे जो किनारा छोड़कर दूर खाड़ी से बाहर महासागर मे अपना जहाज लेजाते। फरंगिस्तानवाले समुद्र की राह अपने जहाज हिन्दुस्तान मे लाने के वास्ते बहुत तड़फते थे, उन दिनों में वे भी अरब और मिसरवालो की तरह जहाज़ चलाने में चतुर न थे, और न भूगोल विद्या अच्छी तरह जानते थे, समुद्र को अपार और अगम्य समझ के सदा अपने जहाज़ों को तट से निकट रक्खा करते, पहले तो वहांवाले हिन्दुस्तान आने के लिये अपने जहाज उत्तर समुद्र में ले गये इस मंसूबे पर कि रूस और चीन की परिक्रमा देकर यहां पहुंचें, पर जब कितने ही जहाज उस समुद्र के जमे हुए बर्फ़ में फसकर तबाह होगये और रूस की हद से आगे न बढ़ सके, तब उस राह को छोड़कर पश्चिम तरफ़ अटलांटिक समुद्र में चले, वहां उनका जहाज़ अमरिका के महाद्वीप में जा लगा, और आगे न बढ़ सका, तब हारकर दक्षिण की राह ली; और अफरीका के किनारे किनारे केपअवगुडहोप से जिसे कोई उत्तमाशा अन्तरीप भी कहता है, मुड़कर हिन्दुस्तान में आए। जिस आदमी ने यह समुद्र की राह फरङ्गिस्तान से हिन्दुस्तान को निकाली उसका नाम वास्को-डिगामा था, आठवीं जुलाई सन् १४९७ को कि जिन दिनों में सुल्तान

सिकन्दर लोदी दिल्ली के तख़्त पर था वास्कोडिगामा तीन जहाज लेकर पुर्टगाल की राजधानी लिसवन से वहां के वादशाह की आज्ञानुसार हिन्दुस्तान की राह ढूंढ़ने के वास्ते निकला, और साढ़े दस महीने के अर्से मे उसका जहाज कल्लीकोट मे आकर लगा। निदान फरंगियों का यह पहला जहाज था कि जिसने हिन्दुस्तान का किनारा छुआ, और वास्कोडिगामा पहला फरंगी था कि जो समुद्र की राह से इस देश मे पहुंचा, और कल्लीकोट पहला नगर था जिस में इनका क़दम आया। कहते हैं कि जब वास्कोडिगामा के जहाज लिसवन से चले थे तो वहांवालो को फिर इन जहाजों के देखने की आस न थी, और इन जहाजियों को मुर्दों में गिन चुके थे, जब इन के जहाज लौट कर लिसवन में पहुंचे तो वहां के राजा और प्रजा सब को अत्यन्त हर्ष हुआ और वड़ी ही खुशियां मनाई। पुर्टगालवालों की देखा देखी फिर फरंगिस्तान के और लोग भी अपने जहाज़ इस राह से यहां लाने लगे, और हिन्दुस्तान की तिजारत से वड़े वडे फाइदे उठाए, जब से धूएं के जहाज बनने लगे तब से यहां का आना जाना फरंगिस्तान वालों को और भी वहुत सुगम होगया, और यद्यपि स्वीज के डमरुमध्य के पास थोड़ी दूर खुशकी तो अवश्य चलना पड़ता है. परन्तु रेडसी से मेडिटरेनियनसी में चले जाने से यह राह फरंगिस्तान की वहुत ही निकट पडती है। इस राह यहां से धूएं के जहाज पर इंगलिस्तान तक जाने में डेढ़ महीना भी नहीं लगता। फरंगिस्तान और अमरीका से यहां शराव, कपडे, हथियार, औजार, वरतन, धात खुशवू, किनावें, जेवर, खाने की चीजे, लिखने पढ़ने की वस्तु, कलें, खिलौने, मकान सजाने के असवाव, और तरह वतरह के अद्भुत और अनोखे पदार्थ आते हैं। और यहां से नील, शोरा, अफयून, रेशम, हाथीदांत,

रुई, चांवल, शक्कर, गोंद, जवाहिर, शाल, मलमल, गर्म मसाले और दवाइयां, उन मुल्कों को जाती है। सिवाय इन मुल्कों के ईरान तूरान तिव्वत अफगानिस्तान, वर्मा चीन अरव मिसर इत्यादि एशिया और अफरीका के देशों से भी इस मुल्क की तिजारत जारी है। अपने मुल्क में अर्थात् एक शहर से दूसरे शहर को हिन्दुस्तानी लोग जहां दर्या है वहां नाव पर, और जहां सड़कें है वहां गाड़ियों पर, और रेगिस्तान में ऊंटों पर, और पहाड़ों में भेड़ी वकरी और याकवैलों पर और वाक़ी जगहों में वैल टट्टू और खच्चरों पर, तिजारत का असवाव ले जाते है। वहुत जगहों में वार्षिक मेले भी हुआ करते हैं, कि जिन मे सव तरफ के व्यापारी माल लाते है। हरिद्वार का मेला जो हर साल मेष की संक्रांति को हुआ करता है, इस देश में सरनाम है, पर उसमे भी वारहवें वरस जो कुम्भका मेला होता है, वह वहुतही भारी है, कभी कभी वीस लाख तक आदमी इकट्ठा हो जाते हैं ॥

राज्य इस देश का सदा से सूर्य और चन्द्रवंशी राजाओ के घराने मे रहा, परंतु अगले समय के हिन्दू राजाओं का वृत्तान्त कुछ ठीक ठीक नहीं मिलता, और न उनके साल संवत् का कुछ पता लगता है, जो किसी कवि या भाट ने किसी राजा का कुछ हाल लिखा भी है, तो उसे उसने अपनी कविताई की शक्ति दिखलाने के लिये ऐसा वढ़ाया कि अव सच से झूठ को जुदा करना वहुत कठिन पड़ गया। सिवाय इसके ब्राह्मणों ने वौध राजाओं को असुर और राक्षस ठहराकर वहुतों का नाम मात्र भी अपने ग्रन्थो में लिखना उचित न समझा, और इसी तरह वौध ग्रन्थकारों ने इनके राजाओं का वर्णन अपनी पुस्तकों मे लिखना अयोग्य जाना, तिस पर भी वहुत से ग्रन्थ अव लोप हो गए, वौधों ने ब्राह्मणों के ग्रन्थ नाश

किये, और ब्राह्मणो ने बौधों के ग्रन्थ गारद किये, मुसलमानो ने दोनो को मिट्टी में मिला दिया। छापे की हिक्मत जिस्से ग्रन्थ अमर हो जाते हैं, आगे कोई नहीं जानता था, निदान हिन्दुस्तान के अगले राजाओ की वंशावली और वृत्तान्त शृङ्खलायुक्त और सम्पूर्ण ठीक ठीक अखण्डित अब कही से भी नही मिल सकता। कहते है कि सब से पहला राजा इस देश का मनु का बेटा इक्ष्वाकु हुआ, उसकी राजधानी अयोध्या थी, उसके कुल मे बडे बड़े नामी राजा हुए, सब के भूषण राजा रामचन्द्र तक उस गद्दी पर इक्ष्वाकु बंश के सत्तावन राजा बैठ चुके थे, और फिर छप्पन रामचन्द्र से सुमित्र तक बैठे। सुमित्र अयोध्या का पिछला राजा था, विक्रमादित्य से कुछ दिन पहले उसका देहान्त हुआ। जयपुर जोधपुर और उदयपुर के राजा तीनो अपनी असल रामचन्द्र की औलाद से बतलाते हैं। राठौर अर्थात् जोधपुरवाले मुसलमानों के चढ़ाव के समय क़न्नौज की गद्दी पर थे, जब मुसलमानो ने वहां से निकाला तो मारवाड़ में आए। कछवाहे अर्थात् जयपुरवाले पहले नरवर मे थे। गहलौत अर्थात् उदयपुरवालो की पहली राजधानी सूरत के पास वल्लभीपुर था। इक्ष्वाकु के बहनोई बुध के वंशवाले राजा चन्द्रवंशी कहलाए, इनकी राजधानी प्रयाग मे थी। बुध के बेटे पुरूरव के पड़पोते ययाति के तीन बेटे थे, उरु, पुरु और यदु, पुरु की सत्ताईसवी पीढ़ी मे हस्ती ने हस्तिनापुर बसाया। हस्ति की तेईसवीं पीढ़ी मे युधिष्टिर ने महाभारथ जीतकर इन्द्रप्रस्थ में, जिसे अब दिल्ली कहते है, राज किया। यदु के कुल मे इक्यावन पीढ़ी के बाद कृष्ण और बलराम उस वंश के भूषण भये, युधिष्टिर के भाई अर्जुन से लेकर तीस पीढ़ी तक उसी के कुल में इन्द्रप्रस्थ की गद्दी चली आई। पिछला राजा क्षेमराज

जो सुस्त और अचेत हुआ, तो उसका मंत्री विसर्व उसे मारकर गद्दी पर आप ही बैठा। विक्रमादित्य के समय में विसर्व से लेकर इस गद्दी पर अट्ठतीस राजा तीन घरानों के बैठ चुके थे। अट्ठतीसवें राजा राजपाल को जब कमाऊं के राजा सुखवन्त ने मार इन्द्रप्रस्थ पर कब्ज़ा करना चाहा तो महाराज विक्रम ने चढ़ाव किया और वह राज सारा अपने आधीन करालिया। फिर कोई सात सौ बरस पीछे समय के फेर फार से यह इन्द्रप्रस्थ तोमर अथवा तवार राजाओं की राजधानी हुआ, और इक्कीस पीढ़ी तक उन्हीं के हाथ में रहा, उन्नीस पीढ़ी के बाद राजा अनङ्गपाल ने पुत्रहीन होने के कारन अपने नाती पृथ्वीराज को गोद लिया। विक्रमादित्य सन् ईसवी से छप्पन बरस पहले प्रमर अथवा पवार वंश मे उज्जैन की राजगद्दी पर बैठा था, यह राजा बड़ा प्रतापी हुआ, लोग उसके गुण आज तक गाते हैं, और आज तक भी उसे परजन-दुखभञ्जन पुकारते हैं, यद्यपि वह ऐसा पराक्रमी और इतना बड़ा राजा था, पर तौ भी उस के सीधेपन और तपस्या को देखो कि राजाधिराज होकर चटाई पर सोता और अपने हाथ सिप्रा नदी से तूंबा भरकर पानी ले आता, संवत् हिन्दुस्तान मे उसी का वर्ता जाता है। उत्तर दक्षिण और पूर्व से तो उस समय में हिन्दुस्तान को बाहर के शत्रुओं का कुछ भी भय न था, क्योंकि तब जहाज़ चलाने की विद्या लोगों को अच्छी तरह न आने से दूसरी विलायत के आदमी कदापि समुद्र की राह, जो हिन्दुस्तान के गिर्द प्राय आधी दूर तक खाई तरह घूमा है, इस मुल्क पर चढाव नहीं कर सकते थे, और न कोई हिमालय ऐसे पर्वत के पार हो सकता था, इस मुल्क मे आने के लिये पश्चिम तरफ अर्थात् पिशावर मानो दर्वाजा था, और ईरान इत्यादि सिन्धु

पार के देशवाले उसी राह से इस मुल्क पर चढाव करते थे, सब से पहला चढाव जिसका पक्का पता लगता है, सिकन्दर का था। फ़ारसी तवारीख़ो मे यह बात अशुद्ध लिखी है, कि वह कन्नौज तक आया। खुद सिकन्दर के साथी लोग अपनी यूनानी—किताबो मे लिखते हैं, कि वह सतलज इस पार न उतर सका, गंगा के दर्शनों की उसके मन मे लालसा ही रही। पंजाब के राजाओ को तो उस ने लड़ भिड़ कर ज्यो त्यों अपने मुवाफिक़ कर लिया था, पर जब उसकी फ़ौज ने सुना, कि मगधदेश का नागबंशी राजा महानन्द छ लाख पियादे तीस हज़ार सवार और नौ हजार हाथी की भीड़ भाड़ रखता है, तो उनका दिल यकबारगी टूट गया और आगे बढ़ने से इनकार किया, नाचार फौज के फिर जाने से सिकन्दर को भी उसी जगह से लौटना पड़ा। सिकन्दर के पीछे फिर क़ई बार ईरान के बादशाहों ने इस देश पर चढ़ाव किया, पर जय ऐसी किसी ने न पाई, जो मध्यदेश तक आता, जो चढ़े सो सिन्धुही के तटस्थ देशों में लड़ भिड़ कर लौट गए, यहां तक कि सन् १००१ ईसवी मे महमूद गज़नवी ने अपने लशकर की बाग हिन्दुस्तान की तरफ मोड़ी। उस समय में उज्जैन और मगध का राज बहुत दिनों से नष्ट होगया था, और नए नए घरानों के नए नए राजा खण्ड खण्ड मे राज करते थे, क्षत्रियों का बहुधा नाश होगया था, और ब्राह्मणों से लेकर शूद्र अहीर पहाड़ी और जंगली मनुष्यों तक गद्दी पर बैठ गए थे। दिल्ली तवारों के आधीन थी कन्नौज राठौरो के हाथ था, और मेवाड़ मे गहलौतो का राज था, आपस मे नित के बैर से बाहर के शत्रुओं का मन बढ़ा, और सब का एक महाराजाधिराज के न रहने से उनको इस देश में घुस आना सहज हो गया, निदान महमूद ने पचीस बरस के भीतर बारह

बार हिन्दुस्तान पर चढाव किया, और बारही बार जय पाई, वह कन्नौज और कालिञ्जर तक आया, और यहा तक सारा मुल्क लूट मार से तबाह कर दिया, महमूदशाह के विजयी होने से हिन्दुस्तान का भरम खुल गया, और फिर हर एक यहा आकर लूट मार मचाने लगा। सन् ११९१ मे शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाव किया, पहली लडाई मे तो उस ने महाराज पृथीराज से शिकस्त खाई, पर दूसरी मे, जो थानेसर के पास तलावडी के मैदान मे हुई थी और जिस मे कम से कम तीन लाख सवार और तीन हजार हाथी पृथीराज के साथ थे और पैदलो की कुछ गिनती न थी, पृथीराज को उसने पकड लिया, और दिल्ली अपने गुलाम कुतवुद्दीन ऐवक को दी। पृथीराज हिन्दुस्तान का आखिरी स्वाधीन राजा था, हिन्दुओ का राज उसी के साथ गया॥

॥ कवित्त ॥

केते भये यादव सगर सुत केते भये
जात हू न जाने ज्यो तरैया परभात की।
वलि वेणु अम्बरीप मानधाता महलाद
कहां लौ कहिये कथा रावण ययात की॥
वे हू न वचन पाये काल कौतुकी के हाथ
भांति भाति सेना रची घने दुख घातकी।
चार चार दिना को चवाव सव कोउ करौ
अन्त लुट जैहै ज्यो पूतरी वरात की॥ १॥

सन् १२०६ मे कुतवुद्दीन दिल्ली के तख्त पर बैठा, और यही गुलाम यहां हिन्दुस्तान मे मुसलमानो की वादशाहत का बुनियाद-डालनेवाला हुआ, फिर धीरे धीरे ये सारे मुल्क के मालिक वनगए,

और नौबत बनौबत एक खानदान विगड़ने के बाद दूसरे खानदान के आदमी सल्तनत करते रहे, यहां तक कि सन् १३९८ मे समरक़न्द के बादशाह तैमूरलंग ने बानवे दस्ते सवारों के लेकर चढ़ाव किया, और दिल्ली को फतह कर लिया। तैमूर तो दिल्ली मे सोलही रोज रहकर अपने देश को चला गया लेकिन उसके पोते के पड़पोते बाबर बादशाह ने सन् १५२६ मे पानीपत की लड़ाई के दर्मियान दिल्ली के बादशाह इबराहीम लोदी को मारकर यह सारा मुल्क अपने क़ब्ज़े मे कर लिया। बाबर का पोता अकबर इस मुल्क मे बड़ा नामी बादशाह हुआ, बरन ऐसा बादशाह तो मुसलमानो मे कोई भी नहीं था, आज पर्य्यंत लोग उस का यश गाते हैं, और भलाई के साथ उसे याद करते है। जिन दिनो इस का बाप हुमायूं शेरशाह से शिकस्त खाकर सिन्ध की राह ईरान को भागाथा, तो उसी सिन्ध के रेगिस्तान मे उस आफत के दर्मियान, कि हुमायूं के पास चढ़ने को घोड़ा भी मौजूद न था, एक सवार के टट्टू पर चलता था और पीने को पानी मुश्किल से मिलता था, अकबर का जन्म हुआ, और जब हुमायूं ने अपने भाई कामरां से, जो काबुल मे था, आते वक्त लड़ाई की तो कामरा ने अकबर को, जो उस वक्त उसके क़ाबू मे था, भाले से बाधकर किले के बुर्ज पर लटका दिया था, कि जिस मे हुमायूं की फौज क़िले पर हथियार न चलावे, क्या महिमा है सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर की, कि वही अकबर सब बादशाहो का सिरताज हुआ, वह तेरह बरस की उमर मे तख्तपर बैठा, और इक्यावन बरस राज किया। यद्यपि यह इतना बड़ा बादशाह था कि जिस के इसतबल में पांच हजार हाथी, और दश हजार घोड़े खास के बँधतेथे, और जिस का डेरा दौलतसरा कमखाब के फ़र्श और मख़मली

मोती टके हुए पर्दोंवाला सफ़र के वक्त पांच मील के घेरे में खड़ा होता, हर सालगिरह को सोने से तुलादान करता, और सोने के बादाम अपने दरबारियों में लुटाता, पर तौ भी वह रइयत के साथ बहुत सीधा सादा रहता। आठ पहर में केवल एक बार खाता गोश्त से अकबर परहेज़ रखता, हिंसा बुरी जानता, नाम को मुसलमान था मन से सूरज की पूजा करता, आदित्यवार के दिन उसकी अमलदारी भर में जीव मारने की मनाही थी। रइयत उसे इतना चाहती, कि जीते जी उसे मन्नत चढ़ाने लगी थी, और कितनेही आदमी उस के मुरीद अर्थात् शिष्य हो गए थे। उसके राज्य में रुपयेका दोमन पौने चौदह सेर जौ बिकताथा, और एक मन बाईस सेर गेहूं, बाज़े बाज़े आईन इस बादशाह ने बहुतही अच्छे जारी किये थे। यह भी उसी का जारी किया हुआ आईन था, कि जब तक दूल्हा दुल्हन समझदार न हों, कि एक दूसरे से अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर करें, छोटी उमर में हर्गिज़ शादी न होने पावे। जैसे बुद्धिमान और विद्या में निपुण लोग अकबर की सभा में इकट्ठा हुए थे, ऐसे किसी दूसरे बादशाह के समय में नहीं भये, शेख़ अबुलफ़ज़ल, राजा बीरबल, राजा टोडलमल, नव्वाब ख़ानखाना, तानसेन इत्यादि उस के यहां नव रत्न में गिने जाते थे, यह मिहनती मुश्किल काम राजा टोडलमल और अबुलफ़ज़ल का था, जो इस मुल्क के दफ़तर को हिन्दीसे फ़ारसी में उतारा, अब तक भी बहुत बन्दोबस्त अबुलफ़ज़ल के बांधे हुए उसी तरह पर चले जाते हैं। सूबे, सर्कार, महाल, पटवारी, क़ानूनगो, यह सब उसी ने मुक़र्रर किये थे, निदान शाहआलम तक यह बादशाहत इसी घराने में चली आई। शाहआलम से अंगरेज़ोंने लेली। यह घराना तैमूर का मुसलमानों की सल्तनत में सब से पिछला था, जिस

ने यहां बादशाहत का डङ्का बजाया। शाहआलम के पोते बहादुर-शाह अब भी रंगून मे नजरबन्द हैं, खाने को सर्कार से पाते हैं, बादशाहत शाहआलम के साथ गई, अब यहां सिक्का सर्कार अंगरेज़ बहादुर का चलता है। कुतबुद्दीन ऐबक से लेकर शाहआलम तक पैसठ मुसलमान बादशाह दिल्ली के तख्त पर बैठे, और शाहआलम के मरने तक पूरे छ सौ बरस बादशाहत करते रहे। इन में से उनतीस तो अपनी मौत मरे, और तेईस दूसरे के हाथ से मारे गए, सात बन्दीखाने मे मरे, और छ का पता नही, पड़ता फैलाने से फी बादशाह कुछ ऊपर नौ बरस बादशाहत आती है। स्वाधीन स्वेच्छाचारी बादशाहो का प्राय सब जगह ऐसाही हाल है। यह केवल आईनी-बन्दोबस्त का फ़ाइदा है, कि जो इंगलिस्तान मे इथलरेड से चौथे विलियम तक ८५६ बरस के अर्से मे कुल ४२ बादशाह हुए, और पड़ता फैलाने के हिसाब से फ़ी बादशाह कुछ ऊपर बीस बरस सल्तनत करते रहे, कि जो यहां की बनिस्बत दूनी से भी अधिक है। अंगरेज़ों ने जब देखा कि पुर्टगाल इत्यादि फ़रंगिस्तान की विलायतों के आदमी हिन्दुस्तान मे जाते हैं, और यहां की तिजारत से बड़ा फ़ाइदा उठाते, तो फिर इन दैवी पुरुषों से कब चुप चाप रहा जा सकता था, इन्हों ने भी अपने माल के जहाज़ यहां को रवानः किये। और सन् १५९९ मे लन्दन-शहर के दर्मियान बहुत से आदमियों ने आपस के साझे मे कुछ रुपया इकट्ठा करके इस मुल्क मे बनज-ब्यौपार-करने के लिये एक कोठी खड़ी की, और दूसरे ही साल वहां के बादशाह से कई एक शर्त्तों पर इस बात की अपने नाम एक सनद लिखवा ली, कि सिवाय इन साझियों के दूसरा कोई अंगरेज़ हिन्दुस्तान मे तिजारत न करने पावे। लेकिन

जब इस मुल्क मे उन्हों ने अपना क़ब्ज़ा और दख़ल करना शुरू किया, तो सन् १८१३ मे उन को तिजारत-करने की मनाही हो गई, और वह अटक उठगई। अंगरेज़ी में साझियों को कम्पनी कहते है, इसलिये इन साझी-सौदागरों का नाम भी ईस्टइण्डिया कम्पनी रखा गया। कम्पनी किसी बुढ़िया का नाम नहीं है, जैसा लखनऊ मे जब लार्ड वालेशिया गवर्नर जेनरल विलिज़्ली के भानजे सैर को गये थे तो अखबार नवीसों ने वहां बादशाह से अर्ज़ की, कि लाट साहिब के भानजे कम्पनी के नवासे तशरीफ लाये है, वे लोग तब तक यही जानते थे, कि कम्पनी बुढ़िया, और गवर्नर जेनरल उसके बेटे है। जब इङ्गलिस्तान मे यह कम्पनी खड़ी हुई, तो यहा तख्त पर अकबर बादशाह था। हिन्दुस्तान मे पहले ही पहल इन की कोठियां सन् १६११ मे सूरत, अहमदाबाद, खम्भात और घोघे मे जारी हुई, १६५२ मे बंगाले के दर्मियान बलेश्वर मे, और उस से दो बरस पीछे मन्दराज में भी होगई। सन् १६६४ मे पुर्तगाल के बादशाह से बम्बई का टापू मिला। सन् १७०० मे बगाले के सूबेदार ने कलकत्ता, गोविन्दपुर और छोटानटी, ये तीन गांव इन को दे दिये, और कलकत्ते मे एक क़िला भी, जिस का नाम अब फोर्ट विलियम है, बनाने की आज्ञा दी, उस समय कलकत्ते मे कुल सत्तर घरों की बस्ती थी। सन् १७५६ मे बगाले के सूबेदार नव्वाब सिराजुद्दौला ने इस बात पर, कि अंगरेज़ो ने उसके एक आदमी को, जो ढाके से कुछ खज़ाना लेकर भागाथा पनाह दी, उन से नाखुश होकर कलकत्ता छीन लिया, और १४६ अंगरेज़ो को, जो उस समय वहां मौजूद थे, ऐसे एक छोटे से घर मे, जिस का विस्तार बीस फुट मुरब्बा से अधिक न था, और जिसे अब तक ब

लोग "ब्लेकहोल" अर्थात् कालीबिल पुकारते हैं, बन्द किया, कि दूसरे दिन उन में से कुल २३ जीते निकले, बाक़ी १२३ रात ही भर में वहां दम घुटकर मर गए। निदान यह खबर सुनते ही कर्नेल क्लैव साहिब मन्दराज से ९०० गोरे और १५०० सिपाही लेकर कलकत्ते में आए, कलकत्ता भी लिया और फिर मुर्शिदाबाद पर चढ़ाव कर दिया। सन् १७५७ की तेईसवीं जून को पलासी की लड़ाई में नव्वाब की फौज ने, जो सत्तर हजार से कम न थी, शिकस्त खाई, नव्वाब भागा और उसी दिन मानो अंगरेजी अमलदारी की नेव जमी। थोड़े ही दिनों पीछे सन् १७६५ में शाहआलम ने, जो तब दिल्ली के तख़्त पर था, विहार, बंगाला और उड़ेसा, इन तीनों सूबे की इस्तिमरारी दीवानी का परवाना कम्पनी के नाम लिख दिया, कि जिसमें दो करोड़ रुपये साल की आमदनी का ठिकाना हुआ। और वज़ीर आसिफुद्दौला ने रुहेलों की लड़ाई में मदद लेनेकेलिये सन् १७७५ में बनारस का इलाका इन के हवाले किया। अब देखना चाहिये महिमा सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की, कि ये लोग कहां से कहा बढ़ गए, और किस दर्जे को पहुंचे, जो लोग सौदागरी के लिये घर से निकले वे अब यहां का राज करते है, और जो लोग लाखों सवार के धनी कहलाते थे, वे इन से खाने को टुकड़े मांगते है। पर सच पूछो तो यह केवल अपनी नीयत का फल है, अंगरेज लोग यहां सौदागरी के लिये आये थे, और वही सौदागरी मात्र चाहते थे, अपने बचाव का बन्दोबस्त अवश्य रखते थे, और जिसपर विपत पड़ती उसे मदद देते, पर यहां वालों ने इन को छेड़ना और सताना शुरू किया, जैसा किया वैसा ही फल पाया, जिसने इन के साथ ज़ियादती की, इन्हों ने भी उसे अच्छी तरह उस ज़ियादती का मज़ा

घरवाया। उस वक्त में हिन्दुस्तान की बादशाहत का अजब हाल था, आपस की फूट और नित के लड़ाई झगड़ो मे तैमूर का खान-दान जीर्ण और जराग्रस्त होगया था, तिस मे भी सन् १७३९ में ईरान के बादशाह नादिरशाह और फिर थोड़े ही दिनों बाद पैदर्पै तीन चढाव अहमदशाह दुर्रानी के जो उसके अमीरो मे था इस मुल्क पर ऐसे हुए कि वह और भी जर्जरीभूत हो गया, सूबेदारों ने बादशाह को नाम मात्र भी मानना छोड़ दिया, और जिसके बाप दादा ने कभी चप्पे भर जमीन पर दखल न पाया था उसने भी हिन्दुस्तान की सल्तनत पर दिल दौड़ाया, इधर दक्षिण के सूबेदार निज़ामुल्मुल्क ने हैदराबाद मे अपनी हुकूमत जमाई, और उधर नव्वाब वज़ीर ने अवध का सूबा अपने तले दबालिया, इधर आगरे तक मरहठो ने लूट मार मचादी, और उधर सरहिंद तक सिक्खो का हल्ला होने लगा, बादशाह लोग दिल्ली के क़िले मे पड़े थे, पर वहां भी उन को कौन बैठा रहने देता था, आज एक आदमी तख्त पर बैठा कल दूसरे ने उसका गला काट सिक्का अपने नाम का चलाया, अभी तलवार का लहू सूखने नही पाया कि तीसरे ने उसी तलवार से उस को भी मौत का जामा पिन्हाया और ताज बादशाही का अपने सिर पर रक्खा, कभी बादशाह मरहठों की क़ैद में पड़ता था और कभी पठान उसे घेर लेते थे, सन् १७०७ से कि जब औरंगज़ेब आलमगीर बादशाह अकबर का पड़पोता मरा सन् १७६० अर्थात् शाहआलम के राज्याभिषेक तक तिरपन बरस के अर्से में नादिरशाह और अहमदशाह छोड़कर चौदह बादशाह दिल्ली के तख्त पर बैठे, और इन में से यदि मुहम्मदशाह की सल्तनतके तीस बरस निकाल डालो तो तेईस बरस मे तेरह बादशाह ठहरते है अब सोचो

जहां तख़्त औ ताज की ऐसी छीनछान मचेगी वहां की सल्तनत भी भला क़ाइम रह सकती है ? सदा से यही दस्तूर चला आया जब सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर देखता है कि अब लोग मेरी प्रजा का पालन नहीं कर सकते और जिस काम के लिये इन्हें नियुक्त किया था उसे छोड़कर विषय वासना मे पड़ गए, तब तुर्त उन्हें दूर करता है और जो उसके बंदे इस काम के योग्य हैं उन्हें उनकी जगह पर बिठलाता है इस में कुछ सन्देह नहीं कि जो इस हालत में अंगरेज लोग हिन्दुस्तान को न लेते फरासीस अथवा फरंगिस्तान की किसी दूसरी विलायत के बादशाह के कब्जे मे आ जाता, और यदि वे भी न लेते तो कोई दूसरी क़ौम सिन्धु पार से आकर इस मुल्क को ज़ेर करती, तैमूर के खानदान से बादशाहत निकल चुकी थी, ईश्वर की कृपा से दिन हिन्दुस्तानियो के अच्छे थे जो अंगरेज यहां आए, मानो सूखे हुए खेत फिर लहलहाए। निदान पहले तो हैदरअली के बेटे टीपू सुलतान का सिर खुज लाया कि इन अंगरेजों से बैर बिसाहा, और बैठे बिठाए इनके साथ लड़ना विचारा। हैदरअली मैसूर के राजा का नौकर था, नमकहरामी करके उसका सारा मुल्क अपने क़ब्जे में कर लिया, टीपू का यह इरादा था कि अंगरेजों को दक्षिण से निकाल दे, और उभारा उसे फरासीसियों ने था, कई बरस के लड़ाई झगड़े मे आख़िरकार सन् १७९९ में श्रीरङ्गपट्टन के हल्ले के दर्मियान अंगरेजी सिपाहियों के हाथ मारा गया, और मुल्क उसका बहुत सा सरकार के इख़्तियार मे आया। उन्हीं दिनों में सरकार अंगरेज बहादुर को मरहठो की तरफ से खटका पैदा हुआ, फरासीसियो को वे भी नौकर रखने लगे थे, लार्ड विलिज्ली साहिब ने जो उन दिनों यहां के गवर्नरजेनरल थे उनके पेशवा बाजीराव से

दोस्ती करनी चाही, उस वक्त तो दौलतराव सेंधिया के बहकाने से उसने न माना, लेकिन जब जस्वंतराव हुल्कर ने उस पर चढ़ाव किया तो सरकार से क़ौल करार भी किया और बुंदेलखण्ड का इलाक़ा भी दे दिया, यह बात सेंधिया को बुरी लगी, उसने चाहा कि नागपुरवाले से मिलकर कुछ फ़साद उठावे, पर इधर लार्ड लेकने डीगलसवारी और दिल्ली, और उधर जेनरल विलिज्ली ने असाई और अरगांव, की लड़ाइयों में इन दोनों के दांत ऐसे खट्टे किये कि सन् १८०३ में नागपुर के राजा ने तो कटक का ज़िला और सेंधिया ने अन्तरवेद अर्थात् गंगा जमना के बीच का मुल्क उनको देकर अपना पीछा छुड़ाया इस नए मुल्क के हाथ लगने से अंगरेज़ों की अमल्दारी दिल्ली तक पहुँच गई। उन दिनों में शाहआलम सेंधिया की क़ैद में था, लार्ड विलिज्ली ने उसको उसकी क़ैद से छुड़ाकर गुज़ारे के वास्ते लाख रुपए महीने से कुछ ऊपर पिंशन मुक़र्रर कर दिया। थोड़े ही दिनों बाद नयपालियों ने अपनी हद से पैर निकाला, और पहुँचते पहुँचते कांगड़े; तक पहुँचे, जब पहाड़ से उतर कर तराई में अंगरेज़ी रऐयत को सताने लगे तो सरकार ने उनको भी नसीहत देना मुनासिब समझा, और सन् १८१४ में मलौन के किले पर उनकी फ़ौज को शिकस्त देकर काली नदी से पश्चिम तरफ के पहाड़ तो अपने आधीन कर लिये, और पूर्व तरफ़ के उनके पास रहने दिये। यद्यपि वाजीराव ने विपत के समय अंगरेज़ों से क़ौल क़रार कर लिया था पर दिल से इन के साथ नर्द दगाकी खेलना चाहता था, छठी नवम्बर सन् १८१७ को पूना के दर्मियान रज़ीडंटी में आग लगवा दी, और अंगरेज़ी सिपाही जो थोड़े से वहां रहते थे उनका मुक़ावला किया। इधर सेंधिया की भी एक चिट्ठी नयपाल के राजा

के नाम इस मज़मून की पकड़ी गई, जिस से उसकी दिली दुश्मनी सर्कार अंगरेज़ के साथ साबित हो गई । पिंडारों ने प्राय पच्चीस हज़ार सवार के इकट्ठा होकर सारे मुल्कमें लूट मार मचा रखीथी। हुल्कर के कारदार भी सर्कार के दुश्मनों की पच्छ करते थे । अमीरखां पठानों के साथ रजपुताने को तबाह कर रहा था । यद्यपि सब तरफ इस ढब से हलचल पड़गई थी, और सारे हिन्दुस्तान मे फसाद की आग भड़का चाहती थी, पर लार्ड हेस्टिंग्ज ने जो उस समय गवर्नर जेनरल था, इस होसयारी के साथ सबका बंदोवस्त किया, और फ़ौजों को इस ढब से चढ़ाया, कि इधर तो सेंधिया को जो सर्कार ने कहा सब मानकर रजपुताने से अपना इख्तियार बिलकुल उठा लेना पड़ा, उधर मीरखां ने अपना तोपखाना सर्कार के हवाले कर दिया, इधर बाजीराव पेशवा ने सर्कारी खजाने से आठ लाख रुपया सालाना पिंशन लेकर बिठूर में गंगा सेवन करना स्वीकार किया और उधर हुल्कर की फौज ने महीदपुर में शिकस्त खाकर सर्कारी फर्मांवरदारी को जान दिल से मंजूर कर लिया, नागपुर का राजा अपने क़सूर की दहशत से मुल्क ही छोड़ भागा, सर्कार ने कुछ थोड़ा सा इलाक़ा लेकर बाक़ी उसके वारिसों को बहाल रखा, और पिंडारे ऐसे मारे काटे गए कि नामको भी बाक़ी न रहे, जो जीते बचे वे लूट मार छोड़कर खेती बारी करने लगे। निदान सन् १८१८ मे यह मरहठों का युद्ध फ़तह फ़ीरोजी के साथ पूरा हुआ, और सब तरफ़ अमन चैन हो गया। काबुल की लड़ाई के समय सिंध के अमीरों ने करांची और ठट्ठा सर्कार को दे डालने और सिंधुनदी की राह से महसूल उठा लेने का क़रार कई बातोंके साथ किया था, पर फिर दगाकी, और अपने क़रार से पलट गए,

इस लिये सन् १८४३ में सर्कार ने उन को उस मुल्क से खारिज करके वहां बिलकुल अपना क़ब्ज़ा कर लिया। सन् १८४५ के अन्त में सिक्खों ने सतलज पार उतर कर इन पर चढ़ाव किया, पर जैसा किया वैसा ही फल पाया। पहले तो सन् १८४६ में सर्कार ने उन से केवल जलंधर-दुआब और सतलज के इस पार का मुल्क लिया था, और अपराध क्षमा करके दलीपसिंह को गद्दी पर बहाल रक्खा था, पर फिर भी जब वे लोग लड़ने भिड़ने और बखेड़ा करने से न हटे, तब सन् १८४९ में सर्कार ने बिलकुल मुल्क ज़ब्त कर लिया, और दलीपसिंह को पंजाब से निकाल कर खाने के लिये दस हज़ार रुपया महीना पिंशन मुक़र्रर कर दिया। अब इस दम अटक से कटक तक सर्कार ही की अमल्दारी है, और हिमालय से समुद्र पर्यन्त इन्हीं का डंका बजता है, बरन हिन्दुस्तान की असली सर्हद से भी पूर्व और पश्चिम में अब कुछ कुछ इन की अमल्दारी बढ़ती चली है॥

अंगरेज़ों की बराबर तो कभी किसी की याद में कोई राजा या बादशाह नहीं हुआ, और न किसी ने इन जैसा मुल्क का बन्दोबस्त और प्रजा का पालन किया। जिस तरह अब इन की अमल्दारी में यह विलायत आबाद होती चली है, ऐसी कभी नहीं हुई थी, और न इतनी धरती इस देश में कभी जोती बोई गई। ऐसा यहां कौन राजा हुआ, जो प्रजा से अपने अर्थ कुछ भी कर न लेवे, खज़ाने में जितना रुपया आवे सब उन्हीं के सुख के लिये खर्च करे। किस राजा ने ज़मींदारों के साथ ऐसा पक्का बन्दोबस्त किया था, कि जो जमा एक बार उनके साथ ठहर जावे, फिर कभी उसके सिवा और कुछ उन से न मांगे, और व्योपारियों से तिजारत के माल पर महसूल न लेवें। ऐसी सड़कें किस ने बनाई थीं, जिन पर सावन भादों

की अँधेरी रात मे बग्गियां दौड़ा करें, इतने पुल किस ने वनाये थे, कि सैकड़ों कोस बरावर चले जाओ पर घोड़े का सुम पानी में न डूबे। डाक इस तरह की किस ने वैठाई थी, कि ऐसे थोड़े महसूल पर इतनी दूर की चिट्ठियां और पुलंदे इस क़दर जल्द आ पहुंचे। पुलिस का वन्दोवस्त किस ने ऐसा किया था कि कोस कोस में सड़कों पर चौकियां बैठ जायँ। गरीवो के लड़कों को पढ़ाने के लिये किसने गांव गांव मे पाठशाला विठाये थे, और किस ने शहर में कंगालों के लिये दवाखाने वनाये थे। कव ऐसे छापेख़ाने हुये जो टके टके पर पोथियां मिले, और कब किसी राजा ने अपने वन्धुओ को इस ढब आदमियों की तरह रखा। किस राजा ने ऐसी कचहरी खोली जिसमे राजा पर भी नालिश सुनी जावे, और किसने अपनी रऐयत का माल ऐसा शिवनिर्माल्य समझा कि जो गवर्नर जेनरल भी छटांक भर दूध चाय के वास्ते लें तो उसी दम उसका दाम ज़मींदार को चुका देवे। देखो जहां भारी भारी जंगल थे और शेर हाथी रहते थे वहां अब वस्तियां बस गई, जो धरती सदा से वनजर पड़ी थी वह भी अव जोती वोई गई, विरली ऐसी जगह है जहां खेती लायक़ धरती वनजर पड़ी हो, वन तो क्या पहाड़ भी इनकी अमलदारी में खेती से खाली न रहे। हम लोगों की महारानी क्वीन विक्टोरिया, ईश्वर दिन दिन बढ़ावे प्रताप उनका, इस मुल्क की आमदनी से एक कौड़ी भी नहीं लेतीं, और हुक्म देदिया है कि जितना रुपया कम्पनी का हिन्दुस्तान से लगा था उसका वाजिवी सूद देकर बाकी हिन्दुस्तान की सारी आमदनी इन्हीं हिन्दुस्तानियों की विहबूदी और विहतरी के कामों मे लगाओ, जैसे सूर्य पृथ्वी से पानी सोखलेता है और फिर मेह वरसाकर उसी पृथ्वी का भला

सकता है। ज़मींदारों से जो मालकी जमा मुक़र्रर हो गई अब साहिब
कलक्टर का मक़दूर नहीं जो उनसे सेर भर घी भी बिना दाम मांग
सकें, या एक आदमी भी उनका किसी काम के लिये बिना पैसा
दिये बेगार में पकड़ सके। चाहे जितना माल मुल्क के एक किनारे से
दूसरे किनारे ले जाओ सरकारी अमल्दारी में एक कौड़ी भी कोई
महसूल की न मांगेगा। सड़कें पक्की कंकर और सुरखी पिटी हुई नी
कलकत्ते से दिल्ली तक और दूसरे बड़े बड़े शहरों के बीच भी बन ही
गई हैं, और बनती चली जाती हैं. पर अब लोहे की सड़कें तैयार
होती हैं, कि जिन पर धूंए की गाड़ी चला करेगी, और दूसरे दिन
मुसाफिरों को कलकत्ते से दिल्ली पहुंचावेगी। पुल जहां पक्के बनने
कठिन थे वहां लोहे के बना दिये, जो बाकी रह गए हैं उनकी भी
तैयारी हो रही है। डाक मे चिट्ठी पीछे अब कुल टका महसूल लगने
का हुक्म हो गया, चाहो लाहौर से मन्दराज भेजो और चाहे बंबई
से कलकत्ते मँगाओ। इलेक्ट्रिक टेलिग्राफ जिस्से तार के ऊपर बिजली
दौड़ाकर सूइयों के इशारे से खबरें पहुंचा करती हैं तैयार हो गई है,
उससे एकही लहजे में हजारों कोस की खबर भुगत जाया करती है।
शास्त्र में बढ़ावा देकर लिखा है कि रावण–असुर अग्नि और पवन से
काम लेता था, पर ये सुर तुल्य अंगरेज बहादुर जल, अग्नि, पवन,
धूआं वरन बिजली से भी प्रत्यक्ष चाकरी लेते है। गाड़ियां माल की
अब अकेली कलकत्ते से लाहौर को चली जाती है, न सवार साथ है न
पियादा, जो सड़क में किसी जगह पर आधी रातको भी हांक लगाओ
तो चारों तरफ से चौकीदार जवाब देंगे और उसी दम आकर खबर
लेंगे, सड़क क्या जैसे बाज़ार बस्ता है कहीं चौकी कहीं दूकान, कहीं
पड़ाव कहीं सरा कहीं कूआ कहीं तालाव, दुतर्फा दरख्तइसखूबी

से लगे हैं, मानो पथिक जन बाग़ मे चले जाते हैं। पाठशालों में लड़कों को हिन्दी फ़ारसी अरबी संस्कृत अंगरेज़ी बंगला गुजराती मरहठी सब कुछ सर्कार की तरफ़ से पढ़ाया जाता है, और अस्पताल में बीमारों की ऐसी ख़बर ली जाती है कि बाप बेटे की भी न लेगा। छापेखानों में बहुधा सर्कार भी अपनी तरफ से किताब और पोथियां छपवा देती है कि जिससे सस्ती होने से गरीब लोग भी उनसे फ़ाइदा उठावें। जेलखाने में क़ैदियों के खाने पहन्ने सोने बैठने और मिहनत करने का ऐसा बंदोबस्त है कि जिस से वे क़ैद के सिवा और किसी बात का दुख न पावें, यह नहीं कि सजा तो उन्हें क़ैद की बोली जावे और जेलखाने में वे तड़फ तड़फ कर जान से गुजर जावें, और मिहनत में भी उन से ऐसा काम लेते हैं कि जिसके सीखने से वे जन्म भर रोटी कमा खावें, और फिर कोई बुरा काम न करें। जिन राजाओं ने इन के साथ लड़ाई की थी उनको भी इन्होंने इस आराम से रखा है कि शायद वह अपनी गद्दी पर वैसा आराम न पाते। यदि एक छोटा सा ज़मींदार भी समझे कि सर्कार ने वाजिबी जमा से एक पैसा अधिक ले लिया, उसे इख़तियार है कि अदालत में सर्कार पर नालिश करे, और यदि आईन के बमूजिब उसका दावा साबित होजावे तो सर्कार को उसी दम उसका पैसा खजाने से निकाल देना पड़ता है। फ़ौज तो क्या जब खुद गवर्नर जेनरल भी दौरे को जाते हैं मक़दूर नहीं कि कोई किसी ज़मींदार से एक बोझा लकड़ी या घास बिना दाम दिये जबर्दस्ती लेसकें, न्याय और इंसाफ इसीका नाम है। देखो आगे यह मुल्क कितना बस्ता था और कितना जङ्गल उजाड़ था। रामचन्द्र के अयोध्या से रामेश्वर तक जाने में बराबर जङ्गलही जङ्गल का वर्णन लिखा है, कि जिन मे ऋषी मुनी अथवा भिल्ल इत्यादि

रहते थे। कृष्णचन्द्र के समय में भी वृन्दावन वन गिना जाता था, और गोप लोग उस में झोपड़ों पर रहते थे, और अब भी तातार के आदमी रहते हैं। अकबर के वक्त तक आगरे के सूबे में हाथी और चीते पकड़े जाते थे। क्या हुए अब वे सब बड़े बड़े जंगल जिनके नाम और वर्णन पुराणों में लिखे हैं? कौन ऐसा राजा था जो दास और दासी न रखता था, कहो यह कौन न्याय की बात है कि आदमी को जानवर की तरह पकड़ रक्खे? भिलसा के टोप पर जो दो हजार बरस से पहले का बना मालूम होता है, हिन्दू राजाओं की लड़ाई का एक चित्र लिखा है, उस में जहां सिपाही लोग स्त्रियों को दासी बनाने के लिये पकड़ रहे हैं, देखकर बदन कांपता है। खण्ड खण्ड के राजा होते थे, अयोध्या में रामचन्द्र और मिथिला में दस मंजिल के तफावत पर जनक राज करते थे, देखो महाभारत में कितने राजाओं का नाम लिखा है, और फिर ये सब सदा आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे, जहां नित की लड़ाई रहेगी वहां प्रजाकी अवश्य तबाही होगी। दो दो हजार बरस से अधिक पुरानी मुहर और अँगूठियें पीतल और तांबे की धरती से निकलती है, जो उस समय में धन बहुत था तो ऐसी चीजों पर लोग अपना नाम क्यों खुदवाते थे, बरन उस समय की जो अशरफी भी मिलती है तो अकसर हलकी और निरखे सोने की (†) पुराणों को पढ़िये और

---

(†) बहुतेरे ऐसे भी आदमी हैं कि वह कदापि इस बात को न मानेंगे कि आगे इस देश में धन अब से अधिक न था, तो उनको यह भी समझ लेना चाहिये कि हमारी मुराद उस बात के साबित करने से नहीं है, हम इस जगह केवल इतनाही साबित करना चाहते हैं

बौधमत के ग्रन्थों को देखिये तो अच्छी, तरह यह बात खुल जायगी कि राजाओ के भण्डार मे और जो सब महाजन साहूकार और कामदार राज से सम्बन्ध रखते थे उनके घरो मे अवश्य सोने चांदी

---

कि यादि इस देश की दौलत घटी भी हो तो उसके घटने का कारन अंगरेजी अमल्दारी नही है। सच करके मानो जो कभी अंगरेज़ इस वक्त मे इस मुल्क को न थाम लेते, हम लोगों का कहीं पता न लगता। दौलत जो गई तो महमूद गजनवी मुहम्मदगोरी और नादिरशाह इत्यादि उसे लेगये। दौलत जो छिपी तो लूट की दहशत से हमी लोगो ने ज़मीन के अंदर छिपाई। दौलत जो नही आती तो फरंगिस्तानवालों की बुद्धि और विद्या का बल बढ़ने से और हम लोगों के सुस्त और निरुद्यमी पड़ने से और जहाजवालों को अमरिका और दूसरे बडे वड़े टापुओं की राह मालूम होजाने से अब उस का आना नही होता। आगे वे लोग हमारी बनाई हुई चीज़े ले जाते थे, अब हमी लोग उनकी बनाई चीजे मोल लेते है। जो हीरा रूई शक्कर नील गर्म मसाले इत्यादि इस देश की पैदा दूसरे देशों को जाती थीं, वह अब अमरिका और टापुओं से वहां आती है। जो लोग अंगरेजी अमलदारी को दौलत घटने का कारण समझते है, उन्हे पुराने किस्से कहानियों पर ध्यान न करना चाहिये, इस मुल्क की उस हालत को देखे कि जब अंगरेजी के हाथ पड़ा, ईरान मे तो अंगरेज़ी अमल्दारी नही है, फिर वे लोग क्यों अपने मुल्क को आगे की बनिस्वत अब बहुत दीन और धनहीन समझते है? जरा समय के फेर फार पर निगाह करो, कि आगे एशिया और फरङ्गिस्तान में क्या तफावत था और अब क्या हो गया॥

और रथों का ढेर लगा रहता था, पर प्रजा ऐसी खुशहाल नहीं थी जैसी अब है, आगे तालाब के पानी की तरह धन एक जगह में इकट्ठा रहता था, देखने में तो बहुत पर निरा निकम्मा था, और अब लोग उसी तालाब को काटकर खेतों में लेजावें और उन्हें सींचकर अन्न उपजावें, इसी तरह वह धन सबप्रजा के बीच फैलगया, देखने में तो नहीं आता पर फल बहुत देता है। शत्रुओं को जब पराजय करते थे बुरी तरह से मारते, योगवाशिष्ठ में एककथा के बीच लिखा है कि एक राजा ने कई सौ चोर एक राक्षसी को खिला दिये, यद्यपि यह बात केवल दृष्टांत के वास्ते हो पर यह साबित है कि आगे चोरी भी बहुत होती थी, और अब सदर निजामत का रजिस्टर देखो तो भारी जुर्म हरसाल घटते जाते हैं। सब राजा एक से नहीं होते थे, इस में संदेह नहीं जो कभी कभी कोई युधिष्ठिर विक्रमादित्य और भोज के से अच्छे भी होजाते थे, पर बहुधा नाच गाने में रहते और अन्याय भी बहुत करते। देखो रघुवंश में राजा अग्निवर्ण का क्या हाल लिखा (†) है, जब रामचन्द्र की औलाद में ऐसे भए तो औरों की क्या गिनती है। कुकर्म भी बहुत होताथा, महाराज चन्द्रगुप्त नायन के पेटसे थे, अब कोई नायन रखे तो जात बाहर हो, जब राजा

---

(†) महाराज अग्निवर्ण नाच रंग और तमाशबीनी में ऐसा आसक्त होगए थे, कि प्रजा को उनका दर्शन मिलना भी दुर्लभ हुआ, और जब मंत्रियों ने महलों में जाकर बहुत सी विनती की कि महाराज आपके दर्शन की अभिलाषा में सारी प्रजा बाहर खड़ी है, तो महाराज ने उन के दर्शन के लिये झरोखे की राह अपना पैर बाहर निकाल दिया !

ने यह काम किया तो प्रजा को ज़िना के लिये कौन सज़ा देता होगा। मुसलमानों का वक्त इससे भी बत्तर था, बादशाह तो बहुधा शराब के नशे में चूर पड़े रहते थे, और फौजें उनकी लड़ाई के नाम और बहाने से मुल्क को लूटती थीं, जिस राजा नव्वाब या ज़मीदार पर उसका धन धरती अथवा उसकी बेटी छीनने के लिये बादशाही फ़ौजें चढ़ती थीं, फिर यह हाल होता था कि दूध पीते बच्चे की भी उस इलाक़े में जान नहीं छोड़ते थे, और लड़कियों को भी पकड़ पकड़ कर खराब करते थे। खुलासतुल्अखबार वाला लिखताहै कि सुलतान रुकनुद्दीन फीरोज़शाह इतनी शराब पीता था कि आखिर नाचार उसके अमीरों ने उसे क़ैद करलिया। ज़ुब्दतुत्तवारीख वाला लिखताहै कि सुलतान मुइज़्ज़ुद्दीन कैकुबाद इतनी शराब पीता था, और ऐसा ऐश और तमाशबीनी में डूब गया था, कि उसकी देखा देखी रऐयत को भी सिवाय शराब ज़िना और जुए के कुछ दूसरा शग़ल बाक़ी नहीं रहा, यहां तक कि मस्जिद और मन्दिरों में ये बातें होने लगी थीं। मआसिर रहीमी वाला लिखता है कि मुबारकशाह इस क़दर ऐयाश और खराब होगया था कि क़लम को भी उसका हाल लिखने में शर्म आती है, जनानी पोशाक पहन कर रंडियों के साथ अमीरों के घर नाच तमाशा करने को जाता, और अक्सर नंगा मादर्ज़ात दर्बार किया करता। तारीख फिरिश्तः वाला मुहम्मदशाह दखनी की तारीफ़ यों लिखता है कि उसकी सल्तनत में पांच लाख हिन्दू मारे गए, और अहमदशाह दखनी का हाल यों बयान करता है, कि जब उसने विजय नगर के राजा पर चढ़ाव किया तो पहले उस की रऐयत को क्या मर्द क्या औरत और क्या बच्चे सब को काटना शुरू किया, जिस मंज़िल में पूरे बीस हज़ार आदमी मारे जाते वह

तीन दिन मुक़ाम करता और बड़ी ख़ुशियें मनाता । यही जुब्दतुत्तवारीख़वाला सुल्तान मुहम्मद तुग़लक़ का ज़िकर इस तरह पर लिखता है, कि जब उस ने रइयत पर महसूल इस क़दर बढ़ाया कि उस का अदा करना उनकी ताक़त से बाहर था, तो दुआबे के सारे जमींदार अपने छान छप्पर और खलिहान फूंक कर गांव छोड़ भागे. बादशाह ने सुनतेही अपनी फ़ौज को हुक्म दिया कि सारे दुआबेको लूट लो, और जहां जो जमींदार मिले बेशक मारडालो. वरन आप भी इन बेचारे जमींदारों का शिकार करने के लिये सवार हुआ, और सिर जो जमींदारों के कटते थे क़िले के कंगूरों से लटकाए जाते थे । निदान मुसल्मान बादशाहों की बादशाहत में हिन्दुओंके मन्दिर तोड़े जाते थे, और ब्राह्मणों के मुंह में थूक थूक कर जबर्दस्ती मुसल्मान बनाए जाते, बादशाही लश्करवाले जमींदारों को लकड़ी घास और दही दूध का कब दाम देते थे, वरन रसद भी जबर्दस्ती लेते, और लड़ाई के वक्त तो खेत तक काटकर घोड़ों को खिला देते, अब तक फ़ारसी मसल चली आती है, नमक अज़ सर्कार आरद अज़ बाज़ार, बेगार में ज़मींदार नित पकड़े जातेथे, अकबर जब कश्मीर में गया तो देखा कि बादशाही केसर चुनने के लिये ज़मींदार बेगार पकड़े गए हैं, हुक्म दिया कि आयंदः से उन बेगारियों सर्कार से खाने को मिला करे, और यह बात एक ऐसी बड़ी कि वहां की जामेमस्जिद पर यह हुक्म खुदवा दिया, अब यदि अकबर वहां केसर के खेत देखने न जाता तो उन बिचारे ज़मींदारों को जो बादशाही काम करते थे किस तरह खानेको मिलता, और फिर भी एक केसर चुननेवालों ने खाने को पाया तो क्या हुआ, सारे मुल्क मे जो बादशाही नौकर सब काम ज़मींदारो से जबर्दस्ती

मुफ़्त बेगार मे लेते थे उन्हें खाने को कौन देताथा। स्त्री का सुन्दर होना उसके वास्ते मानो एक अपराध था. जब राजाओ की बेटियां बादशाह ज़बर्दस्ती मँगवा लेते थे, तो बनिये महाजनो की कब छोड़ते होंगे। तारीख फरिश्तावाला लिखता है कि हुमायूंशाह यहां तक अपनी रऐयत पर जुल्म करताथा कि जब किसी की बरात निकलती तो दुल्हन को मँगाकर पहले आप रख लेता तब दूल्हा के घर जाने देता। मुसाफिर सिवाय काफिले के अथवा बिना सवार सिपाही लिये कभी राह न चलते, बरन काफिले भी दिन दोपहर लूटे जाते थे, क़ाफिले क्या इस नित की लड़ाई झगड़ो मे इलाक़े के इलाके तबाह होजाते थे, एक मैसूर ही का हाल सुनो कि बत्तीस बरस के अंदर अर्थात् सन् १७६० से १७९२ तक दसबार मरहठो के हाथ से लूटा गया। यह जो पक्की सराय बुर्ज और रौज़नो के साथ किले के तौर पर जा बजा बादशाही समय की बनी हुई हैं, कारण यही था कि मुसाफिरो को रात के समय डाकू और लुटेरो का बड़ा ही डर रहता था। अब भी बहुत से नादान जिन्हो ने पुरानी तवारीखें नहीं देखी अगली बादशाहतो को याद करके ठंढी सांस लेते हैं, और हसरत के साथ उन दिनो को याद करते है, हमारी समझ में वे सब मिलकर एक अर्ज़ी इस मजमून की लिखें और महारानी विक्टोरिया के चरण कमलो मे भेजे, कि आप चौथाई मुल्क तो अगले बादशाहो की तरह जागीर में उन निकम्मे निरुद्यमी बेइल्म आदमियो को मुआफ कर दीजिए कि जो बहुधा इस देश मे राजा बाबू और अमीर कहलाते है, जिससे वे बेफिक्र होकर नाच रंग और भांड़ो का तमाशा देखें, और अपनी तोंद के बोझ के सिवा सेर आध सेर सोने चांदी और जवाहिरात का भी

भ्फ अपने बदन पर चढ़ावें, और बाक़ी तीन हिस्से की आमदनी
पने तोशेखाने मे दाखिल कीजिए। शाहजहां की तरह एक तख्त
ाऊस बनवाइये, जिस्से जौहरियो को फाइदा हो। नौकरो की त-
ख्वाहे बढादीजिये, और जब वे मरे तो अगले बादशाहो की तरह
उनका सारा घरबार जब्त कर लीजिये, हैदराबाद के नव्वाब के
यहां तो अब तक भी यही दस्तूर जारी है। राजाओंको हुक्म दीजिये
अपनी सुन्दर सुन्दर बेटियां जिस तरह दिल्ली के बादशाहो को
देते थे अब आप के शाहजादोके वास्ते भेज देवें, और गवर्नरजेनरल
को फर्माइये महाजन और भले मानसो की अच्छी अच्छी औरतें
चुनकर नव्वाबो की तरह आप के वास्ते लौंड़ियां हाज़िर करें, और
जो उन औरतो को उन्हे देखना मंजूर हो, हुक्म देवें कि गवर्नमेंट-
हौस में बादशाही ज़माने की तरह लेडी साहिब के लिये मीना बा-
ज़ार लगे, जब लोगों की बहू बेटियां आवें लाट साहिब भेस बदल
कर सब को परख लेवें, खुद अकबर यह काम करता था। नादिर
शाह की तरह एक दो शहर क़त्ल करवाइये, औरंगजेब की तरह
आप भी सब मंदिर और मस्जिदो को तुड़वा कर उनके मसाले से
अपने मतके गिरजा बनवाइये और हिन्दू और मुसल्मानोंको जबर्द-
स्ती अपने मजहब में लाइये, और जो बाकी रहें उन से मुसल्मान
बादशाहों की तरह जो अकबर से पहिले हुए थे जिज़ये का रुपया
वसूल कीजिये। बादशाह राजा और नव्वाबो को जिन्हें उनके मुल्क
से खारिज किया अब आप लाखों रुपये क्यों पिन्शन देती है, जिस
तरह उमरखिल्जी फर्रुखसियर अहमदशाह इत्यादि दिल्ली के बा-
दशाहों की आंखें निकाली गई थीं आप भी इनकी आंखें निकलवा
लीजिए, अथवा पोस्त या नमक का पानी पिलवाकर जान ही ले

इालिये। लाखों रुपया सूद का आप इन महाजनों को क्यों देती हैं, मुहम्मदतुगलक़ की तरह तांबे का रुपया चलाकर क्यो नही उनका बिलकुल क़र्ज़ा अदा कर देतीं, अथवा जिस तरह पेशवा के कहने बमूजिब सेंधिया ने अपने दीवान घाटक्या की लड़की के व्याह का खर्च वसूल करने को उसे पूना मे भेजकर वहां के महाजनों को गर्म तोप में बांध बांध रुपया वसूल कियाथा आप भी हम लोगो से उगाह लीजिये। नाव डूबने का तमाशा देखने के लिये आप भी सिराजुद्दौला की तरह एक दो गुज़ार की किश्तियो का बीच धारा में तख्ता खुलवा दीजिये, डाक की क्या ज़रूरत है जिसे काम होगा अगले ज़माने की तरह अब क़ासिद के हाथ चिट्ठी रवानः करेगा। सड़क और पुल तुड़वा दीजिये, और चौकी पहरा बिलकुल उठवा लीजिये, बरन इश्तिहार देदीजिये कि पिडारो की औलादसे जो जीते हों फिर वही अपने बाप दादो का पेशा इख्तियार करे, जिसमे लोग आगे की तरह अब भी एक शहर से दूसरे शहर में न जा सके, और जांय तो क़ाफिला बांधकर और सवार सिपाही साथ लेकर, माल की बीमा बिकेगी, सिपाहियों का रुज़गार खुलेगा, बीमा लेने वाले महाजनों को फाइदा होगा, और आपको भी मरहठो की तरह पिडारोंसे लूट के माल की चौथ हाथ लगेगी। सिपाह की तनख्वाह बादशाहो की तरह बरस छ महीने चढाकर बांटिये, जिस मे वे रुपया कर्ज लेवे तो महाजनों को पांच सात रुपये सैकड़े से भी अधिक सूद मिले, और बहुत तंग होगे तो अगले जमाने की तरह अब भी बाज़ार लूटकर अपना काम चलालेंगे। पाठशाला सब बर्खास्त कीजिये, गरीबों को आगे कब किसने पढ़ाया था, न ये पढ़ेगे न अपना भला चाहेगे, न ये तवारीखें देखेंगे न बुरी भली अमल्दारी का फर्क कर सकेंगे।

छापेखाने बन्दकीजिये जिसमे किताब महँगीहो, और लेखकोंकी रोजी खुले। अस्पताल मौकूफ़ कीजिये जिसमें वैद हकीमो को दो पैसे मिलें, और जब उनकी दवा किसी बीमारको फाइदा न करे, तो मूलूआदिल शाह बीजापुरके बादशाहकी तरह क़त्ल करवाइए, और हाथी के पैरों से पिसवाइये। जमींदारों से जमा आगे किसने मुकर्रर की थी, जो जिसके पास देखिये लेलीजिये, ये तो आपकी रऐयत है, इनको बेगार मे पकड़िये, इन से अपनी खिदमत लीजिये, सर्कारी मकानात बनवाइये, सिपाहियों का बोझ ढुलवाइये, बाग़ लगवाइये, निदान जिन सब सर्कारी कामों में आप अब रुपया खर्चती हैं, वह सब अगले बादशाहो की तरह ज़मींदारो से मुफ़्त मे लीजिये, आप केवल अपने अमीरों को खुश रखिये, और चैन से ऐश कीजिये, और ये करोड़ों ज़मींदार तो आपकी रऐयत गुलाम हैं, आपही के वास्ते ईश्वरने इन्हें बनाया है, इन्हे जो चाहिए सो कीजिये, और जो आप को यह खयाल हो कि कलकत्ते के बाबू लोग जो कुछ थोड़ा बहुत अंगरेजी पढ़गएहैं हमारी बदनामियां अखबारो मे छापेंगे, तो एक दो को उन मे से अगले बादशाहो की तरह कान मे सीसा पिला दीजिये, या खाल खिंचवाकर भुस भर दीजिये, और हिन्दुस्तानी कवि भाट और शाइरों को जमीन दुशाले और सोने के कड़े बख्शिये, ये आपकी तारीफ मे ऐसे ग्रंथ बनावेंगे कि फिर लोग सिकन्दर और नौशेरवा को भूलकर क़यामत तक आपही का नाम नेकी के साथ स्मरण करेंगे. और आपही का यश गावेंगे। निदान महारानी साहिब जो हिदुस्तान की कमनीसीबी से यह अर्ज़ कबूल करलें तो फिरभी अगला ज़माना आ सकता है. और जो इंसाफ के रूसे यह हुक्म चढ़ावें कि हम अमीरों के साथ कदापि वह बात न रक्खेंगे जो अगले बादशाह रखते थे.

नही तो वे भी उसी तरह हमारा गला काटेंगे, जैसे अगले अमीरों ने अगले बादशाहों का गला काटा था और हम अपनी हिन्दुस्तान की रऐयत के साथ वही सुलूक करेंगे, कि जैसा अपनी इंगलिस्तान की रऐयत के साथ सुलूक करते हैं, जिस मे जैसा अंगरेज़ी रऐयत हम को हमारे सैब कामों में मदद देती है, उसी तरह हिन्दुस्तानी रऐयत भी देवे, तो फिर अब कभी उस अगले ज़माने के मुंह देखने की दिल मे उमेद न रखनी चाहिये, क्योंकि सर्कार अंगरेज़ बहादुर का बंदोबस्त ऐसा कच्चा नही है जो किसी तरह से हिल सके। हम ने इस बात की बड़ी खोज की कि जो लोग सर्कार कम्पनी की अमल्दारी को अच्छा नही कहते और पुराने वक़्तों को याद करते हैं उन से इस बात का सबब दर्याफ़्त करें, पर जो जो सबब उन लोगों ने बयान किये सब के सब नामाकूल मालूम हुए, क्योंकि पहले तो वे कहते हैं कि इस अमल्दारी मे जमीनका ज़ोर घट गया, अन्न कम पैदा होता है, दूसरे आगे की बनिस्बत अब सर्कार महसूल जियादः लेती है, तीसरे तिजारत में फाइदा न रहा, चौथे हिन्दुस्तानियों को बड़े उहदे नही मिलते, ऐसे काम पर अंगरेज़ ही भरती होते है। हमने जो आईन अकबरी की किताब खोली और हिसाब किया तो मालूम हुआ कि अकबर के वक़्त मे जो सब से अच्छा बादशाह था भली से भली एक बीघे धरती मे जो साठ मुरब्बा इलाही गज़का गिना जाता था (*) आठ मन साढ़े सत्तरह सेर गेहूं की पैदावारी पड़ती थी, इस से अधिक नही होती थी। हम जानते है कि शुरू अंगरेजी अमल्दारी मे जब लोगो ने लूट मार से बचाव पाकर बहुतेरी ज़मीन

(*) इकतीस अंगुल का एक इलाही गज़ होता है॥

जो हज़ारों वरस से बनजर पड़ी थी जोत ली है उस में अब पहली सी पैदा न होने से ज़मींदार हाकिम को दोष देते हैं, यह नहीं समझते कि जो ज़मीन बराबर हर साल बोई जायगी उसका ज़ोर अवश्य घट जायगा, आगे अव्वल तो नित के लड़ाई झगड़ो से ऐसे बहुत कम खेत थे जो बराबर पांच सात बरस बोए जावें, दूसरे बादशाह कच्चा बंदोबस्त रहने के कारन जिस साल खेत बोआ जाता था उसी साल पूरा महसूल लेते थे नहीं तो तख़फ़ीफ़ करदेतेथे, अब लड़ाई झगड़े की बिलकुल दहशत उठ गई, सर्कार ने ज़मींदारो का फाइदा समझकर कार्दारों की लूट मार से बचाने के लिये बड़ी बड़ी मुद्दतों का पक्का बंदोबस्त कर दिया, अब ज़मींदार आंख बंद करके हर साल बराबर एक ही तरह से अपने खेतों को बोते चले जाते हैं, यदि इङ्गलिस्तानियो की तरह फ़सल की बदली करें, और बारी बारी से खेत को बनजर छोड़ें, जैसा इस विषय की किताबों मे लिखा है, तो कदापि धरती का ज़ोर न घटे। नौ दस बरसका अर्सा गुज़रता है कि आगरे की गवर्नरी में २२९९९०७६ एकर (*) धरती बोई जाती थी और अब २४४५०२२८ एकर बोई जाती है भला जहां दस बरस के अर्से में १४५११५२ एकर धरती नई जोती बोई जावे, वहां यह बात क्योंकर कही जा सकती है कि आगे की बनिस्बत अब किसानों को फ़ाइदा कम है। महसूल यद्यपि अकबर के वक़्त मे ऐसी ज़मीन पर फ़ी बीघे केवल दो मन कुछ ऊपर सवा छ सेर गेहूं अथवा उसका दाम लिया जाता था, पर बेगार बेतरह थी, उत्तराखंड इत्यादि देशों के रजवाडो में जहां अब तक ज़मींदारोंसे बेगार ली जाती है,

---

(*) कुछ कम दो बीघे का एक एकर होता है॥

यदि बेगार मौक़ूफ़ हो खुशी से दूना महसूल देने को राज़ी हैं, पस सोचना चाहिये कि बेगार से कितना नुक़सान था, सिवाय इसके कश्मीर के इलाक़े में आधी आधी बटाई होती थी, और अकबर कारीगरों की बनाई चीज़ों पर पांच रुपया सैकड़ा लेता था, और जो महसूल कि साबिक़ से जारी थे और अकबर ने मौक़ूफ़ किये उनकी तफसील नीचे लिखी जाती है, भला इन महसूलों के बोझ से क्योंकर न रऐयत पिसती होवेगी, जहांगीर और शाहजहां तो अकबर की राह पर चले थे, पर औरंगज़ेब के वक़्त से फिर बहुतेरे महसूल जारी होगये ॥

तफसील महसूलों की जो अकबर ने मौक़ूफ़ किये ॥

१ जिज़या
२ परवानराहदारी
३ मीरबहरी
४ कर हिंदू यात्रियों से
५ गांव शुमारी
६ सरदरख़्ती
७ पेशकश
८ पेशेवालों से
९ दारोगानी
१० तहसीलदारी
११ फ़ोतहदारी
१२ वजह किराया
१३ खरीतिया
१४ सर्राफी
१५ हासिल बाज़ार
१६ आबकारी
१७ नमक
१८ चूना
१९ मछए
२० मकान की खरीद फ़रोख़्त
२१ मवेशीकी खरीद फरोख़्त

तिजारत में फाइदा इसीलिये नहीं होता कि हमारे मुल्क के आदमी जहाज़ पर नहीं चढ़ते, यदि ये जहाज़ों पर सवार होकर तिजारत

के लिये दूसरे मुल्कों में जावें निस्संदेह ये भी वही फाइदा उठावें कि जो इनकी बदल फरंगी उठाते हैं (*)। रह गया चौथा उजर सो उसका यह हाल है कि जो रुपया अंगरेजों को तनख्वाह और पिशन में दिया जाता है, वह हम भी मानते हैं कि इस मुल्क को अवश्य घाटा पड़ता है, पर यदि हम से सर्कार सलाह पूछे तो हम यही कहेंगे कि जिन कामों पर अब हिन्दुस्तानी नौकर हैं उन पर भी अंगरेज मुकर्रर कीजिये। सर्कारी आईन को इन्हीं हिन्दुस्तानियों ने बदनाम किया, मजिस्ट्रेट कलेक्टर से कोई नहीं दुख पाता, जो रोता है सो इन्हीं अमले पुलिस और सरिश्तेदारों के नाम को रोता है। कौन ऐसा बेवक़ूफ़ है जो इन थानेदारों को मजिस्ट्रेटी और सरिश्तेदारों को कलेक्टरी मिलने की दुआ मांगे। हमारे मुल्क के आदमी अव्वल तो रिशवत लेना ऐब नहीं समझते, परम्परा से यह बात चली आई है, दूसरे हिंदू को काम मिला तो मुसल्मान को सताया, मुसल्मानों को इख्तियार हुआ तो हिंदुओं से खार निकाला, पस पहिले हिंदुस्तानियों को चाहिये कि अपने तईं उन कामों के लाइक बनावें, जिन के मिलने की उमेद रखते हैं। रुपये के रहने से राज्य का सुशासित होना अधिक वांछित है, जो प्रजा को चैन मिलेगा तो रुपया बहुत हो रहेगा, और जो मुल्क ही में बखेड़ा रहा तो फिर नादिरशाह सरीखे बरसों की इकट्ठा की हुई जमा पूंजी एकही दिन में झाड़ बुहार कर ले जायँगे। जो लोग हमारे सुख के प्रयोजन

(*) ऋग वेद की पहली संहिता के देखने से साफ साबित है कि आगे हिंदू लोग जहाज़ पर सवार होते थे और समुद्र में जाना ऐब नहीं समझते थे॥

तना परिश्रम करते हैं, वह जो अपनी वाजिबी तनख्वाह ले जावे
ो इसमें क्यों बुरा मानना चाहिये। बाजे आदमी यह भी कहते हैं
क अंगरेज़ी अमल्दारी में दीवानी और फ़ौजदारी का बंदोबस्त
च्छा नहीं, उन्होंने शायद पुरानी तवारीखें नहीं देखीं, फ़ौजदारी
 बाब में तो राफफिच साहिब जो सन् १५८३ में शाह इंगलि-
स्तान का खत अकबर के नाम लाये थे लिखते हैं कि बनारस और
ने के दरमियान इस तरह रास्ता लुटता था कि जैसे अरब लोग
पने मुल्क के जंगलों में डाका डालते हैं, बरन खुद अकबर का
तौर एक जगह में हिंदू फकीरों की बेवकूफी दिखलाने के लिये
खता है कि एक साल प्रयाग के मेले में साधु सन्तों के दो झुण्ड
ा में पहिले नहाने के लिये तकरार कर रहे थे, बादशाह भी वहां
जूद था, समझाया उन लोगोंने उसका समझाना न माना, झुं-
ला कर हुक्म दे दिया कि दोनों जी खोलके लड़ो, आप तमाशा
खता रहा, यहां तक कि बहुतेरे आदमी उन में से कट गये, वाह
अकबर तेरा इंसाफ। धन्य अंगरेज कि हरिद्वार के कुंभ के मेले में
र्द्र नहीं कि कोई मियान से तलवार निकाले. और दीवानी के
ते एक मोतबर तवारीखवाला लिखता है, कि एक रोज किसी
के ने शाहजहां के पास नालिश की, कि मेरी मा के पास तीन
ख रुपया है, और मुझ को कुछ नहीं देती, बादशाह ने उनकी
या मा को बुलाकर हाल दरयाफ़्त किया. उसने साफ कह दिया
तीन लाख रुपया बेशक है, पर जब लड़का होशियार होगा दूंगी
ो खराब करेगा, बादशाह ने हुक्म दिया कि लाख रुपया लड़के
े, और लाख रुपया अपने खानेको रख इस कदर तुम दोनों के
े काफी है और बाक़ी लाख रुपया बादशाही खजाने में दाखिल

करदे। जब मुक़द्दमा फ़ैसल हो चुका और हुक्म कागज पर चढ़ गया बुढ़िया बहुत घबराई और चालाकी करके बादशाह से अरज़ की कि करामात लड़के को तो लाख रुपये वाजबी दिलवाया, मेरा पति उसका बाप था, पर आप का मेरा पति कौन होता था जो बराबर का तरका लेते हैं इतनी बात मिहरबानी करके बतला दीजिये कि जिस में आगे को इस रिश्तेदारी की खबर रहे। बादशाह अपने मन में लज्जित हुआ और हंसके उसका रुपया उलटा दिलवा दिया। तवारीखवाले ने तो यह बात शाहजहां की तारीफ़ में लिखी है कि एक एक बुढ़िया उस तक पहुंचकर अपने दिलकी कह सकती थी पर इस बहानेसे बादशाहकी नीयत और अदालतका आईन बखूबीप्रकट होगया अब तकभी गुजरातकी तरफ हिन्दुस्तानी अमलदारियों में यह दस्तूर जारी रहाहै कि जब किसी को किसी से रुपया वसूल करने होता, तो भाटोंको जिनका वहां यही काम है कुछ देकर उसके घर धरना बिठलाता, और उस बेचारे के पास उस वक्त देने को न होता तो बहुत फजीहत करता, यहां तक कि वे ब्राह्मण अपना लहू उसके दरवाज़े पर छिड़कते, वरन कई बार ऐसा हुआ है कि अपने घर से किसी बूढे या बुढ़िया को लाकर उसके दरवाज़े चिता पर बिठला कर जला दिया है। जो वहां अदालत अच्छी होती तो यह नौबत क्यों पहुंचती। हम यह बात कुछ अंगरेजों की खुशामद या उनकी झूठी तारीफ की राह से नहीं लिखते कि जैसा अकसर ग्रंथकारों ने अपनी पुस्तकों के बीच श्लोक कवित्त शैर और क़सीदों में उन्हें सूर्य से अधिक तेजस्वी और आकाश से अधिक ऊंचा इत्यादि बढ़ावा दिया है, हमने तो केवल अगले राजा और बादशाहों का जो कुछ हाल पुरानी किताबों में देखा था लोगों के ज्ञानवृद्धि के कारन

इस जगह में दर्ज कर दिया, यदि किसी को उसमें संदेह हो पुरानी तवारीखों से मिलान कर ले ॥

यह भी जान लेना चाहिये कि सन् १८५८ में श्रीमती महारानी इङ्गलेंडईश्वरी क्वीन विक्टोरिया ने इस मुल्क का इंतिज़ाम कम्पनी से लेकर अपने एक वज़ीर के सपुर्द कर दिया, और उसकी मदद के वास्ते बारह आदमियों की एक कौंसल भी मुक़र्रर कर दी, यह वज़ीर सेक्रिटरी-अव-स्टेटफ़ार-इंडिया कहलाताहै, और उस कौंसल का नाम कौंसल अव-इंडिया कहा जाताहै। कम्पनी को अब सिवाय उस रुपये का जो इस मुल्कमे लगाया था सूद लेनेके और कुछ भी इस मुल्क से इलाका न रहा, बंदोबस्त और इंतिज़ाम बिलकुल वज़ीर के इख़्तियार में आगया वही सब साहिब लोगों को इस मुल्क के उहदों पर मुक़र्रर करके वहां से भेजता है, और यहां गवर्नर जेनरल को कौंसल के साथ एक राय होकर मुल्क के बन्दोबस्त और इंतिज़ाम का बिलकुल इख़्तियार दे रक्खाहै। गवर्नर जेनरल से नीचे मंदराज और बंबई के गवर्नर अपनी अपनी कौंसलों सहित और आगरे और पंजाब और बंगाले के लेफ़्टिनेंट गवर्नर मुक़र्रर है, और फिर सिवाय पंजाबके उनचारों गवर्नरों के नीचे चार सदर दीवानी और सदर निज़ामत अदालत और चारही बोर्ड-अव-रेवन्यू और फिर उनके ताबेजिले ज़िलेमें कमिश्नर जज मजिस्ट्रेट कलेक्टर इत्यादि अपने अपने कामपर नियुक्त हैं। पंजाबमे सदरके बदल जूडीशल कमिश्नर और बोर्डकी एवज फिनांशल कमिश्नर मुक़र्रर हैं, और कमिश्नर के नीचे जिले के हाकिम डिपुटी कमिश्नर कहलाते हैं। सिवाय इस के कलकत्ते बंबई और मंदराज में उन तीनों शहर के दीवानी फौजदारी के मुक़द्दमे और जो नालिशें कि असली अंगरेजो पर दाइर हों सुन्ने के वास्ते

एक एक सुप्रीमकोर्ट की कचहरी भी बादशाहकी तरफ से मुकर्रर है, और उस मे तीन तीन जज बैठते हैं। फौज के सेनापति अर्थात् कमांडरिचीफ साहिब इंगलिस्तान से मुकर्रर होकर आते है। कलकत्ता मंदराज और बंबई तीनो हातो मे तीन कमांडरिचीफ रहते हैं, पर कलकत्ते वाले का हुक्म दोनो पर गालिब है।

सन् १८५३ मे सर्कारी फौज सब मिलाकर इस मुल्क मे प्राय अढ़ाई लाख हिन्दुस्तानी और पचास हज़ार गोरे थे, और बत्तीस हजार सिपाही कांटिंजंट की फौज मे भरती थे, कांटिंजंट वह है जिसका खर्च हिन्दुस्तानी रईसो के यहा से मिलता है और वे उनकी हिफाज़त के लिये उन्हो के इलाकों मे रहते हैं, लेकिन अब गोरे बहुत बढ़ गए, अस्सी हज़ार से कम नहीं है, और उनकी एवज़ मे हिंदुस्तानी सिपाह घट गई, बरन ऐसी तजवीज़ हो रही है कि यह भी अस्सी हजार रहे॥

आमदनी इस मुल्क की प्राय तीस करोड़ रुपया (१) सालाना सर्कारी खज़ाने मे आता है, और अनुमान नब्बे करोड रुपया सर्कार को लोगों का देना है कि जिस के वास्ते सर्कार ने प्रामिसरी नोट अर्थात् तमस्सुक लिख दिये हैं, और साढ़े पांच रुपये से साढ़े तीन रुपये सैकड़े तक सालाने के हिसाब से छठे महीने सूद दिया करती है। कम्पनी इस मुल्क की आमदनी से केवल उतने रुपये का वाजिबी सूद ले लेती है, कि जो उसने पहले ही पहल इस मुल्क में अपनी गिरह से लगाया था, उस्से सिवाय उसे एक कौडी भी लेने का हुक्म नहीं, और न बादशाह इस मे से एक कौडी लेता है,

(१) सन् १८६० मे सैंतीस करोड़ होगया।

यह सारा रूपया इसी मुल्क के कामो मे खर्च होता है ( २ )

| | आमदनी | खर्च |
|---|---|---|
| बंगाला | ११४४७१८४५ | १२९३८११३७ |
| आगरा व पंजाब | ७६६५१००० | ३१८२५३०० |
| मंदराज | ५२६२२८२० | ४९७६८६६० |
| बंबई | ४८५३६८६० | ५२२००१६४ |
| इंगलिस्तान | | २४१५७८५४ |
| | २९२२८२५२५ | २८७३३३११५ |

और तीसरी जून सन् १८५२ को जो इंग्लिस्तान से गवर्नर जेनरल बहादुर के नाम चिट्ठी आई थी उस्से सन् १८५०–५१ की आमदनी और खर्च का ब्यौरा लिखते है।

| आमदनी | | खर्च | |
|---|---|---|---|
| धरती बाबत | १४२८२९६८० | तहसील बाबत | २००१३०६६ |
| महसूल | १९७४५५६० | अदालत | १९५८२६०४ |
| नमक | १७२४४९८० | महसूल | २०२७७३९ |
| अफ़यून १८५१–२ | २६८७८१८४ | किश्ती व जहाज़ | ४७१३४७३ |
| साइर व आबकारी | १०४९९८४० | फौज | १००९५६०४० |

---

( २ ) सोलहवी दिसम्बर सन् १८५२ को जो गवर्नर जेनरल बहादुर ने बाबत सन् १८५२–५३ अर्थात् शुरू मई सन् १८५२ से आखिर अप्रैल सन् १८५३ तक एक साल की आमदनी और खर्च का तख्मीना बांधकर मंजूरी के वास्ते इंगलिस्तान को रिपोर्ट भेजा है उसका खुलासा नीचे लिखा जाता है।

| आमदनी | | खर्च | |
|---|---|---|---|
| स्टाम्प डाक कर टकसाल व तमाकू | १५७१०९८३ | सूद तमस्सुकों का | २२२३८९१८ |
| लाहौर सिंध ब्रह्मा व टापू .... | १९१००००० | सूद इंगलिस्तानमें | ४७४५६८५ |
| | | पिंशन इमारत और विद्यालय | ४४८५२०८८ |
| | | मुतफ़र्रिक़ात ग़ैर मामूली .... | २५५४८८६२ |
| | २५१४७९२२७ | | २५१९७९२२७ |

तीसवीं अपरैल सन् १८५३ को सर्कारी खज़ानों में नक़द रोकड़ मौजूद है १५२३९६०४४

---

## बंगालहाता।

निदान मुजमल बयान तो हिंदुस्तान का हो चुका, अब उसके जुदा जुदा ज़िलों का कुछ बखान करते हैं। जानना चाहिये कि इस मुल्क के तीन खंड गिने जाते हैं, जितना हिमालय के पहाड़ों में बसाहै वह तो उत्तराखंड कहलाता है, और जो नर्मदा और महानदी से दक्षिण है वह दक्षिणात्य अर्थात् दक्षिण देश अथवा दखन कहा जाता है, इन दोनों के बीच आर्यावर्त है उसी को पुण्य भूमि भी कहते हैं। हिन्दुस्तान का दक्षिण भाग अंतरीप है, क्योंकि वह पूर्व पश्चिम और दक्षिण तीनों तरफ़ समुद्र से घिरा है। मुसल्मान बादशाहों ने अपनी बादशाहत में इस मुल्क को बाइस सूबों में विभाग किया था, परन्तु उन में से काबुल क़ंदहार और ग़ज़नी तो इस विलायत से बाहर हैं, और दक्षिण देश के कितने ही जिले उनके

दख़ल में न रहने के कारन उन सूबोंमें गिने ही नहीं गए थे, सिवाय इस के उन सूबों की हदें अब ऐसी बदल गई हैं कि कुछ तो एक के पास हैं और कुछ दूसरे के हाथ चले गए, इस लिये हम उन सूबों का खयाल छोड़कर और इस मुल्क को अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी अमल्दारी में भाग देकर उन के एक एक ज़िलों का उस क्रम से बयान करते हैं कि जो अब बर्ते जाते हैं। अंगरेज़ी अमल्दारी में तीन हाते हैं, बंगाल हाता, बंबई हाता, और मंदराज हाता। बंगाल हाते में कर्मनाशा नदी तक के ज़िले तो बंगाले के लेफ़्टिनेंट गवर्नर के तहत में हैं, फिर जमना तक पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ़्टिनेंट गवर्नर के तावे, जमना के पार उत्तर में लाहौर के लेफ़्टिनेंट गवर्नर का इख्तियार है, और गंगा पार अवध के इलाक़े में वहां के चीफ़ कमिश्नर का॥

---

## पश्चिमोत्तर देशकी लेफ़्टिनेंट गवर्नरी॥

पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ़्टिनेंट गवर्नर के तहत के जो ज़िले हैं उन में—१—इलाहाबाद सदर मुक़ाम (१) इलाहाबाद जिस का असली नाम प्रयाग है २५ अंश २७ कला उत्तर अक्षांस और ८१ अंश ५० कला पूर्व देशांतर मे ७२००० आदमियों की बस्ती गंगा और जमुना के बीच जहां उन दोनों का संगम हुआ

---

(१) ज़िले का सदर मुक़ाम उसको कहते हैं ज़हां हाकिम रहे और कचहरी हो॥

हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। वह बादशाही ज़माने में इसी नाम के सूबे की राजधानी था अब पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की राजधानी है। गंगा और जमना दोनों बड़ी नदियों के संगम होने से और तीसरी सरस्वती का संगम भी जो आंखों से दिखलाई नहीं देती पर शास्त्र में इसी जगह लिखे रहने से उसको त्रिवेणी भी कहते हैं, और सब तीर्थों का राजा मानते हैं। मकर की संक्रांति को बड़ा भारी मेला होता है, लाखों यात्री आते हैं। क़िला बहुत मज़बूत है, एक तरफ उसके जमना और दूसरी तरफ़ गंगा मानो उसकी खाई होगई है। सर्कार की तरफ़ से उसकी बड़ी तैयारी रहती है, और मेगज़ीन भी उसमे रक्खा गया है इस क़िले के अंदर एक तलघरे में बड़के दरख्त की जड़ है, हिंदू उसे अक्षयवट कहते, और बहुत मानते हैं। तवारीख़ों से ऐसा मालूम होता है कि आगे गंगा जमना का संगम ठीक उस बड़के नीचे था, और जो लोग त्रिवेणी में डूबकर मरना चाहते थे वे उसी बड़ पर चढ़कर कूदते थे, शायद किसी बादशाह ने इस बात के बंद करने के लिये उसे कटवाडाला, और समय पाकर दरिया भी वहां से हट गया। उसी क़िले में ४२ फ़ुट ऊंची एक पत्थर की लाट अर्थात् शिला स्तम्भ जिसे वहां के ब्राह्मण बहुधा भीमसेन का सोंटा कहते हैं दो हज़ार बरस से अधिक पुरानी है, उस पर मगध देश के महाधार्मिक राजा महाराज प्रियदर्शी अर्थात् अशोक का एक अनुशासन अर्थात् हुक्मनामा पाली भाषा में जो मगधी से मिलती है पुराने पाली अक्षरों के दरमियान खुदा हुआ है। इस से अधिक पुरानी लिपि इस भारतवर्ष में और कोई नहीं। जेम्स प्रिंसेप साहिब इन अक्षरों को पढ़कर उनकी एक वर्णमाला बना गए हैं, अब उस वर्णमाला की

सहाय से जो कोई चाहे इस प्रकार के अक्षर पढ़ सकता है । निदान उस लाटपर इन पाली हर्फों में उस समय के राजा अशोकका हुक्म यह खुदा है, कि मैंने अहिंसा को परम धर्म माना और इसी धर्मको अंगीकार किया, मेरी प्रजा भी सब ऐसाही करे, और फिर किसी पशुको न वधे, दया दान सत्य शौच का पालन करे, और चण्डत्व नैष्ठुर्य क्रोध मान ईर्ष्यादि से दूर रहे । पुराणों में इस अशोक को महाराज चंद्रगुप्त का पोता कहा है, और जैन शास्त्र में वौध पुस्तकोंकी तरह उसकी वड़ी प्रशंसा लिखी (१) है । वह सन् ईसवी से कुछ न्यूनाधिक अढ़ाई सौ वरस पहिले राजसिंहासन पर वैठाथा । इस तरहके शिलास्तम्भ दिल्ली इत्यादि और भी कई स्थानों में हैं, और उन पर भी यही धर्मलिपि इसी राजा की आज्ञा से इन्हीं अक्षर और भाषा में खुदी है । फारसी इत्यादि अक्षर जो उसपर हैं वह पीछे से खोदे गये है । सराय इलाहाबाद की पक्की और वहुत वड़ी है, और उसी से लगा हुआ सुलतान खुसरो का मक़बरा वना है—२—मिरज़ापुर इलाहाबाद से अग्निकोन की तरफ । यह ज़िला वहुत सा विंध्य के पहाड़ों से आच्छादित है । सदरमुक़ाम मिरजापुर ७५००० आदमियों की वस्ती जो इस समय वड़े व्योपार और तिजारत की जगह है इलाहाबाद से ४५ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता गंगाके दहने किनारे (२)

---

(१) वौध और जैनियो की पुस्तक मिलाने से और पुराने मंदिर और मूर्त्ति के देखने से इस वात मे कुछ भी संदेह वाक़ी नहीं रहता कि किसी समय मे यह दोनों मत एक थे थोड़े दिनों से भेद पड़ा है ।

(२) जिधर नदी वहती हो उधर उसका मुंह मानकर दहने और

## पाली अक्षरों की वर्णमाला

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व

ह ळ अ आ इ उ ऊ ए ऐ ओ मा गि घो च कू द धै मौ स्य

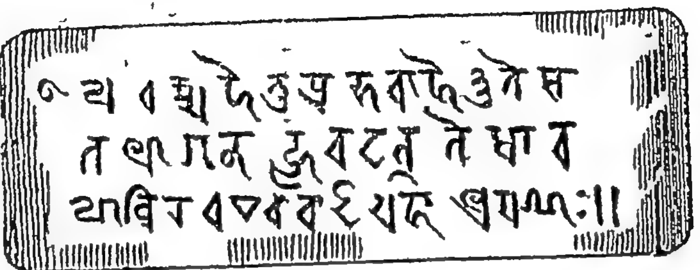
पर बसा है मिरज़ापुर से तीन कोस पर एक झरना बीस गज़ ऊंचे पहाड़ से गिरता है बरसात मे वह जगह सैर की है, और कोस दो एक के तफावत पर जहां विंध्याचल गंगा के समीप आ गया है पहाड़ के नीचे गंगा के निकट विंध्यवासिनी देवी का मंदिर है। नवरात्रि मे बड़ा मेला होता है। क़िला चनार का, जिसका शुद्ध नाम चरणाद्रि है, मिरज़ापुर से १२ कोस पूर्व गंगा के तट कई सौ फुट ऊंचे एक पहाड़ के टुकड़े पर बहुत मजबूत बना है। हिंदू इस क़िले को विक्रमके भाई राजा भर्तृहरि का बनाया कहते हैं, वरन अकसर नादान निश्चय रखते हैं कि भर्तृहरि अब तक उस में बैठा है। एक तहखाना अंधेरा जिसका मुंह इतना छोटा है कि आदमी मुशकिल से अंदर जासके हिंदुस्तानी अमलदारी में उस क़िले का जेलखाना था कितने आदमी उस मे घुटकर मरे होंगे यह परमेश्वर जाने पर अब भी उसके देखने से रोंगटे खड़े होते हैं, न मालूम कैसा दिल था उन लोगों का जो इस ढबसे तड़फा तड़फा कर आदमियों की जान लेतेथे! चनार से तीन मील पर शेखक़ासिम सुलैमानी का मकबरा भी विशेष करके उसका दरवाजा और गिर्द की जालिया देखने लाइक़ है—३—बनारस मिरज़ापुर के ईशान कोन, यह जिला बहुतही आबाद है। शहर बनारस जिसे मुसलमान मुहम्मदाबाद और हिंदू काशी और वाराणसी भी

---

बांयें किनारों का भेद विचार लेना चाहिये जैसे नर्मदा पूर्वसे पश्चिम को बहती है तो दक्षिण के देश उसके बांयें किनारे पर और उत्तर के देश दहने किनारे पर पड़ेंगे और महानदी पश्चिम से पूर्वको बहती है तो दक्षिण के देश उस के दहने किनारे पर और उत्तर के देश बांये किनारे पर पड़ेंगे।

कहते हैं, क्योंकि बरुणा और अस्सी दो नदियों के बीच इलाहाबाद से ७० मील पूर्व ऐन गंगा के बाएं किनारे बसी है, बहुत आबाद दौलत की इफरात और हिंदुओंका बड़ा तीर्थ स्थान है। १८१००० उस में आदमी बसते हैं। गलियां बहुत तंग और मकान बहुत ऊंचे, ऐसा कि छ सात मरातिब तक. गर्मियों मे चलने का बड़ा आराम छतरी दर्कार नहीं, छाव छांव मे सारे शहर का चक्कर दे आइये। घाट गंगाके तीर बहुत संगीन और सुहावने बने है। बिंदुमाधव का मंदिर तोड़कर जो औरंगज़ेब ने मस्जिद बनाई है उसके दोनों मीनार मस्जिद की छत से १५० फुट और गंगातीर से अनुमान २१० फुट ऊंचे है। ऊपर जाने से सारा शहर और दूर दूर तक का गिर्द नवाह गंगाके दोनों तरफ़ दिखलाई देता है। उनपर चढने के लिये १३१ सीढ़ी लगी है। विश्वेश्वरका मंदिर भी यहां उसी बादशाहने तोड़ा था, कहते हैं कि तब असली विश्वेश्वर तो ज्ञानवापी के कूए में पड़े और जिनकी अब पूजा होती है वह उन की जगह पर नए बिठाए गए। मान मंदिर में राजा जयसिंह जयपुरवाले के बनवाये हुए चन्द्र सूर्य तारादिकों के देखने और ग्रहों के वेधने के लिये बहुत अच्छे यंत्र बने थे पर अब सब बे मरम्मत हैं। इन यंत्रों का तात्पर्य बिना ज्योतिष शास्त्र पढ़े समझ मे नहीं आवेगा, इस कारन हमने विस्तार पूर्वक नहीं लिखा, इतना ही समझ लेना चाहिये कि ज्योतिष सम्बन्धी बेधशाला में ऐसे ऐसे यंत्र बने रहते हैं, कि जिन से विद्वान लोग सूर्य चन्द्र और तारादिकों के चलने फिरने का हाल मालूम करते है। संस्कृत विद्या का यह काशी मानों घर है, यहां के पण्डित सर्वत्र प्रसिद्ध है। तीर्थ के कारन फकीर बहुत रहते है। सांड गली गली घूमते है। रूप यहां अच्छा होता है, जिस मे भी

बौधमत का श्लोक जो सारनाथ की धर्मेग्व में मिला था



७ ये धर्म्महेतु मभवाहेतुतेषां तथा गता ह्यवदत् तेषांचयो निरोध
एवंवादी महाश्रमण: ॥

---

बिहार के जिले में बहुतेरी प्राचीन बौध मूरतों पर यह श्लोक खुदा हुआ है, वरन राज गृह के प्रसिद्ध जैन मंदिर में भी जो बस्ती में है एक मूर्त्ति पर यही श्लोक खुदा है, और इसीकारण हम उसको प्राचीन बौधमती अनुमान करते हैं ॥

नागरियां तो इस नगर की अत्यंत ही सुन्दर हैं। सर्कार ने लड़कों के पढ़ने के लिये एक पाठशाला अंगरेजी डौल का यहां बहुत अच्छा बनवाया है, उस मकान के बनने में प्राय सवा लाख रुपया खर्च हुआ। नए आदमी के वास्ते काशी की सैर के दो समय हैं, एक तो नाव पर सवार होकर प्रातःकाल घाट ही घाट जाने का, कि जब सब लोग स्नान पूजा करते हैं, और दूसरा संध्या को मीनार पर से देखने का कि सारा शहर हथेली सा और सब मर्द औरत अपने घरों में काम करते हुए दिखाई देते हैं। बुढ़वा मंगल का मेला इस शहर में मशहूर है, और हक़ीक़त में देखने लाइक़ होता है, होली के पीछे जो मंगल आता है लोग शाम से किश्तियों पर जा बैठते हैं, और फिर बुध के दिन दो पहरको उतरते हैं, छ पहर मेला रहता है, बिलकुल दर्या किश्तियो से छा जाता है, और लोग किश्तियों को अपने अपने मक़दूर मुवाफ़िक़ रंग रंगाकर और उन मे झाड़ फ़ानूस और तसवीरें लगाकर बहुत आरास्तः करते हैं, सैकड़ो किश्तियों पर नाच गाना होता है, और हलवाई और तंबोलियों की दूकानें भी कोड़ियों किश्ती पर चलती है, रोशनी भी होती है, और आतिश बाज़ियां भी छुटती हैं। शहर से डेढ़ कोस पर सारनाथ महादेव के पास बौधमतवालों के बनाए हुए कुछ मकान टूटे फूटे अब तक भी बाक़ी हैं, जिसे वहांवाले सारनाथ की धमेख कहते है और देखने में एक बहुत बड़ा ठोस गुम्बज़ औंधी हांडी की सूरत दिखलाई देता है पर इतना पुराना कि उसके पत्थर बुढ़िया के दांतो की तरह गिरते चले जाते है, हक़ीक़त में वह बौध लोगों का देहगोप अर्थात् उन के महापुरुषों से किसी की क़बर और पूजा की चीज़ है, साहब लोगों की तहक़ीक़ात से ऐसा मालूम होता है कि सन् ईसवीसे ५४३

बरस पहले शाक्य मुनिके मरने पर उस समय हर एक राजा ने जो बौधमती था यही चाहा कि उनकी लाश को अपने इलाके में उठा ले जावे, और सब के सब उसके वास्ते युद्ध करनेको उपस्थित हुए, तब उस के चेलों ने उसकी लाश जलाकर थोडी थोड़ी हड्डी और राख सबको बांटदी, और लड़ने से रोका। निदान राजाओं ने उस हड्डी राखको अपने अपने इलाके पर धरती में गाड़कर गुम्बज़ बना दिये और फिर उसके चेलों के मरने पर उनकी हड्डी राखके ऊपर भी इसी तरह के गुम्बज़ तैयार किये और उस सब की पूजा करने लगे। भिलसा मानिकयाला इत्यादि स्थानों मे कई जगह अब भी ये गुम्बज़ मौजूद हैं, और बर्म्हा सिंहल तिब्बत चीन इत्यादि देशों के बौधमती लोग आज लों इन गुम्बज़ों की नक़ल धातु पत्थर अथवा मिट्टी की बनाकर चिता सम्बन्धी होने के कारण चैत्य के नाम से पूजते हैं, यहां भी पुराने मंदिर और खंडहरों में अकसर जगह ये चैत्य मिलते हैं। और धमेख की असल धर्ममृग मालूम होती है, क्योंकि बौध पुस्तकों में लिखा है कि काशी में मृग अर्थात् हिरनों को धर्म के लिये दाना मिलता था, शायद उसी के पास उन हिरनों का रमना था। अब यह गुम्बज़ अथवा धमेख टूट फूटकर बहुत जर्जर हो गया है, कुछ गिरगया है और कुछ गिरता जाता है, तिस पर भी अनुमान न०वे फुट ऊंचा और तीन सौ फुट के घेरे में है। जेमूस मिंसिप साहिब ने भेद लेने के लिये उसे एक तरफ़ से खुदवाया था, तब उस के अंदर से एक डिब्बे में हड्डी और राख और कुछ उस समय के प्रचालित सिक्के और तांबे के पत्र पर उसी समय के अक्षरों में बौध मतका एक श्लोक खुदा हुआ निकला था। जिन दिनों में बुधका मत सारे हिंदुस्तान में फैल रहा था, यहां के राजा भी उसी मत को मानते थे

और इस काशी को जो अब ब्राह्मणों का बड़ा तीर्थ है बौधका तीर्थ जानते थे । गंगाके पार राम नगर में महाराजै बनारस के रहने के महल और मकान सुहावने बने हैं, उसी के पास एक तालाव और मंदिर राजा चेतसिंह का बनाया यद्यपि अधबना रहगया है पर जितना है उसमें पत्थरकी पुतली इत्यादि चित्र बहुत, बारीकी के साथ बनाए हैं।—४—जौनपुर बनारस के उत्तर सदर मुकाम जौनपुर इलाहाबाद से ६० मील ईशानकोन पूर्व को झुकता गोमती के बांएं किनारे पर बसा है। आबादी २७००० आदमियों की, फुलेल वहां का मशहूर है । क़िला पत्थर का बना है पुल गोमती पर १५ ताकवाला संगीन बहुत मज़बूत और आलीशान है, यद्यपि वह सैकड़ों वरस का पुराना होचुका है, और सन् १७७३ में उस पर इतना पानी आगया था, कि बार्कर साहिब के सिपाहियों की नावें उसके ऊपर होकर निकल गईं, तथापि अब तक कहीं से चल विचल नहीं हुआ । अंगरेज़ भी उस के बनानेवाले कारीगरों की तारीफ करते हैं । सिवाय पुल और क़िले के यहां तीन मस्जिदें ऐसी बड़ी बड़ी संगीन बनी हैं कि यद्यपि अब निरीखंडहर होगई हैं तौभी किसी समय में कुछ दिन इस शहर के पायतख्त रहने की पक्की गवाही देती हैं। —५— आजमगढ़ जौनपुर के ईशानकोन की तरफ़, इस का सदर मुक़ाम आज़मगढ़ इलाहाबाद से १३० मील ईशानकोन पूर्व को झुकता टोंस नदी के बांयें किनारे बसा है । आबादी उस में १३००० आदमी से ऊपर है।—६—गाज़ीपुर आज़मगढ़ के अग्निकोन की तरफ़ । गुलाब और गुलाब का इतर यहां बहुत बढ़िया बनता है और सब दिसावरों को जाता है।बारह रुपयेतक बोतल गुलाब की और पचासरुपये तोले तक का इतर अब भी तैयार होता है । बिशप हीबर साहिब जब वहां गये थे

तो दो लाख फूल का तोले भर इतर सौ रुपये को विकता था। सदर मुक़ाम गाजीपुर ३८००० आदमी की वस्ती इलाहावाद से ११५ मील पूर्व गंगा के वांयें तीर है। लार्ड कार्नवालिस की कवर इसी जगह वनी है, उसके वनाने मे लाख रुपया खर्च हुआ था।-७- गोरखपुर आजमगढ़ के उत्तर, गर्मी वहुत नही पड़ती परन्तु आव हवा कुछ अच्छी नही है। उत्तर तरफ नयपाल की तराई मे वड़ा भारी जंगल है सदर मुक़ाम गोरखपुर ५४००० आदमियों की वस्ती इलाहावाद से १३० मील ईशानकोन रावती नदी के वांये किनारे वसा है, उस में गोरखनाथ का मन्दिर है। ऊपर लिखे हुये छओं जिले वनारस की कमिश्नरी में गिने जाते है।-८-वांदा इलाहावाद के पश्चिम सदर मुकाम वादा ४१००० आदमी की वस्ती इलाहावाद से ९० मील पश्चिम है। कालिंजर का क़िला वादे से ४८ मील दक्षिण अढ़ाई कोस के घेरे का एक पहाड़ पर जो वहां के मैदान से अनुमान चार सौ गज ऊंचा होवेगा मजवूत और वहुत मशहूर है, पर अब वे मरम्मत और टूटा फूटा पड़ा है। वांदे से ३६ मील अग्निकोन को चित्रकोट में हिन्दुओं का मन्दिर और तीर्थ है, नदी पहाड़ और जंगल उदासीन मनवालों को वहुत सुख देते है।-९- फतहपुर इलाहावाद से वायुकोन की तरफ। सदर मुक़ाम फतहपुर २०००० आदमियो की वस्ती इलाहावाद से ३० मील वायु कोन को वसा है।-१०-कान्हपुर फतहपुर के वायुकोन। सदर मुक़ाम कान्हपुर जिस की आवादी लाख आदमियों से प्राय अठारह हजार ऊपर गिनी गई है इलाहावाद से १२० मील वायुकोन जरा उत्तर को झुकता गंगा के दहने किनारे पर वसा है। वहां सर्कारी फौज की वड़ी छावनी है। कान्हपुर से नौ मील उत्तर पश्चिम को झुकता

हुआ गंगा के दहने किनारे बिठूर हिन्दुओं का तीर्थ है। ऊपर लिखे हुए तीनों ज़िले इलाहाबाद की कमिश्नरी में हैं।—११—इटावा कान्हपुर के पश्चिम। सदर मुक़ाम इटावा प्राय २३००० हज़ार आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २०० मील वायुकोन पश्चिम को झुकता जमना के बाएं तीर बसा है।—१२—फ़र्रुख़ाबाद इटावे के ईशानकोन की तरफ़। सदर मुक़ाम फ़र्रुख़ाबाद १३२००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २०० मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता गंगा से डेढ़ कोस हटकर दहने किनारे बसा है। छावनी फ़तहगढ़ में ऐन गंगा के किनारे है। वहां एक क़िला भी कच्चा बना है डेरे तम्बू उस जगह में बहुत अच्छे बनते हैं। कन्नौज का पुराना शहर जिसे संस्कृत में कान्यकुब्ज कहते हैं फ़र्रुख़ाबाद से प्राय ४० मील अग्निकोन गंगा के इसी किनारे पर उजाड़ सा पड़ा है, यदि बस्ती के निशानों पर नज़र करो तो किसी समय में उसकी बस्ती का बिस्तार लंदन से भी अधिक मालूम पड़ता है। यह वही कन्नौज है जिस में बारह सौ बरस भी नहीं बीते कि तीस हज़ार तो केवल तंबोलियों की दुकान खुलती थीं। इसी कन्नौज का राजा इस देश में मुसल्मानों के राज्य का कारण हुआ, कहते हैं कि जब वहां के राजा जयचंद राठौरने अपनी लड़की का स्वयंवर करने के लिये राजसूयज्ञ रचा, और पृथीराज दिल्लीवाला उस यज्ञ में न आया, तो जयचंद ने एक सोने का पृथीराज बना के दरवाज़े पर द्वारपाल की ठौर बैठा दिया, महाराज पृथीराज को इस बात के सुनने से बड़ा कोप आया, उसी दम अपने बीरों को ले उठ धाया, और जयचंद की बेटी को हर ले गया। इस लड़ाई में पृथीराज के अच्छे अच्छे आदमी मारे गए, और इसी सबब जब जयचंद ने इस लाग की

आग से शहाबुद्दीन मुहम्मदगोरी को हिंदुस्तान में बुलाया, तो आखिर को पृथीराज ने शिकस्त खाई और हिन्दुस्तान में मुसल्मानों का राज हो गया। यदि मुहम्मदगोरी के चढाव के समय इन का आपस में बिगाड़ न रहता, और जयचंद पृथीराज को सहाय करता तो हिन्दुओं का राज कदाचित् फिर भी कुछ दिन ठहर जाता।–१३–मैनपुरी इटावे के उत्तर। सदर मुकाम मैनपुरी बसी हज़ार आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २१० मील वायुकोन को बसा है।–१४–आगरा मैनपुरी के पश्चिम। बादशाही वक़्त में उस के आसपास के जिले उसी नाम के सूबे मे दाखिल थे। शहर आगरे का, जिसे सिकन्दरलोदी ने बसाकर बादलगढ़ नाम रखा था और फिर अकबर बादशाह के वक़्त से जब वह हिन्दुस्तान की दरुस्सल्तनत हुआ अकबराबाद कहलाया, इलाहाबाद से २८५ मील वायुकोन जमना के दहने किनारे पर बसा है। आगे कीसी आबादी तो कहां पर फिर भी १२५००० आदमी उसमें बसते हैं हिन्दू इस जगह को परशुराम का जन्मस्थान कहते हैं। शाहजहां बादशाह की बेगम मुम्ताज़ महल का मक़बरा, जिसे लोग ताजगंज अथवा ताजबीबी का रौज़ा कहते हैं, इस शहर में एक निहायत उमदा मकान बना है। फ़रंगिस्तानवालों ने सारी दुनिया छान डाली, पर इस साथ की इमारत कहीं नही पाई, इसके देखने को यदि लोग रूम और चीन से भी पैदल दौड़ते हुए आवें, तो निश्चय है कि उसे आंख भरकर देखने ही में अपनी सारी मिहनत भर पावें। न उस में जाकर फिर उस में बाहर आने को जी चाहे, न उसे देखकर फिर उस पर से आंख उठाने को मन माने। दरवाजे के अन्दर जाते ही उसको सीतल मंद सुगंध समीर से मन की कली मानो फूल सी खिल जाती है,

साम्हने बाग जिस में नहर और फव्वारे जारी सर्व के दरख़्त दुतरफ़ा लगे हुए, उन के बीचसे रौजे का गुम्बज़ और उसके चारो कोने के चारो मीनार साम्हने देख पडते हैं, ऐसे ऊंचे कि मानो आस्मान से बातें करते हैं। इस गुम्बज का कलस अढ़ाई सौ फुट से कम कदापि ऊंचा नहीं है, और व्यास अर्थात् चौडान उस गुम्बज़ की ७० फुट है। वह सारा मकान संगमर्मर का बना है, और उस पर लाजवर्द अक़ीक़ सुलैमानी गोरी तामडा यशम बिलौर फीरोजा इत्यादि सैकड़ों किस्म के कीमती पत्थर जडकर ऐसे बेल बूटे फूल फल और जानवर बनाये हैं, कि मानो किसी चितेरे ने हाथीदांत पर अभी तसवीरें खींच दी हैं। तसवीरें भी कैसी, कि यह न मालूम हो कि तसवीरें खींची हैं। या सचमुच किसी ने बाग से फूल फल तोड़कर उस पर ला रखे है। बारीकी का यह हाल है, कि अठन्नी बराबर एक फूल में सत्तर टुकडे पत्थर के, और फिर भी नाखुन घिसने से उस पर न अटके पत्तियों में हल्के भारी रंग का होना, रग रेशों का जुदा जुदा दिखलाई देना, यही मन में लाता है कि जो इस का बनानेवाला कारीगर यहां होता तो उसके हाथ चूमते, पर कहते हैं कि शाहजहां ने उसके हाथ कटवाडाले थे, जिस में फिर दूसरा मकान ऐसा न बना सके। जमना उसकी दीवार के तले बहती है, और उस तरफ़ उसकी दीवार ३००० गज़ लंबी है। कप्तान इजर्टन साहिब अपनी किताब में इस की लागत कुछ ऊपर तीन करोड सत्तरहलाख रुपया लिखते हैं। सर्कार ने इस की और सिकंदरे की मरम्मत के लिये सन् १८१४ में एक लाख रुपया खर्च किया था। शाहजहां भी अपनी बेगम की कबर के पास इसी रौजे के अन्दर गड़ा है। शहर से तीन कोस पर सिकंदरा जहां अकबर की कबर है, और जमना पार एतमादुद्दौला का मकबरा और

रामबाग़ भी देखने के योग्य स्थान हैं। किला जमना के किनारे लाल पत्थर का अकबर का बनवाया हुआ बहुत सुन्दर है, पर जहां उस समय में जयपुर और जोधपुर के राजाओं को भी बैठना कठिन था, खड़ेही रहते थे, वहां अब उल्लू और चमगीदड़ का वासा है। जहां मीयां तानसेन की तान छिड़ती थी, वहां अब मकड़ियां जाला तनती हैं। जहां तीन तीन गज़ लम्बी कपूरी बत्तियां सोने के बीस बीस सेर भारी शमादानों पर बलती थीं वहां अब कोई चिराग मे कौड़ी भर तेल भी नहीं डालता। मोती मसजिद इस क़िले में निरे संगमर्मर की बहुत उमदा बनी है। सन् १८०३ मे जब लार्डलेक ने मर्हठो से आगरा छीना तो वहां एक तोप छ सौ मन भारी हाथ लगी, मालूम नही कि किस समय की बनी थी, लार्डलेक ने चाहा कि कलकत्ते भेजें, पर नाव का तख़्ता टूट जाने के सबब जमना मे डूब गई। इसी जिले में आगरे से नौ कोस पर फतहपुर सीकरी में शेख़ सलीम चिश्ती की दर्गाह है, और अकबर के बनवाये बहुत से मकान उमदा उमदा बने हैं, पर अब सब बे मरम्मत हैं, दर्गाह देखने लाइक़ है। राफ़फिच साहिब जो अकबर के समय में आये थे फतेहपुर की शान को आगरे से भी बढ़कर लिखते हैं।–१५–मथुरा आगरे के वायुकोन को। शास्त्र मे इसी ज़िले का नाम सूरसेन लिखा है। शहर मथुरा का ६५००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २९० मील वायुकोन पश्चिम को झुकता जमना के दहने किनारे बसा है। कृष्ण का जन्मस्थान और इसीलिये तीर्थ की जगह है। पारखजी का मंदिर यहां प्रसिद्ध है। किले में राजा जयसिंहने ग्रह नक्षत्रादिकों के बेधने के लिये कुछ यंत्र बनवाये थे, पर अब वह सब टूट फूट गए, क़िले का भी केवल नाम ही रह गया है। पुराने मंदिर तो इस शहर के सन् १०१७ में

महमूदगज़नवी ने तोड़े थे, पर पीछे से एक मन्दिर छत्तीस लाख रुपया लगा के राजा बीरसिंहदेव उर्छावाले ने वनवाया था, सो औरंगज़ेब ने उसे तुड़वाकर उसके मसाले से उसी जगह मस्जिद वनवा दी। महमूद गज़नवी ने यहां से सौ मूरतें चांदी की और पांचमूरतें सोने की लूटी थीं, और इस शहर की तारीफ में एक ख़त के दरमियान गज़नी के क़िलेदार को यों लिखा था, कि "इस साथ का शहर दो सौ वरस की मिहनत में भी दूसरा तैयार होना कठिन है, हज़ारों इमारतें जिन में वहुतेरी संगमर्मर की बनी हैं मुसल्मानों के मत की तरह मज़बूत हैं, और मन्दिरों की तो गिनती भी नहीं हो सकती" मथुरा से पांच मील उत्तर जमना के दहने किनारे वृन्दावन कृष्ण के रास विलास की जगह वहुत रम्य और सुहावनी है। कुंज और मन्दिर वहुत मनोहर वने हैं। बन्दर और लंगूर और मयूर वृक्षों की घनी घनी छांव में सदा कलोलें करते रहते हैं। ऊपर लिखे हुये पांचों ज़िले आगरे की कमिश्नरी में हैं।–१६–बदाऊं फर्रुख़ाबाद के वायुकोन को गंगा पार। सदर मुक़ाम बदाऊं २७००० आदमी की वस्ती इलाहाबाद से २५०मील पर वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता हुआ है।–१७–शाहजहांपुर वदाऊं के पूर्व। सदर मुक़ाम शाहजहांपुर कुछ ऊपर ७४००० आदमी की वस्ती इलाहाबाद से २१० मील वायुकोन उत्तर को झुकता गर्रा नदी के बाएं किनारे वसा है।–१८– बरेली शाहजहांपुर के उत्तर। सदर मुक़ाम वरेली १११००० आदमी की वस्ती इलाहाबाद से २६५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता जूआ और संकरा दोनों नदियों के संगम पर वसा है। मेज़ कुरसी कौंच संदूक़ इत्यादि काठ के सियाह रोगनी वहां वहुत अच्छे बनते हैं, और दूर दूर तक जाते हैं। रुहेले सिपाही इस जिले में वहुत रहते हैं, पर अब

अंगरेजी अमल्दारी होने से दंगा फसाद और लूट मार उन लोगोंने छोड़ दिया, वहुतेरे हल जोतते हैं, और वहुतेरो ने परदेस मे नौकरियां करली। बरेली से ३० मील ईशान कोन को पीलीभीत २५००० आदमी की बस्ती गर्रा नदी के बांएं किनारे है, चांवल वहां अच्छे होते हैं। —१९—मुरादाबाद बरेली के वायुकोन। उत्तर भाग में पहाड़ और जंगल है। ऊख इस ज़िले मे बहुत होती है। सदर मुक़ाम मुरादाबाद कुछ कम ५७००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३०० मील वायुकोन उत्तर को झुकता रामगंगा के दहने किनारे बसा है। वहां से मंज़िल एक पर दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता संभल है, जहां हिंदू लोग कलि के अंत मे कलंकी अवतार होने का निश्चय रखते है। —२०—बिजनौर मुरादाबाद के उत्तर सदर मुकाम बिजनौर ११००० आदमियो की बस्ती इलाहाबाद से ३७५ मील वायुकोन ज़रा उत्तर की तरफ झुकता हुआ है। ये ऊपर लिखे हुए पांचों ज़िले रुहेलखण्ड की कमिश्नरी में गिने जाते हैं। —२१—अलीगढ़ मुरादाबाद के नैर्ऋतकोन को। सदर मुक़ाम कोयल ५५०००आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २८० मील वायुकोन को है, और उससे कोस भर पर अलीगढ़ का क़िला है। —२२—बलंदशहर अलीगढ़ के उत्तर सदर मुक़ाम बलंदशहर १५००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३१५ मील वायुकोन काली नदी के दहने किनारे है। —२३—मेरट बलंदशहर के उत्तर सदर मुक़ाम मेरट ४०००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३५५ मील वायुकोन को है और वहां सरकारी फ़ौज की बहुतबड़ी छावनी है। वह स्थान जहां किसी समय मे हस्तिनापुर बसता था मेरट से २५ मील ईशानकोन की तरफ़ गंगा के दहने तट से निकट है

अब वहां केवल एक मंदिर दिखलाई देता है और बाकी हर तरफ़ दीमकों की बांबियां हैं। मेरट से एक मंज़िल वायुकोन को सरधने में समरू की बेगम का बनाया गिरजाघर देखने लाइक़ है। उस में पच्ची कारी के कामकी संगमर्मर की बेदी बनाई है। –२४–मुज़फ़र नगर मेरट के उत्तर। सदर मुक़ाम मुज़फ़रनगर नौ हज़ार आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३७५ मील वायुकोन जरा उत्तर को झुकता है। –२५–सहारनपुर मुज़फ़र नगर के उत्तर। ऊख बहुत होती है सदर मुक़ाम सहारनपुर ३७००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ४१० मील वायुकोन जरा उत्तर को झुकता हुआ है। अलीमर्दीखांवाली जमना की नहर उसके बीच से जाती है। सहारनपुर से पूर्व अग्नि कोन को झुकता हुआ रुरकी एक मुक़ाम है। वहां गंगा की नहर लाने के लिये सलानी नदी पर जो अंगरेज़ों ने पुल बांधा है देखने योग्य है। वह नदी नहर के रस्ते मे थी और उसके किनारे नहर के पानी से नीचे पड़ते थे इन्होंने क्या हिक्मत की है कि जहांतक धरती नीची थी वहां तक नहर के बराबर ऊंचा पक्का बंध बांधकर और सलानी के बहने के लिये उसके बीच में एक पुल रख कर उस बंध और पुल पर से नहर को निकाल दिया है, अर्थात् पुलके नीचे तो सलानी जारी और पुलके ऊपर से नहर चलती है वहां सरकार की तरफ़ से एक कालिज भी बहुत बड़ा बना है कि उसमें लड़के एंजिनिअरिंग अर्थात् इमारत का काम सीखते हैं। और खाने पहन्ने और रहने को जगह भी सरकार से पाते हैं। ज्यों ज्यों काम सीखते जाते है उनकी तनख़्वाहें बढ़ती जाती हैं और जब पढ़ लिखकर तैयार होते हैं तो सड़क पुल नहर बंगले बारक इत्यादि बनाने के कामों पर मुक़र्रर होजाते हैं ये पांचो ज़िले मेरटकी कमिश्नरी मे हैं

।-२६-देहरादून (†) सहारनपुर से उत्तर पहाड़ों के अंदर। सालके जंगल इस जिले में बहुत हैं। लंधौर और मंसूरी टीबा जो समुद्रसे कुछ न्यूनाधिक छ हजार फुट ऊंचे होवेगे साहिब लोगों के हवाखाने की जगह इसी जिले में हैं। गंगा और जमना वहां से दूरतक बहती हुई दिखलाई देती हैं, परंतु शिमला की तरह इन पहाड़ों पर बड़े बड़े ऊंचे पेड़ों के सुंदर और मनोहर जंगल नहीं हैं। सदर मुक़ाम देहरा इलाहाबाद से ४१५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता हुआ है वहां सिखों का गुरुद्वारा है। वहां से छ मील उत्तर मंसूरी टीवे की जड़ में राजपुरा बसा है जो लोग हवा खाने को टीवे पर जाते है गाड़ी इत्यादि जो असबाब पहाड़ोपर नहीं चढ़सकता इसी जगह छोड़ जाते हैं। -२७-कमाऊं गढवाल सहारन पुरसे ईशान कोनको हिमालय के पहाड़ों मे चीन की हद तक। यह एक वे आइनी कमिश्नरी है। अकसर नदियों का बालू धोने से सोना हाथ लगता है, पर बहुत थोड़ा। तांबे की खान है। बस्ती यहां खसियों की बहुत सूरत इन पहाड़ियो की कुछ कुछ तातारियों से मिलती है कमाऊं का असिस्टेंट सदर मुक़ाम अलमोरे में रहता है, वह ३५०० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३५० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ समुद्र से कुछ ऊपर तिरपन सौ फुट ऊंचे पहाड़ पर बसा है। शहर के पश्चिम एक छोटा सा क़िला सरकार ने फोर्ट माइरा नाम बनवाया है गढ़वालका असिस्टेंट अलमोरे से १०४ मील वायुकोन अलखनन्दा नदी के बाएं किनारे श्री नगर के पास पावरी मे रहता है। अलमोरे से २५ मील पूर्व अग्नि कोन को झुकती नयपाल की हद पर लोहू घाट की छावनी है।

---

(†) दून उसे कहते है जो दो पहाड़ों के बीच चौरस मैदान हो।

वहां से तीन मील पश्चिम एक पहाड़ पर फोर्टहेस्टिंगज़ छोटा सा क़िला है, पर मज़बूत बना है। हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ बदरीनाथ अलमोरे से ८० मील उत्तर ज़रा वायुकोन को झुकता विष्णुगंगा के दहने किनारे समुद्र से दस हजार तीन सौ फुट ऊंचा है। मन्दिर शिखरदार ४५ फुट बलन्द, ऊपर तांबेकी छत सुनहरी कलस चढ़ा हुआ, मूर्त्ति नारायणकी गज़ भर ऊंची श्याम पाषाण की है। वहां गर्मियों में यात्रियों का मेला लगता है। जाड़े भर मन्दिर बर्फ़ के नीचे दवा रहता है। उस के पासही गर्म पानी का एक सोता है, जिस में गन्धक की गन्ध आती है। बदरीनाथ से सीधा पच्चीस मील लेकिन सड़क की राह प्राय १०० मील केदारनाथ का मन्दिर है, जहां एक काले पत्थर की पूजा होती है। जिनको हिमालय में गलना मंज़ूर होता है इसी जगह से बर्फ़ के पहाड़ों में चले जाते हैं। हिन्दू लोग इस तरह अपने तईं हलाक करने में बड़ा पुण्य समझते हैं। जिसे गलना मंज़ूर होता है पण्डा उसे एक तरफ़ को इशारा करके कह देता है कि यही स्वर्ग की राह है, निदान यह बेचारा पहाड़ के अन्दर उसी तरफ़ दौड़ता है, और जब नज़रों से निकल जाताहै तो उसे एक बर्फ़ के खाड में उतरना पड़ता है कि जहां से फिर उलटा नहीं लौट सकता क्योंकि बर्फ़ का ढाल कुढब है, उतर जाना सहज पर फिर चढ़ आना कठिन, निदान जब वह बर्फ़ की सर्दी से वहां ठिठुरकर मर जाता है, तो चील कव्वे उस पर गिरते हैं। अलमोरे के दक्षिण तीस मील की राह पर कोई एक मील लम्बी भीमताल की सुन्दर झील है इस्से दो मील पूर्व नौकुचिया ताल है। अलमोरे से २२ मील नैर्ऋत कोन दक्षिण को झुकता ५६०० फुट समुद्र से ऊंचा नैनीताल साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है।

ताल के गिर्द घूमने में कुछ कम ज़ियादः दो घण्टा लगता है । चारों तरफ़ उसके पहाड़ों पर कोठी और बंगले बने हैं । ताल बड़ा गहरा और स्वच्छ जल से भरा हुआ बहुत रम्य और सुहावना मालूम देता है ।—२८—अजमेर यह ज़िला रजपुताने के बीच अर्बली पहाड़ से पूर्व है । दूसरे सर्कारी ज़िलों से किसी तरफ़ भी नहीं मिला, चारो तरफ जयपुर जोधपुर क़िशनगढ़ और उदयपुर की अमल्दारियों से घिरा है यह भी एक बे आईनी कमिश्नरी है । बादशाही ज़माने में इस के आस पास के सब इलाक़े इसी नाम के सूबे में गिने जाते थे अब अंगरेज़ी दफ्तरों में यह सूबा रजपुताने के नाम से लिखाजाता है क्योंकि उस गिर्दनवाह मे रजपूत राजा बहुत हैं । सीसे की इस ज़िले में खान है । सदर मुक़ाम अजमेर इलाहाबाद से ४५० मील पश्चिम ज़रा वायुकोन को झुकता एक पहाड़ की जड़ में पक्की श-हरपनाह के अन्दर बसा है । ८०० फुट ऊंचे पहाड़ पर तारागढ़ का बे मरम्मत पुराना क़िला है । ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दर्गाह जिस की ज़ियारत को अकबर आगरे से नंगे पांव गया था इस शहर मे बहुत मशहूर है । शहर के बाहर एक झील के किनारे जिस का घेरा ८ मील का होगा बादशाही बाग है । रजपुताने के अजण्ट के रहने की जगह यही अजमेर है । शहर से सात कोस पर नसीराबाद की छावनी एक वृक्ष रहित पथरीले मैदान में बनी है । जेनरल अक्टरलोनी साहिब को दिल्ली के बादशाह ने नसी-रुद्दौला खिताब दियाथा इसी कारन उनके नामपर इस छावनी का नाम नसीराबाद रहा । दूसरी तरफ़ तीन कोस के फ़ासिले पर पुष्कर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है अनुमान आध कोस के घेरे मे वह झील होवेगी किनारे पर घाट और मंदिर बने हैं झील मे कमल

और मगर बहुत हैं यहां ब्रह्मा की पूजा होती है। –२९–सागर नर्मदा अथवा जब्बलपुर की वे आईनी कमिश्नरी नैर्ऋत कोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी से नर्मदा नदी के दोनों तरफ़ भूपाल और सेंधिया की अमल्दारी तक चला गया है। विंध्य के तट स्थ होने के कारन जंगल पहाड़ों से भरा हुआ है। कोयले की खान है सदर मुक़ाम जब्बलपुर इलाहाबाद से २०० मील नैर्ऋतकोन को नर्मदा से कुछ दूर हटकर दहने किनारे पर बसा है। वहां सर्कार ने ठगों के लिये बड़ा बंदोबस्त बांधा है। जो ठग आगे अपना पेटपालने को आदमियों का गला घोटते थे वे सब वहां शतरंजी कालीन बु-नते हैं, और डेरे तंबू बनाते हैं। जो ठग गिरफ्तार होते हैं उसी जगह भेजे जाते है और सजा मुआफ़ होने के वादे पर अपने सारे साथियों को पकड़ा देते हैं। अब वहां इन ठगों का एक गांव बस गया है, और उसी जगह उनका आपस में शादी व्याह भी हुआ करता है। सर्कार उन से काम लेती है, और उन्हें खाने को देती है। साहिब कमिश्नर के नीचे कई डिपटी कमिश्नर मुकर्रर हैं, वे आईनी ज़िले के मेजिस्ट्रेट क़लेक्टरों की तरह अपने अपने हिस्से के इलाक़े में इस हिसाब से इन्तिज़ाम करते हैं, कि एक तो सागर मे जो जब्बलपुर के वायुकोन को सौ मील पर बसा है। दूसरे सिउनी मे जो जब्बलपुर के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता सौ मील पर बसा है। तीसरे बैतूल में जो जब्बलपुर के नैर्ऋत कोन १७० मील पर बसा है चौथे नरसिंहपुर मे जो जब्बलपुर के पश्चिम नैर्ऋत कोन को झुकता ७० मील पर बसा है। पांचवें होशंगाबाद में जो जब्बलपुर के पश्चिम नैर्ऋत कोन को जरा झुकता १५० मील पर नर्मदा के बांएं किनारे बसा है, वहां सर्कारी फौज की छावनी है। छठे मंडले

में जो जब्बलपुर के दक्षिण ५६ मील पर बसा है और सातवें द-मोह में जो जब्बलपुर के वायुकोन उत्तर को झुकता ६० मील पर बसा है।—३०—झांसी की वे आईनी कमिश्नरी कानपुर के पश्चिम जमना पार। इस में चार जिले हैं पहले का सदर मुक़ाम हमीरपुर इलाहाबाद से ११० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता वेत्वा के बांएं किनारे जहां वह जमना से मिली है दूसरे का जालौन हमीर पुर के वायुकोन मिसरी कालपी की मसिद्ध है। वह १८००० आ-दमियों की बस्ती जमना के दहने किनारे हमीरपुर से एक मंजिल वायुकोन को बसा है। तीसरे का झांसी जालौन के नैर्ऋतकोन और चौथे का चन्देरी झांसी के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता च-न्देरी का कपड़ा किसी समय में बहुत मसिद्ध था, और उस में अबु-लफ़ज़ल अक्वर के समय १०००० मसजिद ३६० सरा और ३८४ बाजार लिखता है, लेकिन अब तो ऊजड़ सा पड़ा है॥

इति

## अनुक्रमणिका

# पहिला हिस्सा

य

इति

# भूगोल हस्तामलक

OR

...RTH AS [A DROP OF ]CLEAR WATER IN HAND

IN THREE VOLUMES.

तीन जिल्दों मे

...महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी

...युत नव्वाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की

आज्ञानुसार

...ठवासी राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द (३) ने बनाया

BY

LATE RAJA SIVA PRASAD, C S I

॥ मस्त ॥

...र सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब में देखा

*VOLUME I*

पहली जिल्द

PART II

दूसरा हिस्सा

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेखाने में छापा गयाथा

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी

नवम्बर सन् १८९८ ई० ॥

...edition 600 copies.

दूसरीबार ५०० पुस्तकें

# भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [ A DROP OF ] CLEAR WATER IN HAND
IN THREE VOLUMES

तीन जिल्दों मे

---

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत
नव्वाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

---


वैकुण्ठवासी राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द (३) ने बनाया

BY

LATE RAJA SIVAPRASAD, C S I.


---

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब मे देखा

---

*VOLUME I.*

पहली जिल्द

PART II.

दूसरा हिस्सा

---


इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेखाने में छापा गयाथा

---

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

अक्टूबर सन् १८९८ ई० ॥

# भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [ A DROP OF ] CLEAR WATER IN HAND
IN THREE VOLUMES

तीन जिल्दों में

---

मन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत
नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

---

वैकुण्ठवासी राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द (३) ने बनाया

BY

LATE RAJA SIVAPRASAD, C. S I

---

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी  यह तमाशा किताब में देखा

---

*VOLUME I*

पहली जिल्द

PART II.

दूसरा हिस्सा

---

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेखाने में छापा गयाथा

---

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

अक्टूबर सन् १८९८ ई० ॥

# CONTENTS

OF THE

# SECOND VOLUME.

*Page.*

Page

# विज्ञापन

जानना चाहिये कि यह भूगोल हस्तामलक सन् १८५१ या १८५२ ई० मे लिखा गया था उस समय जो कुछ हालत कश्मीर की देखीगयी थी लिखने मे आयी थी पर अब उस की हालत कुछ और ही सुनने में आती है महाराज गुलाबसिंह के बेटे महाराज रणबीरसिंह बहादुर बड़े धर्मात्मा और अपनी प्रजा प्यारे हैं इनका यश सारे भारतवर्ष में छारहा है और इन्हों ने अपना सारा मन प्रजा पालन में तत्पर कर रक्खाहै अब हम कहसक्ते हैं कि कश्मीर स्वर्ग है और देवताओं के हाथ मे है महाराज रणबीरसिंह इन्द्रकी समान शासन कररहे हैं ॥

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ९० | ३ | "झगड़ती हैं" इस के आगे "कारीगर" तक | झगड़ती हैं । कारीगर |
| ९३<br>९४ | १८ से<br>२३ तक | "यातें सरसन और॥१॥" इसके आगे "आमदनी उसकी" तक | यातें सरस न और॥१॥<br>आमदनी उसकी |

शिवप्रसाद

दूसरे भाग का सूचीपत्र

---



---

# भूगोल हस्तामलक
# दूसरा भाग

---

## बंगाले की डिपुटी गवर्नरी

बंगाले के डिपुटी गवनर के तहत में जो ज़िले हैं उन मे—१—चौबीस परगना हैं भागीरथी के पूर्व और सुन्दर बन के उत्तर । कहने में अबतक भी यह ज़िला चौबीस परगना कहलाता है, पर हक़ीकत में उसके अंदर अब अठारही परगने गिने जाते हैं, छ दूसरे ज़िलों के साथ लग गए । उसका सदर मुक़ाम कलकत्ता इसी ज़िले में उत्तर की तरफ़ २२ अंश २३ कला उत्तर अक्षाश और ८८ अंश २८ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से ५० फ़ुट ऊंचा और साय सौ मील दूर और इलाहाबाद से ४९८ मील अग्निकोन पूर्व को झुकता छ मील लंबा भागीरथी के बाऐं कनारे पर जिसे वहां दरयाय हुगली कहते है बसा है । अनुमान करते हैं कि कलकत्ता इस शहर का नाम काली घाट के सबब से जो वहां दरया कनारे देवी का एक मंदिर है रहाथा । अब यही शहर हिन्दुस्तान की राजधानी है । साबिक़ मे उस शहर के पास दलदल झील और जंगलों की बहुतायत से आब हवा खराब थी, पर जब से सरकार ने पानी का निकास करके दलदल ज़मीनों को सुखवा दिया.

जंगल कट गये, और हर तरफ़ सफाई रहने लगी तब से बहुत राह पर आती चली है। अब यह शहर बड़ी रौनक पर है। क्या शक्ति है परमेश्वर की जहां सौ बरस भी नहीं गुज़रे साठ सत्तर झोपड़ों की बस्ती थी, वहां अब तीन कोस लंबा शहर बसता है। शहर भी कैसा कि जहां बीस से ऊपर तो बड़े बड़े नामी बज़ार हैं कि जिन में सारी दुनियाकी चीज़े मयस्सर और बसती जिसकी दो लाख तीस हज़ार आदमी से ऊपर गिनी जाती है। लाख आदमी से अधिक नित गिर्दनवाह और आस पास के गांवों से आया करते हैं। वहां सब विलायतों के आदमी नज़र पड़ जाते हैं। सुस्ती और काहिली का निशान कम दिखलाई देता है, जिसको देखिये अपने काम मे मशगूल है बग्गी और गाड़ियां वहां इतनी दौड़ा करती हैं, कि बाज़े वक्त रसता न मिलने के सबब घड़ियों खड़ा रहना पड़ता है। सवारी वहां पालकी और घोड़े की गाड़ी जिस वक्त जिस जगह चाहिये, दो असरफ़ी रोज से दो आने रोज तक की घोड़े की गाड़ी, किराए पर मौजूद है। कोठियां वहां अंगरेज़ी डौल की दुमंज़िली तिमंज़िली वरन चौमंज़िली तक हज़ारों बनी हैं। बाग बाबुओं के ऐसे उमदः और सूथरे कि राजाओं का भी दिल उन की सैर को ललचाय। जहाज़ गंगा मे सैकड़ों लगे हुए, जहां तक नज़र जावेगी मस्तूलही मस्तूल दिखलाई देवेंगे। शाम के वक्त जब हज़ारों साहिब मेमों के साथ गाड़ियों पर सवार होकर गंगा कनारे की सड़क पर हवा खाने को निकलते हैं अजब एक कैफ़ियत होती है। निदान यह शहर लाइक़ सैरके है। लंदन का नमूना है। क़िले की तय्यारी में जिसका नाम फ़ोर्ट विलियम है दो करोड़ से ऊपर खर्च हुआ है, और गवर्नर जेनरल के रहने का मकान भी बहुत आलीशान और सुंदर बनाहै। एक म्यूज़ियम

अर्थात् अजाइब घर उस शहर में ऐसाहै कि उसके अंदर तमाम एशिया की अद्भुत और अनोखी चीजें भरी हैं। यदि नाममात्र भी उन चीज़ों का लिखें तो ऐसे ऐसे कई ग्रंथ बनजावें। धातु बनस्पति जीव विशेष कृत्रिम और स्वाभाविक जो पदार्थ जहां कहीं क्या जल क्या थल में अद्भुत मिला सब को इस घरमें ला रक्खा। फल फूल पेड़ोंकी टहानियां मरेहुए जीव जंतु और नए नए तरह के पक्षी कीट पतंग इत्यादि शीशों के अंदर ऐसे दवाके अरक़ों में रखे हैं, कि मानों वह तो अभी तोड़े गये और यह अभी हिलें चलें और बोलेंगे। अस्पताल कई एक बहुत बड़े बड़े बने हैं। विद्यालय इतने हैं कि जिन में हजारों लड़के सारी दुनियां के इल्म सीखते हैं। मेडिकल कालिज मे लड़कों को डाक्टरी का इल्म सिखलाया जाताहै, और मुर्दों का पेट चीर चीर कर दिखलाया जाताहै। जब वे पक्के होते हैं तब डाक्टरी के कामपर मुक़र्रर होजाते हैं। वहां इस कालिज में शीशोंके अंदर अर्क़ों के दर्मियान बड़ी बड़ी चमत्कारी चीज़ रखी हैं। कहीं दो धड़ एक सिर और कहीं दो सिर एक धड़ का लड़का, कहीं सारा बदन आदमी और मुंह जानवर का और कहीं सारा बदन जानवर और मुंह आदमी का। मा के गर्भ में बालकों की पहिले क्या सूरत रहती है और फिर दिनपर दिन क्योंकर बदलती जाती है, नौ दिनसे लेकर नौ महीने तक आंवलनाल समेत रखेहुए हैं। लडकियों के पढ़नेके वास्ते भी इस्कूल बने हैं। अब वहां के अमीरों ने आपस में चंदाकरके एक इस्कूल ऐसा तय्यार कियाहै कि जिसमे सिवाय हिंदुओं के और किसी जात के लड़के नं आनेपावें। टकसाल भी लाइक़ देखने के है, कैसी कैसी धूंएं की कलें उस मे लगाई हैं। और कैसा उन कलों के बल-आपसे आप जल्द सिक्का तैयार होताहै। गनफौंडरी मे इसी तरह धूंएं

की कलों के ज़ोरसे तोपें ढलती और खराद पर चढ़ती हैं। जेनरल अक्टरलोनी के मानमेंट अर्थात् मीनार पर जो १६५ फुट ऊंचा है चढ़ने से सारा शहर मानों हथेलीपर दिखलाई देने लगताहै। चढ़ने के लिये उसके अंदर २१३ सीढ़ियां बनी हैं। सड़कें वहां की सब साफ और चौड़ी और रातको रोशन रहती हैं रोशनी का यहां भी लंदनकी तरह बाफ़से बंदोबस्त होगया है। (१) और छिड़काव के लिये नहरों में पानी लानेको गंगाके कनारे धूंएं का पम्प अर्थात् वह कल जिस्से पानी ऊपर उठता है बना दियाहै। लहर समुद्रकी गंगा में कलकत्ते तक पहुँचती है, उसीको ज्वार भाठा कहते हैं। जहाज भी कलकत्ते तक आते हैं। मांस अहारियों की बहुतायत से कव्वे चील और हड़गिल्ले वहां बहुत हैं। यह हड़गिल्ला पांचफुट ऊंचा होताहै और पर उसका फैलने से पंदरह फुट तक नापागया है। कलकत्ते से आठ कोस उत्तर गंगा के बांएं कनारे बारकपूर की छावनी है। वहां भी गवर्नर जेनरल के रहने का एक उमदा मकान और बाग बना है। कलकत्ते से छ मील ईशानकोन को दमदमे में तोपखाना रहता है। यह भी मालूम रखना चाहिये कि शहर कलकत्ते का सुप्रिमकोर्ट के तहत मे है, परगनो के लिये जज कलेक्टर इत्यादि जुदा मुक़र्रर हैं, और वे सब फ़ोर्ट विलियम के क़िले से कोस आध एक पर अलीपूर में कचहरी करते हैं —२—हौरा चौबीस परगने के पश्चिम। सदर मुक़ाम

---

(१) जिस तरह ख़ज़ाने से नलों की राह फ़व्वारों में पानी पहुँचा करता है, इसी तरह यह बाफ़ भी अपने ख़ज़ाने से नलों की राह जाबजा पहुँच जाती है, और जिस तरह फ़व्वारे के मुहँ से पानी निकला करता है उसी तरह इसके नलोंके मुहँ से इसकी ज्वाला निकलती है। मुफस्सल बयान इस बाफ़ के तैयार करने का और नलों में उसके बांटने का लंदन के बयान के साथ होगा यहां इतनाही रहेगा॥

ेरा अथवा हवड़ा ठीक कलकत्ते के साम्हने गंगा पार बसा है। वहां ारूत बनाने की मेगज़ीन धूंएं के ज़ोर से चलते हुए आरे कल के ोल्हू इत्यादि, कई कारखाने हैं।—३—बारासत चौबीस परगने के त्तर। सदर मुक़ाम बारासत कलकत्ते से १२ मील ईशानकोन की रफ है।—४—नदिया बारासत के उत्तर। उसका सदर मुकाम किशन गर कलकत्ते के उत्तर ५७ मील पर बसा है। शहर नादिया अथवा वद्वीप गंगा के कनारे उस मुक़ाम पर है जहां उसकी दोनों धारा ज- ाघी और भागीरथी का संगम हुआ है, पर वह अब बर्दवान के ज़िले गिना जाता है। बंगाले में वहां के पण्डित बहुत प्रसिद्ध हैं, विशेष रके नय्यायिक। इसी ज़िले में वायुकोन की तरफ भागीरथी के क- ारे मुर्शिदाबाद के दक्षिण तीस मील पर पलासी का गांव है, जहॉ ार्ड क्लाइव ने सन् १७५७ में सिराजुद्दौला को शिकस्त दी थी।—५— सर नादिया के पूर्व। आब हवा बहुत ख़राब। सुंदरवन इस ज़िले दक्षिण भाग से बड़ा है। सदर मुकाम जसर अथवा मुरली कल- त्ते में ६२ मील ईशानकोन की तरफ है।—६—बाक़रगंज जसर के ूर्व। सन् १८०१ में इसका सदर मुकाम बाक़रगंज से उठकर बैरी- ाल में आगया। वह कलकत्ते से १२५ मील ठीक पूर्व गंगा के एक ापूमें बसा है।—७—नावकोली बाकरगंज के पूर्व। सदर मुकाम व- ुआ कलकत्ते से १८० मील पूर्व ईशानकोन को झुकता मेघना के ाएं कनारे है।—८—फरीदपुर अथवा ढाका जलालपुर बाक़रगंज के उत्तर। उसका सदर मुक़ाम फरीदपुर कलकत्ते से १२५ मील ेशानकोन की तरफ़। वहा से अढाई कोस पर पद्मावहती है। इसी ज़िले में ढाके से चार कोस अग्निकोन की तरफ नरायनगंज में नमक ा बहुत रोज़गार होना है।—९-ढाका ढाका जलालपुर के पूर्व ढाके

का शहर, जिसे जहांगीर नगर भी कहते हैं, कलकत्ते से १८० मील ईशानकोन की तरफ़ बूढ़ी गंगा के बांएं कनारे बसा है, बरसात के दिनों में जब पानी की बाढ़ आती है, तो हर तरफ उसके जल ही जल दिखलाई देता है। किसी समय में यह शहर बहुत आबाद और सूबे बंगाले की राजधानी था। अब तक भी उस के गिर्दनवाह में बहुतेरे खंडहर पड़े हैं और अनुमान ६०००० आदमी उस मे बसते हैं। कहते हैं। कि शाइस्ताखां की सूबेदारी में वहां रुपये का आठ मन चावल बिका था, सन् १६८९ में जब वह वहां से चलने लगा तो उसने शहर का पश्चिम दरवाज़ा चुनवाकर उस पर यों तिलाक़ अर्थात् आन लिखवा दिया, कि इस दरवाजे को मेरे पीछे वही सूबेदार खोले जो फिर ऐसा सस्ता करे।—१०—त्रिपुरा ढाका और इस जिले के बीच में ब्रह्मपुत्र का दर्या जिसे वहां वाले मेघनाके नाम से पुकारते हैं बहता है। इस जिले का नाम पुराने कागज़ों में कहीं कहीं रौशनाबाद भी लिखा है। यह पूर्व दिशा में हिन्दुस्तान का सब से परला जिला है। इस से आगे फिर जंगल पहाड़ है, कि जिन से परे बर्म्हों का मुल्क बसता है। आदमी वहां के जिन्हें बंगाली तिउरा पुकारते है कुछ जंगली से हैं बहुधा ज़मीन में बल्लियां गाड़ कर उन बल्लियों पर अपने झोपड़े बनाते हैं। सूरतें उनकी चीन और बर्म्हावालों से बहुत मिलती हैं। धर्म का उनके कुछ ठिकाना नहीं। इसका सदर मुक़ाम कोमेला पहाड़ के पास गोमती नदी के बांएं कनारे कलकत्ते के पूर्व ईशान कोन को झुकता २०० मील पर बसा है।—११—चित्रग्राम अथवा चटगांव जिसे अंगरेज़ लोग चिटागांग कहते हैं, त्रिपुरा के अग्निकोन की तरफ़ नाफ़ नदी तक चलागया है। यहभी जिला हिन्दुस्तान की हद पर है इस से पूर्व जंगल पहाड़ और फिर उन से आगे बर्म्हों का

मुल्क है। इस ज़िले में बस्ती कम है और वन बहुत। यहां के आदमी भी त्रिपुरावालो की तरह छ सात हाथ लम्बी वल्लियां ज़मीन में गाड़कर उस पर अपने झोपड़े बनाते हैं। अठवारे में एक दो बार कई मुक़ामो पर हाट लगा करती है उसी जगह लोग सौदा करने के लिये इकट्ठा होते हैं। मज़हब का उनके कुछ ठिकाना नहीं सब चीज खाते पीते हैं। शिकारी बहुधा हाथी मारकर उसी के गोश्त पर गुज़ारा करते हैं। हाथी वहा के जंगलों मे त्रिपुरा की तरह बहुतायत से होते हैं। गरजन का तेल जो काठ की चीजों को साफ रखने के लिये खूब चीज़ है वहां बहुत बनता है। आब हवा अच्छी है। चटगांव अथवा इसलामाबाद २२००० आदमी की बस्ती इसका सदर मुकाम कर्न- फूली नदी के दहने कनारे कलकत्ते के पूर्व तीन सौ मील पर बसा है। उस से बीस मील उत्तर हिंदुओ का तीर्थ सीता कुंड है, कि जिस का जल सदा गर्म रहता है। जो कोई उसके जल के पास जलती हुई बत्ती लेजावे तो उसकी बाफ गोरख डिब्बी की तरह बारूत सी भभक जाती है। उसी थाने के इलाके में बलेवा कुंड हिंदुओ का दूसरा तीर्थ है, उस में पानी के ऊपर ज्वालामुखी की तरह सदा आग बला करती है। ज्वालामुखी और गोरखडिब्बी का वर्णन और वहां आग के जलने और भभकने का कारण कांगड़े के ज़िले में लिखा जावे- गा—१२—सिलहट जिसका शुद्ध नाम श्रीहट्ट है त्रिपुरा के उत्तर। शास्त्र मे जो मत्स्यदेश लिखा है वह इसी के आस पास है। इस ज़िले के पूर्व और दक्षिण भाग में जंगल और पहाड़ हैं, और बाक़ी मैदान कि जो बरसात के दिनों में बहुधा जल मग्न हो जाता है। लोहे और कोयले की खान है। इन पहाड़ों में अक्सर खासिये लोग बसते हैं, मज़बूत होते हैं, और हथियार उनके तीर कमान और नंगी लंबी त-

लवारें और और ढालें चौखूंटी इतनी बडी कि जिनसे मेह मे छतरी की बिलकुल इहतियाज नहीं। उन लोगो में पैतृकाधिकार बड़ी बहन के लड़के को पहुंचता है। ढाल और सीतलपाटी अर्थात् बेत की बुनी हुई चटाई यहां के बराबर कहीं नहीं बनती। इमारत कम बहुत आदमी छान छप्परों में रहते हैं। सदर मुक़ाम इसका सिलहट कलकत्ते के ईशानकोन को कुछ ऊपर ३०० मील पर बसा है। सिलहट से एक दिन का राह पर वायुकोन को पडुवा नाम बस्ती है। वहां से नौ मील ईशान कोनको पहाड़में एक अद्भुत गुफा है, दस से अस्सी फुट तक ऊंची और चौड़ी, लम्बान की खबर नहीं, लोग आध कोस तक तो उसके अंदर गए हैं, फिर लौट आए। सिलहट से २० मील ईशानकोन उत्तर को झुकता जयंतापुर पहले एक राजा के दखल में था, सन् १८२२ में वहां के राजा की बहन ने काली के साम्हने नर बलि चढ़ाने को एक बंगाली पकड़ने के लिये अपने आदमी सरकारी अमलदारी में भेजे थे, पर क़िस्मत बंगालियों की अच्छी थी कि वह आदमी गिरफ्तार हो गए और जेलखाने में भेजे गए, परंतु सन् १८३५ में वहां के राजा ने तीन आदमी सरकारी रैयत को अपने इलाके के अंदर पकड़कर काली के साम्हने बल देही दिया, तब सरकार ने उस इलाक़े को जब्त करके सिलहट मे मिला लिया, और राजा के खाने को पिंशन मुक़र्रर कर दिया। —१३—कचार अथवा हेरम्ब सिलहट के पूर्व। यह ज़िला तीन तरफ पहाड़ों से घिरा है, कि जो आठ आठ हज़ार फुट तक ऊंचे हैं, और मैदान दलदल और झीलों से भरा है। दक्षिण भाग में बड़ा घना जंगल है। लोहा खान से निकलता है। सदर मुक़ाम सिलचार कलकत्ते से ३०० मील ईशानकोन बारक नदी के बाएं कनारे बसा है।—१४—मैमनसिंह सिल-

हट से पश्चिम। यह जिला ब्रह्मपुत्र के दोनों कनारों पर बसा है। और बहुत सी नदियां उस में बहती हैं। बरसात के दिनों में प्राय सारा जिला जल मग्न हो जाता है इसका सदर मुकाम सोवारा अथवा नसीराबाद ब्रह्मपुत्र के दहने कनारे कलकत्ते के उत्तर ईशानकोन को झुकता हुआ २०० मील है। -१५-पवना जसर के उत्तर। इसका सदर मुकाम पवना कलकत्ते से १३७ मील उत्तर ईशानकोन को झुकताहै। -१६-राजशाही पवना के वायुकोनकी तरफ। इस जिले के बीच कई धारा गंगा की और दूसरी नदियां भी बहती हैं, और बरसात में सब जगह जल ही जल हो जाता है। इसका सदर मुकाम बौलिया कलकत्ते से १३० मील उत्तर गंगा के बांएं कनारे पर बसा है। -१७-बगुड़ा राजशाही के ईशानकोन की तरफ। इसका सदर मुक़ाम बगुड़ा कलकत्ते से १७५ मील उत्तर ज़रा ईशानकोन को झुकता हुआ है। -१८- रंगपुर बगुड़ा के उत्तर। ब्रह्मपुत्र तिष्टा करतोया इत्यादि कई नदिया इस में बहती हैं, और ईशानकोन की तरफ झीलें भी हैं। गर्मी कम पडती है। पूर्व भाग में लू बिलकुल नहीं चलती। इस जिले मे बहुतेरे आदमी आटा पीसने की तरकीब न जानने के कारन गेहूं भी चावल की तरह उबाल कर खाते है। इमारत बहुत कम, बड़े बड़े आदमी और महाजन भी घास फूस के बंगलो में रहते हैं। जंगल ऐसे कि जिन में हाथी गैंड़े फिरते है। सदर मुक़ाम रंगपुर कलकत्ते से २४० मील उत्तर ज़रा ईशानकोन को झुकता है। -१९-दिनाजपुर रंगपुर के पश्चिम। नदियां इस ज़िले में बहुत हैं, गांव गांव नाव घूमती है, पर बरसात में जगह २ पर जो पानी बंद रह जाता है और बहुत से तालाव जो बे मरम्मत पड़े है गर्मियों में उनका सड़ना और सूखना बुरा होता है। सदर मुकाम

दिनाजपुर कलकत्ते के ठीक उत्तर २२५ मील पूर्ण बावा नदी के कनारे अनुमान ३०००० आदमी की बस्ती है।—२०—पुरनिया दिनाजपुर के पश्चिम । मोरंग का पहाड़ और जंगल इस ज़िले के उत्तर पड़ता है, जिसे संस्कृत में किरात देश लिखा है । बरसात में इस ज़िले की प्राय आधी धरती जल मग्न हो जाती है। जमींदारों को खेतियों की हाथियो से रखवाली करनी पड़ती है। जब अंगरेज़ों की वहां नई अमल्दारी हुई थी तो उन के नौकरों ने उन से यह मशहूर कर दिया कि यहां की लोमड़ी रात को रुपए और कपड़े भी उठा ले जाती है और इस बहाने से बहुतेरी चीज़ें चुरालीं । गाय भैंस यहां बहुत होती हैं, मोरंग के जंगल में चराई का आराम है। सदर मुक़ाम पुरनियां कलकत्ते से २५० मील उत्तर वायुकोन को ज़रा झुकता, यद्यपि नौ मील मुरब्बा के विस्तार में बसा है, पर आदमी उसमें चालीस हज़ार से अधिक न होंगे । जो लोग कुलीन नहीं होते वे लोग कुलीन बनने के लिये अपनी बेटियो को कुलीनों के साथ ब्याहने मे बड़ा रुपया ख़र्च करते हैं, बरन कभी कभी दंतहीन और कंठागत प्राणवालो के साथभी ब्याह देते हैं, कि जिससे फिर उसके भाइयो का विवाह कुलीनों के साथ हो सके, और अकुलीन स्त्रियों के लेने मे रुपया मिले।—२१—मालदह पुरनिया के दक्षिण। सदर मुक़ाम मालदह कलकत्ते से १८० मील उत्तर महानंद नदी के तटपर अनुमान २०००० आदमियो की बस्ती है । गौड़का शहर जो किसी समय में बंगाले की राजधानी था, मालदह से नौ दस मील दक्षिण गंगा कनारे बस्ताथा, अब गंगाकी धारा वहांसे चारपांच कोस हटगई, शहर की जगह खंडहर और जंगली दरख़त खड़े हैं। अकबर के बाप हुमायूं बादशाह ने उसका नाम जन्नताबाद रखा था।

पुराना नाम उसका लक्ष्मणावती है। उसके खंड़हर अब तक भी वीस मील मुरब्बा में नज़र पड़ते हैं। उसमें एक मीनार ७१ फुट ऊंचा है।–२२–मुर्शिदाबाद मालदह से दक्षिण आब हवा वहांकी खराब। सदरमुक़ाम मुर्शिदाबाद भागीरथी के बांएं कनारे १२० मील कलकत्ते के उत्तर बसा है। पहिले उसका नाम मक़सूदाबाद था, सन् १७०४ में बंगाले के नाज़िम मुरशिदक़ुली खां ने उसे मुर्शिदाबाद किया, और सूबे बंगालेकी राजधानी बनाया, कि जो बिहार से पूर्व ब्रह्मा की हदतक चलागया है। अब भी नव्वाब नाज़िम जो सरकार से पंद्रह लाख रुपया सालाना पिंशन पाताहै इसी शहर मे रहता है, एक कोठी अंगरेज़ी तौर की अपने रहनेके वास्ते बहुत उमदा बनाई है, कहते हैं कि उसकी तैयारी में अठारह लाख रुपया खर्च हुआ है, और अनुमान डेढ़लाख आदमी उस शहरमे बस्ते है। मुर्शिदाबादसे छ मील दक्षिण भागीरथी के बांएं कनारे बहरामपुर की छावनी है। –२३–वीरभूम मुर्शिदाबाद के पश्चिम इस ज़िले मे कोयले और लोहे की खान है। सिउड़ी इसका सदर मुकाम कलकत्ते से ११० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआहै। वहां से ६० मील वायुकोन को झाड़खंडके बीच देवगढ़ में वैद्यनाथ महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है। शिवरात्री को बड़ा मेला होताहै। हजारों कांवड़िये गंगासे महादेवके लिये गंगाजल लाते हैं। और पंद्रह मील पश्चिम नागौर का पुराना शहर वीरानसा पड़ा है। उससे सातमील पर बकलेसर में गर्म पानी का एक सोता जारी है। गंधकका उसमें असरहै और थर्मामेटर (१)

---

(१) गर्मी का प्रमाण जानने के लिये थर्मामेटर खूब चीज़ है। पतली लम्बी गर्दन की एक शीशी में पारा भरा रहता है मुंह शीशी का बिलकुल बंद और गर्दन शीशी की हवासे खाली होती है, और उस शीशी के नीचे एक पटरा पीतल की

उसके अंदर डुबाने से १५२ दर्जे चढ़ता है। सिउड़ी से अनुमान २० मील नैर्ऋतकोन को मंगलपुरके पास वृक्ष रहित बीहड़ धरती में जो कोयले की खान है, तीस सीढ़ी उतरकर उसके अंदर जाना होताहै, धरती के नीचे सुरंगों की तरह आध आध कोस तक हर तरफ़ खान खोदते चले गये हैं, और उन सुरंगों में जगह जगह पर बड़े बड़े मोखे रखे हैं, उन्हीं मोखों की राह से जैसे कुए से पानी खींचते हैं, लोहे की चरखियों से खुदा हुआ कोयला खींच लेते हैं, खान अंदर अंधेरी हैं, पर सीधी ऊंची चौड़ी और साफ ऐसी, कि यदि आदमी बिना मशाल भी उस में जावे तो ठोकर और टक्कर न खावे कई सौ आदमी सरकार की तरफ से कोयला खोदा करते है और साल में चार पांच लाख मन कोयला वहां से निकल जाता है। खान के अंदर जो सोतों से पानी निकलता है उसके बाहर फेकने के लिये धूंएं की कल लगाई है। दस बारह कोस के घेरे मे और भी इस तरह की कई खान हैं। जगह देखने लायक़ है—२४—बर्दवान बीरभूम के दक्षिण। शुद्ध नाम इसका बर्द्धमान जैसा नाम तैसा गुण, धरती बड़ी उपजाऊ, बनारस से उतरकर ऐसा आबाद और उपजाऊ तो दुनियां में कोई दूसरा जिला नहीं देख पड़ता। फैलाने से फी मील मुरब्बा छ सौ आदमी की बस्ती पड़ती है। सदर मुक़ाम इसका बर्दवान कलकत्ते से ६० मील वायुकोन की तरफ अनुमान ६०००० आदमी की बस्ती

---

२४० बराबर हिस्सों में बंटी हुई लगी रहती है। पारे का स्वभाव है कि गर्मी से फैलता और सर्दी से सिकुड़ जाता है, पस वह पारा जहा जितना फैलकर जितने दर्जे तक उस शीशी के अदर चढ़े वहा उतनी गर्मी समझनी चाहिये। बिना थर्मामेटर के कदापि कोई यह बात नहीं बतला सकता कि एक जगह से दूसरी जगह किस क़दर कम या जियादा गर्मी है॥

है। मकान वहां के राजा ने बहुत उमदा उमदा बनवाये हैं, पालेस की कोठी और गुलाब बाग दोनों देखने लायक़ हैं, उनकी तैयारी में राजा ने अपने हौसिले बमूजिब कोई बात बाक़ी नहीं छोड़ी। वहांवाले कहते हैं कि यह गुलाब बाग लंदन के हैडपार्क के नमूने पर बना है, अंगरेज़ी तौर के मकान और बाग इस तैयारी और सफाई के साथ इस गिर्दनवाह में और कहीं भी नहीं मिलेंगे।—२५—हुगली बर्दवान के अग्निकोन को। उस में कोयले की खान है सदर मुक़ाम हुगली भागीरथी के दहने कनारे पर कलकत्ते से २६ मील उत्तर बसा है। मुर्शिदाबाद के नव्वाब के किसी रिश्तेदारने वहां एक इमाम बाड़ा बनवाकर उसके खर्च के वास्ते कुछ जमीन माफ़ कर दी थी, लेकिन आमदनी ज़मीन की वहां के मुतवल्ली हज़म कर जाते थे, अब सरकार ने अपनी तरफ़ से ऐसा बंदोबस्त कर दिया है कि उस ज़मीन की आमदनी से इमामबाड़ा भी खूब तैयार रहता है, और एक अस्पताल और दो बड़े विद्यालय भी मुकर्रर हो गये हैं।—२६—मेदनीपुर हुगली और हबड़ा के नैर्ऋत कोन। आदमी इस ज़िले के बड़े सुस्त आलस्यी और धनहीन हैं। सदर मुक़ाम मेदनीपुर कलकत्ते से ६९ मील पश्चिम ज़रा नैर्ऋतकोनको झुकता हुआ है।—२७—बलेश्वर जिसे बालासोर भी कहते हैं मेदनीपुर के दक्षिण। नमक इस ज़िले में लाख रुपये से ज़ियादः का बनता है। लोहे की खान है। सदर मुक़ाम बलेश्वर कलकत्ते से १४० मील दक्षिण नैर्ऋत-कोनको झुकता हुआ बूढी बलङ्ग नदी के दहने कनारे समुद्रसे आठ मील पर बसा है। किसी समय में जब सरकार कम्पनी की तरफ़ से वहां तिजारत का कारखाना जारी था, और फ़रासीस डेनमार्क और डचवाले भी दूकान और कोठिया रखते थे, तो बहुत आबाद

था, पर अब बिलकुल बे रौनक़ है। वहां के आदमी शराब बहुत पीते हैं और जो लोग शराब से परहेज़ रखते हैं वे अफ़यून खाते हैं।–२८–कटक बलेश्वर के दक्षिण। संस्कृत में उसे उत्कल देश कहते हैं। बादशाही वक्त में वह अपने आस पास के जिलों के साथ बंगाले की हद तक सूबै उड़ेसा लिखा जाताथा। बाग यहां अच्छे नहीं लगते कहीं कहीं लोहा और पहाड़ी नदियों का बालू धोने से कुछ सोनाभी मिलता है। समुद्र के कनारे नमक बहुत बनता है। समुद्रके कनारे तो यह जिला दस कोस तक नीचा और जंगल है, और जब समुद्र से हुम्मा आता है तो बिलकुल जल मग्न होजाता है, और फिर दस कोस तक आबाद है, उस से आगे पश्चिम को पहाड़ और बन है। पहाड़ सब से बड़ा दो हजार फुट तक समुद्र से ऊंचा है। सदर मुक़ाम कटक नब्बे हज़ार आदमी की बस्ती, कलकत्ते से अढ़ाई सौ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता हुआ महानदी के किनारे पर बसा है। क़िला बारहभट्टी अथवा बारहबट्टी का शहर से आधकोस पर बना है, गिर्द उस के ८० गज़ चौडी खंदक़ है।–२९–खुरदा अथवा पुरी कटक के दक्षिण चिलका झील तक। सदर मुक़ाम पुरुषोत्तमपुरी अथवा जगन्नाथ कलकत्ते से ३०० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता समुद्र के कनारे बसा है, उस में जगन्नाथ का मंदिर कुछ कम सवा दो सौ गज़ लंबा और इतना ही चौड़ा एक ऊंचा पत्थर की दीवारों का हाता है उसके भीतर ६७ गज़ ऊंचा बना है, इस बड़े मंदिर के सिवाय जिसमे जगन्नाथ विराजते हैं उस हाते के अन्दर और देवताओं के भी बहुत से मंदिर हैं। जगन्नाथ के रथ के पहिये के नीचे दबकर मरने मे हिंदूलोग बड़ा पुण्य समझते हैं, और आगे कितनेही आदमियो ने इसतरह

पर अपनी जान दे डाली है। इस मंदिर को राजा अनंगभीमदेवने वनवाया था, और वह सन् ११७४ मे उड़ेसे की गद्दी पर बैठा था। कटक से जगन्नाथ जाते हुए कोई सोलह मील पर खुरदा की तरफ झाड़ी में एक ऊंचा सा बुर्ज दिखलाई देता है, वहां से दो तीन कोस भवानेश्वर का उजड़ा हुआ शहर है, वहांवाले बतलाते हैं कि किसी समय में ईसके अन्दर सात हज़ार मंदिर और एक करोड़ महादेव के लिङ्ग थे, अब भी वहुतेरे मदिर टूटे फूटे पड़े हैं, एक उन में से १८० फुट ऊंचा है, और एक लिङ्ग भी महादेव का वहां चालीस फुट से कम नहीं है। भवानेश्वर से पांच मील पश्चिम खंडगिर के पहाड़ में कई जगह पत्थर काटकर गुफा बनाई हैं, एक पर पुराने अक्षर भी खुदे है, पुराने मदिरों के टूटे हुए खंभे इत्यादि और जैन-मत की मूर्तें वहां बहुत पड़ी हैं, राजा ललितेन्द्र केसरी के महलों के निशान हैं, और पहाड की चोटी पर एक नया मंदिर पार्श्वनाथ का अब थोड़े दिनों से बना है। कटक से ३५ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता वैतरणी नदी के दहने कनारे जहाज़पुर मे जो सब पुराने मंदिर और मूरतें कि अब तक भी बाकी हैं उन से मालूम होता है कि वह किसी समय में वडा मशहूर और हिंदुओं का तीर्थ था। जगन्नाथ से १८ मील उत्तर समुद्र के तट पर कनारक गांव के पास एक पुराना टूटा हुआ पर वडा अद्भुत सूर्य का मंदिर है, सन १२४१ मे राजा नृसिंहदेव लंगोरे ने वनवाया था और बारह बरस की आमदनी उड़ेसे की उस मे खर्च हुई थी, यद्यपि शिखर विलकुल गिर गया है पर फिर भी जितना वाक़ी, है सवा सौ फुट के लग भग ऊंचा होवेगा। कहते हैं किसी समय में उसके ऊपर एक टुकड़ा चुम्बुक का इतना वडा लगा था कि लोहे के कील काटेवाले जहाज़ों

को जो उस तरफ से निकलते थे कनारे पर खींच लेता था। जगमो-
हन अथवा सभामंडप उस मंदिर का साठ फुट लंबा और इतना ही
चौड़ा और ऊंचा है, दीवारें बीस बीस फुट तक मोटी हैं, यह मंदिर
निरे पत्थरों का बना है, कि जिन को लोहे से आपस में जड़ दिया
है, और उसमें स्त्री पुरुष जीव जंतु पक्षी की सूरतें और बेल बूटे बड़ी
कारीगरी के साथ बनाये हैं। -३०- बांकुड़ा बर्दवान के पश्चिम।
कोयले की खान है। सदर मुक़ाम बांकुडा कलकत्ते से सौ मील
पश्चिम वायुकोन को झुकता है। वहां सरकार की तरफ से मुसा-
फ़िरो के लिये एक सरा बनाई गई है।-३१-भागलपुर मुर्शिदाबाद
के वायुकोन विंध्य के पहाड़ पूर्व मे इसी ज़िले तक हैं, यहां से फिर
दक्षिण को मुड़ जाते हैं। एक क़िस्म की खरी मिट्टी इन पहाड़ों में
बहुतायत से होती है; अकसर वहां की औरते जब गर्भवती होती हैं
तो उसे खाती हैं। सदर मुक़ाम भागलपुर पांच हज़ार घर की बस्ती
कलकत्ते से २२५ मील उत्तर वायुकोन को झुकता गंगा के दहने
कनारे कोस भर के फासले से बसा है। भागलपुर के पूर्व दक्षिण
को ज़रा झुकता साठ मील पर गंगा के दहने कनारे तीस हज़ार
आदमियों की बस्ती राजमहल है। मकान बादशाही जो गंगा कनारे
अच्छे उमदा बने थे अब सब टूट फूट कर खंड़हर होगये। भागलपुर
से दो मंज़िल दक्षिण जंगल के बीच आध कोस ऊंचे मंदरगिर पर्वत
पर हिन्दुओं का प्राचीन तीर्थ है। पहाड और पानी के झरने बर-
सात में बड़ी कैफियत दिखलाते है। वहांवाले कहते हैं कि देवताओं
ने इस पहाड से समुद्र मथा था।-३२-मुंगेर भागलपुर के पश्चिम
सदर मुक़ाम मुंगेर, जिसका असली नाम मुद्गिरबतलाते हैं, कलकत्ते
से २५० मील उत्तर वायुकोन को झुकता गंगा के दहने कनारे पर

है। क़िला मज़बूत था, पर अब वेमरम्मत और टूटा फूटा सा पड़ा है। बंदूक पिस्तौल छुरी कांटे इत्यादि लोहे की अंगरेज़ी चीजें वहां अच्छी और सस्ती बनती हैं। यह शहर सूबै बंगाले की सरहद पर बसा है, इसके पश्चिम सूबै बिहार शुरू होता है। मुंगेर से पांच मील पूर्व सीताकुंड का गर्म सोता है, अठारह फुट मुरब्बा में पक्का ईटों का एक हौज़ बना है, और उसी में कई जगह पानी के नीचे से बुलबुले उठा करते हैं, जहां बुलबुले उठते हैं वहां पानी अधिक गर्म रहता है, पानी साफ़ है, और उस में थर्मामेटर डुबाने से १३६ दर्जे तक पारा उठता है। उसी गिर्दनवाह में और भी कई एक इस तरह के गर्म सोते हैं।–३३–बिहार मुंगेर के पश्चिम दक्षिण भाग मे पहाड़ हैं। अफ़यून इस ज़िले मे बहुत होती है, और चावल बासमती अच्छा। वहां ग्वालो के दर्मियान अजब एक रस्म जारी है, दिवाली के दिन एक सूवर के पांव बांध कर मैदान में छोड़ देते हैं, और फिर उसको अपने गाय बैलों के पैर से रूंदवाते हैं, यहां तक कि वह मर जाता है, इसका एक मेला होता है, और फिर उस सूवर को वे लोग खा जाते हैं, इस जिले मे अबरक बिल्लौर गेरू लोहा संगमूसा और अक़ीक़ की खान है। सदर मुक़ाम गया हिन्दुओं का तीर्थ कलकत्ते से २८९ मील वायुकोन को फल्गु नदी के बांएं कनारे है। हिन्दू निश्चय रखते हैं कि फल्गु कभी दूध की बहती है, कारण ऐसा मालूम होता है कि शायद उसके करारो के टूटने से कभी कभी खरी मिट्टी इतनी पानी के साथ मिल जाती है कि वह दूध सा दिखलाई देता है। यह बात अक्सर नदियों में हुआ करती है, जिन के कनारों पर या थाह मे खरिया का असर है, हम दूध उसी को कहेंगे जिस से मक्खन निकले। पुराना शहर गया जिस मे

गयावाल ब्राह्मण बसते हैं एक पथरीली उचान पर फल्गु नदी और एक पहाड़ी के बीच में बसा है, और साहिब गंज जहां बाज़ार है और व्यौपारी लोग रहते हैं, रामशिला की पहाड़ी के दक्षिण और शहर के उत्तर फल्गु के कनारे मैदान मे है, इन दोनों के बीच साहिब लोगों के बंगले हैं। शहर की गलियां तंग और निहायत ग़लीज़ ऊंची नीची बीच बीच में पत्थर के ढोके पड़े हुए, पत्थरों के तपने से और फल्गु का बालू धिकने से गर्मी वहां शिद्दत की होती है। फल्गु के कनारे बिष्णुपादोदका का मंदिर है, मंदिर के बीच में कुण्ड को जिस में चरण का चिह्न है, चांदी से मढ़ा है। पास ही एक मंदिर मे पुण्डरीकाक्षजी की मूर्त्ति है, उस मूर्त्ति का पत्थर हाथ की चोट लगने से धातु की सी आवाज़ देता है, हिन्दू उसे करामात समझते हैं, यह नहीं जानते कि चीन मे ऐसा भी एक पत्थर होता है कि उसे बजाओ तो बाजे की आवाजें निकलें। आदमी वहां सब मिलाकर प्राय एक लाख बसते होंगे। गयावाल ब्राह्मण आगे यात्रियों पर बहुत जियादती करते थे, अब भी अकसरोंसे जो कुछ वे बेचारे अपने घर से लाते हैं ले लिवाकर आगे को उन से तमस्सुक लिखवा लेते हैं। बिहार ३००० आदमियों की बस्ती गया से ४० मील ईशानकोन की तरफ है। मुसलमान बादशाहों के वक्त मे इसी शहर के नाम से यह सूबा जो सूबे इलाहाबाद और बंगाले के बीच में पड़ा है पुकारा जाता था। संस्कृत में उसके दक्षिण भाग को मगध और उत्तर भाग को मिथिला लिखा है। किसी ज़माने से इस के आस पास बौध लोगों के बड़े तीर्थ थे। बिहार वे लोग उस जगह को कहते हैं जहां उस मत के भिक्षुकों के रहने के लिये मठ और धर्मशाला बनें, बरन उन्हीं मठ और धर्म-

शाला का नाम विहार है। अब भी इस जिले में हर जगह बौध लोगों के मकान और मंदिरों के निशान मिलते हैं, और हर तरफ़ उनकी मूरतें टूटी फूटी ढेर की ढेर नज़र आती हैं, वरन जैनी और वैष्णवों ने भी वहां अपने मंदिरों में कितनी ही मूरतें बौध मत की उठा कर रख ली हैं। बराबर के पहाड़ों में जो गया से सात कोस है भिक्षुकों के रहने के लिये पत्थर काट काट कर सुन्दर सचिक्कण गुफ़ा बनाई हैं, उन में उस समय के खुदे हुए अक्षर भी मौजूद हैं। निदान ये सब निशान किसी समय में बौध मत के प्रबल होने के देखने लाइक़ हैं। बुध गया में, जो गया से आठ मील होगा, एक पुराने बुध के मंदिर के पीछे पीपल का पेड़ है, ब्राह्मण उसे ब्रह्मा का लगाया और बौध उसे सिंहलद्वीप के राजा दुग्धकामिनी का लगाया कुछ कम तेईस सौ बरस का पुराना और उस स्थान को पृथ्वी का मध्य बतलाते हैं। देखने में तो वह पेड़ कोई १५० बरस का पुराना मालूम होता है, पर यह अलबत्ता हो सकता है कि उसी स्थान पहले कोई दूसरा पीपल रहा हो। बिहार से सोलह मील दक्षिण पहाड़ों की जड़ में राजग्रह की छोटी सी बस्ती है, जिसे जरा-सिन्ध की राजधानी बतलाते हैं, और पहाड़ों के अंदर उसके मकान और उस मैदान का जहां वह भीम के हाथ से मारा गया था निशान देते हैं। मकानों के निशान और क़िले अथवा शहरपनाह की टूटी हुई पुरानी दीवार और बुर्जों को देखने से जो पहाड़ों के ऊपर दस मील के घेरे में नमूदार है मालूम होता है कि राजग्रह किसी समय में निस्सन्देह बहुत बड़ा शहर बस्ता था। यह जगह जैनी और वैष्णव दोनों का तीर्थ है। जैनियों के तो पांचों पर्बतों पर पांच मंदिर बने है, और वैष्णव गर्म और सर्द कुण्डों में जिनकी वहां

इफ़रात है नहाते और अपने मत के देवलों में दर्शन करते हैं। गर्म कुंड के पास ही एक गुफा, जैसी बराबर के पहाड़ में है, पत्थर काट कर भिक्षुकों के रहने के लिये बनी है। वहां के अकसर बेवकूफ़ उसे सोन भंडार बतला कर कहते हैं कि उसमे जरासिंध की दौलत गड़ी है। राजग्रह से पंद्रह मील कुण्डलपुर रुक्मिनी का जन्मस्थान एक गांव सा बस्ता है, बुध की मूरतें और पुरानी इमारतों के निशान वहां भी बहुतायत से हैं।-३४—पटना अथवा अज़ीमाबाद विहार से पश्चिम वायुकोन को झुकता हुआ। सदर मुक़ाम पटना कलकत्ते से ३२० मील वायुकोन गंगा के दहने कनारे पर बसा है, और कनारेही कनारे कोई नौ मील तक चला गया, पर बस्ती बहुत दूर दूर है, अगली सी आबादी अब नहीं रही, फिर भी लाख से ऊपर आदमी है। बाज़ार तो चौड़ा है, पर गलियां तंग मेंह में कीचड़ खुश्की में गर्द। बहुत दिन हुए कि सरकार ने वहां एक गोदाम चावल रखने के लिये जिसे वहांवाले गोलघर कहते हैं गुम्बज अथवा औंधी हुई हांड़ी की सूरत का बनाया था, अब उस में सिपाहियों का असबाब रहता है, आवाज़ उसके अंदर खूब गूंजती है, चढ़ने को बाहर से दुतरफा सीढ़ियां लगी है। एक मूर्त्ति को वहां के ब्राह्मण पटनेश्वरी देवी कह कर पूजते हैं, लेकिन वह मूर्त्ति असल में बुध की है। हरिमन्दिर सिक्खों का तीर्थ है, कहते हैं कि उनका नामी गुरु गोविन्दसिंह इसी जगह पैदा हुआ था। शाह अर्ज़ानी का मुक़ाम मुसल्मानों का ज़ियारतगाह है। यह शहर बौध मती गुप्त राजाओं के समय में बड़ी रौनक़ पर था, मगध देश बरन सारे हिंदुस्तान की राजधानी और पाटलीपुत्र पद्मावती और कुसुमपुर के नाम से पुकारा जाता था। उस समय के यूनानियों ने उसे दस मील लम्बा और

६४ दरवाज़ों का शहर लिखा है। शास्त्र में पाटलीपुत्र को शोण के संगम पर कहा है, इस से ऐसा मालूम होता है कि शोण आगे पटने के समीप गंगा से मिलती थी, अब १६ मील हट गई है। पटने से १० मील पश्चिम गंगा के दहने कनारे दानापुरकी बहुत बड़ी छावनी है। दानापुर से इतनी ही दूर पर जहां शोण गंगा से मिली है मोनिया अथवा मनेरमें एक मक़बरा पत्थर का मखदूमशाह दौलत का बहुत अच्छा बना है। पटने से तीस मील पूर्व गंगा के दहने कनारे बाढ़ छोटा सा क़सबा है, चंबेली का फूलेल वहां बहुत उमदा बनता है।–३५–तिरहुत अथवा त्रिहुत जिसे बाज़े आदमी त्रिभुक्ति भी कहते हैं भागलपुर और मुंगेर से वायुकोन को। उत्तर में तराई का जंगल है। गंडक और कोसी नदी के बीच जो देश है उसे संस्कृत में मिथिला और वैदेह कहते हैं, उसी का यह मानो मध्य भाग है। आब हवा वहां की अंगरेज़ों को तो मुवाफ़िक़ है, पर हिन्दुस्तानियों के लिये खराब। शोरा बहुत होताहै। सदर मुक़ाम मुज़फ्फ़रपुर आठ हज़ार आदमियों की बस्ती कलकत्ते से ३४० मील वायुकोन उत्तर झुकता हुआ है।––३६––शाहाबाद पटने से पश्चिम शोण से लेकर कर्म्मनाशा नदी तक, जो सूबे बिहार की हद है। नैर्ऋत कोन की तरफ़ उजाड़ है, बाक़ी सब आबाद और उपजाऊ। फिटकरी की खान है, कभी कभी हीरा भी मिल जाता है। इस का सदर मुक़ाम आरा कलकत्ते से ३५० मील वायुकोन को है। आरे से दो मंज़िल पूर्ब गंगा के दहने कनारे बकसरका क़िला और शहर है। सन् १७६४ मे नव्वाब वज़ीर शुजाउद्दौला ने सरकारी फौज से इसी जगह शिकस्त खाई थी। बकसर से चौतीस मील दक्षिण सहसराम में एक पक्के तालाब के बीच, जो मील भर के घेरे में होगा,

शेरशाह बादशाह का मक़बरा संगीन बना है। आरे से अनुमान ७५ मील दक्षिण पश्चिम को झुकता प्राय १००० फुट ऊंचे पहाड़ पर दस मील मुरब्बा के बिस्तारमें शोण नदी के बांएं कनारे एक बड़ा मज़बूत क़िला रूहतासगढ़, जिसका शुद्ध नाम रोहिताश्म बतलाते हैं, उजाड़ पड़ा है। उस पर जाने के लिये दो कोस की चढ़ाई का कुल एक तंग सा रस्ता है, बाक़ी सब तरफ़ वह पहाड़ जंगल और नदियों से ऐसा घिरा है, कि किसी प्रकार भी आदमी का गुज़र नहीं हो सकता। दो मंदिर उस में प्राचीन हैं, बाक़ी सब इमारतें महल बाग तालाब इत्यादि जिनके अब केवल निशान भर बाक़ी रह गये है मुसलमान बादशाहों के बनवाये मालूम होते हैं।-३७-सारन, जिसका शुद्धोच्चारण शरण है, शाहाबाद के उत्तर, बहुत आबाद और उपजाऊ। शोरा वहां बहुत पैदा होता है, गाय बैल भी अच्छे होते हैं। सदर मुक़ाम छपरा ५०००० आदमियों की बस्ती कलकत्ते से ३६० मील पर वायुकोन को गंगा के बांएं कनारे है। वहां से दो मंजिल पूर्व गडक के बांएं कनारे, जहां गंगा के साथ उसका संगम हुआ है, हाजीपुर में हर साल कार्तिक की पूर्णिमा को एक बहुत बड़ा मेला हुआ करता है। -३८-चम्पारन सारन के उत्तर। सदर मुक़ाम मोतीहांड़ी कलकत्ते से ३७५ मील वायुकोन को है वहां से थोड़ी सी दूर उत्तर सुगौली की छावनी है।-३९-आशाम सिलहट के उत्तर ब्रह्मपुत्र के दोनों तरफ़ हिमालय में चीन की सरहद तक चला गया है। आशाम आईनी ज़िलों में नहीं गिना जाता, कमाऊं गढ़वाल और सागर नर्मदा की तरह इस इलाक़े के लिये भी एक जुदा कमिश्नर और अजंट मुक़र्रर है, और उसके नीचे छ बड़े असिस्टेंट छ जगहों में कचहरियां करते हैं।

पहिला सदर मुकाम गोहाट में । दूसरा गोहाट से ७५ मील पूर्व ईशानकोन को झुकता नौवांग में । तीसरा गोहाट से ६५ मील ईशानकोन ब्रह्मपुत्र के दहने कनारे तेजपुर में । चौथा गोहाट से ८० मील पश्चिम ब्रह्मपुत्र के बाएं कनारे ग्वालपाड़े में । पांचवां गोहाट से १९० मील ईशानकोन लखमपुर में । और छठा गोहाट से १८० मील ईशानकोन पूर्व को झुकता शिवपुर अथवा शिवसागर में । गोहाट से ६५ मील दक्षिण खसियों के पहाड़ में जिसे अंगरेज कोसिया कहते हैं समुद्र से ४५ फुट ऊंची चेरापूंजी साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है । रहने के लिये बंगले बन गये हैं । मेह वहां वहुत बरसता है । साल भर मे ३०० इंच तक नापा गया है (१) अजंटी के तहत मे वीस राजा और सरदार गिने जाते हैं, पर केवल गिनती मात्र को हैं, राजा के बदल उनको वनरखा कहना चाहिये, केवल वन और झाड़ी उनकी मिलकियत है, और यही जंगली आदमी जिनका वर्णन आगे होता है, उन की रैयत हैं । सरकार के सब ताबे और फरमाबर्दार हैं । जितनी नदियां इस ज़िले में बहती हैं, शायद और कहीं भी इतने विस्तार में न बहती होंगी ।

---

(१) मेह का हर जगह अंदाज़ा समझने के लिये यह तर्कीब बहुत अच्छी है, अर्थात् जिस स्थान के मेह का प्रमाण जानना दरकार हो इस बात को समझ लेना चाहिये कि जो वहां धरती बराबर होती और मेह का पानी जितनी धरती पर पड़ता उतनी ही धरती पर इकट्ठा होने पाता, तो वह नापने में कितना गहरा होता, जैसे चेरापूंजी की सारी धरती थाली की तरह बराबर होती और साल भर के मेह का पानी बिना सूखने और बहने के उस पर इकट्ठा होने पाता, तो ३०० इंच गहरा होता । सरकार ने मेह का पानी नापने के लिये लोटे के यन्त्र बनवा तहसीलों में रखवा दिये हैं । जब मेह बरसता है तो उसका प्रमाण नितका नित किताब में लिखलिया जाता है ॥

इकसठ नदियां इस तरह की हैं, कि जिन में प्राय बारहों महीने नाव चलती है। बरसात के दिनों में जल चहुँदिश फैल जाताहै। अगले समय में वहां के राजाओं ने पानीके बीच रस्ता जारी रखने को बंध के तौर पर जमीन से तीन चार गज़ ऊंची सड़कें बनाई थी, इस से ऐसा अनुभव होता है कि उन दिनों में वह देश अच्छा बस्ता था, और आश्चर्य्य नही जो उसी राह से चीनवाले यहां और यहांवाले चीन को आते जाते हों, परंतु अब उन सड़कों पर जंगल जम गयाहै, और शेर भालू चलते हैं। लोहे और कोयले की खान है। नदियों का बालू धोने से सोना भी मिलता है। मटिया तेल कई जगह से निकलता है। उत्तर में जिस जगह ब्रह्मपुत्र दरया हिमालय को काटकर आशाम में आता है, उसका नाम प्रभु कुठार है, क्योंकि ब्राह्मणों के मत बमूजिब उसे परशुराम ने अपने कुठार से काटाथा। जंगल पहाड़ बहुत हैं, बिशेष करके पूर्व और उत्तर मे, और उनके बीच बहुतेरी जात के जंगली मनुष्य अर्थात् आबर डफला गारुड़ बिजनी खामती मिस्मी महामरी मीरी सिंहफो नागे इत्यादि बसते है। धर्म का इन के कुछ ठिकाना नही सब चीज़ खाते हैं। तीरों को जहर में बुझाते हैं। गलीज़ ऐसे कि आबदस्त तक नही लेते। चौपायों के खोपड़े काले करके शोभा के निमित्त वंदनवार की तरह अपने घरों मे लटकाते हैं। कोई उन मे बौध भी है। अक्सर पेड़ों की छाल का लंगोट और सींक का टोप पहनते हैं, कोई कम्बल भी ओढ लेता है। कहते है कि इन मे गारुड़लोग जो ब्रह्मपुत्र के दक्षिण और सिलहट और मैमनसिंह के उत्तर बसते हैं सांप को भी खाजाते हैं, और कुत्ते के पिल्ले तो उन की बड़ी मिठाई है। पहले उसे पेट भरकर चांवल खिलाते हैं और

फिर उसे जीता आग पर भूनकर भक्षण कर जाते हैं। और जब आपस में तकरार होती हैं तो दोनों आदमी अपने अपने घरमें चटाकर का दरख्त लगाते हैं, और इस बात की सपथ करते हैं, कि क़ाबू मिलते ही अपने दुश्मन का सिर उस पेड़के खट्टे फल के साथ खा जावें, और जब अपने दुश्मन का सिर काटलाते हैं, तो क़सम बमूजिब उसे चटाकर के साथ उबाल कर शोरबे की तरह खाजाते हैं, बरन अपने मित्र बांधवों को भी निमंत्रण करते हैं, और फिर उस पेड़ को काट डालते हैं, और जब लड़ाई झगड़े मे किसी बंगाली ज़मींदार का सिर काटलाते हैं, तो उसके गिर्द पहले तो सब मिलकर नाचते गाते हैं, और फिर उसकी खोपरी साफ करके घरमें लटकाते हैं बरन अशरफी और बंकनोट की बराबर वहां ये बंगालियों की खोपरियां चलती हैं। सन् १८१५ में-कालूमाल्लूपांड़े के ज़मींदार की खोपरी हज़ार रुपये और इंद्र तअल्लुक़ेदार की खोपरी पांचसौ रुपयेपर चलती थी। वे लोग अपने मुर्दोंको जलाकर बिलकुल राख कर डालते हैं, कि जिस में कोई मनुष्य खोटे रुपये की तरह किसी गारुड़ की खोपरी बंगाली के एवज़ में देकर उन्हे ठग न लेवे। विवाह वहां मर्द औरत की रज़ामंदी से होता है, और जो उन में से किसी का बाप उस विवाह से नाराज़ हो तो सब लोग मिलकर उसे इतना पीटते है कि जिस मे वह राज़ी होजावे। स्वामी मरने से वहां की स्त्री देवर जेठ को व्याहती हैं, और सारे भाई मर जावें तो श्वशुर से विवाह करती है। मालिक वहां छोटी लड़की होती है। मुर्दे को चार दिन बाद जलाते हैं। जो छोटा सर्दार मरे तो उसके साथ एक गुलाम का सिर काटकर जलाते हैं, और जो कोई बड़े दर्जे वाला मरे तो उसके सब गुलाम मिल कर एक हिंदू को प-

फड़ लाते हैं, उसका सिर काटकर उसके साथ जलाते हैं। आदमी वे लोग मज़बूत और मिहनती, नाकहबूशियों की तरह फैली हुई, आंखें छोटी, माथे पर झुर्रियां, भवें लटकी हुई, मुंह बड़ा, होंठ मोटे चिहरा गोल, और रंग उनका गेहुंआं होता है। औरतें नाटी, मंदरी, और मर्दों से भी ज़ियादः मज़बूत होती है। और कानों में उनके बीस बीस तीस तीस पीतल के इतने बड़ बड़े वाले पड़े रहते हैं, कि छाती तक लटकते हैं। आशाम के अमीर भी घास फूस के बंगले अथवा छपरों में रहते हैं। आशाम का पश्चिम भाग अब तक भी कामरूप के नाम से पुकारा जाता है, पर शास्त्र मे जो सीमा कामरूप देश की लिखी है, उस बमूजिब रंगपुर मैमनसिंह सिल्हट जयंता कचार मनीपुर और आशाम ये सब कामरूपही ठहरते हैं। संस्कृत मे कामरूप को प्राग्ज्योतिष भी कहते हैं। पुरानी पोथियों में इस देश के बड़े बड़े अद्भुत कहानी क़िस्से लिखे हैं नादान आदमी अबतक भी उसे जादू का घर समझते हैं तांत्रिक मत इसी जगह से फैला है। २६ दर्जे ३६ कला उत्तर अक्षांश और ९२ दर्जे ५६ कला पूर्व देशांतर मे कामाक्षादेवी का प्रसिद्ध मंदिर है। वहां के आदमियों की सूरत चीनियों से मिलती है। सदर मुकाम गोहाटी कलकत्ते से ३२५ मील ईशानकोन, जो किसी समय मे कामरूप की राजधानी था, और अब जहां साहिब कमिश्नर रहते हैं, ब्रह्मपुत्र के बाएं कनारे पर एक गांव सा बस्ता है। —४०—नैर्ऋतकोन की सीमा और संभलपूर की अजंटी और छोटे नागपुर की कमिश्नरी बांकुड़ा के पश्चिम। यह एक बहुत बड़ा इलाक़ा है। साहिब कमिश्नर के नीचे कई असिस्टेंट रहते हैं, वही उसमें जगह जगह पर आईनी ज़िले के मजिस्ट्रेट कलक्टरों की तरह कचहरियां करते है, अपील उन सब का साहिब

कमिश्नर के पास आता है, वे कलकत्ते से २०९ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता बिल्किंसनपुर अथवा छोटेनागपुर में रहते हैं। छावनी डोरंडा में कोस भर दक्षिण है। हद इस इलाक़े की उत्तर को बीरभूम बिहार और मिरज़ापुर के ज़िलो से मिलती है, और दक्षिणको गंजाम तक जो मंदराज हाते का जिला है चली गई। पूर्व उस के बाजगुज़ार महाल मेदनीपुर और वर्दवान है, और पश्चिम बघेलखंड का राज सागर—नर्मदा और नागपुर का इलाक़ा। इस इलाके में आबादी कम है और उजाड़ और झाड़ी बहुत, जमीन बीहड़ और पथरीली, पर अकसर जगह तर और उपजाऊ, आब हवाख़राब, सीसा सुरमा लोहा अबरक कोयला जबरजद और हीरे की खान है। नदी का बालू धोने से कुछ सोना भी मिल रहता है। पहाड़ों में गोंद चुआड़ कोल धांगड़ इत्यादि कई जाति के जंगली मनुष्य ऐसे बसते हैं कि न उन के धर्म का कुछ ठिकाना है और न खाने पीने का आदमीयत की बूबास बिलकुल नही रखते, और लूटमार बहुत पसंद करते हैं। बहुतेरे उन में से, विशेष करके जो लोग सिरगूजा के पहाड़ों में रहते है, बनमानसों की तरह नंगे फिरते हैं, और केवल बन के फल फूल तेंदू महुआ इत्यादि और कंद मूल खाकर गुजारा करते हैं, बरन वहांवाले तो उनकी असभ्यता का वर्णन यहां तक करते हैं कि जब उनके रिश्तेदार लोग इतने बूढ़े अथवा रोग से शक्तिहीन होजाते हैं कि चल फिर नही सकते तो उन्हें वे लोग काट काट कर खा जाते हैं। इस में जो मुल्क सरकारी बंदोबस्त में कमिश्नरी से संबंध रखता है, उसे छोटा नागपुर मानभूम और हज़ारीबाग तीन हिस्सों में बांट कर तीन असिस्टेंटों के ताबे कर दिया है पहले का सदर मुकाम लोहार डग्गा

छोटे नागपुर से ४५ मील पश्चिम, दूसरे का पुरुलिया छोटे नागपुर से ७० मील पूर्व, तीसरे का हज़ारीबाग़ छोटे नागपुर से ५० मील उत्तर, वहां सरकारी फौज की छावनी है। हज़ारीबाग के पास कई सोते गर्मपानी के ऐसे हैं जिन में गंधक का असर है, और उनके अंदर थर्मामेटर डुबाने से १९० दर्जे तक पारा चढ़ता है। हज़ारीबाग़ से अनुमान दो मंज़िल पूर्व समेत शिखर के पहाड़ पर जैनियों का एक बड़ा तीर्थ और मंदिर है। अजंटी के आधीन नाम को तो ५८ राजा हैं, पर इख्तियार उनको बहुत थोड़े, रुपया मालगुज़ारी का सरकारी खज़ाने में दाखिल करते हैं।-४१-बाजगुजार मुहाल नैर्ऋतकोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी के पूर्व, और कटक और बलेश्वर के पश्चिम, जंगल झाड़ी बहुत, आब हवा निहायत खराब, कोयला लोहा पेवड़ी खरिया और अबरक की खान है। नदी के बालू में से सोना भी हाथ लगता है, पर बहुत थोड़ा। आदमी असभ्य और प्राय जंगली, राजा इन मुहालों में केवल नाम मात्र हैं, इख्तियार सब साहिब सुपरिंटेंडेंट का है। खंड लोग वहां अब तक अपने देवता के आगे आदमी का बल देते हैं, वरन उनका यह निश्चय है; कि जब तक आदमी को बल चढ़ाकर उसका मास खेत में गाड़ें, तब तक गल्ला अच्छा पैदा न होगा। मकफ़र्सन साहिब अपने रिपोर्ट में लिखते हैं कि ये लोग अपनी कौमका आदमी नहीं काटते आस पास के इलाक़ों से लड़के ले आते हैं, बलदान के समय पहले उनके हाथ पैर की हड्डियां तोड़ डालते हैं, फिर खेतों में गाड़ने के लिये उनके बदन से मांस के टुकड़े काटते है। सरकार ने इस बुरे काम को बंद करने के लिये बहुतेरी तदबीरें की हैं। पर वे कमबख्त चोरी छिप्पे आदमियो को काटही डालते हैं।-४२-

नागपुर, नैर्ऋतकोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी के पश्चिम। यह बड़ा इलाक़ा नैर्ऋतकोन की तरफ़ हैदराबाद की अमल्दारी से जा मिला है। इस इलाके में कुछ हिस्सा सूबे गोंदवाने का आ गया है, बाक़ी सूबे बराड़ है। अकबर के वज़ीर अबुलफ़ज़ल ने नागपुर के राजा को बराड़ का राजा लिखा, कि जिस सबब से अब तक भी उसका वह नाम चला जाता है, पर हक़ीक़त में नागपुर गोंदवाने मे है, बरांड की राजधानी इलचपुर था जो अब हैदराबादवाले के क़ब्ज़े में है। उस समय वे लोग इन इलाक़ों से बहुत कम वाक़िफ़ थे, और ये इलाक़े बादशाहों के क़ब्ज़े में अच्छी तरह नहीं आए थे। अब भी नागपुर के इलाके में, विशेष करके पूर्व भाग के दर्मियान, जैसे जैसे जंगल उजाड़ और झाड़ पहाड़ पड़े हैं हम जानते हैं किसी दूसरे इलाक़े में न होंगे, और उन में विशेष करके बसतर की तरफ़ जो अग्निकोन को है, आदमी भी जिन्हें गोंद कहते हैं प्रकृति में बन मानसो से कम नहीं होते। स्त्रियें तो उनकी दो चार पत्ते कमर में लटकाए रहती हैं, पर मर्द नंगे मादज़ाद जंगलों में फिरा करते हैं, घर बार बिलकुल नहीं रखते नाक उनकी चिपटी फैली हुई होंठ मोटे बाल अक़सर घूंघरवाले, केवल बन के कंदमूल और फल फूल अथवा शिकार से गुज़ारा करते हैं। गोमांस तक खाते हैं। अपनी देवी के साम्हने आदमी का बल चढ़ाते हैं। उनमें से जो लोग बस्तियों के पास बसगए हैं वे खेती बारी और नौकरी चाकरी भी करते है, और अब आदमी बनते चले हैं। ज़मीन वहां की बलंद बीहड़ और अक़सर पथरीली है, पहाड़ी नाले खोले और घाटे हर मुकाम पर हैं। आब हवा जंगलों की ख़राब, पानी उसमें कहीं कहीं बहुत कम मिलता है। लोहा

इस इलाक़े में कई जगह से निकलता है, और गेरूकी भी खान है किसी जमाने में बैरागढ़ की खान से हीरा निकलता था, पर अब बंद हो गया। कहीं कहीं नदियों का बालू धोने से कुछ सोना भी निकल आया करताहै, लेकिन निहायत कम। निदान इस बेआईनी इलाक़े में भी आशाम और छोटे नागपुर की तरह एक कमिश्नर रहताहै, और उसके तहत में पांच डिपुटी कमिश्नर आईनी जिले के कलक्टर की तरह पांच ज़िलों में काम करते हैं। पहला कलकत्ते से ६७७ मील पश्चिम २१ अंश ९ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ११ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से १००० फुट बलंद सदर मुकाम नागपुर मे रहता है। गर्मी की शिद्दत वहां बहुत नहीं होती। आदमी शहर में १४०००० बसते हैं, लेकिन गली कूंचे तंग और निहायत ग़लीज़, बरसात में कीचड़ बड़ी हो जाती है, मकान देखने लाइक़ कोई नहीं, जिधर देखो झोंपड़ेही झोंपड़े दिखाई देते हैं। शहर के गिर्दनवाह में दरख़त बिलकुल नहीं, पटपर मैदान पड़ा है। दक्षिण तरफ एक छोटा सा नाला नाग नदी नाम बहता है, इसी से शायद इस शहर का नाम नागपुर रहा। छावनी पासही सीतावलदी की पहाड़ी पर है। दूसरा नागपुर से १५० मील पूर्व रायपुर में रहता है। वहां से १०० मील उत्तर सतपुडा पहाड के ऊपर जहां से सोन और नर्मदा निकली हैं एक बड़े भारी जंगल में अमरकंटक महादेव का मंदिर हिंदू का तीर्थ है। तीसरा नागपुर से ४० मील पूर्व्व वान गंगा के दहने कनारे भंडारे में रहता है। चौथा नागपुर से ८० मील उत्तर छिंदवारे में रहता है। और पांचवां नागपुर से १०५ मील दक्षिण अग्निकोन को जरा झुकता वरदा नदी के बांएं कनारे से ५ मील के तफावत पर चादा में रहता है।

## पंजाव की लेफ्टिनेंट गवर्नरी

अब उन ज़िलों का बयान किया जाता है जो पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर के तहत में हैं।—१—दिल्ली बलंदशहर के वायुकोन। बादशाही ज़माने में इस नाम का एक सूबा गिना जाता था, कि जिसकी हद सूबै लाहौर से मिलती थी। शहर दिल्लीका, जिसे बहुधा शाहजहानाबाद कहते हैं, लाहौर से २५० मील अग्निकोन को जमना के दहने कनारे बसा है। युधिष्ठिर महाराज ने इस जगह इंद्रप्रस्थ बसाया था, और तब से वह स्थान बराबर हिंदुस्तान की राजधानी रहा। जिसने इस देश पर चढ़ाव किया पहले उसी के तोड़ने पर मन दिया, जो बादशाह वहां आया उसने पुराने शहर को तोड़ कर नया अपने नाम से आबाद किया। अब जो शहर मौजूद है अकबर के पोते शाहजहां बादशाह का बसाया है, और इसी लिये उसके नाम से पुकारा जाता है। चारों तरफ संगीन ६३६४ गज़ शाहजहानी शहरपनाह है, तेरह दर्वाजे, सोलह खिड़कियां, तीन उन मे बंद, बाज़ार क़िले से दिल्ली दर्वाज़े तक तीस गज़ चौड़ा, और लाहौरी दर्वाजे तक चालीस गज़ चौड़ा होवेगा। नहर जमना की गली गली घूमी है। किला लाल पत्थर का ऐन जमना के कनारे बहुत सुंदर बना है। करोड़ रुपया उसकी तैयारीमे खर्चहुआ बतलाते हैं। और उसके अंदर दीवानआम दीवानखास इत्यादि कई मकान संगमर्मर के बहुत उमदा बने है। यह वही मकानहै जिस में किसी समय तख़्त ताऊस रखा जाताथा, टवर्नियर साहिब अपनी किताबमें लिखते हैं, कि शाहजहां ने हुक्म दिया था, इस दीवानखास के तमाम दर दीवारों पर अंगूर के गुच्छे बनाए जावें, इस ढब से, कि कच्चे अंगूर की जगह पन्ना और पक्के की जगह एक एक लाल संगमर्मर में जड़ देवें, वरन

एक ताक़ इस तरह का बनकर तैयार भी हो गया था, परंतु फिर औरंगज़ेब का इख़्तियार हो जाने से वह काम जाता रहा। अब यह मकान बेमरम्मत है, जिन हौज़ों मे गुलाब और बेदमुश्क भरा जाता था, उन में अब काई जम गई है, और जहां मखमल और कमख़ाब के फ़र्श पर मोतियों की झालर के शमियाने खड़े होते थे, वहां अब कोई झाड़ू भी नहीं देता, बरन सैकड़ों मन कबूतर और अबाबीलों की बीटें पड़ी हैं। कहते हैं कि औरंगज़ेब के वक्त में यहां बीस लाख आदमी बसते थे। नादिरशाह ने सन् १७३९ में कतलआम किया, और फिर मरहठों ने तो इसे ऐसा तबाह कर डाला, कि सन् १८०३ में जब लार्डलेक ने उन लोगों से छीना तो बिलकुल उजाड़ पाया, जो वहां आया सो लूटने ही को आया था, केवल एक यह लेक साहिब उसे लूटमार से बचाने के लिये पहुंचे। सन् १८५४ में १५२००० आदमी उस में गिने गये थे, और हिंदुस्तान के पहले दर्जे के शहरों में गिना जाता है। जामेमस्जिद, जिस में दस लाख रुपया लगा है, इस शहर की सी हिंदुस्तान में तो क्या शायद सारे जहान में इस शान की न निकलेगी। तूल उसका २६१ फ़ुट, कुरसी ३५ ज़ीनों की, मीनार १३० फुट बलंद, इन मीनारों पर चढ़ने से सारा शहर थाली की तरह दिखलाई देता है। हरसुखराय कागज़ी का बनाया हुआ जैन मंदिर भी देखने लाइक़ है, संगमर्मर और पच्चीकारी का काम किया है। शहर के बाहर दस दस कोस तक हर तरफ खंड़हर और मक़बरे पड़े हैं, खंड़हर कैसे कि जब तैयार हुए होंगे लाखों बरन बहुतों में करोड़ों रुपये लगे होंगे, कबरें किनकी कि जिन की अर्दली में लाखों सवार दौड़ते होंगे, जो रत्नजड़ित चिलमचियों में पिशाब करते थे अब उन की क़बरों पर कुत्ते मूतते हैं, जो सारे

हिन्दुस्तान में न समाते थे सो अब डेढ़ गज जमीन में सोए हैं, जिन-पर मक्खी नहीं बैठने पाती थी उन्हें अब दीमक चाटते हैं। निदान कोड़ियों वादशाह इस शहर के आस पास मिट्टी में दबे पड़े हैं॥

दोहा

इत तुग़लक इत इलतमिश इतहि मुहम्मदशाह।
इतहि सिकन्दर सारखे बहुतेरे नर नाह॥ १॥
जो न समाए बाहु बल अटक कटक के बीच।
तीन हाथ धरती तले मीच कियो अब नीच॥ २॥

शहर से अढ़ाई कोस बाहर अकबर के बाप हुमायूं का मक़बरा, जिसकी तैयारी में पन्द्रह लाख रुपया लगा था, और निज़ामुद्दीन औलिया की दर्गाह, अब भी देखने लाइक है। शहर से सात कोस पर नैर्ऋतकोन को कुतब साहिब की दर्गाह है, वहां झाल का बंध बांधकर उस पर से चादर झरने नहर और फव्वारे निकाले हैं, बरसात में सैर की सुहावनी जगह है, फूलवालों का मेला मशहूर है, वहां शहाबुद्दीनगोरी ने महाराज पृथीराज का मंदिर तोड़कर उस के मसाले से कुव्वतुल्इसलाम नाम एक मस्जिद बनानी चाही थी, उमर उसकी पूरी हो गई और मस्जिद अधूरी ही रही॥

दोहा

जो आए नूतन रचे घर गढ़ नगर समाज।
पूरे काहू ने नहीं किये जगत के काज॥ १॥

मंदिर की भी कुछ दीवारें जो टूटने से बची अब तक उस में खड़ी है, पर मूरतों के आकार बिलकुल खंडित कर दिए। यदि यह मस्जिद तैयार होजाती, शायद इतनी बड़ी दुनिया भर में दूसरी न निकलती, और उसके बीच एक कीली अष्टधात की, जिस पर कुछ

पुराने हिन्दी हर्फ़ खुदे हुए हैं सवा पांच फुट मोटी और बाईस फुट ऊंची गड़ी है, मिहरावों पर मस्जिद के, जो साठ फुट ऊंची होवेगी, इस खूबी और सफाई के साथ संगतराशी की है, कि शायद मुहर खोदने में भी कोई न करे, और एक मीनार उस मस्जिद का, जो फिर पीछे से शमशुद्दीन इलतमिश ने बनवाया था, २४२ फुट ऊंचा, जिस मे चढ़ने के लिये ३७८ सीढ़ियां लगी हैं, अब तक खड़ा है। यह मीनार जिसका तीन दर्जा तो लाल पत्थर और चौथा संगमर्मर का बनाया है, और हर दर्जों पर कुरान की आयत बहुत खूबसूरती से खोदी हैं, निहायत खूबसूरत बना है। इतना ऊंचा और साथही ऐसा खूबसूरत शायद दूसरा मीनार दुनियां में न निकलेगा। शहर के पास एक मुकाम पर जिसे लोग जंतर मंतर कहते हैं, ग्रह नक्षत्रादिकों के देखने के लिये राजा जयसिंह के बनवाये कुछ यंत्र अब तक मौजूद हैं। शहर से बाहर पास ही एक खंड़हरे मे, जिसे लोग फ़ीरोजशाह का कोटला कहते हैं, ४८ फुट ऊंची एक ही पत्थर की एक लाट खड़ी है, और उस पर भी वही हर्फ़ और वही बातें खुदी हैं, जो इलाहाबाद की लाट पर हैं। –२–गुड़गांवां दिल्ली के नैर्ऋतकोन को। सदर मुक़ाम गुडगांवां लाहौर से २६० मील अग्निकोन को है। —३—झझर गुडगांवे के उत्तर। सदर मुकाम झझर लाहौर से २४० मील अग्निकोन को ज़रा दक्षिण की तरफ झुकता हुआ है। —४—रोहतक गुडगांवें के उत्तर। सदर मुकाम रोहतक लाहौर से २२५ मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता हुआ, शहर पुराना और टूटा फूटा है। —५—हिसार अथवा हरियाना रोहतक से पश्चिम वायुकोन को झुकता। गाय भैंस उस ज़िले मे अच्छी होती हैं, दूध बहुत देती है। एक साहिब ने वहां एक बैल

सवा चार हाथ ऊंचा नापा था, और वह दस मन पानी की पखाल उठाता था। बस्ती बहुधा जाट गूजरों की, पानी कम, सत्तर अस्सी हाथ गहरे कूए खोदने पड़ते हैं। सदर मुकाम इसका हिसार लाहौर से २०० मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ है, किसी वक़्त मे वह बहुत बड़ा शहर था, अब उस में दस हज़ार आदमी भी नहीं बस्ते। फीरोजशाह के महल के खंड़हरे जिस जगह खड़े हैं, वह उस समय शहर का मध्य गिना जाता था। उसी के पास लोहे की एक कीली भी गड़ी है।—६—सिरसा हिसार के वायुकोन। सदर मुक़ाम सिरसा लाहौर से १५० मील दक्षिण है।—७—पानीपत रोहतक के वायुकोन। सदर मुकाम पानीपत लाहौर से २२५ मील अग्निकोन को बसा है। वहां बूअलीक़लंदर की दर्गाह है, जिस में कसौटी के खंभे लगे हैं। इस जगह में दो लड़ाइयां बहुत बड़ी बड़ी हुई हैं, पहली सन् १५२५ में अकबर के दादा बाबर और इबराहीम लोदी के बीच, और दूसरी सन् १७६१ में अहमदशाह दुर्रानी और सदाशिवराव भाऊ के बीच, कि जिस से पीछे फिर इतनी फौज किसी लड़ाई के मैदान में अब तक इस मुल्क में इकट्ठी नहीं हुई। कहते हैं कि अस्सी हज़ार सवार पियादे तो अहमदशाह की तरफ थे, और पचासी हज़ार मरहठों की तरफ, और बहीर तो गिनती से बाहर थी, मरहठों के लशकर मे सब मिलाकर कम से कम पांच लाख आदमियो की भीड भाड़ होगी। पानीपत से २४ मील उत्तर करनाल बीस हज़ार आदमी की बस्ती जमना की नहर के कनारे है, छावनी वहां की प्रसिद्ध थी पर अब बिलकुल टूटगई।—८—थानेसर सहारनपुर के पश्चिम। सदर मुकाम थानेसर, जिसे संस्कृत मे स्थाणुतीर्थ और कुरुक्षेत्र कहते हैं, लाहौर से १९० मील

अग्निकोन को सरस्वती के बांएं तीर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है, इसी जगह कौरव पांडव जूझे थे, और महाभारत हुई थी। सरस्वती में अब पानी बहुत कम रहता है। शेखचुहिली का, जिसे लोग शेखचिल्ली कहते हैं, यहां मक़बरा है। कहते हैं कि उस के दर्वाजे पर नीचे तो यह लिखा था कि खुदा के वास्ते ज़रा ऊपर देख, और ऊपर यह लिखा था ऐ बेवकूफ क्या देखता है, पर अब तो टूटा फूटा सा पड़ा है, यह बात वहां कहीं दिखलाई नहीं देती।—९—अम्बाला थानेसर के उत्तर। सदर मुक़ाम अम्बाला लाहौर से १६० मील अग्निकोन पूर्व को झुकता बड़ी छावनी की जगह है।—१०—लुधियाना अम्बाले के वायुकोन। सदर मुक़ाम लुधियाना लाहौर से १००मील अग्निकोन पूर्व को झुकता सतलज की एक धारा के बांएं कनारे पर बसा है। यहां भी पशमीने का काम बनता है।—११—फीरोज़पुर लुधियाने से पश्चिम। सदर मुक़ाम फीरोज़पुर लाहौर से ४६ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता सतलज के बांएं कनारे पर बड़ी छावनी की जगह है। क़िला भी एक कच्चा पर दुश्मन का दांत खट्टा करने को बहुत पक्का सरकार ने बनवाया है। इन ऊपर लिखे हुए चारो ज़िलों में दरख़्त बहुत कम हैं, कोसों तक सिवाय आक और झड़बेरी के दूसरा कोई पेड़ दिखलाई नहीं देता। फीरोज़पुर की गर्द मशहूर है छनी हुई राख की तरह उड़ती है आंधी में क़यामत का नमूना दिखलाती है। बस्ती बहुधा सिखों की है। पश्चिम के बादशाहों की चढ़ाई और नित की लड़ाई भिड़ाई से यह देश निपट उजाड़ होगया था, पर अब सरकार के साए मे फिर आबाद होता चला है। इन ज़िलो में भी पंजाब की तरह कूए मे रहट लगा कर पानी निकालते हैं, मोट बैलों से नहीं खिचवाते।—१२—शिमला

हिमालय के पहाड़ों में अम्बाले से नब्बे मील उत्तर पूर्व को झुकता हुआ। लोहा इस ज़िले में कोटखाई के परगने के दर्मियान बहुत निकलता है। सदर मुक़ाम शिमला लाहौर से १५० मील पूर्व अग्निकोन को झुकता हुआ समुद्र से सात हज़ार दो सौ फुट ऊंचे पहाड़ पर बसा है। अम्बाले से पैंतालीस मील पर पहाड़ की चढ़ाई शुरू होती है, वहां पहाड़ की जड़ में कालका नाम एक छोटी सी बस्ती है, बाजार गोदाम इत्यादि जगहें बनी हैं, साहिब लोग गाड़ी बग्गी ऊंट पालकी इत्यादि इसी जगह छोड़ देते हैं, और यहां से खच्चर और पहाड़ी कुलियों पर बोझा लादकर घोड़े पर अथवा झम्पान में, कि जिसे पहाड़ी तामजान कहना चाहिये, सवार होजाते हैं, पुरानी सड़क में तो चढ़ाव उतार बहुत पड़ता था, पर अब जो नई सड़क निकली है उस पर लोग कालका से शिमला तक सरपट घोड़ा दौड़ाए चले जाते हैं, बरन अब इस राह से वहां ऊंट और गाड़ी छकड़े भी आने जाने लगे हैं। यह सड़क जब तक रहेगी, वलियम इडवार्ड साहिब का नाम क़ाइम रक्खेगी, उन्हीं की तजवीज़ से यह सड़क बनाई गई है, और उन्हीं के बाइस से यह राह निकली है। पांच पांच सात सात कोस पर डाक बंगले बने हैं, और पानी के झरने क़दम क़दम पर झरते हैं। कालका से पुरानी सड़क की राह नौ मील कसौली चढ़कर, जो समुद्र से सात हजार फुट ऊंचा है और जहां गोरों की पलटन रहती है, फिर साथ नौ ही मील सबाठू को उतरना पड़ता है। सबाठू समुद्र से ४२०० फुट ऊंचा है, वहां भी गोरे सिपाहियों की छावनी है, और शिमला की कलक्टरी का खज़ाना रहता है। सबाठू से शिमला तक फिर बराबर बत्ताईस मील उतार चढ़ाव है। गर्मी के दिनों में जब कालका में लूएं चलती

हैं, और पंखे से भी जान नहीं बचती, तब दो घंटे की राह कसौली चढ़कर ऊनी और रुईदार कपड़े पहन्ने पड़ते हैं, और आग तापते हैं। हिमालय के बर्फी पहाड़ भी वहां से नजर आते हैं। शिमला के पहाड़ पर प्राय तीन सौ कोठियां केलों के जंगलो मे, जिसे फ़ारसी वाले सनोबर कहते हैं साहब लोगों के रहने के वास्ते बहुत उमदा बनी हैं। जाड़ों में शिमला ख़ाली रहता है, पर गर्मियो मे चार पांच सौ अंगरेजों की भीड़ भाड़ हो जाती है। चीज़ें ऐश की सब यहां मयस्सर, आबहवा की सफ़ाई स्वर्ग से भी शायद कुछ बढ़कर। गर्मी में वहां इतनी सर्दी रहती है, कि जितनी मैदान में पूस माघ के दर्मियान; और जाडों मे तो वहां सड़को पर हाथ हाथ दो दो हाथ बर्फ पड़ जाती है। बर्फ गिरने के वक्त अजब कैफियत होती है, जाडो में जिस तरह कुहरा छाता है, उसी तरह पहले तो अंधेरा सा होजाता है, और फिर जैसे रुई के छोटे छोटे फाहे धुनते वक़्त उड़ते हैं, उसी तरह बर्फ भी गिरने लगती है, यहां तक कि सारे पहाड़ दरख़्त और मकान सफेद होजाते हैं, मानो किसी ने आस-मान से सैकड़ों मन कंद या पीसा हुआ सफेद नमक छिड़क दिया है, उस वक़्त उस में चलने से बालू की तरह पांव धस्ता है, पर कुछ देर बाद जब वह जमकर पाला होजाती है, तो फिर पत्थर भी उस के आगे नर्म्म है, और चलनेवालो का पैर खूबही फिस-लता है, वरन घोड़े के सवारो को तो ज़ान जोखो है। निदान शि-मला भी इस हिमालय के पहाड़ में एक अतिरम्य और मनोहर स्थान है।—१३—जालंधर लुधियाने के उत्तर पश्चिम को झुकता हुआ सतलज पार। पानी इस जिले में जमीन से नज़दीक है, अकसर जगह गज़ भर खोदने से निकल आता है। सदर मुकाम जालंधर

लाहौर से ८० मील पूर्व बसाहै ।—१४—हुशयारपुर जालंधर के पूर्व । सदर मुक़ाम हुशयारपुर लाहौर से ९५ मील पूर्व है ।–१५–कांगडा हुशयारपुर के ईशानकोन । यह जिला बिलकुल हिमालय के पहाड़ों में बसा है । घेघे की बीमारी यहां अकसर होती है । सदर मुक़ाम कांगड़ा, जिसे नगर कोट भी कहते हैं, लाहौर से १३० मील पूर्व ईशानकोन को झुकता एक छोटे से पहाड पर बसा है । किला वहां का मजबूती में प्रसिद्ध है, उसके आस पास पर्वतस्थली ने फैलाव खूब पाया है, और पानी के सोते अनगिनत जारी है इसलिये धान बहुत उपजता है । महामाया का मंदिर, जिसे वहा देवी का भवन कहते हैं, हिंदुओ का बडा तीर्थ है । तीन चार कोसकी चढ़ाई चढ़कर धर्म्मशाला की छावनी मे साहिब लोगों के बंगले हैं, वहा बर्फ का पहाड़ बहुत समीप है, गर्मी में भी कांगडेवालो को बर्फ लेने के वास्ते सात आठ कोस से अधिक नहीं जाना पडता । कांगड़े से दो मंज़िल वायुकोन की तरफ़ कोहिस्तान में समुद्र से दो हजार फुट ऊंचा नूरपुर बसा है, शालबाफो की दूकान है, पर थोडी और शाल भी अच्छी नहीं बनती, कांगडे से ७० मील ईशानकोन पूर्व्व को झुकता मणिकर्णिका तप्तकुंड है, उस कुंडका पानी इस क़दर गर्म रहता है, कि जो चावल रूमाल में बांधकर उस मे डाल दो, देखते ही देखतेपक पकाकर भात होजाता है । कांगडे से अनुमान पचीस मील इधर, व्यास नदी के सात मील पार, ज्वालामुखी हिंदुओं का बडा तीर्थ है । शिवालय और देवस्थान वहां कई पक्के बने है और कुंडभी निर्म्मल पहाड़ी जल से सुथरे भरे है । ज्वालाजीका मंदिर ऐन पहाड की जड़मे है, उसके कलस और गुम्बज पर बिलकुल सुनहरी मुलम्मा किया है । दर्वाज़े पर चांदी के पत्र जड़े हैं, और सभा मंडप मे नय-

पाल के राजा का चढ़ाया जिस पर उसका नाम भी खुदा हुआ है एक बड़ा सा घंटा लटकता है। मंदिर के अंदर बीचो बीच में एक कुंड तीन हाथ लंबा डेढ़ हाथ चौड़ा और दो हाथ गहरा बना है, उस कुंड के अंदर वायुकोन की तरफ चार पांच अंगुल का चौड़ा एक मोखा है, उसी मोखे के अंदर से आगकी ज्वाला प्राय हाथ भर ऊंची निकलती है, सिवाय इस मोखे के उस कुंडमें आग निकलने के और भी कई छोटे छोटे सूराख हैं। कुंड से बाहर उसी रुखको मंदिर की दीवार के कोने में भी एक मोखा है, उसमें से भी हाथ भर ऊंची एक ज्वाला निकलती है, इसको वहांवाले हिंगलाज की लाट पुकारते हैं। पश्चिम की दीवार में चांदी से मढ़ा एक छोटा सा आला है, उस में भी छोटे छोटे दीए की टेम की तरह आग निकलने के सूराख हैं। उत्तर दीवार की जड़में भी इस तरह के कई छेद हैं, पर हिंगलाज की लाट के सिवाय बाकी सभों का कुछ ठिकाना नहीं है, कभी कभी बंद भी हो जाती हैं और किसी समय में थोड़े और किसी समय में अधिक तेज़ के साथ जलती हैं। अकसर जब किसी सूराख़ में से आग का निकलना बन्द होजाता है, और उसके मुंह पर जलती हुई बत्ती ले जाते हैं, तो उस में से फिर आग की ज्वाला निकलने लगती है, जैसे किसी झरोखे की राह से हवाकी झकोर आया करती है। उसी तरह इन मोखों से आग की लाटें निकला करती हैं। क्या महिमा है सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की, कि बिना ईंधन आग पड़ी दहकती है, और बिना तेल बत्ती दीपक जला करते हैं। मंदिर के बाहर लेकिन उसके हाते के अंदर उसी रुख को अर्थात् वायुकोन की तरफ एक हाथ भर लंबा चौड़ा छोटा सा पानी का कुंड है, पहाड़ से जो नहर आई है वह उसी कुंड में

होकर बहती है, वहांवालों ने उसका नाम गोरखडिब्बी रखा है, छूने में पानी उस कुंड के भीतर शोरे की तरह ठंढा, पर देखने में अदहन सा खौलता हुआ, और यदि उसके पानी को ज़रा हाथ से हिलाकर एक जलती हुई बत्ती उसके पास ले जाओ, तो फौरन् रंजक की तरह एक आग का शोला सा उड़ जाता है। निदान इन सब बातों से साफ मालूम होता है, कि यह आग, अथवा जलती हुई हवा, गंधक हरिताल इत्यादि किसी धातु की खान में उत्पन्न होकर वायुकोन से पहाड़ के नीचे ही नीचे ज़मीन के अंदर चली आती है, जहां कहीं शिगाफ़ या दरार पाई प्रगट होती हुई कुंड में आकर बिलकुल तमाम हो जाती है। गोरखडिब्बी में पानी के खौलने का भी यही सबब है, कि उस आग का रास्ता पानी के नीचे से गुज़रता है, पानी बहता हुआ है इस कारन गर्म नहीं होता, यदि पानी न होता तो वहां ज्वाला प्रगट होती। मंदिर के अंदर भी कुंड के उत्तर और पश्चिम तरफ, जो उस जलती हुई हवा के आने का रास्ता है, उस में फर्श के पत्थर तपा करते हैं, और दक्षिण और पूर्व के सदा ठंढे रहते है। अंगरेज़ी में इस तरह की हवा को जो सदा जलती रहती है हैड्रोजनगैस कहते हैं। जिन्हों ने किमिस्ट्री अर्थात् रसायन विद्या पढ़ी है वे इसके भेद से खूब वाकिफ हैं। यदि किसी शीशी के अंदर थोड़ा सा लोहचुन रखकर उस पर पानी मे घुला हुआ सल्फ्यूरिकएसिड अर्थात् गंधक का तेज़ाब डालो, तो हैड्रोजनगैस बन जावेगा, और उस शीशी के अंदर से वही चीज़ निकलेगी, कि जो ज्वालाजी में कुंड के मोखे से निकलती है। जैसे वहां पंडे लोग ज्वाला ठंढी होने पर बत्ती दिखला देते हैं, उसी तरह यदि तुम भी उस शीशी के मुंह पर जलती हुई बत्ती ले जाओ, तो जिस तौर पर

ज्वालामुखी में सूराखों से आग की लाटें निकलती हैं, उस शीशी के मुंह पर भी आग जलने लगेगी। वाजे आदमी ऐसी चीजें देखकर बड़ा अचरज मानते है, वरन उनको सृष्टिकर्ता ईश्वर जानकर उनकी पूजा करते हैं, और बाजे जो उनके भेद से वाक़िफ हैं उन्हें भी औरों की तरह स्वाभाविक वस्तु समझकर सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की अद्भुत अपार रचना पर बलिहारी जाते हैं, और उस जगह उसी के ध्यान में मग्न होकर उसी की पूजा करते हैं।–१६–अमृतसर जालंधर के पश्चिम उत्तर को झुकता हुआ व्यास नदी के पार। सदर मुक़ाम अमृतसर सिक्खों का तीर्थ लाहौर से ३५ मील पूर्व ईशानकोन को झुकता बड़े व्यौपार की जगह है, लाख आदमी से ऊपर बसते हैं। शहर के बीच एक सुंदर स्वच्छ जल से भरा हुआ तालाब अमृतसर नाम १३५ कदम लंबा और इतना ही चौड़ा पक्का बना है, और उस तालाब के बीच एक छोटे से संगमर्मर के मकान मे, जिसके गुम्बज़ पर सुनहरी मुलम्मा हुआ है, ग्रंथ साहिब अर्थात् सिक्खों के मत की पुस्तक गुरु गोविंदसिंह के हाथ का लिखा रखा है। पहले इस शहर का नाम चक था, जब से गुरु रामदास ने यह तालाब बनाया तब से अमृतसर रहा। शालबाफों की दूकाने बहुत हैं, और सरकारी अमल्दारी के सबब महसूल न लगने से माल पशमीने का बहुधा इसी जगहसे दिसावरों को जाता है। पास ही गोविंदगढ का मजबूत क़िला बना है, रंजीतसिंह का खज़ाना उसी में रहता था।–१७– बटाला अमृतसर के ईशानकोन। सदर मुक़ाम गुरदासपुर लाहौर से ७५ मील ईशानकोन पूर्व को झुकता है। –१८– हवां लाहौर अमृतसर के पश्चिम दक्षिण को झुकता। बादशाही ज़माने मे यही नाम इस सारे सूबे का था। शहर लाहौर,

अथवा लहावर रावी के बाएं कनारे पर समुद्र से ९०० फुट ऊंचा कलकत्ते से ११०० मील और सड़क की राह १२५२ मील (१) वायुकोन को सात मील के घेरे में पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है। हिन्दू इस शहर को रामचंद्र के पुत्र लव का बसाया और असली नाम उसका लवकोट बतलाते है। बसती उस मे अनुमान लाख आदमियो की होगी। दिल्ली की तरह इस शहर के गिर्दनवाह मे भी बहुत से खंडहर और मक़बरे पडे हैं। शहर से दो मील पर रावी पार शाहदरे में अकबर के बेटे जहांगीर का मकबरा देखने लाइक़ है। शहर से तीन मील ईशानकोन को बादशाही समय का बना हुआ ४ मील के घेरे में शालामार बाग है, रंजीतसिंह को इमारत का शौक न था मरम्मत के बदल और भी उसके पत्थर उखाड़कर अमृतसर भिजवा दिये, अब सरकार की तरफ से उसकी सफाई हुई है। इस बाग मे ४५० फव्वारे छुटते है, और कई हौज संगमर्मर के बने है, और उसके पानी के लिये सवा सौ मील से नहर काट लाये हैं। पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर इसी जगह रहते हैं, और पास ही मीयामीर मे छावनी भी बहुत बड़ी है।–१९–शेखूपुरा लाहौर के पश्चिम रावी पार। सदर मुकाम गूजरांवाला लाहौर से ४० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ रंजीतसिंह के पुरखाओ की जन्मभूमि है।–२०–स्यालकोट शेखूपुरे के उत्तर। सदर मुकाम स्यालकोट लाहौर से ६५ मील उत्तरईशानकोन को झुकता हुआ चनाब नदी के बाएं कनारे ५ मील हटकर बसा है।–२१–गुजरात स्यालकोट

---

(१) नक़शे की नाप से सड़क की नाप मे फर्क पड़ता है क्योंकि सड़क [illegible] नहीं रहती घूम फिर कर जाती है। देखो नक़्शे की नाप मे हमने लाहौर को [illegible] मील कलकत्ते से लिखा है, लेकिन सड़क की राह जाओ तो [illegible] मील होगा।

के पश्चिम चनाब पार। सदर मुकाम गुजरात लाहौर से ७५ मील उत्तर चनाब के दहने कनारे अढ़ाई कोस के तफावत पर शहरपनाह के अंदर बसा है।–२२–शाहपुर गुजरात के नैर्ऋतकोन। सदर मुक़ाम शाहपुर लाहौर से १२५ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता झेलम नदी के बांएं कनारे है। इस ज़िले को शैखूपुरे के साथ जिसका ज़िकर ऊपर लिखा गया शास्त्र में मद्र देश कहा है।–२३–पिंडदादनखां गुजरात के पश्चिम। सदर मुक़ाम झेलम लाहौर से १०० मील वायुकोन उत्तर को झुकता झेलम नदी के दहने कनारे है। मंज़िल एक पर पहाड़ में नमक की खान है। छ मील वायुकोन को सवा कोस लंबा रुहतास का मज़बूत क़िला टूटा हुआ बेमरम्मत पड़ा है, दीवार उसकी ३० फ़ुट चौड़ी संगीन है।–२४–रावलपिंडी पिंडदादनखां के उत्तर। सदर मुक़ाम रावलपिंडी लाहौर से १६० मील उत्तर वायुकोन को झुकता शहरपनाह के अंदर बसा है। रावलपिंडी से ६० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता अटक का मशहूर क़िला ८०० गज़ लंबा ४०० गज़ चौड़ा सिंध के बांएं कनारे एक पहाड़ी पर मज़बूत बना है, कोई इसे अटक बनारस भी कहता है, क़िला देखने में बहुत अच्छा बना है, पर उसके पास एक पहाड़ उस्से ऊंचा है, इस कारण उसकी मज़बूती मे खलल पड़ गया, क्योंकि वह उस पहाड़ की मार मे है। रावलपिंडी से अग्निकोन को अनुमान १५ मील पर मानिकयाला गांव के पास बौध मत का एक देहगोप सत्तर फ़ुट ऊंचा ३२५ फुट के घेरे में उसी तरह का बना है जैसा काशी में सारनाथ के नज़दीक मौजूद है, और इसके सिवाय उस गिर्दनवाह में और भी पंदरह देहगोप हैं, जेम्स प्रिंसिप साहिब की तरह जेनरल वंतूरा और अबीतवेला ने उन में से दो

देहगोप खुदवाये थे, तो उनके अन्दर से बनारस के देहगोप की तरह राख और हड्डी निकली, और उसके साथ कुछ अशरफी रुपये और पैसे भी मिले, और उन में से कई रुपयों पर रूम के बड़े बादशाह जूलियस् क़ैसर का नाम खुदा था।–२५–पाकपट्टन लाहौर के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता सतलज और रावी के बीच मे है। सदर मुक़ाम फतेहपुर गूगेरा लाहौर से ८० मील नैर्ऋतकोन रावी के बांएं कनारे है। पाकपट्टन वहां से ४५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता सतलज के दहने कनारे छ मील के तफावत पर बसा है, उस में शेख़ फरीद की दरगाह है।–२६–मुल्तान पाकपट्टन के पश्चिम। इस ज़िले के दक्षिण और पूर्व भाग में रेगिस्तान बहुत है। बादशाही अमल्दारी में उसी नाम के सूबै की राजधानी था, जिसकी हद ठट्ठे और कच्छ तक गिनी जाती थी। सदर मुक़ाम मुल्तान लाहौर से २०० मील नैर्ऋतकोन को चनाब के बांएं कनारे से दो कोस पर चौदह पंदरह हाथ ऊंची शहर पनाह के अंदर बसा है। क़िला उसका मज़बूती में मशहूर है। शेख बहाउद्दीन ज़करिया का वहां मक़बरा है। रेशमी कपड़े खेस दाराई इत्यादि वहां अच्छे बनते हैं, क़ालीन भी बुने जाते हैं। ज़मीन शहर के गिर्दनवाह मे उपजाऊ है।—२७—झंग मुल्तान के वायुकोन। सदर मुक़ाम झंग अथवा झंग सियाल लाहौर से ११५ मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता चनाब के बांएं कनारे पर कोस एक के फासिले से बसा है।—२८—खानगढ़ मुल्तान के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता। सदर मुक़ाम खानगढ़ लाहौर से २२५ मील नैर्ऋतकोन है।–२९–लैया खानगढ़ के उत्तर। सदर मुकाम लैया लाहौर से २०० पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता सिधु नदी के बाएं कनारे पर पांच कोस के

फ़ासिले से बसा है। बरसात में जब दरिया बढ़ता है बारह बारह कोस तक पानी फैल जाता है। बहुत लोग जो दरिया के समीप रहते हैं इसी डर से आठ दस हाथ ऊंचे लट्ठे गाड़कर उस पर अपने छान छप्पर बनाते हैं। शास्त्र में इस का नाम सिंधुसौबीर लिखा है। —३०—देरागाज़ीखां खानगढ़ के नैर्ऋतकोन सिंधु पार। इस ज़िलेमें मुसलमानों की बस्ती बहुत है। सदर मुक़ाम देरागाज़ीखां लाहौर से २३० मील नैर्ऋतकोनको सिंधु के दहने कनारे पर बसाहै।—३१— देराइसमाईलखां देरैगाज़ीखां के उत्तर। इस ज़िले में बलूच और पठान बहुत और हिंदू अति अल्प। सदर मुकाम देराइसमाईलखां लाहौर से २१५ मील पश्चिम सिंधु के दहने कनारे खजूर के दरख़ों में बसा है। इसी ज़िले में पिशौर से सैंतीस कोस इधर सिंधु के कनारे सेंधे नमक का पहाड़ है, कि जो अफगानिस्तान में सफेद कोह से निकलकर झेलम के कनारे तक चला आया है। जगह देखने योग्य है, दोनों तरफ़ पहाड़ आजाने के कारन दरया बहुत तंग और गहरा हो गया है, धरती बिलकुल लाल, पहाड़ नमक का जिसके नीचे दरया बहता है गुलाबी बिल्लौर सा चमकता, दहने तट पर पहाड़ के ऊपर कालाबाग बसा हुआ, नमक के डले खान के खुदे हुए, मनों वज़न मे एक एक, ढेर के ढेर लगे रहते हैं, और व्योपारियों के ऊंट कतार की कतार लदे हुए दिखाई देते हैं।—३२— हज़ारा रावलपिंडी के वायुकोन पहाड़ों के अंदर। सदर मुकाम हज़ारा लाहौर से १८० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ है। —३३—पिशौर हज़ारे के पश्चिम सिंधुपार। यह इस तरफ़ हिंदुस्तान का सब से परला ज़िला है, इस से आगे खैबर घाटे के पार जो शहर से १५ मील है अफगानिस्तान का मुल्क शुरू होता है। इस

के चारों तरफ पहाड़ है, और बीच में मैदान। मुसल्मान बहुत हैं, और ज़ुबान वहां वालों की पश्तो। सदर मुकाम पिशौर अथवा पिशावर जो इस समय हिन्दुस्तान मे सब से बड़ी छावनी है लाहौर से सवा दो सौ मील वायुकोन को सिंधुपार ४४ मील के तफावत पर समुद्र से १००० फुट ऊंचा बड़े व्यौपार की जगह है, ईरान तूरान अफगानिस्तान सब जगह के सौदागर वहा आते हैं। सरा बहुत अच्छी बनी है। शहर के उत्तर एक पहाड़ पर वाला हिसार का किला है, लड़ने के गौं का तो नहीं, पर रहने को अच्छा है। गोरखनाथ का मंदिर वहां कनफटे जोगियों का तीर्थ है। शहर से ८ मील पर काबुल की नदी बहती है।—३४—कोहाट पिशौर के दक्षिण। सदर मुकाम कोहाट लाहौरसे २१५ मील वायुकोन है। वहां एक किस्म का पत्थर होता है उसको पानी में उबाल कर मोमियाई बनाते हैं॥

## अवध की चीफ कमिश्नरी

नीचे वे ज़िले लिखे जाते है जो अवध के चीफ कमिश्नर के तावे हैं शास्त्र में इसे उत्तर कोशल कहा है, और बादशाही दफ़्तर मे सूबै अवध लिखा जाता था। उत्तर की तरफ उसके नयपाल हैं, और दक्षिण के तरफ गंगा बहती है।—१—ज़िला उन्नांव कान्हपुर के पूर्व गंगापार है। सदर मुकाम उस का उन्नाव लखनऊ से ३५ मील नैर्ऋतकोन है। —२—लखनऊ उन्नाव के ईशानकोन। सदर मुकाम लखनऊ अनुमान तीन लाख आदमी की बस्ती २८ अंश ५१ कला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ५० कला पूर्व देशांतर मे कलकत्ते से ५७५ मील और सड़क की राह ६१९ मील वायुकोन गोमती के दहने कनारे बसा है। असल नाम इसका लक्ष्मणावती बतलाते हैं. और कितनेही लोग ऐसा भी कहते है कि नैमिषारण्य जहां सूतजी

ने साठ हज़ार मुनियों के समाज में पुराण सुनाए थे इसी जगह पर था, अब जहां जात्री जाते हैं और जिसे नीमखार कहते हैं वह जगह गोमती के कनारे लखनऊ से बहुत हटकर है। यद्यपि शहर की गलियां बहुत तंग और गलीज हैं, पर सड़कें खूब चौड़ी और निहायत साफ हैं। यदि किसी ऊंची जगह पर चढ़कर इस शहर को देखो, तो जहां तक नज़र जाती है, दरख्त बाग मीनार गुम्बज़ आलीशान मकान और चमकती हुई सुनहरी कलसियां नज़र पड़ती हैं। सड़कों के आस पास बिशेष करके हुसेनाबाद के निकट हौज़ और फव्वारे और संगमर्मर इत्यादि के निहायत खूबसूरत बड़ेबड़े खिलौने बने हुए हैं। शहर निहायत आबाद है, हज्जामों के बदन पर भी दुशाले, हलालखोरों के पैर मे भी जर्दोज़ी जूते, जिनके घर में चूल्हे पर तवा नहीं, वे भी बाज़ार में मिरज़ा बने फिरते हैं। दुकानों में सब तरह की चीज़ अच्छी से अच्छी मौजूद रहती है, चार कौड़ी को भी जो लड़के खानचेवालों से दोना लेते हैं, उसमें सारी न्यामतों का मजा मिलता है। अंगरेज़ी अमल्दारी से पहले वहां बादशाही मकानो की तैयारी देखकर अकल दंग हो जाती थी, झाड़ फानूस दीवारगीर आइने तसवीर घड़ी खिलौने विलायती कलें जो चीज़ देखिये नादिर, सफाई हद के दर्जे पर, फरह बख्श मुबारक मंज़िल इन्द्रासन मोती महल पंज महल शीश महल हुसेनाबाद मूसा बाग हैदरबाग क़ैसरबाग परिस्तान दिलकुशा दौलतखाना कुतुबखाना तारेवाली कोठी, जिस मे ग्रह नक्षत्रादिकों के देखने के लिये बहुत बड़ी बड़ी दूर्बीनें पत्थर के खंभों पर लगी थी सारे मकान देखने योग्य थे। सिवाय इनके और भी बहुत से इमामबाड़े इत्यादि सैर के लाइक़ थे। आसिफुद्दौला के इमामबाड़े की छत एक

सौ बीस फुट लंबी और साठ फुट चौड़ी बिलकुल लदाव की बनी है, खंभे बिना इतनी बड़ी छत शायद दुनिया मे दूसरी न निकलेगी। शहर से बाहर जेनरल मार्टीन की कोठी कांस्टेशिया जिसकी तैयारी मे उसका पंदरह लाख रुपया खर्च पड़ा था बहुत आलीशान और बेनजीर है, और उस दरदीवारों पर गुल बूंटे और तसवीरे बहुत सुंदर बनी है। अंगरेज़ी अमलदारी से पहले इस शहर की सैर मुहर्रम के दिनो में देखनी चाहिये थी कि जब इमामबाड़ो में हज़ारों कंवल कंदील और मोमबत्तियो की रोशनी होती थी विशेष करके हुसेनाबाद मे कि जहां यह नहीं मालूम होता था कि इमामबाड़ा रौशन हुआ या रौशनी का इमामबाड़ा बन गया। यद्यपि लखनऊवाले अपनी तराश खराश और बोल चाल के आगे दूसरों को दिहक़ानी गवांर समझते हैं, और कहते हैं कि यह लखनऊ हिन्दुस्तान का नमूना है जो कुछ ज़िदगी का मज़ा है इसी जगह मे है, यदि कुंदैनातराश भी आवे यहां खराद पर चढ़ जाता है, पर सच पूछो तो जो आदमी होगा लखनऊ और लखनऊ वालों से अवश्य नफ़रत करेगा, क्योंकि उनके चलन बहुत खराब हैं, ईश्वरको भूल कर दुनिया के झूठे मज़े मे तन मन से लवलीन रहते है, ऐयाशी और ज़नानापन उनकी सूरत से बरसता है, जब बादशाह ही ने नाचने और तबला बजाने पर कमर बांधी तो फिर रैयत की क्या गिनती है, बदकारी को सब जगह छुपाते है, पर वहां इसका न करना ऐब है, दिन में कसबियों के साथ बरामदो में बैठे हुए उसी शहर के अमीरों को देखा। गोमती पर पक्का पुल तो पहिले से बना है, और एक पुल किश्तियों का भी रहता है. पर लोहे का पुल अब हाल में तैयार हुआ है। साहिब चीफ कमिश्नर इसी जगह रहते है. एक नया क़िला बड़ी धूमधाम से तैयार

कर रहे हैं।-३-रायबरेली लखनऊ के दक्षिण। सदर मुक़ाम रायब रेली लखनऊ से ४६ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता सई के बांएं कनारे बसा है।-४-सुलतांपुर रायबरेली के पूर्ब। सदर मुक़ाम सुलतांपुर लखनऊ से ८५ मील अग्निकोन पूर्बको झुकता गोमती के बांएं कनारे वसा है। -५-सलोन रायबरेली के दक्षिण अग्निकोन को झुकता। सदर मुक़ाम परतापगढ़ लखनऊ से ९५ मील अग्निकोन को सई के दहने कनारे है।-६-फैज़ाबाद सुलतांपुर के उत्तर। सदर मुकाम फैज़ाबाद लखनऊ से ७८ मील पूर्ब है, इसे बंगला भी कहते हैं शुजाउद्दौला के वक्त में सूबै अवध की राजधानी था, सन् १७७५ में उसके बेटे आसिफुद्दौला ने लखनऊ को राजधानी बनाया। पास ही सरयू नदी के दहने कनारे अयोध्या अथवा अवध का पुराना शहर हिंदुओ का बड़ा तीर्थ है। शास्त्र में लिखा है कि मनु ने सब से पहले यही शहर बसाया। किसी समय में वह रामचन्द्र की राजधानी था। बालमीक ने उसे अपनी पोथीमे १२ योजन (१) लंबा लिखा है। अबुलफ़ज़ल लिखता है कि वह शहर अपने ज़माने में १४८ कोस लंबा और ६६ कोस चौडा वस्ताथा, यद्यपि यह तो बढ़ावा है, पर इमारतो के निशान दूर दूर तक मिलने से यह बात बखूबी साबित है, कि वह पहिले दर्जे का शहर था। राम लक्ष्मण सीता और हनुमान के मंदिर बने हैं। प्राचीन बड़े बड़े मंदिर और रामचन्द्र के समय की इमारतें जो कुछ रही सही थी वह मुसल्मानो ने सब तोड़ताड कर बराबर कर दीं, वरन उनकी जगह पर मस्जिदें बन गई।—७—गोंडा फैजाबाद

(१) कोई तो योजन चार कोस का मानता है, और कोई इस से न्यूनाधिक॥

के वायुकोन उत्तर को झुकता सदर मुक़ाम गोंडा लखनऊ से ६५ मील पूर्व ईशान कोन को झुकता बसा है।—८—वहराइच गोंडे के वायुकोन सदर मुकाम वहराइच लखनऊ से ६४ मील उत्तर, वहां सुलतान मसऊद्गाज़ी की दरगाह और रजब सालार का मक़बरा है।—९—मुल्लापुर बहराइच के वायुकोन। सदर मुक़ाम मुल्लापुर लखनऊ से ६१ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता सरयू के दहने कनारे बसा है।—१०—सीतापुर मुल्लापुर के पश्चिम। सदर मुकाम सीतापुर लखनऊ से ५३ मील उत्तर बसा है। —११—दरयाबाद सीतापुर के वायुकोन। सदर मुक़ाम दरयाबाद लखनऊ से ४५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता हुआ है।—१२—मुहम्मदी दरयाबाद के उत्तर है। सदर मुकाम मुहम्मदी लखनऊ से ९० मील वायुकोन उत्तर को झुकता बसा है॥

॥ मंदराज हाता ॥

अब वे ज़िले लिखे जाते हैं जो मंदराज की गवर्नरी के ताबे हैं —१—गंजाम कटक से दक्षिण चिलकिया झील से सिकाकोल नदी तक। समुद्रके तटके निकट धरती उपजाऊ है। सदर मुक़ाम गंजाम मंदराज से ५५० मील ईशानकोन समुद्र के कनारे पर बसा है, और उसके नीचे एक नदी भी उसी नाम की समुद्रसे मिली है। गंजाम से ११० मील नैर्ऋतकोन की तरफ सिकाकोल जिसे चिका कूल भी कहते है उसी नाम की नदी के बांए कनारे बसा है, सिपाहियों के रहने की बारकें और साहिब लोगों के कई बंगले भी वहां बने हैं।—२—विजिगापट्टन गंजाम के नैर्ऋतकोन। यह जिला पर्वतस्थली मे बसा है। सदर मुकाम विजिगापट्टन जिसे विशाखपट्टन भी कहते हैं मंदराज से ३९० मील ईशानकोन समुद्र के तट पर बसा है।

आब हवा वहां की खराब है।—३—राजमहेंद्री विजिगापट्टन के नैर्ऋतकोन। सदर मुक़ाम राजमहेंद्रवरं मंदराज से २९० मील ईशान कोन उत्तर को झुकता समुद्र से पचीस कोस गोदावरी के बांए कनारे एक ऊंचे करारे पर बसा है। बाज़ार उसका पटा हुआ दो खंड का है। इन ऊपर लिखे हुए तीनों ज़िलों के पश्चिम भाग में जंगल पहाड़ बहुत हैं, उन मे निरे असभ्य आदमी रहते हैं।-४-मछलीबंदर जिसे अंगरेज़ मौसलीपट्टन कहते हैं राजमहेंद्री के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकना। इन दोनों ज़िलों का नाम शास्त्र में कलिंग देश लिखा है। सदर मुक़ाम मछलीबंदर मंदराज से २२५ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता समुद्र के तट पर बसा है। बंदर अच्छे होने के कारण तिजारत की जगह है। छींट वहां की मशहूर है ईरान को बहुत जाती है। क़िला कृष्णा नदी की एक धारा के समीप शहर से पौन कोस पर दलदल में बना है। मछलीबंदर से पैंतीस मील उत्तर इल्लौर का शहर है।—५—गंतूर मछलीबंदर के नैर्ऋतकोन। पेड इस ज़िले मे कम हैं, मुसाफ़िरों को कहीं कहीं इमली की छाया अच्छी मिलती है। हीरे की खान है, पर अब उससे कुछ फ़ाइदा नहीं होता। सदर मुक़ाम गंतूर अथवा मुर्तज़ानगर मंदराज से २३० मील उत्तर है। इन ऊपर लिखे हुए दोनों ज़िलों में अर्थात् मछलीबंदर और गंतूर मे गर्मी बहुत शिद्दत से पड़ती है, यहांतक कि शीशे टूटजाते हैं और लकडीकी चीज़ें इतनी खुश्क हो जाती हैं कि उनके अंदर से कील कांटे झड पडते हैं कृष्णा के मुहाने पर बालू के पटपर में गर्मियों के दर्मियान थर्मामेटर में १०८ दर्जे पर पारा रहता है। -६-नेल्लूरु गंतूर के दक्षिण। तांबे की खान है। सदर मुक़ाम नेल्लूरु मंदराज से १०० मील उत्तर पन्नार

अथवा पेन्ना नदी के दहने कनारे वसा है। इस नदी का शुद्ध नाम पिनाकिनी है।—७—कडप नेल्लूरु के पश्चिम हीरे की खान है। सद्र मुक़ाम कडप जिसका शुद्धोच्चारण कृपा है उसी नाम की नदी के कनारे मंद्राज से १४० मील वायुकोन उत्तर को झुकता हुआ है।—८—वल्लारी कडप के पश्चिम वायुकोन को झुकता। सद्र मुक़ाम वल्लारी जिसे वलहरी भी कहते हैं मंद्राज से २६० मील वायुकोन की तरफ हुगरी नदी के बाएं कनारे दो कोस हटकर वसा है। क़िला चौखूंटा एक पहाड़ पर बना है। पास ही छावनी है। वल्लारी से उनतीस मील वायुकोन को तुङ्गभद्रा के दहने कनारे विजयनगर का प्रसिद्ध और पुराना शहर कम से कम आठ मील के घेरे में उजडा हुआ पड़ा है। यह शहर एक ऐसे मैदान में है, कि जिसके गिर्द वड़े वड़े ढोके पत्थर के पड़े हैं, वरन किसी किसी जगह में उनके ऐसे ऐसे ढेर लगे हैं कि मानो छोटे छोटे पहाड हैं, शहर के बीच में भी कहीं कहीं ऐसे वड़े वड़े पत्थर पड़े हैं कि कई जगह रस्ता उनकी छांव मे चलता है, रास्ता में बिलकुल पत्थर का फर्श, नहर तालाव और कूए पत्थर काट कर बने हुए, क़िला महल बुर्ज कंगूरे फाटक मंदिर धर्मशाला और मकान बहुत बडे वड़े पुरानी हिन्दुस्तानी चाल के, दीवार खंभे मिहराव और छत्त सारी चीजें निरे पत्थरों की, और वे पत्थर भी इतने वड़े कि समझ नहीं पडता बिना कलके बल क्योंकर आदमी उन्हें अपनी जगह से हटा सके, पंद्रह २ फुट के लम्बे चौड़े और मोटे पत्थर उनमें लगे हैं, और बहुत खूबसूरती से उन्हे तराशा और जमाया है, बाजार के सिरे पर जो नव्वे फुट चौड़ा है एक शिवाला दस मरातिब का १६० फुट ऊंचा बना है. रामचंद्र के मंदिर में काले पत्थर के खंभों पर बहुत बारीक नक़्क़ाशी की है, शहर के बीचों बीच में एक बहुत उम्दा

मंदिर जिसके मकानो की लंबान ४०० फुट और चौड़ान २०० फुट होगी वैष्णवी मतका बना है, उसमे एक रथ निराले पत्थर का धुरी पहिये इत्यादि सब समेत सच्चे रथ की तरह निहायत वारीकी और कारीगरी के साथ बनाकर रखा है। यह शहर कुछ न्यूनाधिक ५०० बरस गुज़रते हैं महाराज बीरबुक्कराय ने बसाया था, और वह उसकी राजधानी था। पहले उसका नाम विद्यानगर था, फिर विजय नगर हुआ। माधवाचार्य जिसने बड़े बड़े ग्रंथ संस्कृत में बनाये हैं इसी राजा का मन्त्री था। विजय नगर के साम्हने तुङ्गभद्रा पार इसी तरह दूसरा शहर अन्नागुंडी का उजड़ा हुआ पड़ा है, केवल कुछ थोड़े से आदमी रहते हैं। कहते हैं किसी समय में यहां से वहां तक नदी के दोनों तरफ यह एक ही शहर था, और चौबीस मील के घेरे में बस्ता था। बल्लारी से ४४ मील पूर्व समुद्र से कुछ ऊपर २१०० फुट ऊंचा मिट्टी का किला एक पहाड़ पर मज़बूत बना है। –९–चित्तूर कडप के दक्षिण। सदर मुक़ाम चित्तूर अथवा चैतूर मंदराज से ८० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता हुआ है। –१०– मार्काड्डु अथवा अर्काड्डु जिसे अर्काट कहते हैं कडप के दक्षिण। इस ज़िले में चाही ज़मीन बहुत है, क्योंकि ३५९९ गांव के बीच ४००० तालाब और १९००० से ऊपर कूप सिवाय उन नहरों के जो नदी और झरनों से काटकर लाए हैं बने हैं। सदर मुक़ाम अर्काड्डु, जिसे पंडित लोग अरुकाटि भी कहते हैं, सूबै कर्नाटक की पुरानी राजधानी मंदराज से पैंसठ मील पश्चिम पालार नदी के दहने कनारे कि जो गर्मी में सूख जाती है शहरपनाह के अंदर बसा है। क़िला और नव्वाबों के पुराने महल अब खंडहर हो गए। वहां से १५ मील पश्चिम पालार के उसी कनारे पर इल्लौर का, जिसे बहुधा विल्लूर

कहते हैं, शहर क़िला और छावनी है। अर्काडु से प्राय चालीस मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता ५०० फुट ऊंचे पहाड़ पर झिंजी का मज़बूत क़िला ऊजड़ पड़ा है। झिंजी के पश्चिम एक मंज़िल पर तिरूनमाली में हिंदुओं के मंदिर धर्मशाला और कुंड हैं, उन में बड़े मंदिर का दर्वाज़ा जो पहाड़ की जड़ मे बना है बारह मरातिब का २२२ फुट ऊंचा है झिंजी से मंज़िल एक अग्निकोन को त्रिविक्केरा गांव के पास बहुत से पेड़ पत्थर होकर पड़े हैं, और खोदने से धरती के अंदर भी निकलते हैं (१) एक पेड़ इस तरह का वहां साठ फुट का लंबा पड़ा है, जड उसकी जिला देने से यशम और अकीक़ से भी अच्छा रूप दिखलाती है। साहिब लोग अकसर उसके माला और गहने बनाते हैं। अर्काडु से ८५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता कड्डालूर का बंदर है, अंगरेज़ों के बंगले भी वहां बहुत से बने है।—११—चेंगलपट्टु नेल्लूरु से दक्षिण। ज़मीन अकसर पथरीली। ताड़ के पेड़ बहुत। इस जिले को जागीर भी कहते हैं, क्योंकि अर्काडु के नव्वाब ने सन् १७५० और १७६३ मे सरकार कम्पनी को बतौर जागीर के दे दिया था। सदर मुकाम चेंगलपट्टु जिसे लोग सिहलपेटा भी कहते है मंद्राज से ३५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता एक छोटी सी नदी पर, जो पालार में गिरती है, पहाडों के बीच बसा है। क़िला मज़बूत था

(१) जिस पानी में पत्थर के अनन्त सूक्ष्म परमाणु मिले रहते हैं, उन मे लकडी पडने से काल पाके पत्थर हो जाती है, क्योंकि लकडी के परमाणु दिन पर दिन गलते जाते हैं, और पत्थर के परमाणु उनकी जगह पर उस लकड़ी के छेदों की राह इस ढब से बैठते जाते हैं, कि यद्यपि वह लकड़ी से पाषाण हो जाती है, परंतु रंग रूप और रग रेशे उस में उसी लकड़ी के से बने रहते हैं॥

पर अब बेमरम्मत है। मंदराज, जिसका शुद्धोच्चारण मंदिरराज है, और जिसे चीनापट्टन भी कहते हैं, उस हाते की राजधानी कलकत्ते से ८५० मील और सड़क की राह १०६३ मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता ठीक समुद्र के तट पर बसा है। किला सेंटजार्ज का बहुत मज़बूत है, यदि फैलाव में फोर्ट विलियम् से छोटा है, पर लड़ाई के ढंगों का उस्से भी अधिक है। लहरें समुद्र की यहां बेतरह टकराती हैं, बंदर कोई नहीं, जहाजों का ठहरना बहुत मुश्किल वरन अक्तूबर नवम्बर और दिसम्बर में तो तबाह हो जाने का डर लगा रहता है, जब हवा तेज़ चलती है, मुमकिन नहीं कि जहाज़ वाले कनारे आ सकें, या कनारे वाले जहाज़ पर जा सकें, वरन जब हवा मुवाफ़िक़ रहती है तब भी लोगों को जहाज़ तक, कि जो हमेशः कनारे से कुछ तफावत पर लंगर डालते हैं, आने जाने के लिये उसी शहर की नावों पर सवार होना पड़ता है, जहाज़ वालों का मक़दूर नहीं कि अपने बोट उस लहर में खोल सकें, ये नाव हलकी और चमड़े की तरह लचकती रहती हैं, कि जिस में लहरों के ज़ोर से टूटने न पावें, और उनके मल्लाह ऐसे उस्ताद होते हैं, कि लहर पर अपनी नाव चढ़ाकर उस के साथ ही कनारे पर ला डालते हैं, ज़रूरत के वक्त़ वे मल्लाह लकड़ी के लट्ठों पर जो दो तीन आपस में बंधे रहते हैं सवार होकर चिट्ठी इत्यादि जो पानी से बचाने को अपनी चटाई की टोपियों में रख लेते हैं जहाज़ तक पहुंचा देते हैं, जब पानी का ज़ोर उन्हें गेंदकी तरह उठाकर दूर फेंक देता है, तो वे तैर कर फिर अपने बेड़े पर आ चढ़ते हैं जब किसी समय ये आदमी की जान बचाते हैं, तो इन्हें सरकार से तगमा मिलता है। समुद्र के कनारे सरकारी और साहिब लोगों के मकान बहुत उमदा बने हैं चूना वहां कौड़ी जलाकर बनाते

हैं,इस कारन बहुत साफ और सफेद होता है। गवर्नमेंटहौस के नज़दीक करनाटक के नव्वाब का बनवाया चिपाक बाग है। सड़क साहिब लोगों के हवा खाने की सुन्दर बनी है। दोनों तरफ सायादार पेड़ों के लगे रहने और अंगरेज़ो के बाग और बंगलो के होने से फूलों की मीठी मीठी सुगन्ध हर तरफ़ से चली आती है। यद्यपि अच्छे बंदर या कोई बड़ी नदी के न होने के कारन यह शहर कलकत्ते और बंबई की तरह तिजारत की जगह नहीं है, पर तौ भी चीज़ें सब तरह की मिल जाती हैं। सन् १८०३ मे शहर से ईन्नौर नदी तक एक नहर १०५६० गज़ लंबी ऐसी खोदी गई कि उसमें नाव भी चल सकती है। सिपाही पलटन के वहां बंगाल हाते की बनिसबत छोटे और कमज़ोर होते हैं, पर चुस्ती चलाकी और क़वाइद में इन से भी अधिक हैं। मंदराज के गवर्नर कमांडरिचीफ सुप्रिमकोर्ट और सदर निज़ामत व दीवानी के जज और बोर्डआफ़ रेवन्यू के साहिब लोग इसी जगह रहते हैं। सन् १६३९ मे विजय नगर के राजा श्रीरंगराइल ने इस शर्त से अंगरेज़ों को मंदराज मे क़िला बनाने की इजाज़त दी थी, कि वह किला उसके नाम से श्रीरंगरायपट्टन पुकारा जाय, पर इन्हों ने क़िले का नाम तो सेंटजार्ज रखा और शहर जो बसाया उस का नाम वहां के कारदार ने स्वामी की अवज्ञा करके अपने बाप चिनापा के नाम पर चीनापट्टन रखा। अब इस शहर में गिर्दनवाह समेत सात लाख आदमी बसते हैं। मंदराज से ४८ मील नैर्ऋतकोन को कुंजवरंका शहर है, जिस का असली नाम शास्त्र में कांचीपुर लिखा है। वहां बाज़ार में दोनो तरफ नारियल के पेड़ लगे है। शिव का एक बहुत बड़ा मंदिर बना है, उस मंदिर के भीतर एक धर्मशाला है जिसमें हज़ार

खंभे बतलाते हैं, सीढ़ी के दोनों तरफ दो हाथी रथ समेत पत्थर के बने हैं, दर्वाजे पर चढ़ने से दूर दूर के जंगल झील और पहाड़ दिखलाई देते हैं। कोस एक के तफावत पर विष्णुकुंजी अथवा विष्णुकांची में वरदराज विष्णु का मंदिर नक्काशी और कारीगरी में इस से भी बढ़कर है, दर्वाजे के आगे एक खंभा तांबे का सुनहरी मुलम्मा किया हुआ गड़ा है। मंदराज से पैंतीस मील दक्षिण समुद्र के तट पर महाबलिपुर में कई जगह पहाड़ के पत्थर काटकर गुफा मंदिर और मूर्त्तें वैष्णव मत की पुराने समय की बनी हुई मौजूद हैं, देखने योग्य हैं। वहांवाले कहते है, कि शहर पुराना महाबलिपुर बिलकुल समुद्र में डूब गया, और देखने से भी वहां ऐसा मालूम होता है कि समुद्र का जल दिन पर दिन तट की तरफ हटता आता है। यदि यही हाल रहेगा तो ये मंदिर इत्यादि भी कुछ दिन में जलमग्न हो जायंगे। मंदराज से अस्सी मील वायुकोन को पहाड़ों मे त्रिपतिनाथ का बड़ा प्रसिद्ध मंदिर है। मंदराज से ४० मील नैर्ऋतकोन को पालार नदी के बांएं कनारे बालाजाह नगर बड़े ब्योपार की जगह है।—१२—शेलं अर्काडु के नैर्ऋतकोन। पहाड़ ५००० फुट तक समुद्र से ऊंचे हैं और इसी कारन वहां गर्मी बहुत नहीं पड़ती। सदर मुक़ाम शेलं मंदराज से १७० मील नैर्ऋतकोन है। —१३—तिरूच्चिनापल्ली शेलं के दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ। सदर मुकाम तिरूच्चिनापल्ली मंदराज से १९० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता कावेरी के दहने कनारे शहरपनाह के अंदर एक पहाड़ी पर बसा है। बाहर बहुत बड़ी छावनी है। शहर के साम्हने कावेरी के एक सुन्दर टापू में जो १३ मील लम्बा होवेगा श्रीरंगजी का बड़ाभारी मंदिर बना है, उसकी बाहर की दीवारका घेरा प्राय चार

मील होवेगा, उसके दर्वाजे मे तैंतीस फुट लंबे और पंद्रह फुट दौर के मोटे पत्थर के खंभे लगे हैं, इस दीवार के अंदर साढ़े तीन तीन सौ फुट के तफावत पर एक के अंदर एक फिर छ दीवारें और हैं, पचीस पचीस फुट ऊंची, और चार चार फुट मोटी, और उन मे चारो दिशा को चार चार दर्वाजे लगे हैं। निदान इन सात दीवारो के अंदर श्रीरंगजी का मंदिर है, उसके गुम्बज़ पर सुनहरी मुलम्मा किया है, और उन सब दीवारों के बीच बीच में मकान दुकान देवालय और धर्मशाला बनी हैं। एक धर्मशाला इतनी बड़ी है कि जिस में हज़ार खंभे लगे हैं। अंगरेज़ लोग चौथी दीवार के आगे नही जाने पाते, पर पंडे लोग श्रीरंगजी की पालकी और छत्र जो निरे सोने के बने हैं और रत्न जटित आभूषण बाहर लाकर दिखला देते हैं।—१४—तंजाउरू जिसे तंजौर अथवा तंजावर और तंजनगर भी कहते हैं, और संस्कृत पुस्तको में चोलदेश के नाम से लिखा है, तिरुचिनापल्ली के पूर्व। वर्दवान के बाद ऐसा उपजाऊ कोई दूसरा जिला नही है। नहरें जो कावेरी से काट काट कर हर तरफ ले गए है, उन से खूबही अन्न पैदा होता है, और आबादी में भी इस जिले को मानों बंगाले का एक टुकड़ा समझना चाहिये, सदर मुक़ाम तंजौर मंदराज से १८० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता कावेरी के दहने कनारे दक्षिण में संस्कृत विद्या के लिये बहुत प्रसिद्ध स्थान और पहिले दर्जे का शहर गिना जाता है। क़िला और शहरपनाह अच्छी मज़बूत, खाई गहरी पत्थर में से काटी हुई, मकान सुथरे रास्ते सीधे और चौड़े, मंदिर बहुतायत से, उन मे एक मंदिर तो महादेव का क़िले के अंदर १९९ फ़ुट ऊंचा पत्थर का ऐसा उमदा बना है कि शायद उस नाय का शिख-

रदार मंदिर इस मुल्क में दूसरा न निकलेगा, उस मंदिरके सभा-मंडप में एक नंदी काले पत्थर का आठ हाथ ऊंचा बहुत तुहफा बना है। कम्बुकोनम् जिसे कोई कुंभाकोलम् भी कहता है तंजाउरू के पूर्व्व कावेरी के मुहानों में। सदर मुकाम नागौर अथवा नगर मंदराज से १६० मील दक्षिण समुद्र के तट पर बसा है, व्यौपार की जगह है, माल के जहाज आते हैं। वहां एक चौखूंटा मीनार १५० फुट ऊंचा है, पर मालूम नहीं कि किस काम के लिये बनाया गया था, और किस ने बनवाया। कोम्बुकोनम् अथवा कुंभघोन का पुराना शहर वहां से ३५ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता कावेरीकी दो धारा के बीच चोलबंशी राजाओं की क़दीम राजधानी है। वहां चक्रेश्वर के मंदिर के आगे कुंड पर बारहवें बरस अथवा रामस्वामी के लिखने बमूजिब तीसवें बरस माघ के महीने में बड़ा भारी मेला हुआ करता है।-१६-मथुरा, जिसे अंगरेज मदुरा और बहुत लोग मीनाक्षी भी कहते हैं, तंजौर के नैर्ऋतकोन। जमीन ऊंची नीची दलदल और बहुधा जङ्गल और पर्वतस्थली है। दलदल के समीपस्थ बस्तियों की आब हवा खराब है। वहां एक क़ौम तोतियार है, वे लोग भाई भतीजे चचा इत्यादि सारे कुनबे के लोग मिलकर एकही स्त्री से विवाह कर लेते हैं। सदर मुक़ाम मथुरा मंदराज से २६५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता कुमारी अंतरीप से १३० मील व्यागारू नदी के दहने कनारे शहरपनाह के अंदर बसा है। कचहरी के पास एक सुन्दर तालाव है, और उसके मध्य मे एक देवालय है। शहर के रास्ते बहुत चौड़े, मंदिर अगले समय के कई बहुत बड़े और ऊंचे बने हैं। महल टूटगये केवल एक गुम्बज ३० गज़ चौड़ा बच रहाहै। मथुरा से अनुमान ७५ मील अग्निकोन को रामेश्वर का टापू, जहां

व्यागारू नदी समुद्र से मिली है। उससे थोड़ी ही दूर पूर्व,तट से एक मील के तफावत पर, ग्यारह मील लम्बा छ मील चौड़ा, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। धरती रेतल है, खेती बिलकुल नहीं होती, छोटे छोटे बबूल के जंगलों से घिरा हुआ मंदिर सेतबंध रामेश्वर महादेव का संगीन बहुत बड़ा प्राचीन समय का चमत्कारी बनाहै। मुसलमान बादशाहो की अमलदारी वहां तक न पहुंची इस कारन ढहने से बच गया, दर्वाज़ा इस मंदिर का सौ फुट ऊंचा है और उस में चालीस फुट ऊंचे एक एक पत्थर के दासे लगे हैं, बस इसी से उस मंदिरकी इमारत का हाल दर्याफ्त करलो। महादेव को सिवाय गंगा के और किसी जगह का जल नहीं चढ़ता। मंदिर से ९ मील समुद्र के तट पर पामबन का बन्दर है, वहां यात्री लोगों की नौका आकर लगती हैं, सडक वहां तक बिलकुल फर्स की हुई, गली बाज़ार चौडे, धर्मशाला अच्छी अच्छी, वहां के पंडे ने अपनी हवेली के हाते मे अंगेरजी चाल का एक बंगला तैयार किया है, उस पर से दूर दूर तक समुद्र, और लंका की तरफ वे पत्थर और पहाड़, जिसे हिंदू लोग रामचन्द्र का बनाया पुल कहते है, पानी मे एक काली सी लकीर की तरह दिखलाई देता है। पहले वह सेत समूचा था, सन् १४८४ तक लोग उसके ऊपर से आते जाते थे, पर अब समुद्र की लहरो के धक्के से जा बजा टूट गया है। हिंदू लोग इस सेत को करामात समझते हैं, पर हम उस में कोई बात करामात की नहीं देखते, क्योंकि लंका और हिन्दुस्तान के बीच जो साठ मील चौड़ी खाड़ी पड़ी है, पानी उस में ऐसा छिछला है, कि जहाज नहीं निकल सकते, घूमकर अर्थात् लंका के पूर्व तरफ से जाते है। रामेश्वर के टापू और हिन्दुस्तान के बीच. और मन्नारू के टापू और लंका

के दर्मियान, जो सेत टूटने से छोटी मोटी नाव निकल जाने के रस्ते होगये, वहां भी पानी पांच फुट से अधिक गहरा नहीं रहता, और मन्नारू और रामेश्वर के बीच तो पानी इतना कम है, कि जब समुद्र की लहर हटती है, तो बिलकुल रेता दिखलाई देने लगता है। निदान इसी रेते के बीच में एक पहाड़ का करारा सा निकल आया है, और उस पर बड़े बड़े ढोके पत्थरों के पड़े हैं, उसी को वहांवाले रामचन्द्र का सेत कहते हैं, उसके अंत से लंका के तट से समीप मन्नारू का टापू १८ मील लंबा और अढ़ाई मील चौड़ा है, गढ़ भी उस में एक बना है, और वह समुद्र की खाड़ी जो लंका और हिन्दुस्तान के बीच में पड़ी है, उसी टापू के नाम से पुकारी जाती है।—१७—तिरु-नेल्लुवलि मथुरा के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता। इस जिले में पर्बत कम हैं, पर जंगल उजाड़ बहुत, विशेष करके पूर्व भाग में। स-दर मुक़ाम तिरुनेल्लुवलि मंदराज से ३५० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता कुमारी अंतरीप से ५९ मील है। तिरुनेल्लुवलि से पूर्व समुद्र के तट पर तूतिकोरिन में गोतेखोर लोग सीप से मोती निका-लते हैं।—१८—कोयम्मुत्तूर मथुरा से वायुकोन। यह ज़िला प्राय ९०० फ़ुट समुद्र से ऊंचा होगा, पर सब जगह बराबर नहीं कहीं इस में न्यून और कहीं अधिक। जंगल उजाड़ बहुत है। लोहे और गोदन्त की खान हैं। यहां के लोग सांड़ की पूजा करते है, और जब सांड़ मरते हैं तो बड़ी धूम धाम से गाड़े जाते हैं। सदर मुक़ाम कोयम्मुत्तूर मंदराज़ से २७० मील नैर्ऋतकोन है। उतकमंद वहां से ४० मील वायुकोन नीलागिरि के पहाड़ पर समुद्र से कुछ ऊपर ७००० फुट ऊंचा साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। बहुत सी कोठी और बंगले बन गये हैं, गर्मी वहां बिलकुल नहीं व्यापती। पास ही उन

पहाड़ों मे एक झील भी सुंदर छ सात मील के घेरे मे पानी से भरी है। ऊपर लिखे हुए ये सातों जिले अर्थात् शेलं से कोयम्मुत्तूर तक द्राविड़ देश में गिने जाते हैं, और इसी द्राविड़ का नाम शास्त्र मे दण्डकारण्य भी लिखा है।—१९—मलीबार जिसे मलय और तिरिया राज और केरल भी कहते है, और कोयम्मुत्तूर के पश्चिम घाट उतर कर समुद्र तक चला गया है। इस ज़िले में वन और पर्वत बहुत हैं, और नदी नाले भी इफरात से मिट्टी लाल सुरखी की तरह, किसी किसी पहाड़ी नदीका वालू धोने से सोना भी हाथ लगताहै। यहां के जमीदार इकट्ठा होकर गांवमें नहीं बसते, वरन अपने अपने खेत के पास वहुधा अलग अलग मकान बनाकर रहते हैं, पर मकान इनके सुथरे और साफ होते हैं। वारवर्दारी यहां अक्सर मज़दूर करते हैं, बैल लादने लाइक नहीं होते। जात का बड़ा बचाव है, ब्राह्मण शूद्र का स्पर्श नहीं करते वरन उन्हे अपने समीप भी नहीं आने देते, पर नायर अर्थात् शूद्र जाति की स्त्रियों का रखना ऐब नहीं समझते। यहां नायर लोग दस बरस की उमर में शादी करते है, पर स्त्री को अपने घर नहीं बुलाते, खाने पहनने को दिया करते है, और वह अपने बाप के घर रहा करती और जिस मर्द को चाहती है अपने पास बुलाती है, और यही कारन है कि वहां के आदमी अपने बाप का नाम नहीं जानते, और बहन के पुत्र को वारिस बनाते हैं। मा घर की मालिक है, और माके पीछे बड़ी बहन। जब कोई मरता है तो उसकी बहनो के लड़का लडकी उसका माल असबाव बांट लेते है। हक़ीकत में वेवक़ूफ हैं वहां वे मर्द, जो विवाह करते हैं। औरते सुंदर होती है, पर अफसोस कि इतनी वेवफा। इस ज़िले के आदमी प्राय डेढ़ लाख क्रिस्तान है। यह भी याद रखना चाहिये कि केरल

देश, जिसका हमने वर्णन किया है। घाटों के नीचे नीचे उत्तर तरफ चंद्रगिरि नदी तक चला गया है, और कल्लीकोट और तेल्लिचेरी ये दोनों जिले भी जिन का आगे बर्णन होता है इसी देश में गिने जाते हैं, और यही सारी बातें उन में भी मौजूद हैं। सदर मुकाम इस जिले का कोच्ची मंदराज से ३५५ मील नैर्ऋतकोन समुद्र के तट पर बसा है।—२०—कल्लीकोट मलवार के उत्तर। सदर मुक़ाम कल्लीकोट मंदराज से ३३५ मील नैर्ऋतकोन पश्चिम को झुकता समुद्र के तट पर बसा है। यह वही जगह है जहां पहले ही पहल फ़रंगियों का जहाज़ आकर लगा था।—२१—तेल्लिचेरी कल्लीकोट के उत्तर। सदर मुक़ाम तेल्लिचेरी अथवा तालचेरी मंदराज से ३४० मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता समुद्र के तट पर बसा है। —२२—मंगलूर अथवा कानड़ा, जिसे वहांवाले तुलव कहते हैं, तेल्लिचेरी के उत्तर। इस में मलवार से भी अधिक पहाड़ हैं। गाय बैल वहां के बड़ी बकरी से ज़ियादः बड़े नहीं होते। ज़मीदार इस जिले में भी मलवार की तरह अपने खेतों के पास घर बनाकर रहते हैं। वहां जैन लोग बहुत हैं और क्रिस्तान भी अधिक हैं। टीपू के बाप हैदर ने बहुतों को क़तल किया था। कहते हैं कि ६०००० क्रिस्तान पकड़ के मैसूर को ले गया था, उन में से केवल १५००० लौटे। सदर मुक़ाम मंगलूर, जिसे कोडिआल बंदर भी कहते हैं, मंदराज से ३७५ मील पश्चिम समुद्र के तट पर है।—२३—हौनोर मंगलूर के उत्तर गोवे तक, जो पुर्टगीज़ों (१) के दखल में है। यह भी जिला तुलव देश में गिना जाता है, और सारी बातें वैसी ही रखता है॥

(१) पुर्टगाल के रहनेवालों को पुर्टगीज़ कहते हैं॥

## वम्बई हाता

अब वम्बई हाते के जिले लिखे जाते हैं —१—धारवार गोवे के पूर्व । सदर मुकाम धारवार, जिसे मुसलमान नसरावाद कहते हैं, वम्बई से २८५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकनाहै । धारवार से पचास मील उत्तर गोकाक के पास गतपर्व नदी एक जगह पहाड़ में १७४ फुट ऊंचे पत्थर से चादर के तौर पर गिरती है, वरसात में इस चादर की चौड़ान १६९ गज से कम नहीं होती, महादेव का वहां एक मंदिर है, और जंगल भी आस पास मे सुंदर है, वह स्थान उदासीन जनों के मन को वहुत लुभाता है ।—२— वेलगांव धारवार के वायुकोन । आव हवा अच्छी । सदर मुकाम वेलगांव वम्बई से २४५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता । क़िला मजबूत वनाहै । खंदक़ पहाड़ में से कटी है । सरकारी फौज की छावनी है ।—३— कोकण, जिसे कोङ्कण, और कङ्कन भी कहते हैं, वेलगांव के वायुकोन। जंगल पहाड़ और नदी नालों से भरा है । सदर मुकाम रत्नगिरि वम्वई से १४० मील दक्षिण समुद्र के कनारे है ।—४—ठाणा कोकण के उत्तर । सदर मुकाम ठाणा साष्टी के टापू मे, जिसे वहांवाले झालता और शास्तर और अंगरेज सालसिट कहते हैं, वम्वई से वीस मील ईशानकोन उत्तर को झुकता हुआ समुद्र के तट पर वसा है । क़िला भी वना है । २०० गज चौड़ी समुद्र की खाड़ी उस टापू को ज़मीन से जुदा करती है । ठाणा से कोस तीन एक पर किनेरी के दर्मियान इस टापू मे किसी समय पहाड़ काटकर जो वौध मत वालों ने गुफा और मंदिर वनाये थे. उन मे दो मूर्त्ति वुध की वीस वीस फुट ऊंची अब तक मौजूद है, और एक खंभे पर कुछ पुराने हर्फ भी खुदे हुए हैं ।—५—वम्वई का टापू साष्टी टापू के दक्षिण ।

थोड़े दिन हुए कि यह टापू पानी और जंगल झाड़ियों से ऐसा छा, रहा था, कि अगले लोग उसकी आव हवा की खरावी यहां तक लिख गये हैं कि इस टापू में आकर कोई मनुष्य तीन वरस से अधिक न जीयेगा, अब वही बम्बई सरकार के मताप से ऐसा आवाद और साफ हो गया कि आव हवा सफाई दौलत और पार्सियों की चालाकी अकल और अच्छे स्वभाव के कारन बहुत लोग कलकत्ते से भी उसे श्रेष्ठ समझते हैं। कोई तो कहता है कि वहां जो वम्वादेवी है उसी के नाम पर इस टापू का नाम बम्बई रखा गया, और कोई इस का असल नाम वमूवहिया वतलाता है। वमूवहिया का अर्थ पुर्टगाली भाषा में अच्छी खाड़ी है। पहले यह टापू पुर्टगीज़ों के दखलमें था, सन् १६६१ मे जव उनके वादशाह ने अपनी लड़की इंगलिस्तान के वादशाह को व्याही तो यह टापू यौतक में दिया। पहले ये दोनों टापू जुदा जुदा थे, और इन के बीच में चार सौ हाथ समुद्र की खाड़ी थी, दक्षिण तरफ का टापू ९ मील लंवा और अढ़ाई मील चौड़ा था, और उत्तर तरफ साष्टी का टापू १८ मील लम्बा और १३ मील चौडा था, पर अब उन दोनो के बीच मे बंध वंधजाने से एक ही हो गए। धरती इन टापुओ की पथरीली है, इमारत में काठ वहुत लगाते हैं, अंगरेज़ों की कोठियो मे भी बहुधा काठ के खंभे और तख्तो का फर्श रहता है। सिपाही पलटनों के यदि नाप में पांच फुट तीन इंच से ऊंचे नही होते, पर लड़ाई में मिहनती है। वम्बई हाते के गवर्नर कमांडरिचीफ वोर्ड आफ रेवन्यू सुप्रिम कोर्ट और सदर निजामत और दीवानी के जज इसी जगह में रहते है। किला मजबूत और इस ढव का बना है कि समुद्र तीन तरफ से मानो उसकी खाई हो गया है। ज़ुवान यहां गुजराती वहुत वोलते हैं, और उस से उतर

कर मरहठी और कोकणी, और उन से उतर कर फिर और सब बोली जाती हैं। यहां पारसी लोग बहुत रहते हैं, और बडे धनाढ्य हैं। औरतें उनकी अकसर पतिव्रता, कस्बी उस कौम में कोई नहीं। जब ईरान में मुसल्मानों का अमल हुआ तो इन के पुरखा वहां से भागकर यहां आ बसे। ये लोग अब तक उसी तौर से सूर्य्य और अग्नि को पूजते हैं, सवेरे नित्य सूर्योदय के समय सबके सब समुद्रके कनारे मैदानमें जाकर जो सूर्यको सिजदा करते है, वह कैफियत देखने लाइकहै। इन लोगो के दख़्मे अर्थात् मुर्देरखने के मकान वहां पांचसे ऊपर हैं, सब से बडा दख़्मा चौफेर दीवार से घिरा अनुमान पचास गज के घेरे में एक खुला हुआ मकान है, और उसके बीच में एक कूआ है, जो पारसी मरता है उसे एक चादर मे लपेट कर उस मकान के अंदर रख आते है, निदान मास तो उसका कव्वे और गिध नोच ले जाते है, हड्डियां जो रह जाती हैं उन्हे उस कूए मे डाल देते हैं। एक कुत्ता भी वहां बंधा रहता है, और उनका यह निश्चय है कि शैतान उस मुर्दे की जान पकडने को वहा आता है और वह कुत्ता भूंक कर उसे भगा देता है। यह भी उन का मत है कि जिस मुर्दे की दहनी आंख गिध पहले खावे वह अच्छा है, और जिस मुर्दे के मुंह में से रोटी जो मरने के बाद रख देते हैं कुत्ता खींच ले जावे उसको स्वर्ग प्राप्त होने में कुछ संदेह नहीं। कूए को हड्डियों से साफ करने के वास्ते उस मकान के नीचे से एक सुरंग लगी रहती है, कि जिस में वह कूआ भरने न पावे। अमीर लोग अपने कुनबे के लिये बहुधा ऐसा एक जुदा मकान बनवा रखते है। बम्बई कलकत्ते से ९५० मील पश्चिम ज़रा नैर्ऋतकोन को झुकता और सड़क की राह ११८५ मील पड़ता है। बम्बई के किले से सात मील और कोकण के क-

नारे से पांच मील गोरापुरी का टापू, जिसे अंगरेज़ एलिफेंटा आइल कहते हैं, छ मील के घेरे में है। एलीफेंट अंगरेज़ी में हाथी को कहते हैं, और वहां उतरने की जगह पहाड़ पर एक पत्थर का हाथी इतना बड़ा कि सच्चे हाथी से तिगुना ऊचा बना था, इसी कारन यह नाम रहा, अब वह हाथी टूट गया है। इस टापू में किसी समय पहाड़ काट कर अद्भुत मंदिर बने हैं। बड़ा मंदिर उस में मिले हुए मकानों के साथ २२० फुट लम्बा और १५० फुट चौड़ा है, और २६ उसमे खंभे है, बीच में एक बहुत बड़ी त्रिमूर्ति १५ फुट ऊंची रखी है, अर्थात् एकही मूर्तिमें ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनों के चिहरे बनाये हैं, दहनी तरफ एक मकान मे महादेव की अर्धंगी मूर्ति १६ फुट ऊंची बनी है, सिवाय इन के और भी बहुत मूर्तें इन त्रिदेव और इन्द्रानी इत्यादि की बनी हैं। जगह देखने लाइक़ है पर बहुत बेमरम्मत, कहीं कहीं टूट भी गई हैं। जहां किसी ज़माने में ब्राह्मणो के सिवाय कोई पांव भी रखने न पाता होगा, वहां अब सांप बिच्छुओं की दहशत से कोई जाना भी नही चहता।—६—पूना ठाणा के पूर्व। पर्वत और नदी नाले उस में बहुत हैं। आब हवा अच्छी है। जमींदार क़द के नाटे होते हैं। सदर मुक़ाम पूना बम्बई से ७५ मील अग्नि कोन समुद्र से २००० फुट ऊंचा एक पटपर मैदान मे मूता नदी के दहने कनारे बसा है। बाज़ार चौड़ा, मकानों में लकड़ी का काम बहुत, बस्ती लाख आदमी से ऊपर, साडी रेशमी वहां अच्छी बुनी जाती है। २५ मील वायुकोनको एक खड़े पहाड़पर लोहगढ का किला मज़बूत बना है, और पानी का उस मे बहुत आराम है। पूना से ३० मील वायुकोन उत्तर को झुकता कारली गांव के पास पहाड़ काट कर बौध मत के मंदिर जो बने हैं, वे देखने लाइक़ है, बड़ा मंदिर

१२६ फुट लम्बा और ४६ फुट चौड़ा है, उसमें बुध की मूरतें और स्त्री पुरुष और हाथियों की सूरतें तरह बतरह की खोदी है। पूना के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता अनुमान ५० मील और समुद्र के तटसे २५ मील पश्चिम घाट में महाबलेश्वर का पहाड़ जो समुद्र से ४५०० फुट ऊंचा है, साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। बलंदी के बाइस सदा शीतल रहा करताहै, बहुत से बंगले बन गये है, गर्मी भर बम्बई हाते के बहुतेरे साहिब बरन गवर्नर बहादुर भी उसी जगह आकर निवास करते है, कृष्णा नदी उसी जगह से निकली है, इसलिये हिन्दू लोग उसे तीर्थस्थान मानते हैं।—७—सितारा पूना के दक्षिण। सदर मुकाम सितारा बम्बई से १३० मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता माय आठ सौ फुट ऊंचे खड़े पहाड़ पर मजबूत किला है, और पहाड़ के नीचे शहर बसता है, शहर से कोस एक पर छावनी है। सितारे से ३० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता पश्चिम घाट के २००० फुट ऊंचे एक खड़े पहाड पर वास्मोटाह नाम एक मजबूत किला बना है। सितारे से १०० मील पूर्व अग्निकोन को झुकता भीमा नदी के दहने कनारे पंडरपुर हिंदुओं का तीर्थ है, वहां वैष्णवी मत का एक मंदिर बना है। सितारे से १४० मील अग्निकोन बीजापुर अथवा विजयपुर शहरपनाह के अंदर बसा है, वह किसी समय मे दखन के बादशाहों की राजधानी था, और फिर दिल्ली के तहत मे एक सूबा रहा। उस वक्त उस में ९८४००० घर और १६०० मसजिद बतलाते हैं, यद्यपि यह केवल बढ़ावे की बात है, और कदापि बुद्धिमानों के मानने योग्य नहीं, तथापि उसके आस पास दूर दूर तक खंडहर और मकानों के निशान जो अब तक मौजूद है देखने से यह बात साबित है कि वह शहर

किसी ज़माने में बहुत बडा बस्ता था। इस शहर का गिर्दनवाह दिल्ली के गिर्दनवाह से बहुत मिलताहै, जैसे वहां शहर के बाहर कुतब साहिब तक हर तरफ खंड़हर और मकबरे दिखलाई देते हैं, उसी तरह विजयपुर के गिर्द भी टूटे फूटे मकान और मक़बरे नजर पडते हैं। दूर से उसके गुम्बज़ और मीनारों के नज़र आने पर यही मालूम होता है कि किसी बहुत बड़े शहर में पहुंचे पर दर्वाज़े के अंदर क़दम रखो तो हर तरफ खंड़हर दिखलाई देने लगते हैं, क़िला टूटा, महल फूटा, मस्जिद मक़बरे ढहे, दूकान मकान गिरेहुए, दीवार बेमरम्मत, फाटक सड़े गले, शहरपनाह का घेरा आठ मील का, दर्वाज़े सात, मुहम्मदशाह का मक़बरा जिसका गुम्बज़ १५० फुट बुलंद, और जिसमें आवाज ऐसी गूंजती है कि मानो दूसरा आदमी बोलता है, नौबाग की बावली, जामे मस्जिद, इबाराहीम आदिलशाह की मस्जिद जो सत्तर लाख रुपया लगकर बनी थी, और मक़बरा जिस के गिर्द सारी कुरान इस खूब सूरती से खुदी है और उस पर सोने का काम और रंगामेजी ऐसी की है कि शायद अच्छी अच्छी किताबों का लोहपर भी वह काम न मिलेगा, देखने लाइक़ है। बाज़ार अब भी, जो कुछ कि बाक़ी रह गया है, तीन मील लम्बा पचास फुट चौड़ा और बिलकुल फर्श किया हुआ है। एक जगह में, जिसे हलालख़ोर की बनाई हुई बतलाते है, पत्थर की ज़ंजीरें लटकती हैं, लोहे की सांकल के तौर पर बनी हुई, और जोड उसमें कहीं नहीं। क़िले पर मलिकुलमैदान नाम एक पीतल की तोप रखी है कि जिस मे तैंतीस मन तीन सेर का गोला समाता है, हम जानते हैं कि इतनी बड़ी तोप सारी दुनिया में दूसरी न निकलेगी।—८—शोलापुर सितारा के पूर्व। धरती उपजाऊ। सदर मुकाम शोलापुर बम्बई

से २३० मील अग्निकोन शहरपनाह के अंदर है । किला मजबूत और छावनी बड़ी है ।—९—अहमदनगर पूना के ईशानकोन । धरती ऊंची और पहाड़ी मौसिम मोतदल । सदर मुकाम अहमद नगर, जो बादशाही अमल्दारी में उसी नाम के सूबै की राजधानी था, बम्बई से १२५ मील पूर्व शहरपनाह के अंदर बसा है । क़िला पाव कोस के तफावत पर संगीन बना है । —१०—नासिक अहमदनगर के वायुकोन । सदर मुकाम नासिक बम्बई से ९५ मील ईशानकोन को गोदावरी के बाएं कनारे उसके उद्गम के पास बसा है । हिंदुओं का तीर्थ है । ब्राह्मण बहुत बसते हैं । कहते हैं कि रामचन्द्र ने इस जगह शूर्पनखा की नाक काटी थी इसी कारन इसका नाम नासिक रहा । शहर से पांच मील पर एक पहाड़ में पत्थर काटकर गुफा की तरह पुराने समय के बौधमती मंदिर बने है, उन में कुछ अक्षर भी प्राचीन खुद रहे हैं । नासिक से २० मील नैर्ऋतकोन को त्रिम्बक का क़िला पहाड के ऊपर मजबूत बना है, और नीचे शहर बसता है । गोदावरी इसी पहाड़ से निकली है, हिंदुओं का तीर्थस्थान है ।–११–खानदेश नासिक के उत्तर और सातपुडा पहाड़ के दक्षिण जो भीलों के रहने की जगह है । वे नाटे काले प्राय नंगे भागलपुर के पहाड़ियों से मिलते हुए धनुषबान लिये रहते है, और सब कुछ खाते पीते हैं, मुर्दों को जमीन में गाड़ते हैं, और जात पूछो तो अपने तई हिंदू असल रजपूतबचा बतलाते हैं । यद्यपि इस जिले में जंगल पहाड़ और मैदान तीनो है, परंतु निर्मल जल के सोते जो पहाडों से निकलकर तापी नदी में गिरते हैं बहुत शोभायमान हैं । बादशाही वक्त में यह एक सूबा गिना जाता था । सदर मुकाम धूलिया बम्बई से २०० मील ईशानकोन को पांजरा नदी के कनारे

बसा है। धूलिया से १०० मील पूर्व ईशानकोन को झुकता असीरगढ़ अथवा आसेरगढ़ का क़िला ७५० फुट ऊंचे पहाड़ पर, जिस मे १०० फुट तो ऊपर का निरा दीवार की तरह खड़ा है, ११०० गज़ लंबा ६० गज चौड़ा निहायत मजबूत बना है, पानी भी उसके अंदर बहुत है। इन ऊपर लिखे हुए जिलों में, जो बम्बई के गवर्नर के ताबे हैं, एक तो वह मुल्क ही दुर्गम है, और तिस में मरहठो के वक्त में पहाड़ों के शिखर पर किले इतने बनाये थे, कि एक आदमी ने एक जगह खड़े होकर एक दिन के रस्ते के अन्दर बीस किले गिने, पर सरकार ने बेकाम और लुटेरों की पनाह समझ कर बहुत से तुड़वा दिये, और बाकी बे मरम्मत पड़े हैं।—१२—सूरत खानदेश के पश्चिम। पूर्व और दक्षिण पहाड बाक़ी मैदान, शहर सूरत का बम्बई से १७५ मील उत्तर तापी के बांएं कनारे पर छ मील के घेरे में शहरपनाह के अंदर बसा है। तीन तरफ शहरपनाह और चौथी तरफ तापी से घिरा है। नदी के कनारे एक छोटा सा क़िला भी है। वहां जैनियों ने जानवरों के लिये एक अस्पताल बनायाहै, जिस मे जूं और खटमलों को जो उस मे छोड़े जाते हैं खून पिलाने के लिये फक़ीरो को कुछ देकर इस बात पर राज़ी कर लेते हैं कि वे वहां रात भर चारपाई से बंधे हुए पड़े रहैं और जूं खटमल उन्हें काटा करें। किसी वक्त मे यह शहर जब सूबै खानदेश की राजधानी था बड़ी रौनक़ पर था, बम्बई के बसने से उसकी रौनक़ घट गई, अब भी डेढ़ लाख से ऊपर आदमी बसते हैं। छावनी बहुत बड़ी है। यहां तक अर्थात् नर्मदा के दक्षिण जो जिले बम्बई हातेके ताबे हैं शास्त्र मे प्राय इन सब को महाराष्ट्र देश कहते हैं।—१३—भडौंच सूरत के उत्तर। बम्बई हाते मे यह ज़िला बहुत आबाद और उपजाऊ

गिना जाताहै। सद्र मुकाम भड़ौंच जिसका असली नाम भृगुगोश था बम्बई से २१५ मील उत्तर और समुद्र से २५ मील नर्मदा के दहने तट एक ऊंचे से स्थानमें बसाहै, पर अब कुछ वीरान और बेरौनक़सा है। यहांभी जैनियों ने जानवरों के लिये अस्पताल बनाया है, और उसका नाम पिंजरापौल रखाहै, जो जानवर मांदा और शक्तिहीन होता है उसे वहां रखते और पालते हैं।—१४—खेड़ा भड़ौंच के उत्तर गाइकवाड़ की अमल्दारी से बहुत बेडौल मिलचुल रहा है, अकसर इसके हिस्से चारों तरफ गैर अमल्दारियों से घिर गएहैं। सदर मुक़ाम खेड़ा बम्बई से २८० मील उत्तर दो छोटी छोटी नदियों के संगम पर शहरपनाह के अंदर बसा है। शहर के अंदर जैनियो का एक बड़ा मन्दिर है, लकड़ी का काम उस में अच्छा किया है। कोस एक के तफावत पर नदी पार छावनी है।—१५—अहमदाबाद खेड़े के उत्तर। शास्त्र में सौराष्ट्र इसी देश को लिखा है लोग अब सोरठ कहते हैं। सदर मुक़ाम अहमदाबाद बम्बई से ३०० मील उत्तर सांभरमती के बांएं कनारे शहर पनाह के अंदर बसा है। किसी जमाने में यह शहर इसी नाम के सूबे की बहुत आबाद राजधानी था, तीस मील के घेरे मे अब तक भी पुरानी इमारतों के निशान मौजूद है, मरहठों ने तबाह कर दिया था, अब फिर सरकार के साये में आबाद होता चला है। लाख आदमी से ऊपर बसते है। वहां की जामेमस्जिद में यह एक अजीब बात है कि जो उसकी मिहराब पर धक्का लगाओ तो मीनार थरथरा उठे और एक मस्जिद निरे संगमर्मर की बनी है, उस में सीप चांदी हाथीदांत और क़ीमती पत्थरों का काम किया है। किसी जमाने मे कमखाब वहां का मशहूर था, पर अब वैसा और उतना नहीं बनता।—१६—सिंध समुद्र से सिंधु नदी के दोनों

कनारे वहावलपुर की अमल्दारी तक चला गया है। मुंज–अंतरीप इस इलाके की समुद्र के तटमें पश्चिम सीमा है। इसको जिला न कह कर एक कमिश्नरी कहना चाहिये, क्योंकि उसके लिये एक कमिश्नर मुकर्रर है, और कमिश्नरके नीचे तीन असिस्टंट बतौर कलेक्टर मजिस्ट्रेट के तीन जिलों में, अर्थात् हैदराबाद कराची और सिकारपुर में; काम करते हैं। इस इलाके मे उजाड़ और रेगिस्तान बहुत है, और कहीं कहीं छोटे छोटे पहाड़भी हैं, परन्तु सिधु नदी की तटस्थ धरती खूब उपजाऊ है। लोहे की खान हैं। मुसलमान जट और बलूची बहुत बस्ते है। बलूची वहां के बड़े बदज़ात हैं। किसी समय यह मुल्क बहुत आबाद था, निशान मकान और क़बरो के अकसर जगह मिलते हैं, पर अब तो मुद्दतों की बद अमली से यह हालहो गया है कि बहुधा मंजिलों तक गांव भी नही मिलते। ये लोग सिक्खों की तरह बाल बढ़ाते हैं, और पगड़ी इतनी बड़ी शायद दुनिया में कोई नही बांधता, कितनों ही की पगड़ी अस्सी गज़ से भी अधिक लंबी होती है, औरतें सुन्दर, फकीर बहुत। सदर मुक़ाम हैदराबाद सिन्धु की उस धाराके जिसका नाम फुलाली है दहने कनारे पर बसा है। किला एक पहाड़ी पर पक्का बना है। सिन्धु की बड़ी धारा वहां से तीन मील पश्चिम हैं छमील उत्तर मियानी के पास सन् १८४३ मे जेनरल नेपियर साहिब ने २८०० सिपाहियों से बाईस हजार बलूचियों को शिकस्त दी थी। हैदराबाद से अनुमान पचास मील दक्षिण ज़रा नैर्ऋतकोन को झुकता सिधु के दहने कनारे पर ठट्ठे का पुराना शहर है, किसी समयमें निहायत आबाद और बड़े व्यौपार की जगह था, पर अब उसमें बीसहज़ार आदमीभी नहीं निकलेंगे, हर तरफ मुसलमानों के मक़बरे और खंडहरों के ढेर नजर पड़ते है। अब

उस शहर की आबादी के बदल पचास मील पश्चिम हटकर करांची बंदर ने रौनक पाई है, और दिन पर दिन बढ़ता जाता है, माल के सब जहाज़ अब उसी मे आकर लगते हैं। करांची से ९ मील ईशानकोन को गर्म पानी के सोते हैं। हैदराबाद से २१० मील दक्षिण सिकारपुर भी बड़े व्यापार की जगह है। हैदराबाद से दो सौ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता सिंधु के एक टापू में छोटी सी, पहाड़ी पर बक्कर अथवा भक्खर का क़िला है, दीवार उस में कच्ची पक्की ईंटों की दुहरी बनी हैं, किले के दोनों तरफ़ अर्थात् सिंधु के दोनो कनारों पर रोड़ी और सक्कर दो शहर बस्ते हैं, रोड़ी बाएं कनारे प्राय आठ हज़ार आदमियों की बस्ती बे रौनक़ और टूटा फूटा सा है, और सक्कर उस से भी घटकर है। हैदराबाद के अग्निकोन को जहां लोनी नदी रन में गिरती है उसी के पास दक्षिण रन और उत्तर रेगिस्तान के जंगल से घिरा हुआ पार्कर के परगने में मगर नाम पांच सौ झोपड़ों की बस्ती है, किसी समय मे वहां १०००० आदमी बस्ते थे, निदान यह जगह जैनियो के तीर्थ की है, बहुतेरे यात्री उस रेगिस्तान के सफर की तकलीफें उठा कर वहां गौड़ी पार्श्वनाथ की मूर्ति के दर्शन को आते है, मूर्ति वह सफेद पत्थर की हाथ भर से कुछ अधिक ऊंची है, माथे और आंखो में जवाहिर जड़ा है, गौड़ी इस वास्ते नाम रहा कि पहले वह बंगाले में गौड़ के दर्मियान थी। यह मूर्ति वहां के ज़मीदारों के इख्तियार में है, ज़मीन में गाड़कर अथवा बालू मे छुपा रखते है, जब यात्रियो से अच्छी तरह पुजा लेते है तब दर्शन कराते हैं, पर रास्ते की तकलीफसे अब वहां यात्री लोगो का जाना कम हो गया, इसलिये उन्होंने यह क़ाइदा बांधा है कि जब यात्रियो के आने की खबर सुनते है तो अकसर मूर्तिही को वहां से तीन

मंज़िल वरे मेंड़वाड़े गांव में जो रन के तट पर बसा है उठा लाते हैं ॥



## हिन्दुस्तानी अमलदारी

निदान जितने मुल्क में सरकार अंगरेज़ की अमलदारी है, अर्थात् जिसका पैसा सरकारी खज़ाने में आता है, और जहां दीवानी फौजदारी की कचहरियां सरकार की तरफसे मुकर्रर हैं, उतने का तो वर्णन हो चुका, अब जो शेष रहा वह हिन्दुस्तानियों के क़ब्ज़े में है। यद्यपि उन में से बहुतेरे राजा और नव्वाब पुराने अहदनामों के अनुसार नाम के लिये स्वाधीन कहलाते हैं, परन्तु वस्तुतःसब के सब सरकार की दी हुई जागीरें खाते हैं, क्योंकि राज्य की जड़ सेना है, सो किसी के पास नहीं, एक नयपालवाले ने पंद्रह हज़ार जंगी सिपाही रख छोड़े हैं, इसी कारन हम अब भी उसको स्वाधीन राजा पुकारते हैं। बहुत ग्रंथकारों ने इन रजवाड़ों को पुराने अहदनामों के बमूजिब स्वाधीन और पराधीन मानकर उन्हीं अहदनामों के लिखे हुए दर्जों के अनुसार वर्णन किया, पर जो कि अहदनामे बहुधा बदलते रहते हैं और शर्तें उनकी समय के फेरफार से सदा घटा बढ़ा करती हैं, हम उस नियम को छोड़कर पहले उत्तराखण्ड और फिर मध्यदेश और उससे पीछे दक्षिण के रजवाड़ों को लिखते हैं, पर जिन सब रजवाड़ों का अहवाल आगे लिखा जाता है, उनके सिवाय यदि किसी जगह का कोई राजा नव्वाब या रईस सुनने में आवे, तो समझना चाहिये कि वह ज़मीदार या मुआफीदार है, अर्थात् या तो सरकार अथवा किसी और राजा को कर देता है, या उनकी दी हुई मुआफी खाता है, दीवानी फौजदारी का इख़्तियार कुछ नहीं रखता, और उनके इलाक़ों का ज़िकर नहीं ऊपर लिखे

हुए ज़िलों में आगया, या नीचे लिखे हुए रजवाड़ों में आ जावेगा। निदान उत्तराखण्ड में—१—राज नयपाल है। उसे पश्चिम में काली नदी जो मानसरोवर के दक्षिण हिमालय से निकल सरयू में गिरती है कमाऊं के सरकारी इलाके से, और पूर्व में कंकई नदी जो हिमालय से निकल दूसरी नदियों से मिलती मिलाती गंगा में जा गिरती है शिकम के राज से जुदा करती है, उत्तर मे उस के हिमालय पार तिब्बत का मुल्क है, और दक्षिण में पहाड़ों से नीचे कुछ दूर तो अवध का इलाक़ा और फिर सूबै विहार और बंगाले के सरकारी जिले हैं। ४६० मील लंबा और ११५ मील चौड़ा है, विस्तार उसका ५४५०० मील मुरब्बा होवेगा। दक्षिण तरफ पहाड़ोंके नीचे दस बारह कोस जो मैदान का मुल्क है, उसे तराई कहते हैं। तराई के ऊपर अर्थात् उत्तर को, दस दस बारह बारह कोस तक पहाड़ हैं, उन पहाड़ों को चढ़कर बड़ी बड़ी लंबी चौड़ी दूने मिलती हैं, ऐसी कि जिन मे कोसों तक सिवाय मिट्टी के पत्थर देखने को भी नहीं, फिर उनके उत्तर हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ हैं। जबर्जद सोनामखी लोहा सीसा तांबा रांगा गंधक हरिताल और सिन्दूर की खान है। नदियों का बालू धोने से कुछ सोन भी मिल जाताहै। दूध वहां गाय का बहुत मीठा और चिकना होता है। रहनेवाले असली वहां के सूरत में चीनियों से मिलते हैं राजा और ठाकुर लोग अपने तई उदयपुर के राना की औलाद में समझते हैं। मकान और गलियां बस्तियों की निहायत गलीज़ रहती हैं, मानो जगह साफ रखना जानते ही नहीं। मांस खाने की इतनी चाह रखते है कि बलिदान के समय लहू तक पी जाते। चांवल और लहसन बहुत खाते हैं। लड़ाई में दिलेर और खूब मज़बूत हैं। आमदनी ग्चीस

लाख रुपया साल है। पचास बरस भी नहीं वीते कि इन लोगों ने कांगड़े तक पहाड़ों में अमल कर लिया था, और उस क़िले को जा घेरा था, परंतु सन् १८१५ ईसवी मे जेनरल अक्टरलोनी साहिब ने उनकी फौज को सतलज इस पार मलौन के क़िले में ऐसी शिकस्त दी कि वे लोग फिर अपनी असली हद मे आ गये, तब से पैर बाहर नहीं निकाला। वहां के राजा के निशान पर हनूमान का चिह्न है। लौंडी गुलाम वहां अब तक विकते हैं। वहां के राजा का वज़ीर जरनैल जंगवहादुर कुछ दिन हुए इंगलिस्तान को गया था, इस कारन उसने बड़ा नाम पाया, और यह वज़ीर बहुत होशयार और अक़लमंद है, इंगलिस्तान मे जो जो अच्छे बंदोबस्त बालकों की शिक्षा और राज्य के शासन इत्यादि को देख आया है, उनमें से बहुत सी बातें धीरे धीरे नयपाल में भी यथाशक्ति जारी करना चाहता है। क्याही अच्छी बात हो कि हमारे राजा और रईस भी इंगलिस्तान की सैर का चाव करे और अपनी प्रजा का भला चाहें। राजधानी नयपाल की काठ मांडू, जिसका शुद्ध नाम काष्ठ मंदिर है, २७ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश पूर्व देशांतरमें एक दून के दरमियान, जो प्राय २२ मील लंबी और बीस मील चौड़ी होवेगी, और जिसका किसी समय में झील होना पत्थरों के निशान और वहांवालों की पोथियों से साफ़ साबित है, बंगाले के मैदान से प्राय ४८०० फुट ऊंचा विशनमती नदी के पूर्व तट पर जहां वह बाघमती से मिली है बसा है। पुरानी पोथियों में उसका नाम गूंगुलपट्टन लिखा है। घर ईंट लकड़ी और खपरैल के, पर सब के सब खराब और नाकारे, राजा के रहने का मकान भी कुछ देखने लाइक़ नहीं है। पास ही उसके तुलसी भवानी का मंदिर है,

मूर्त्ति के वदल उस में यंत्र लिखा है, राजा रानी राजगुरु और पुजारी के सिवाय ग़ैर आदमी अंदर नहीं जाने पाता। रज़ीडिंट भी नयपाल के इसी काठमांडूमें रहते हैं। प्रसिद्ध वर्फी पहाड़ जो वहां से दिखलाई देता है, उसका नाम धैवन, समुद्र से कुछ ऊपर २८६०० फुट ऊंचा है। चंद्रगिरि जो काठमांडू के पास है, कुछ कम ८५०० फुट ऊंचाहोवेगा। काठमांडू से दो मील दक्षिण पूर्वको झुकता वाघमती नदी के पार ललितपट्टन अनुमान २५००० आदमियों की वस्ती है, और काठमांडू की अपेक्षा इसकी इमारत फिरभी कुछ दुरुस्त है काठमांडूसे आठमील पूर्व अग्निकोन को झुकताहुआ भातगांव अनुमान १२००० आदमी की वस्ती है, पुराना नाम उसका धर्मपत्तन था; ब्राह्मण उस मे वहुत हैं और महाराज के महल भी बने हैं। काठमांडू से ४१ मील पश्चिम वायुकोन को झुकती पहाड़ पर एक वस्ती गोरखानाम २०० घरों की नयपाल के वर्त्तमान राजाओं की क़दीम जन्मभूमि है, और इसी कारन वहुधा नयपालियों को विशेष करके साहिव लोग गोरखिये और गोरखाली भी कहते हैं, गोरखनाथ का वहां एक मंदिर वनाहै। हिमालय के पहाड़ों में गंडक नदी के वांएं तटसे अति निकट मुक्तिनाथ हिंदुओं का वड़ा तीर्थ है, वहां सात गर्म सोते हैं कि जिनसे पानी निकलकर नारायणी नदी के नाम से गंडक में गिरता है, उन में से अग्निकुंड का सोता वहुत अद्भुत है, वह एक मंदिर के अंदर पहाड़ से निकलता है, और उसके पानी पर अग्नि की ज्वाला दिखलाई देती है, कारन इसका वही समझना चाहिये जो ज्वालामुखी में गोरखडिब्बी के लिये लिख आये हैं। काठमांडूसे आठ मंज़िल उत्तर दिशा के वर्फिस्तान में नीलकंठ महादेव का एक तीर्थ स्थान है. वहा भी गर्म

पानी का कुंड है।–२–कश्मीर, वा जम्बू। रावी और सिंधु नदी के बीच प्राय सारा कोहिस्तान इसी इलाके में गिनना चाहिये, बरन हिमालय पार लद्दाख़ का मुल्क भी, जो हिंदुस्तान की हद से बाहर और तिब्बत का एक भाग है, अब इस इलाक़े के साथ महाराज गुलाबसिंहके बेटे रनवीरसिंहके पासहै, और इस हिसाबसे यह राज़ वायुकोन से अग्निकोन की तरफ अनुमान साढ़ेतीनसौ मील लंबा और ईशान से नैर्ऋतकोन को अढ़ाई सौ मील चौड़ा होवेगा। विस्तार पचीस हज़ार मील मुरब्बा है। हद उस की उत्तर और पूर्व को चीन की अमलदारी, और पश्चिम को अफगानिस्तान और दक्षिण को पंजाबके सरकारी ज़िले और चंवा और विसहर के छोटे छोटे पहाड़ी रजवाड़ों से मिली है। इन में कश्मीर की धून पोथी और किताबों में बहुत प्रसिद्ध है, और सच है कि उसका जहां तक तारीफ कीजिये सब बजा है, और दुनियां में जितनी प्रशंसा है कश्मीर के लिये सब रवा है जहान के पर्दे पर कदाचित् इस प्राय का दूसरा स्थान हो तो हो सक्ता है, पर इस बात का हम मुचलका लिख देते हैं कि उससे बिहतर कोई दूसरी जगह नहीं है, क्योंकि होही नहीं सकती। मानो विधाता ने सृष्टि की सारी सुन्दर वस्तुओं का वहां नमूना इकट्ठा किया है। यह कश्मीर हिमालय के बीच में पड़ा है, जैसे कोई बादामी थाली हो इस तरह पर यह स्थान चौफेर हिमाच्छादित पर्वतों से घिर रहा है, और बीच में ७५ मील लंबा ४० मील चौड़ा सीधा मैदान बट्टाढाल है। पहाड़ों समेत यह मैदान अनुमान ११० मील लंबा और ६० मील चौड़ा है। पुरानी पुस्तकों में लिखा है कि किसी समय में यह सारा इलाक़ा पानी के अंदर डूबा हुआ था, और उस झील को सतीसर कहते थे। लोहे नावें

और सुरमे की इस इलाके में खान है। दरख़्त सायादार और मेवों के इस इफ़रात से हैं, कि सारे इलाके को क्या पहाड़ और क्या मैदान एक बाग हमेशा बहार कहना चाहिये। कोई ऐसी जगह नहीं जो सब्ज़े और फूलों से खाली हो, सब्ज़ा कैसा मानो अभी इसपर मेंह बरस गया है, पर ज़मीन ऐसी सूखी कि उस पर बेशक बैठिये सोइये मजाल क्या जो कपड़े में कहीं दाग लग जावे, न कांटा है न कीड़ा मकोड़ा, न सांप बिच्छू का वहां डर है, न शेर हाथी के से मूज़ी जानवरों का घर। जहां बनफ़शा गाय भैंसों के चरने में आता है, भला वहां के सबूज़ः ज़ारों का क्या कहना है, मानो पथिकजनों के आराम के लिये किसी ने सब्ज़ मखमल का बिछौना बिछा रक्खा है, और उन के बीच लाल पीले सफ़ेद सैकड़ों क़िस्म के फूल इस रंग रूप से खिले रहते हैं कि जी नहीं चाहता जो उन पर से निगाह उठाकर किसी दूसरी तरफ डालें। कहीं नर्गिस है और कहीं सोसन, कहीं लाला है और कहीं नस्तरन, गुलनार का जंगल, चंबेली का बन। मकान की छतें वहां तमाम मिट्टी की बनी हैं, बहार के मौसिम में उन पर फूलों के बीज छिड़क देते हैं, जब जंगल में हर तरफ़ फूल खिलते हैं, और मेवों के दरख्त कलियों से लद जाते हैं, शहर और गांव भी चमन के नमूने दिखलाते हैं। लोग दरख़्तों के नीचे सब्ज़ों पर जा बैठते हैं, चाय और कबाब खाते हैं, नाचते गाते हैं, एक आदमी दरख़्त पर चढ़कर धीरे धीरे उन्हें हिलाता है, तो फूलों की बरखा होती रहती है, इसी को वहां गुलरेज़ी का मेला कहते हैं। पानी भी वहां फूलों से खाली नहीं कमल और कमोदनी इतने खिले हैं, कि उनके रंगों की आभा से हर लहर इन्द्रधनुष का समा दिखलाती है। भादों के महीने में जब मेवा पकता है तो

सेब नाशपाती के लिये केवल तोड़ने की मेहनत दरकार है, दाम उन का कोई नहीं मांगता, जंगल का जंगल पड़ा है, और जो बागों में हिफाज़त के साथ पैदा होती हैं, वह भी रुपये की तीन चार सौ से कम नहीं बिकती। नाशपाती कई क़िस्म की होती है बटंक सब से बिहतरहै। इसी तरह सेब भी बहुत प्रकारके होते है। बरसात बिलकुल नहीं होती। पहाड़ इसके गिरद इतने ऊंचे हैं, कि बादल जो समुद्र से आते हैं, उन के अधो भागही मे लटकते रह जाते हैं, पार होकर कश्मीर के अंदर नहीं जा सकते। जाड़ो मे दो तीन महीने वर्फ खूब पड़ती है, और सर्दी भी शिद्दत से होती है यहांतक कि झीलों पर पाले के तख्ते जम जाते हैं, और वहा के लोग कागड़ियों में, जो जालीदार डब्बे की तरह मिट्टी की अंगेठियां होती हैं, आग सुलगा कर गले लटकाये रहते है जिस मे छाती गर्म रहे, बाक़ी नौ दस महीने वहार है न गर्मी न जाड़ा, और धूल गर्द और लू और आंधी का तो क्या होना था वहां गुज़रा मई और जून में दो चार छोटे मेह के भी पड़ जाते हैं। झेलम अथवा बितस्ता इस इलाक़े के पूर्व से निकलकर पश्चिम को इस मज़े से वहती चली गई है, कि मानो ईश्वर ने जैसी वह भूमि थी वैसी ही उसके लिये यह नदी रची, न बहुत चौड़ी न सकड़ी, जल गहरा मीठा ठंढा और निर्मल, न उस मे ऐसा तोड़ कि नाव को खतरा हो न ऐसा बंधा हुआ कि जिस से गंदा हो जावे, न यह दरया कभी बहुत बढ़ता है न घटता, कनारे भी न ऊंचे है न बहुत नीचे, कहीं हाथ कहीं दो हाथ, परंतु बालू का नाम नहीं, पानी के लबतक फूल खिले हुए है, और दरख्त सायादार और मेवादार दुतरफा इतने खड़े हैं, और उनकी टहनियां इतनी दूर तक पानी पर झुकी हैं कि नाव मे बैठकर आरामसे छाया दी

छाया में चले जाओ और बैठेही बैठे मेवे तोड़ो और खाओ। कहीं बेदमजनूं पानी में झुके हैं कहीं चनार जो बहुत बड़े दरख्त और जिनकी छांव बहुत घनी और ठंढी होती है पर्रे का चमर सा बांधे खड़े हैं। कहीं सफेदे के दरख्त जो सर्व की तरह सीधे और उस से भी अधिक ऊंचे और सुंदर होते हैं कतार की कतार जमे हैं, और कहीं उनके बीच में गाव और कस्बे बसे हैं। दर्या के बाढ़ की दहशत न रहने से वहां वाले अपने मकानों की दीवारें ठीक पानी के किनारे से उठाते हैं, जिस में नाव उनके दर्वाजों पर जा लगे। नाव की सवारी यहां बहुत है, और उसी से सारे काम निकलते हैं। सब मिलाकर इस इलाके में अनुमान दो हजार नाव चलती होंगी, पर नाव भी कैसी, सुबुक हलकी साफ खूबसूरत हवादार, नाम उनका परंदा, यथानामस्तथागुणः। वैरीनाग अर्थात् जिस जगह से यह नदी निकली है, वह भी दर्शनीय है एक पहाड़ की जड़में मेवों के जंगल के दर्मियान एक अष्टकोन पचीस फुट गहरा कुंड है, घेरा उसका अनुमान छ्याई सौ हाथ होगा, पानी ठंढा और निर्म्मल, मछलियां बहुत, गिर्द इमारत बादशाही बनी हुई, निदान इस कुंड से पानी उबलता है. और उस से जो नहर बहती है, वही आगे जाकर और दूसरे सोतों से मिल के वितस्ता हो गई है। दो चार ब्राह्मण उस जगह पर रहा करते हैं, क्योंकि हिंदुओं का तीर्थ है, स्थान बहुत एकान्त रम्य और मनोहर है। सिवाय इन के उस इलाके में और भी बहुतेरे कुंड और सोते हैं, जिन से नदी और नहरें इस इफरात से बहती हैं, कि सारी खेतियां जो बहुधा धान की होती हैं उन्हीं के पानी से सींचते हैं। छोटे कुंड को यहां नाग और बड़े को डल कहते हैं। तीर्थ भी हिंदुओं के यहां कई एक हैं, पर सब में प्रसिद्ध श्रीनगर से

आठ मंज़िल उत्तर दिशा को वर्फ के पहाड़ों में ज्योतिर्लिंग अमरनाथ महादेव के दर्शन है। बरस भर मे एक दिन श्रावण की पूर्णिमा को उनका दर्शन होता है, बड़ा मेला लगता है,। रस्ता बहुत विकट है, अंत में सात आठ कोस वर्फ पर चलना पड़ता है, कपड़ा पहन कर वहां कोई नहीं जाने पाता, एक मंजिल पहले से नंगे हो जाते हैं, अथवा भोजपत्र की लंगोटी बांध लेते हैं। मंदिर मूर्त्ति वहा कुछ नहीं है एक गुफा सी है, उस मे पहाड़ की वर्फ ढलकर पिंडी सी बन जाती है, उसी को महादेव का लिंग मानकर पूजा करते हैं। उस गुफा के अंदर कबूतर भी रहते है, जब यात्रियों का शोर गुल सुनते है, तो घबरा कर बाहर निकल जाते हैं। वहा वालों का यह निश्चय है, कि साक्षात् महादेव पार्वती कबूतर बनकर उनको दर्शन देते हैं। श्रीनगर के अग्निकोन को एक दिन की राह पर मटन साहिब नाम एक कुंड हिंदुओं का तीर्थ है, उसके गिर्द इमारतें बनी हैं, तवारीखों से मालूम हुआ कि किसी समय मे वहां सूर्य का एक बहुत बड़ा मंदिर था, और असली नाम उस स्थान का मार्तंड है, खंड़हर उस मंदिर का अब तक भी खड़ा है, वहा वाले उस को कौरव पाण्डव कहते है, स्थान देखने योग्य है। पास ही एक बहुत पुराना गहरा कूआ है, मुसल्मान उस को हारूत और मारूत का कैदखाना समझते है, और चाह बाबिल के नाम से पुकारते हैं। कश्मीरियों के निश्चय अनुसार मटन साहिब मे श्राद्ध करने से गया बराबर पुण्य होताहै। इस इलाके के दर्मियान अक्सर जगह पुराने समय की इमारतें मुसल्मानों की तोड़ीहुई दिखलाई देती है, वहांवाले उन्हें पांडवों की बनाई बतलाते हैं, पर बहुधा उन मे से बौध राजाओं की है। श्रीनगर के वायुकोन अनु-

मान तीन दिन की राह पर रुमलू के गाव में एक कुण्ड है, जब पहाड़ों पर बर्फ गलती है, तो जमीन के नीचे ही नीचे उस कुंड मे इस जोर से पानी की बाढ़ आती है, कि भंवर सा पड़ जाता है, और जो कुछ लकड़ी घास उसकी थाह मे रहताहै सब पानी पर तिरने और घूमने लगता है, नादान ख़याल करते है, कि पानी में देवता उतरा। श्रीनगर से चालीस मील वायुकोन पश्चिम को झुकता निच्छीहमा गांवके पास एक जमीन का टुकड़ा है, वह सदा गर्म और जलता रहता है, वहांवाले उस जमीन को सुहोयम पुकारते है, मालूम होता है कि उस जमीन के नीचे गंधक हरिताल इत्यादि से किसी चीज की खान है। लोग यहां के परम सुंदर लेकिन दगाबाज और झूठे परले सिरे के, लड़ाके भी बड़े होते है, विशेष करके स्त्रिये भटियारियों से भी अधिक लड़ती है, पैर मे सूप बांध बांधकर और हाथ में मूसल ले लेकर झगड़ती है। बस्ती वहां मुसल्मानों की है, हिंदू जितने है सब के सब भ्रष्ट, मुसल्मानों की छुई रोटी खाने में कुछ भी दोष नहीं समझते। ये कश्मीरी दूसरे मुल्कों मे आकर पंडित और ब्राह्मण बनजाते है, और यहां मुसल्मान का पकाया खाना खाते है। कारीगर यहां के प्रसिद्ध है, और शालबाफ तो यहां के से कही नहीं होते। शाल पर यहां की आब हवा का भी बड़ा असर है, क्योंकि यही कारीगर यदि इस इलाके से बाहर जाकर बुनें, कदापि वैसी शाल उन से नहीं बुनी जावेगी, पर इन शालबाफों को वहां दो चार आने रोज से अधिक हाथ नहीं लगता, महसूल बड़ा है. जितने रुपये का माल तैयार होता है, उतना ही उस पर शालबाफों से महसूल लिया जाता है। अब वहां सब मिलाकर चार पांच हजार दूकाने शालबाफों की

होवेगी, हमिल्टन साहिब के लिखने बमूजिब एक जमाने मे सोलह हजार गिनी जाती थी। पश्मीना जिस से ये शाल बुने जाते हैं कश्मीर मे नहीं होता, तिब्बत से आता है। वे छोटी छोटी लंबे बालो वाली बकरियां जिनके बदन पर पश्मीना होता है सिवाय तिब्बत के दूसरी जगह नही जीती। केसर वहां साल भर मे सत्तर अस्सी मन पैदा होता है। श्रीनगर कश्मीर की राजधानी है। यह शहर ३३ अंश २३ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ४७ कला पूर्व देशांतर मे समुद्र से ५५०० फुट ऊंचा वितस्ता के दोनो किनारो पर चार मील लंबा बसा है, और शहर के बीच में से यह नदी इस तरह पर निकली है, कि लोग अपने मकान की खिड़की और बरामदों में बैठे हुए उससे पानी खींच लेते हैं। यहां इस नदी का पाट डेढ़सौ गज़ से अधिक है। एक कनारे से दूसरे कनारे जाने के लिये सात पुल काठ के बने हैं। जब किसी को किसी के यहा जाना होता है, बेतकल्लुफ किश्ती पर बैठकर चला जाता है, दूसरी सवारी की इहतियाज नहीं पड़ती। गलियां तंग और गलीज, हम्माम बहुत। नहाने के लिये दर्या कनारे पानी पर काठ के संदूक से बने हैं, कि जब चाहो एक जगह से खोल कर दूसरी जगह ले जाओ, जिस को दर्या मे नहाना होता है, वह उन्ही के अन्दर पर्दे के साथ नहा लेता है। इमारत ईंट और काठ की, खिड़कियो में जालियां चोबी बहुत अच्छी बनीहुई, और उनके अंदर बर्फ के दिनो मे ठंढी हवा रोकने के लिये बारीक क़ागज़ लगा देते है, शीशा नहीं मिलता। शहर के उत्तर कनारे पर अढ़ाई सौ फुट ऊंचा हरीपर्वत नाम एक छोटा सा पहाड़ है, उस पर एक छोटा सा क़िला बना है, ऊपर चढ़ने से शहर और डल दोनो की सैर बखूबी दिखलाई देती है। हाकिम के

रहने के मकान शहर के दक्षिण तरफ वितस्ता के कनारे क़िले के तौरपर बुर्ज देकर बने हैं, उसे शेरगढ़ी कहते हैं। बादशाही मकानों का अब कहीं पता भी नहीं लगता, जहां दौलतसरा अर्थात् जहांगीर के महलों का निशान देते हैं, वहा अब धान की खेतिया होती हैं, एक दर्वाजे के पत्थर पर जो बाक़ी रहगया है, फारसी शैर खुदे हैं, उनके पढ़ने से मालूम होताहै, कि किसी समय में वहां नागर नगर नाम क़िला बनाया गयाथा, और उसके खर्च के लिये, सिवाय कश्मीर की आमदनी के जो बिलकुल उसी मे बन चुकने तक लगा की, एक करोड़ दस लाख रुपया बादशाह ने अपने खजाने से भेजा। नसीम नशात और शालामार यह तीनों बाग उस वक़्के जो अब तक डल के कनारे मौजूद हैं, उन मे से नसीम मे तो जहां बादशाह घोड़ा फेरते थे केवल हजार अथवा बारह सौ दरख़्त बड़े बड़े चनारों के खड़े हैं, और नशात और शालामार ये दोनों बाग ऊजड़ पड़े हैं। फव्वारे टूटे हुए, मकान गिरे हुए, हौजो मे पानीकी जगह सूखी काई जमी हुई, क्यारियो मे फूल के बदल खेती बोई हुई यह हालहै उन बागों का, जिनमे जहांगीर नूरजहां के गले मे हाथ डालकर दोनों जहान से बेख़बर फिरा करता था, और जिनको पृथ्वी पर स्वर्ग का नमूना बतलाते थे। सारे जहान की खूबियो का खुलासा कश्मीर, और कश्मीर की खूबियों का खुलासा डल है। यह झील निर्मल जल की जो निहायत गहरी है प्राय दस मील के घेरे मे होवेगी। दो तरफ उसके पहाड़ है लेकिन पाच पांच सात सात कोस के फ़ासले से, और दो तरफ श्रीनगर का शहर बसा है। नालों के वसीले से वह वितस्ता से मिली हुई है, कनारो पर बाग हैं, बीच बीच मे टापू, उन मे अंगूर बेदमजनू इत्यादि सुंदर पेड़ों के

अंदर लोगों के मकान, तख़्तो पर खीरे खरबूज़े की खेतियां, (१) मुर्गाबिया कलोलें करती हुई कहीं नाव कमलों के बीच से होकर निकलती हैं, और कही अंगूर और बेदमजनू की कुंजों के नीचे ही नीचे चली जाती है। जुमे के रोज़ क्या गरीब और क्या अमीर नाव मे बैठ कर सैर के लिये डल मे जाते है, इन्ही टापुओं मे चाय रोटी खाते हैं, नाच गाने का भी शगल रखते है, यह कैफियत देखने की है, लिखने की कदापि लेखनी को सामर्थ्य नही। अगले लोग जो कश्मीर की तारीफ मे यह बात लिख गये हैं, कि बूढा भी वहां जाने से जवान हो जाता है, सो इतना तो वहां अवश्य देखने में आया कि मन उसका जवानो का सा हो जाता है, जैसे रेगिस्तान मे जेठ बैसाख के झुलसे हुए मनुष्य को यदि कही वसंत ऋतुकी हवा लगजावे तो देखो उसका मन कैसा बदल जावेगा, और तिस में कश्मीर की हवा के आगे तो और जगह का वसंत ऋतु भी नर्क ऋतु है। जो लोग निर्जन एकांत रम्य और सुहावने स्थान चाहते हैं, उनके लिये कश्मीर से बढ़कर दूसरी जगह कोई भी नही है ॥

---

(१) डल के कनारे जहा पानी छिछला रहता है, घास पत्ते बहुत जमते है। वहा के आदमी उन सब घास पत्तों को जड़से काट देते हैं। और जब वे पानी पर इकट्ठा होकर तिरने लगते हैं, तो उनको आपस में बाधकर ऐसा मज़बूत कर देते हैं कि जिस मे फिर बिखरने न पावे, और ऊपर थोडी थोडी सा मिट्टी रखकर खीरे खरबूज़े तरबूज़ इत्यादि के बीज बो देते है, सिवाय बीज बोने के और कुछ भी मिहनत नहीं करनी पडती, जब फल लगता है तो आकर तोड लाते हैं। चौडान उस तख़्ते की दो गज़ रहती है, और लबान का कुछ ठिकाना नहीं, पानी पर नाव की तरह फिरा करते है ॥

दोहा ॥

स्वर्गलोक यदि भूमि पर तौ है याही ठौर ।
जो नाही या भूमि पर याते सरस न और ॥ १ ॥

कश्मीर स्वर्ग है परंतु बिलफैल राक्षसो के क़ब्जे मे, क्योंकि वहां के लोग महाराज के जुल्म से बहुत तंग है। अदना सा जुल्म उसका यह है कि ज़मींदारो से आधा अन्न तो बटाई करके लेना है और आधा उन से मोल ले लेना है। जो बाज़ार मे मन भर का भाव है तो वह दो मन के हिसाब से लेवेगा, परंतु इस पर भी ज़मींदार का गला नहीं छुटता, उसका मकदूर नहीं कि बोने को बीज दूसरी जगह से खरीद सके, जो बाजार मे मन का भाव है तो उसे बीस सेर के भाव राजा की दुकान से लेना पडेगा! और फिर तमाशा यह कि उन लोगो से बेगार मे नौकरी ली जाती है, कितने ज़मीदार राजा की बतक पालकर और उनके अंडे छावनी मे बेच के रुपया राजा के खजाने मे दाखिल करते हैं, और कितने ही उसके फाइदे के लिये जंगल से घास लकडी काटकर बाजार मे बेचते है। जितने वहा पेशेवाले है सब पर महसूल मुकर्रर है, ठीकेदार वसूल करता है। यदि धोबी को धुलाई का टका हवाले करो, तो उस मे से एक पैसा राजा का हो चुका, रंडी अगर कसब करके एक रुपया कमावे आठ आना महाराज का हक़ है। महाराज ने घाटियो पर पहरे बैठा दिये हैं, कि कोई आदमी उसके जुल्म से भागकर बाहर न जाने पावे। रुपया उनकी टकसाल मे जो निकलता है, आधा उस मे चांदी और आधा तांबा रहता है। इन कश्मीरियों ने तो अब तक उसका गला काट डाला होता, पर उसने उन्हें भरमा दे रखा है, कि जो कोई उसकी गुनाह करेगा वह मरकर [illegible]

से सज़ा पावेगा । महाराज नरवीर सिंह को हम स्वाधीन नहीं कह सकते, क्योंकि वह हर साल कुछ दुशाले और घोड़े इत्यादि सरकार में नज़राना दाखिल करता है । आमदनी उसकी सब मिल कर अनुमान साय करोड़ रुपया की होवेगी, पचीस लाख तो केवल कश्मीर से आता है, कि जिस मे आठ लाख शाल का महसूल और लाख से ऊपर पेशेदारों का कर है, निदान इस पचीस लाख मे केवल बारह लाख धरती की जमा, और बाकी बिलकुल महसूल और नज़राना है । जम्बू श्रीनगर से १०० मील दक्षिण, जहां से कोहिस्तान शुरू होता है, एक छोटी सी पहाड़ी पर बसा है । न वहां पीने को पानी अच्छा मिलता है, और न कोई अच्छा सायादार दरख़्त है, थूहर और कांटों से हर तरफ घिरा है, वहांवाले इन झाड़ झंखाड़ों को मजबूती का बाइस समझते है, पर सन् १८४५ मे सिखों की फौज ने वह जगह सहज मे जा घेरी थी । जम्बू से तेइस कोस के फासिले पर पुरमंडल में गुलाबसिंह ने महादेव का एक मंदिर अच्छा बनाया है, शिखर पर उसके तमाम सुनहरी मुलम्मा है । श्रीनगर से ९० मील दक्षिण चनाव के बांएं कनारे एक खड़े पहाड़ पर रिहासी का मजबूत क़िला बना है, गुलाबसिंह का खज़ाना उसी में रहता है ।–३–शिकम पश्चिम तरफ कंकई नदी उसे नयपाल से, और पूर्व तरफ तिष्टा भुटान से, जुदा करती है, दक्षिण को कुछ दूर तक नयपाल और कुछ दूर तक सरकारी इलाका है, और उत्तर को हिमालय पार चीन की अमल्दारी है । अनुमान ६० मील लंबा और ४० मील चौड़ा है । विस्तार १६०० मील मुरब्बा है । नयपाल के मुल्क से बहुत मिलता है, लोग वहां के जिन्हें लपचा कहते हैं सब कुछ खाते पीते है, यहां तक कि गोमांस भी

भी पर्हेज नहीं करते। तीरों को जहर में वुझाते हैं। वौध मतवाले वहुत है। राजधानी शिकम, जिसे दमूजंग भी कहते हैं, २७ अंश १६ कला उत्तर अक्षांस और ८८ अंश ३ कला पूर्व देशांतर मे झमीकूमा नदी के कनारे पर वसा है। दार्जिलिंग का पहाड़ जो समुद्र से ७००० फुट ऊंचा है इस राज के अग्निकोन में पड़ा है, सरकार ने उसे साहिव लोगो के हवा खाने के वास्ते राजा से ले लिया, और अव उस पर वहुत से वंगले वन गए हैं, दानापुर की छावनी से दार्जिलिंग सीधा ८४ और सड़क की राह १०५ मील है।-४-भुटान। यद्यपि हम लोग हिमालय पार पर्वतस्थली मे लहासे से लेकर लदाख पर्यन्त तिव्वत के सारे मुल्क को भुटान अथवा भोट कहते है परंतु अंगरेज वहुधा इसी इलाके को भोट के नाम से लिखते हैं. जिसका यहां वर्णन होता है। जानना चाहिये कि यह इलाक़ा शिकम के पूर्व हिंदुस्तान के ईशानकोन में हिमालय के दर्मियान सौ कोस से अधिक लंवा और प्राय पचास कोस चौड़ा चीन के तावे है। हमिल्टन साहिव मद्र देश इसी का नाम वतलाते है। वरसात वहुत नहीं होती। टांगन वहा के मशहूर हैं, जिन पहाड़ों मे वे होते है, उनका नाम टांगस्थान है। आदमी वड़े मज़वूत, छ फुट तक लंवे, रंग सांवला, वदन गठीला आंखें छोटी पर नोकें निकली हुई, भौं वरौनी और दाढ़ी मूंछे वहुत कम और हलकी, घेघे की वीमारी मे वस्ती का छठा हिस्सा फसा हुआ, तीर उनके जहर मे वुझे हुए, खाना आटा गोश्त चाय नमक और मक्खन इकट्ठा पानी मे उवला हुआ, मज़हव वौध. राजा धर्मराज़ा साक्षात् भगवान वुद्ध का अवतार कहलाता है. और जो आदमी उनके नीचे मुल्क का कारोवार करता है उसे देवराजा पुकारते है। राजधानी उसकी

तसीसूदन २७ अंश ५ कला उत्तर अक्षांस और ८९ अंश ४० कला पूर्व देशांतर मे पहाडो के बीच वसा है । राजा के रहने का गढ़ सात मरातिब का चौखूंटा संगीन बना है, उसका हर एक मरातिब पंद्रह फुट से कम ऊंचा नही है, और उसके ऊपर सुनहरी मुलम्मे का बड़ा सा तांबे का एक छत्र चढ़ा है। वैद हकीमों की वहां बड़ी कमबख्ती है, जो दवा राजा को देते हैं चाहे वह जुल्लाब हो और चाहे कुछ और बला पहले उस मे से वैदको पिलाते हैं, यदि हम वहा के हकीम होते तो राजा के लिये सदा अच्छी अच्छी मीठी माजून याकूत और नोशदारुओं ही का नुसखा लिखा करते चाहे उसे हैजा होता चाहे सरसाम और चाहे वह चंगा होता चाहे मरजाता उसी शाम। काग़ज़ वहां का मज़बूत होता है, अक्सर सुनहरी रंग कर कैंची से कतर के कलाबतून की जगह कपड़े के साथ बुनकर पहनते हैं। तसीसूदन से चालीस मील दक्षिण चूका के किले के पास तेहिच्यू नदी पर लोहे की जंजीर का पुल बना है वहा वाले उसे देवताओं का बनाया समझते हैं।–५–चंबा सुकेत और मंडी ये तीनो पहाड़ी राज कश्मीरके अग्निकोन चनाब और सतलजके बीच मे हैं। चंबे का इलाक़ा रावी के दोनों तरफ़ महाराज रनबीरसिंह की अमल्दारी से कांगड़े के सरकारी जिले तक चला गया है। आमदनी उस की लाख रुपया साल से कम है। राजधानी चम्बा ३२ अंश १७ कला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश ५ कला पूर्व देशांतर में रावी के दहने कनारे बहुत रम्य और सुहावने स्थान मे बसा है। सुकेत सतलज से १२ मील दहने कनारे पर ३१ अंश २७ कला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश ५८ कला पूर्व देशांतर मे बसा है। सतलज के कनारे गर्म पानी का

एक सोता है, वहां वाले उसे तत्तापानी कहते हैं, पानी के साथ गंधक भी जमीन से निकलती है। इसकी आमदनी अस्सी हजार रुपये साल अनुमान करते हैं, और मंडी जो इन तीनो मे सब से बड़ा है, अर्थात् साढ़े तीन लाख रुपये साल की आमदनी का मुल्क गिना जाता है, सुकेत और सरकारी ज़िले कागड़े के बीच में पड़ा है। लोहे और नमक की खान है, पर नमक अच्छा नही होता। राजधानी मंडी ३१ अंश ४० कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५३ कला पूर्व देशांतर में व्यासा नदी के बांएं कनारे बसा है। वहा से २५ मील वायुकोन व्यासा के बांएं कनारे १५०० फुट ऊंचे एक पहाड़ पर कमलागढ़ का किला बहुत मज़बूत बना है। मंडी से १० मील मैदान की तरफ रैवालसर हिंदुओ का तीर्थ है, बरन वहां की यात्रा के लिये बौधमती भोटिये भी आते हैं। हाल उनका यह है कि पहाडों के बीच मे माय पाव कोस के घेरे में निर्मल जल से भरी हुई एक झील है, नहाने के लिये पश्चिम कनारे पर एक छोटा सा पक्का घाट बना है, उस झील के अंदर सात बेड़े तिरते हैं, देखने मे वे हूबहू छोटे २ टापू मालूम होते हैं, पर वहां वाले उन को बेडा ही पुकारते हैं, घास पत्ते बरन बेलबूटे नरकट भंगरैया इत्यादि भी उन पर जम गए हैं, लेकिन सब से बड़ा दस हाथ से अधिक लंबा नही है, जब वे कनारे पर आकर लगते है, तब यदि कोई पानी में गोता लगाकर उन बेडों के पेंदो को जांचे और ऊपर नीचे अच्छी तरह से निगाह करे तो बखूबी मालूम हो जायगा कि उन सब बेलबूटों की जड़ आपस मे इस तरह मज़बूत गुथी हुई है, और आंधी पानी से उन पर कंकर मिट्टी भी इतनी पड गई है, कि देखने मे तो वे पत्थर की शिला से मालूम होते हैं, और तिरने मे स्वभाव

काठका रखते हैं। जानना चाहिये कि बहुतेरे ऐसे पेड़ होते हैं जिन की जड़ें आपस मे गुथी रहती हैं, और अक्सर मिट्टी भी इस प्रकार की होती है कि जब गर्मी में सूखकर पपड़ा जाती है और फिर बरसात मे पानी की बाढ़ आती है तो उन पेड़ो की जड़ आपस मे गुथी रहने के कारन वह तख़्तो का तख़्ता जमीन से जुदा होकर पानी में तिरने लगता है। देखो अमरीका मे मक्सीको शहर के पास ऐसे बड़े बड़े बेड़े पानी पर तिरते हैं, कि उन पर खेतियां होती हैं और बाग और छप्पर बनाते हैं। फरासीस में सेटउमर के पास जो बेड़े तिरते है उन पर गाय बैल चरते हैं। कश्मीर मे भी झीलो के दरमियान बेड़ोंपर खेतियां बोते हैं। निदान जो कोई वहां कुछ दिन रहे तो बखूबी देख सकता है कि वे बेड़े हवा और पानी के जोर से वहां तिरा करते हैं, और कभी कभी जब कनारे पर जा लगते हैं तो यात्रियों की निगाह बचाकर पंडे लोग भी उन्हे धक्का दे देते हैं। लोगो का यह कहना सरासर झूठ है कि रैवालसर मे पत्थर के पहाड़ तिरते है, और पंडों के बुलाने से यात्रियो की पूजा लेने को कनारे चले आते हैं। —६—सतलज और जमना के बीच पहाड़ी राजा राना और ठाकुरों के इलाक़े। इन मे कहलूर सिरमौर और बिसहर ये तीन तो अनुमान लाख लाख रुपये साल की आमदनी के रजवाड़े हैं, और बाकी बारह ठकुराइयो के राना तीस हज़ार से लेकर तीन सौ रुपये साल तक की आमदनी रखते है। कहलूर की राजधानी बिलासपुर ३१ अंश १९ कला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश ४५ कला पूर्व देशांतर मे सतलज के बांएं कनारे सुन्दर मनोहर जगह मे समुद्र से १५०० फुट ऊंचा बसा है। बिलासपुर के पश्चिम दो दिन की राह पर सतलज के कनारे प्राय तीन हज़ार फुट ऊंचे एक पहाड़ के

ऊपर नयनादेवी का मंदिर है, मैदान से पहाड़ पर चढ़ने को अनुमान चार हजार के लग भग सीढ़ियां कही पहाड़ काट कर और कही पत्थर जोड़कर बनाई हैं, मंदिर से अजब कैफियत नजर पड़ती है, एक तरफ अम्बाले और सरहिंद का मैदान और दूसरी तरफ हिमालय के बर्फी पहाड़ और नीचे दूर तक सतलज का बहना। सिरमौर की राजधानी नाहन ३० अंश ३० कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ४५ कला पूर्व देशांतर मे समुद्र से ३००० फुट ऊंचा जमना से बीस मील बाएं कनारे है। बिसहर का इलाका सतलज के कनारे कनारे हिमालय पार चीन की हद से जा मिला है। राजधानी उसकी रामपुर ३१ अंश २७ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ३८ कला पूर्व देशांतर मे समुद्र से ३३०० फुट ऊंचा सतलज के ठीक बाएं कनारे पर बहुत तंग और बुरी जगह मे बसा है। पहाड़ वहां ऐसे ऊंचे नीचे और दरख्तों से खाली कि वह कदापि आदमी के बसने की जगह न थी जबर्दस्ती जा बसे है। रामपुर में अलवान के तौर पर पशमीने की सफेद चादरें तीस तीस रुपये को बहुत अच्छी बनती है, तारीफ उनके नर्म और गर्म होने की है, साहिब लोग बहुत पसंद करते है, और विलायत को ले जाते हैं। कनावर का पर्गना इस राज मे बहुत अच्छा है, साहिब लोग बरसात मे शिमला से हवा खाने को उसी तरफ जाते है, बरफ के ऊंचे पहाड़ आड़े आ जाने के कारन कश्मीर की तरह वहां भी बरसात नहीं होती, आब हवा निहायत अच्छी. यहां अबतक भी पांडवों की तरह बहुत से भाई एक ही औरत से शादी कर लेते है, और इन पहाड़ो में औरत के वास्ते एक खाविंद को छोड़ कर दूसरे के पास चले जाना ऐब नहीं समझते, ऐसी कम मिलेगी जिन्हो ने दो तीन बार अपने खाविंद

नहीं बदले। शिमला से नीचे पहाड़ियोंका यह भी एक अजब दस्तूर है कि जहां उनका लड़की लड़का छ सात महीने का हुआ तो उसे सुबह होते ही गांव के पास पेड़ों की छाया मे पानी के झरनों के नीचे ऐसी जगह मे लेजाकर सुला देते हैं, कि उस झरने का पानी झारी की धार की तरह ठीक उस की चांदी पर गिरा करता है, निदान एक दो औरतों की निगहबानी में गांव के सारे लड़के वहां पानी के तले दिन भर सोए रहते है यदि इस प्रकार पानी का नालुआ निग उन के सिर पर न दिया जाय कदापि न सोवें, और सिर खुज- लाते खुजलाते मरजावे।—७—गढ़वाल बिसहर की हद से मिला हुआ जमना और गंगा के बीच ४५०० मील मुरब्बा के वि- स्तार में अनुमान लाख रुपये साल की आमदनी का मुल्क है। राजा टीहरी में रहता है, वह ३० अंश २३ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश २८ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से २२०० फुट ऊंचा गंगा के बांए कनारे बसा है॥

निदान उत्तराखंड के रजवाड़े तो हो चुके अब मध्य देश के रजवाड़े लिखे जाते हैं—१—बघेलखंड इलाहाबाद और मिरज़ा- पुर के दक्षिण शोणनद के दोनों तरफ विंध्य की पर्वतस्थली में बसा है। उत्तर दक्षिण और पूर्व सूबै इलाहाबाद और बिहार के सरकारी ज़िले हैं और पश्चिम में उसके बुंदेलखंड का इलाक़ा है। विस्तार उसका दस हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी बीस लाख रुपया साल। इस राज में नदियों का पानी कई जगह ऐसे ऊंचे ऊंचे पहाड़ों से गिरता है कि वह देखने योग्य है, उन जं- गल और पहाड़ों मे इस पानी के गिरने का शब्द और जलकणों का हवा मे उड़ना विरक्त जनों के मनको बहुत सुख देता है।

बीहर का झरना प्राय सवा सौ गज़की ऊंचान से जल की एक धारा होकर गिरता है, इस में कोस एक के तफ़ावत पर टोंस का पानी गिरता है, यद्यपि ऊंचान में तो वह सत्तर गज़ से अधिक नहीं है पर धार उस के जल की जब फूलर्टन साहिब ने सिप्तम्बर महीने में देखी थी बीस गज़ चौड़ी और तीन गज़ मोटी थी। राजधानी रेवा जिसे रीवां कहते हैं बिछियां नदी के दहने कनारे २४ अंश ३४ कला उत्तर अक्षांस और ८१ अंश १९ कला पूर्व देशांतर में बसा है। राजा के रहने का क़िला संगीन ठीक नदी के तट पर बना है।—२—बुंदेलखंड, पूर्व उस के रेवा है, और पश्चिम ग्वालियर की अमल्दारी और झांसी की कमिश्नरी, उत्तर और दक्षिण को सूबै इलाहाबाद के सरकारी जिलों से घिरा हुआ है। यह इलाक़ा सारा विंध्य की पर्वतस्थली में बसा है, आकाश से कोई बुंदेलखंड को देखे तो उसके पहाड़ो का उतार चढाव ठीक समुद्र की लहरों की तरह नज़र पड़ेगा, पर दो हज़ार फ़ुट से अधिक ऊंचा उन में कोई नहीं है। लोहे की खान है। इस इलाक़े में दतिया उरछा चारखाड़ी छतरपुर अजयगढ़ पन्ना समथर और बिजावर ये आठ तो छ हज़ार मील मुरब्बा के विस्तार में रजवाड़े हैं, और बाक़ी चौबीस के क़रीब बहुत छोटे छोटे जागीरदार हैं। २५ अंश ४३ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश २५ कला पूर्व देशांतर में दतिया पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है, बीचमे राजा के महल हैं, आमदनी इलाक़े की दस लाख रुपया साल। दतिया से ७५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता टीहरी उरछा के राजा की राजधानी है, आमदनी इस इलाके की सात लाख रुपया साल राजा के टीहरी में आ रहने से उरछा जो दतिया और टीहरी

के बीच में बेत्वा के बाएं कनारे पुरानी राजधानी था वीरान हो गया। दतिया से ७॥ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता चारखाड़ी एक पहाड़ी के नीचे बसा है, किला उस पहाड़ी पर अधबना रह गया है, शहर के बीच राजा के रहने के मकान हैं, और बाहर चौगिर्द जंगल खड़ा है, आमदनी चार लाख रुपया साल। दतिया से ८० मील अग्निकोन छतरपुर तीन लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है। दतिया से १२० मील अग्निकोन पूर्व को झुकता अजयगढ़ सवातीन लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है। दतिया से ११० मील अग्निकोन पन्ना एक पथरीले मैदान में बसा है, हीरे की खान है, अकबर के वक्त में उसकी पैदा आठ लाख रुपये साल अनुमान की गई थी, पर अब बहुत कम है, सारे इलाक़े की आमदनी मिलकर चार लाख रुपया होता है। दतिया से ३० मील ईशानकोन समथर साढ़े चार लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है, और दतिया से १०० मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता बिजावर सवादो लाख रुपये साल की आमदनी रखता है।—३—ग्वालियर अथवा सेंधिया की अमल्दारी। उत्तर को वह सूबे अकबराबाद के सरकारी जिले और धौलपुर और करौली के इलाक़ों से मिला है, और पूर्व को उसके बुंदेलखंड भूपाल और सागर नर्मदा के सरकारी ज़िले हैं। पश्चिम सीमा पर जयपुर कोटा उदयपुर परतापगढ़ बांसवाड़ा और बड़ोदे के इलाक़े हैं, और दक्षिण की तरफ़ हैदराबाद और इंदौर की अमल्दारी से मिल गया है। दक्षिण को यह राज नर्मदा पार बरन तापी पार तक चला गया है, पर राजधानी इसकी नर्मदा वार मध्यदेश मे पड़ी है, इस कारन इसे मध्यदेश ही के रजवाड़ों में लिख दिया। विस्तार उसका तनीस

हज़ार मील मुरब्बा है, और आमदनी अठत्तर लाख रुपये साल। दक्षिण भाग विंध्य के पर्वतों से आच्छादित है, और उन में, बहुधा नर्मदा के तट पर, भील लोग बसते हैं। अंगरेज़ी अमलदारी से पहले नित की लूटमार और आपस में लड़ाई रहने के कारन उजाड़ बहुत हो गया है, जंगल झाड़ी हरतरफ़ दिखलाई देते हैं। खान से लोहा निकलता है। धरती मालवे की प्रसिद्ध उपजाऊ है, कहावत मशहूर है। धरती मालव गहर गंभीर। मग मग रोटी पग पग नीर। मिट्टी काली बरसात के बाद पानी सूखने पर जगह जगह से फट जाती है, इस कारन घोड़ों को सड़क से बाहर चलने में पैर टूट जाने का बड़ा खतरा रहता है। राजधानी ग्वालियर २६ अंश १४ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश १ कला पूर्व देशांतर में एक पहाड़ी के नीचे बसा है। उस पहाड़ी पर जो ३४२ फ़ुट वहां से ऊंची है एक बहुत मज़बूत क़िला प्राय पौन कोस लंबा बना है, जल के टांके उस में बहुत बड़े बड़े हैं। सन् १७८० में जब मेजर पोफ़म् साहिब ने सरकार के हुक्म बमूजिब इस क़िले को घेरा था तो उन को उस पर किसी तरफ से भी चढ़ने की राह न मिली, लेकिन एक चोर जो उस क़िले में चोरी को जाया करता था उन से मिल गया, और अपना रास्ता बतलाया, यद्यपि वह आदमी के जाने का न था केवल बंदर लंगूर जाते थे, पर पोफम् साहिब अपनी सारी फ़ौज को रातही रात में उस राह चढ़ा ले गये, और क़िला फ़तह किया। इस शहर को लश्कर भी कहते हैं, कारन यह कि पहले संधिया की राजधानी उज्जैन थी, और उसका लश्कर सदा चढ़ाई और लड़ाई पर रहता था, पर जब से उसके लश्कर का डेरा ग्वालियरमें पड़ा, फिर वहां से न हिला, और वही मुक़ाम छावनी और राजधानी हो गया। पास ही

सुवर्णरेखा नदी के पार मुहम्मदगौस के मक़बरे में मीयांतानसैन, जो अकबर का बड़ा मशहूर कलावंत था गड़ा है और उसकी क़बर पर एक इमली का दरख़्त है। बेवक़ूफ़ों का यह निश्चय है कि जो उस इमली की पत्ती चबावे आवाज़ उसकी बहुत मीठी हो जावे। उ-ज्जैन बहुत पुराना शहर है, शास्त्र में इसका नाम उज्जयनी और अवन्ती लिखा है, वह समुद्र से १७०० फ़ुट ऊंचा १३ अंश ११ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३५ कला पूर्व देशांतर में सिप्रा नदी के दहने कनारे ग्वालियर से २६० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता बसा है, इमारतों में लकड़ी का काम बहुत है, पर घाट पक्के नदी के दोनों तरफ सुहावने बने हैं, ज़मीन खोदने से दूर दूर तक पुरानी आबादी के निशान मिलते हैं। यह शहर महाराज वि-क्रमादित्य के समय में बड़ी रौनक़ पर था, और बादशाही ज़माने में सूबे मालवा की, जिसे संस्कृत में मालव देश कहते हैं, राजधानी रहा। पंडित ज्योतिषी शास्त्र की रीति से अपने देशांतर का हिसाब इसी शहर से करते हैं, शहर के बाहर राजा जयसिंह के बनवाए ज्योतिष सम्बन्धि वेधशाला और यंत्र अब तक भी टूटे फूटे पड़े हैं। जिस मकान को भर्तृहरि की गुफा बतलाते हैं, किसी पुरानी हवेली का एक हिस्सा जो मिट्टी के तले दब गई है मालूम होता है। म-हाकाल—महादेव का मंदिर इस जगह मे बहुत प्रसिद्ध है, पर जो मंदिर विक्रमादित्य के समय का बना था वह शमशुद्दीन इलतमिश ने जो सन् १२१० में तख़्त पर बैठा था तुड़वा डाला। शहर से चार मील उत्तर कालियादह गांव के पास सिप्रा के टापू में बाद-शाही वक़्त का एक पुराना मकान बना हुआ है, गर्मियों में रहने की बहुत अच्छी जगह है, नदी का पानी उसके हौज़ फ़व्वारों में

होता हुआ बहता है उज्जैन से प्राय अस्सी मील नैर्ऋतकोन बाग नाम एक छोटी सी बस्ती है, उस में कोस दो एक पर किसी ज़माने मे पहाड़ के पत्थर काटकर गुफा के तौर पर चार मंदिर बौधमत के बने हैं, देखने योग्य हैं, एक का चौक उन में से ८४ फुट मुरब्बा नापा गया है। ग्वालियर के दक्षिण बेत्वा अथवा वेत्वंती नदी के दहने कनारे भिलसा, जिसका असली नाम बिल्वेश और भद्रावत भी बतलाते हैं, शहरपनाह के अंदर अनुमान ५००० घर की बस्ती है। वहां दो देहगोप अर्थात् गुम्बज् बौध लोगों के बनाए उसी तरह के मौजूद है, जैसा बनारस के जिले मे सारनाथ के पास लिखा गया है। भिलसावाले उन्हें सास बहू की भीत और सुमेर का नमूना कहते हैं। बाड़ा ४२ फुट ऊंचा है, और १२० फुट का व्यास रखता है। छोटे का व्यास कुल ४८ फुट है। महाराज चन्द्रगुप्त ने उनकी पूजा के लिये कुछ धरती दान दी थी, यह बात पुराने पाली अक्षरों में उन के पत्थरो के ऊपर खुदी है। ग्वालियर से चार सौ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता बुर्हानपुर तापी के दहने कनारे एक सुंदर मैदान में शहरपनाह के अंदर जिसका घेरा अनुमान बारह मील का होगा बसा है, इमारत मे लकड़ी का काम बहुत, चौक सुथरा, राज बाज़ार चौड़ा, नहर गली गली घुमी हुई, धनाढ्य बहुतेरे मुसल्मान, अरबों की सूरत और वही पोशाक, नदी के कनारे पर बादशाही महल और क़िले के निशान अब तक नमूदार हैं। किसी समय में यह खानदेश के सूबे की राजधानी था। ग्वालियर से चालीस मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता काली सिंध के दहने कनारे पहाड़ के नीचे नरवर का पुराना शहर बसा है. और पहाड़ के ऊपर क़िला है,

किसी समय में वह निषध देश के राजा नल की राजधानी था। ग्वालियर से २६० मील नैर्ऋतकोन नीमच्च की छावनी है और उसी तरफ ३८५ मील पर चम्पानेर अथवा पवनगढ़ का क़िला एक खड़े पहाड़ पर जो २५०० फुट से कम ऊंचा नहीं है बहुत मज़बूत बना है, पहाड़ के नीचे किसी समय में कई कोस तक चम्पानेर का शहर बस्ता था, पर अब उजाड़ और जंगल है, खंड़हरों में शेर और भील रहते हैं। बड़ोदा वहां से कुल बाईस मील नैर्ऋतकोन को रहजाता है।—४—भूपाल पूर्व को सागर नर्मदा के सरकारी ज़िले और बाक़ी तीन तरफ़ ग्वालियर के राज से घिरा है। यह हिस्सा मालवे का पठानों के दखल में है। जंगल पहाड़ इस में भी ग्वालियर के दक्षिण भाग से हैं। विस्तार सात हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी बाइस लाख रुपया साल है। सन् १८२० मे इस इलाक़े के दर्मियान ३४१६ गांव आबाद और ७१४ ऊजड़ गिनेगये थे। शहर भूपाल का जहां नव्वाब रहता है २३ अंश १७ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ३० कला पूर्व देशांतर में पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है। यह शहर सूबे मालवा और गोंदवाने की हद पर राजा भोजके मंत्री ने अपने नाम पर बसाया था। शहर के नैर्ऋतकोन एक पहाड़ी पर पक्की गढ़ी बनी है, और उस गढ़ी के नैर्ऋतकोन पर साढ़े चार मील लंबा और डेढ़ मील चौड़ा एक तालाब है। मकान शहर के अक्सर टूटे फूटे रौनक़ कहीं नहीं। भूपाल से २० मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकती सिहोर में सरकारी फ़ौज की छावनी है, साहिब अजंट उसी जगह रहते है।—५—इंदौर अथवा हुलकर की अमलदारी। यह भी इलाक़ा कुछ दूर तक नर्मदा के पार चला गया है। पूर्व उस के

ग्वालियर की अमल्दारी, उत्तर को ग्वालियर और धार और देवास के दो छोटे छोटे रजवाड़े, पश्चिम में बड़ोदा और दक्षिण मे खानदेश के सरकारी जिले। लंबान चौड़ान इस इलाक़े की नापना कठिन है, क्योंकि बीच बीचमे दूसरे इलाक़ों से बहुत बे तरह मिल गया है, विशेष करके ग्वालियर से। कहते हैं कि जब हुलकर और सेंधिया के बीच मुल्क बंटा, तो उन्हों ने उसे चुंदरी बांट बांटा, अर्थात् चुंदरी की तरह एक पर्गना सेंधिया ने लिया तो दूसरा हुलकर ने और दूसरा हुलकर ने लिया तो तीसरा फिर सेंधिया ने, निदान इसी कारन एक अमल्दारी के गांव दूसरी के बीच मे आ गये हैं। विस्तार उसका आठ हजार मील मुरब्बा से कम नहीं है, और आमदनी बाइस लाख रुपया साल। झाड़ पहाड़ इस अमल्दारी मे बहुत हैं। क्योंकि विंध्य का तटस्थ है, और भीलों का विंध्य मानो घर है। राजधानी इंदौर २२ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ५० कला पूर्व देशांतर में समुद्र से २००० फुट ऊंचा एक ढालुवे मैदान मे पेड़ों के बीच बसा है, थोड़ी थोड़ी सी दूर पर पहाड़ दिखलाई देते हैं, उचानके सबब गर्मी बहुत नहीं होती, बाज़ार चौड़ा है, पर इमारत चोबी, और देखने लाइक़ उन में कोई भी नहीं। साहिब रज़ीडण्ट इन्दौर में रहते हैं। सरकारी फ़ौज की छावनी इन्दौर से दस मील दक्षिण मऊ मे पड़ी है। इन्दौर से अनुमान चालीस मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता नर्म्मदा के दहने कनारे महेशर बसा है, वहांवाले उसे महेशरती और सहस्त्रबाहु की बस्ती भी कहते हैं, क़िले के अंदर अहिल्याबाई के रहने के महल्ल, और नदी कनारे नहाने को सुंदर पक्के घाट बने हैं। महेशर से पांच मील पूर्व नर्मदा के उसी कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अंदर मंडले-

शर एक बड़े व्यौपार की जगह है, किला भी छोटा सा पक्का बना है। मंडलेश्वर से थोड़ी ही दूर पूर्व नर्मदा के दहिने कनारे पर ओंकारनाथ महादेव का मंदिर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है, घाट भी स्नान के लिये पक्के बहुत अच्छे बने हैं, मंदिर के पास एक पहाड़ी पर दो वीरान क़िले हैं, जिन्हें वहांवाले मानधाता और मुचकुंद के बनाये बतलाते हैं, उनके अंदर बाहर बहुत से खंभे चौखट देवताओं की मूरतें और तरह बतरह की सूरतें सब पत्थर की टूटी फूटी इतनी पड़ी हैं, कि उनके देखने से साबित होता है, कि वह जगह बहुत पुरानी है, और किसी समय में खूब आबाद थी, मुसल्मानों की बदौलत इस नौबत को पहुंची।—६—धार और देवास यह दोनो छोटे छोटे रजवाड़े हुलकर और सेंधिया की अमल्दारी के बीच में पड़े हैं। धार तो एक हज़ार मील मुरब्बा के विस्तार में १७९ गांव पौने पांच लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है, और देवास कुछ न्यूनाधिक चार लाख साल का होगा। धारकी राजधानी धारानगर, जो किसी समय में महाराज भोज के रहने की जगह थी, २२ अंश ३५ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश २४ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से १९०० फुट ऊंचा एक कच्ची शहरपनाह के अंदर बसा है, और क़िला शहर से अलग एक ऊंची सी ज़मीन पर बना है, भोज सम्वत् ५४१ मे एक बहुत बड़ा राजा हो गया है, संस्कृत का ऐसा क़दर्दान विक्रम के पीछे कोई नहीं हुआ, एक २ श्लोक पर उसने लाख लाख तक रुपये दिये है, और बहुतेरे ग्रंथ उसके समय के बने अबतक मौजूद है, वह आप भी बड़ा पंडित था, और कहते हैं कि उसकी राजधानी मे बहुत कम ऐसे लोग थे जो संस्कृत न जानते, मार्शमेन साहिब अपने भारतवर्षीय इतिहास में लिखते हैं कि इस

राजा को कुल्ल सात सौ वरस हुए। देवास के इलाके की राजधानी देवास छ हज़ार आदमियों की वस्ती २२ अंश ५९ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश १० कला पूर्व देशांतर में वसा है। धार से अनुमान १५ मील दक्षिण जरा अग्निकोन को झुकता प्राय २००० फुट समुद्र से ऊंचा एक पहाड़ पर मांडू का किला और शहर उजड़ा हुआ पड़ा है अकवर के वक्त में यह शहर वहुत लंबा चौड़ा वस्ता था, अव भी नापने से उसकी शहरपनाह जो बाक़ी है २८ मील होती है, पर विलकुल जंगल, शेर और भीलों के रहने की जगह है, वाज वहादुर का मकान, दो तालावों के वीच जहाज़ का महल, जामे मस्जिद, हुसैनशाह का संगमर्मर का मक़वरा इस क़िले में यह सारे मकान देखने लाइक़ हैं। —७—वड़ोदा अथवा गाइकवाड़ का राज हुलकर और सेंधिया की अमल्दारी के पश्चिम समुद्र पर्यंत, और उदयपुर और सिरोही के दक्षिण नर्मदा तक, पर इसके वीच में वहुत जगह सरकारी जिले भी आ गए हैं। यह इलाक़ा सूवै गुजरात में है, जिसे संस्कृत मे गुर्जर देश कहते हैं। विस्तार उसका चौवीस हज़ार मील मुरव्वा से कम नहीं है। यद्यपि जंगल पहाड़ भीलों से भरे हैं, पर तौ भी मुल्क आवाद और धन की वहुतायत है, विशेष करके राजधानी के आस पास। काठियावाड़ अर्थात् काठियों का देश जो गुजरात के प्रायद्वीप का मध्य भाग है विलकुल जंगल पहाड़ों से भर रहा है, पर पहाड़ अक्सर नीचे और दरख़्तों से खाली, धरती रेतल, वहांवाले अपना नाम काठी होने का यह कारन वताते हैं, कि जव पांडव लोग दुर्योधन से दाव हारकर वारह वरस के लिये यहां आकर छुपे, और पता लगने पर दुर्योधन ने उनको वहां से जाहिर करने के लिये यह तदवीर ठहराई, कि इस देश की गौ हर

ले जावे, जो क्षत्री होगा अवश्य गौ बचाने को साम्हने आवेगा, पर ऐसा बुरा काम अर्थात् गौ का चुराना उसके आदमियों से किसी ने स्वीकार नहीं किया, तब कर्ण ने अपनी छड़ी ज़मीन पर मारी, और उससे एक आदमी पैदा हुआ, काठ की छड़ी से पैदा हुआ इसलिये उसका नाम काठी रहा, और कर्ण ने उसे वर दिया जा तुझको और तेरी औलादको भगवान के घर से चोरी मुआफ है, चोरी का पाप और कलंक नहीं लगेगा। निदान ये काठी सूर्य को, जिसे कर्ण का बाप समझते है, बहुत मानते हैं, अपने सब कागजों की पेशानी पर उसकी तसवीर लिखते है, और चोरी डकैती को बुरा नहीं समझते, बदमाशों ने क्या कहानी रची है ! औरते सुंदर होती हैं। बैल गुजरात के प्रसिद्ध हैं। आमदनी अनुमान सत्तर लाख रुपया साल की होवेगी। अकीक की उस में खान है। राजधानी बड़ोदा २२ अंश २१ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश २३ कला पूर्व देशांतर में शहर-पनाह के अंदर विश्वमित्र नदी के बाएं कनारे बसा है। उस नदी पर पक्का पत्थर का पुल बना हुआ है। बस्ती उसकी लाख आदमियों से अधिक है। बाज़ार चौड़ा और चौपड के डौल का, इमारतों मे काम अक्सर काठ का। साहिब रज़ीडंट के रहने की जगह है। इस गुजरात में और भी बहुत से नव्वाब और राजा है, पर उन के इलाके निहायत छोटे, यहां तक कि बहुतेरे उनमें से एक ही गांव के मालिक हैं, और सिवाने उनके आपस में मिले जुले, इसलिये हमने उन सब को इसी अमल्दारी के साथ रखना मुनासिब समझा, बहुतेरे तो उन में से अब तक महाराज गाइकवाड़ को कर देते हैं, पर कोई सरकार की हिमायत मे भी आ गया है। गुजरात की पश्चिम सीमा पर द्वारका का टापू है, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है, द्वारका

के मंदिर को जो एक सौ चालीस फुट ऊंचा है जगत खूंट भी कहते हैं, मूर्ति रणछोड़जी की जो आदि थी उसको कोई छ सौ वरस गुजरता है मुसलमानों की दहशत से पंडे लोग गुजरात मे डाकौर के दर्मियान जो गुजरात की पूर्व अलंग मे भड़ौंच के साम्हने खंभात की खाड़ी पर घोघेबंदर के पास है ले आए, और वहां नई स्थापन की, उसे भी वहां न रख सके और पास ही एक छोटे से टापू मे जिसे शंकुद्वार कहते हैं और जहां पहले शंकुनारायण की पूजा होती थी उठा ले गए, निदान अब प्राय डेढ़ सौ वरस से एक और नई मूर्ति वनाई है। यात्री लोग गोमती नदी मे स्नान करके मूर्ति के दर्शन करते हैं, फिर १८ मील पर रामडा अथवा अरामराय मे जाकर लोहे के तप्तमुद्रा से शंख चक्र गदा पद्म के चिन्ह अपने वाजू पर लेते हैं गोपी चन्दन, जिस से वैष्णव लोग तिलक देते हैं, इसी जगह एक तालाव से निकलता है। असली द्वारकापुर वंदर से जिसे सुदामापुर भी कहते हैं तीस मील वतलाते हैं, और कहते हैं, कि समुद्र मे डूवी है। वड़ोदे से १७० मील वायुकोन उत्तर को झुकती हुई वन्नास नदी के वांए कनारे देसा मे सरकारी छावनी है। गुजरात के प्रायद्वीप की दक्षिण सीमा के ऊपर समुद्र के कनारे हरिना कपिला और सरस्वती इन तीन नदियों के संगम पर जूनागढ़वाले नव्वाव की जागीर मे पट्टन सोमनाथ वसा है। किसी जमाने में वह वहुत वड़ा शहर था, और ज्योतिर्लिंग सोमनाथ महादेव का वड़ा मंदिर था, उसके ५६ खंभों मे जवाहिर जड़े थे, और सोने की दीवटों में दीये जलते थे, और कई मन सोने की जंजीरो मे घंटे लटकते थे, दो हजार पुजारी पाच सौ कचनी और तीन सौ गवैये इस मंदिर की सेवा करते थे। सन् १०२५ में मह-

हट गया इस कारन रन होगया। यहां जो नमक पैदा होताहै उसके महसूल में सरकार भी हिस्सेदार है। नमक के जमे हुए तख़्ते बर्फि- स्तान की तरह कोसो तक नज़र पड़ते हैं, और उन पर जब सूरज च- मकता है तो महा अद्भुत और चमत्कारी तमाशे दिखलाई देते हैं, अर्थात् छोटी छोटी घास और झाड़ियां जो उस पर जमी रहती हैं बड़े बड़े भारी ऊंचे पेड़ों के जंगल दिखलाई देती हैं, कभी वह जंगल हिलते और झकोरे खाते हैं, कभी अलग अलग हो जाते हैं, और कभी फिर इकट्ठा, कभी ऐसा देख पड़ता है कि लश्कर और फ़ौजें मैदान में चली जाती हैं, और कभी गढ़ और क़िले उठते बनते और बिगड़ते नज़र आने लगते हैं, कारन दृष्टि के ऐसा धोखा खाने का इन जगहों में बिना उस विद्या की पुस्तकें पढ़े समझ मे आना कठिन है इस लिये यहां नहीं लिखा, इन्हीं तमाशों को संस्कृत मे गन्धर्व नगर और वहां के रजपूत सीकोट कहते हैं। रन के कनारों पर गोरखर अर्थात् जंगली गधे अक्सर मिलते हैं, घरेलू गधों से मज़बूत होते हैं, साठ साठ सत्तर सत्तर का झुण्ड इकट्ठा फिरा करता है, और वहां की नमकीन घास को बड़ी चाह से खाता है। निदान कच्छ का इ- लाक़ा पहाड़ी धरती मे बसा है। पूर्व से पश्चिम को १६० मील लंबा और रन समेत उत्तर से दक्षिण को ९५ मील चौड़ा है। इस इलाक़े के पहाड़ किसी समय में ज्वालामुखी थे, अर्थात् उन मे से आग नि- कलती थी, क्योंकि अब तक भी उन के पास वे सब धातें पड़ी हैं, जो आग के साथ पहाड़ों से निकलती है। धरती रेतल पथरीली और बहुधा ऊसर, पानी कम और अक्सर खारा, वृक्ष बहुत थोड़े कहीं कहीं बस्ती के पास नीम पीपल बबूल और खजूर देख पड़ते हैं, बड़ इमली और आम बहुत थोड़े, लोहे कोयले और फिटकिरी की खान

है। आदमी वहां के बड़े दगाबाज़, बरन कहावत हो गई है कि जो ऋषी मुनी भी कच्छ का पानी पाये शैतान बन जाये। आमदनी उस की आठ लाख रुपये साल से अधिक नहीं। पालकी और रथ पर वहां सिवाय राजा के और कोई नहीं चढ़ने पाता है। धरती रेतल, और सड़क अच्छी न होने के कारन गाडियां कम चलती है सवारी ऊंट और घोड़े की बहुत है। राजधानी भुज २३ अंश १५ कला उत्तर अक्षांस और ६९ अंश ५२ कला पूर्व देशांतर मे एक पहाड़ की बगल में जिस पर गढ़ बने हैं बसा है। उत्तर दिशा से दूर पर यह शहर बहुत बडा मालूम देता है, और सफेद सफेद मकान मसजिद और मन्दिर खजूर के पेडों में बडी शान से चमकते हैं, पर नजदीक आने से वह रौनक और बात बाक़ी नही रहती। राजा के महल क़िले के अन्दर हैं, और उनकी गुमजियों पर ऐसा रोगन चढ़ाया है, कि वह चीनी सा मालूम होता है। बीस हजार आदमियो से ऊपर उस मे बस्ते हैं, और कारीगर वहां के सोने चादी की चीजे अच्छी बनाते है। भुज से ३५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को रुकना समुद्र के तट पर मंडवी बंदर बड़े व्यौपार की जगह है।—९—सिरोहा बड़ोदे की अमलदारी के उत्तर। पूर्व उसके उदयपुर, और पश्चिम और उत्तर। को जोधपुर। विस्तार तीन हजार मील मुरब्बा. और आमदनी अनुमान एक लाख रुपया साल है। राजधानी इस छोटे से इलाक़े की सिरोही २४ अंश ५२ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश १५ कला पूर्व देशान्तर में है। सिरोही से १८ मील नैर्ऋतकोन को आबू का पहाड जिसे अर्बुदाचल भी कहते हैं समुद्र से पांच हजार फुट ऊंचा है। जल की बहुतायत. झील सुन्दर, जंगल और हरियाली हर तरफ, हवा ठंडी, मानो हिमालय का नमूना दिखलाता

है। गर्मी में आस पास की छावनियों के बहुत साहिब लोग वहां हवा खाने आते हैं, विशेष करके रोगी, कोठी बंगले उस पर कितने ही बनगए हैं, और बनते जाते हैं। अचलेश्वर महादेव की पूजा होती है, और जैनियों के दो मंदिर वहां संगमर्मर के वहुत उमदा बने हैं, नक़्क़ाशी का काम उन पत्थरों पर निहायत बारीकी के साथ किया है, पत्थर को मानों शीशा और हाथीदांत बना दिया है, सवा सवा लाख रुपये की लागत के तो उन मन्दिरों में एक एक ताक़ बने हैं, जगह क़ाबिल देखने के है, नक़्क़ाशी के काम का ऐसा मन्दिर हिन्दुस्तान में दूसरा नहीं निकलेगा। टाड साहिब अपनी किताब में लिखते हैं, कि ताजगंज का रौज़ा छोड़कर सारी दुनिया मे कोई ऐसी इमारत नही है कि जो आबूके मंदिरों की बराबरी कर सके। जो फूल पत्ते इन मंदिरों में पत्थर काटकर निकाले हैं अंगरेज़ लोग भी इंगलिस्तान में इससे बिहतर नहीं बना सकते। ये करोड़ों रुपये लागत के मंदिर कुछ न्यूनाधिक हज़ार बरस गुज़रते हैं एक साहूकार ने बनाये थे।—१०—उदयपुर अथवा मेवाड। पश्चिम उसे अर्वली पहाड़ सिरोही और जोधपुर से जुदा करता है, अजमेर का सरकारी जिला उत्तर को है, दक्षिण की तरफ बडोदा डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ पड़ा है, और पूर्व सीमा उसकी बूंदी और सेंधिया की अमलदारी से मिली है। यद्यपि इलाक़ा कुछ बहुत बड़ा नही है, पर कुल और दर्जे मे उदयपुर का राना हिन्दुस्तान के सब राजाओं से बड़ा गिना जाता है, मुसल्मानों की सल्तनत के पहले जिन दिनो में उनका इख़्तियार था, सारे राजा उन्ही से गद्दी नशीनी का तिलक लेते थे, और वे उनके माथे पर अपने पैर के अंगूठे से तिलक करते थे। मार्शमेन साहिब अपनी किताब में उदयपुर के

रानाओं को ननिहाल के संबंध से क्रिस्तानके जने लिखते हैं, क्योंकि नौशेरवां ने रूम के क्रिस्तान बादशाह मारिस की बेटी व्याही थी, और फिर उसकी बेटी उदयपुर के राना को आई। इस इलाके का विस्तार ११६०० मील मुरब्बा है, और आमदनी अनुमान १२५००००। धरती पहाड़ी, रास्तों में बहुधा घाटे और झाड़ियां। लोहे तांबे जस्ते और गंधक की खानहैं। राजधानी उदयपुर २४ अंश ३५ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश ४४ कला पूर्व देशांतर में पहाड़ों के घेरे के अंदर समुद्र से २००० फुट ऊंचा बसा है। शहर के पश्चिम तरफ एक झील है, और उसके बीच में राना का महल जग मंदिर संगमर्मर का और बाग बहुत उमदा बनाहै। सिवाय इसके एक और झील राज समुद्र नाम पहाड़ों के बीच बारह मील के घेरे में शहर से पचीस मील उत्तरको है, उस मे ३ मील लंबा संगमर्मर का बंध बांधा है, झील में उतरने के लिये बराबर जीने लगे हुएहैं, और जीनों पर जीनत के लिये बडे बड़े हाथी उसी पत्थर के तराश कर लगा दिये हैं, पूर्व तरफ एक पहाड़ पर महल बना है। उदयपुर से २२ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता बनास नदी के दहने कनारे श्रीनाथजी का प्रसिद्ध मंदिर, जिसे लोग नाथद्वारा भी कहते हैं, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। चित्तौड़ अथवा चीतौड़ का क़िला ७० मील उदयपुर के पूर्व ईशानकोन को झुकता हुआ पुरानी तवारीखों में बहुत मशहूर है। आगे वही राजधानी था। यह किला एक पहाड़ पर जो दीवार की तरह खड़ा है और जहां खड़ा न था वहां संगतराशों ने सौ सौ फुट तक ऊंचा छील कर दीवार की तरह खड़ा कर दिया है बारहमील के घेरे में बना है, उस पर जाने के लिये आध कोस की चढ़ाई का एक ही रास्ता है. और उस रास्ते में छ दर्वाज़े पड़ते हैं,

दर्वाज़ा क़िलेका बहुत ऊंचा और पुराने हिन्दुस्तानी डौल का बना है, मुसल्मानो की इमारतों से कुछ भी नहीं मिलता, उसके अन्दर कई शिवाले और छोटे छोटे महल बहुत उमदा बने हैं, नक़्क़ाशी उन के पत्थरों पर देखने लाइक़ है, औरंगज़ेब के पोते अज़ीमुश्शान ने उसमें एक मकान मुसल्मानों की वजा का बनाकर उसका नाम फतेह महल रखा है, पानी के कुंड उस क़िले में बहुत इफरात से हैं, गिनती मे चौरासी हैं, पर बारह उन में से बारहो महीने भरे रहते हैं, सब से अधिक देखने लाइक़ वस्तु वहां दो कीर्तिस्तंभ अर्थात् मीनार हैं, छोटा तो टूट गया पर बड़ा चौखुंटा नौ मरातिब का १२२ फुट ऊंचा मीराँबाई के पति राना कुंभका बनाया संगमर्मर का अभी तक खड़ा है, उसके अंदर हर जगह महादेव पार्वती की मूर्ति बनाई है, और बहुत उमदा नक्काशी का काम किया है, चढ़ने को उस में सीढ़ियां हैं, ऊपर चढ़ने से दूर दूर तक नज़र जाती है, क़िले का आदमियों से खाली और सुनसान होना हर तरफ टूटी हुई इमारतों का नज़र पड़ना, क़िले के अंदर और पहाड़ के तले दस दस बारह बारह कोस तक जंगल उजाड़ का दिखलाई देना, और किताबों के लिखे हुए इस क़िले के पुराने हाल का याद आना, दिल को अजब एक इबरत लाता है। इसी क़िले के अंदर राजा भीम की पद्मिनी रानी सारे रनवास के साथ सन् १३०३ में अलाउद्दीन बादशाह के ज़ुल्म से अपना सत बचाने के लिये सती हुई थी, और इसी क़िले के अंदर रानी किरणवती सन् १५३३ में बहादुरशाह गुजरातवाले की दहशत से तेरह हज़ार स्त्रियों के साथ आग में जली थीं, और बत्तीस हज़ार रजपूत केसरिये बागे पहिन कर लड़ाई मे कटे थे, और इसी क़िले के अंदर सन् १५६७ में जब अकबरने आकर घेरा था उसके

किलेदार जयमल के मरने पर क़िलेवालों ने जौहर किया था, कि जिस में तीस हज़ार आदमी मारे गये । अब यह क़िला बिलकुल बेमरम्मत वीरान पड़ा है, इसकी आबादी के लिये लाखों ही आदमियों की फौज चाहिये । किले के नीचे चीतौड़ का शहर जो अब केवल एक क़सबा रह गया है बस्ता है ।—११—डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ यह तीनो छोटे छोटे भाय दो दो लाख रुपये साल की आमदनी के उदयपुर के दक्षिण सेंधिया और गाइकवाड़ की अमलदारी के बीच में पड़े हैं । डूंगरपुर का विस्तार एक हज़ार मील मुरब्बा, उस से पूर्व परतापगढ़ का विस्तार १५०० मील मुरब्बा, उन दोनो के दक्षिण बांसवाड़े का विस्तार भी १५०० मील मुरब्बा अनुमान करते हैं । डूंगरपुर के इलाक़े की राजधानी डूंगरपुर २३ अंश ५४ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश ५० कला पूर्व देशांतर में बसा है, उसकी झील का बंध संगमर्मर के ढोकों से बांधा है । परतापगढ़ के इलाक़े की राजधानी परतापगढ़ २४ अंश २ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ५१ कला पूर्व देशांतर मे समुद्र से १७०० फुट ऊंचा शहरपनाह के अंदर बसा है, इसके चौगिर्द नाले खोले और जंगल उजाड़ बहुत है, चार कोस के फासिले पर देवला नाम एक क़िला है । बांसवाड़े के इलाक़े की राजधानी बांसवाड़ा २३ अंश ३१ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ३२ कला पूर्व देशातर में शहरपनाह के अंदर बसा है, शहर के बाहर एक पक्का तालाब है गिर्द उसके पीपल और इमली की घनी २ छांव, उस से आगे एक पहाड़ पर किले के बुर्ज है जो किसी समय वहां के राजा के रहने की जगह थी ।–१२–बूंदी उदयपुर के पूर्व कोटे के पश्चिम और जयपुर के दक्षिण, निदान इन तीनों अ-

मल्दारियों से यह इलाका घिरा हुआ है। बिस्तार उसका २२०० मील मुरब्बा, आमदनी अनुमान दस लाख रुपये साल। राजधानी बूंदी २५ अंश २८ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३० कला पूर्व देशांतर में बसी है। एक हिस्सा उसका नया और दूसरा पुराना कहलाता है। नई बूंदी शहरपनाह के अन्दर है, और वह शहरपनाह पहाड़ों पर जाकर जो प्राय ४०० फुट ऊंचे होवेंगे क़िले और महलों से मिल गई है। शहर का पुराना डौल, मंदिरों की बहुतायत, चौक की फराख़ी, होज़ों में फव्वारों का छुटना, शहर के पास ही एक सुंदर झील का होना आंखों को बहुत भला मालूम होता है, विशेष करके बाज़ार जो महलों के साम्हने है। पुरानी बूंदी नई बूंदी के पश्चिम है। शहर से उत्तर पहाड़ के घाटे में बहुत सुंदर सुंदर तालाव और राजा के महल और बाग और छतरियां वनी हैं, विशेष करके सुखमहल जो ऐन झील के बंध पर बनाया है, और जहां से बरसात के दिनों में पानी की चदर गिरा करती है।—१३—कोटा उसकी सरहद उत्तर में बूंदी के सिवाय कुछ थोड़ी जयपुर से भी मिली है, बाक़ी सब तरफ सेंधिया की अमल्दारी है। बिस्तार उस का साढ़े छ हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी अनुमान पैंतालीस लाख रुपये साल, पर इस में से तिहाई मुल्क सरकार ने वहां के दीवान राजराना ज़ालिमसिंह की औलाद को दिलवा दिया, क्योंकि उस ने लड़ाइयों के वक़्त जब राजा महज़ नाबालिग था बड़ी बड़ी ख़ैरख़ाहियां की थी। वे लोग अब झालरापाटन में जो कोटे के दक्षिण अग्निकोन को झुकता कुछ न्यूनाधिक ५० मील होगा रहते हैं। यह भी शहर अब बहुत ख़ासा आबाद हो गया है, जयपुर की तरह चौपड़ का बाज़ार और गलियां निकली हैं, शहरपनाह भी

मज़बूत है। राजधानी कोटा २५ अंश १२ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ४५ कला पूर्व देशांतर में चम्बल के दहिने कनारे शहर पनाह के अन्दर बसा है। खाई शहरपनाह के गिर्द पहाड़ काटकर खोदी है। शहर आबाद है, पर नामी जगह राजा के महलों के सिवाय और कोई नहीं। ये ऊपर लिखे हुए दोनों रजवाडे अर्थात् बूंदी और कोटा हाड़ौती में गिने जाते है।—१४—टोंक बूंदी के उत्तर जयपुर की अमल्दारी से घिरा हुआ। आमदनी उसकी अनुमान दस लाख रुपया साल होवेगी। यह इलाक़ा नव्वाब मीरखां की औलाद के क़ब्जे में है। राजधानी टोंक २६ अंश १२ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३८ कला पूर्व देशान्तर में बसा है। दो तरफ उसके पहाड़ हैं, और तीसरी तरफ पत्थर की दीवार कि जिस को पहाड़ो पर ले जाकर उन से मिला दिया है, पास ही एक छोटी सी झील है। नव्वाब के मकान बनास नदी पर जो शहर के उत्तर बहती है बने हैं। कुछ थोड़ी सी ज़मीन नव्वाब की सिरौंज के साथ जिसका असली नाम शेरगंज है कोटे और ग्वालियर की अमल्दारी के बीच में, और नीम बहेड़ा मेवाड़ के दर्मियान है। सब मिलाकर उस इलाके का विस्तार अठारह सौ मील मुरब्बा होता है।–१५– जयपूर अथवा ढूंढार, टोंक बूंदी कोटा और करौली के उत्तर, और बीकानेर और अलवर के दक्षिण, पूर्व को उसके भरथपुर है, और पश्चिम को सरकारी जिला अजमेर का और किशनगढ और जोधपुर की अमल्दारियां। यह इलाक़ा १७५ मील लम्बा और १०० मील चौड़ा है। विस्तार पंद्रह हजार मील मुरब्बा धरती रेतल और बहुधा लोनी। उत्तर भाग में शेखावाटी के दर्मियान पहाड़ भी छोटे छोटे बहुत है, पर आब हवा अच्छी। तांबे और फिटकिरी

की खान है। आमदनी अनुमान पचासी लाख रुपया साल है, पर इस में चालीस लाख रुपया जागीर और कृष्णार्पण में जाता है। रुपया अशरफी राजा की टकसाल से निहायत चोखा निकलता है। राजा यहां का अपने तई रामचन्द्र की औलाद और उन्हीं का जानशीन बतलाता है। राजधानी जयपुर अथवा जयनगर कुछ ऊपर लाख आदमी की बस्ती है। राजा जयसिंह सवाई का बसाया २६ अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३७ कला पूर्व देशांतर में पक्की शहरपनाह के अन्दर बसा है। यह शहर अपनी किता और वज़ा में सब से निराला है। दक्षिण के सिवाय तीनों तरफ पहाड़ों से घिरा है, और उन पहाड़ों पर क़िले बने हैं, दक्षिण तरफ भी जिधर मैदान पड़ता है शहर से कुछ फासिले पर मोती डूंगरीका क़िला बहुत मज़बूत बना है। यह शहर तीन मील लम्बा डेढ़ मील चौड़ा बालू के मैदान में बसा है। बाज़ार चौपड़ का बहुत चौड़ा और तीर की तरह सीधा, बरन गलियां भी चौपड के ख़ानों की मिसाल सब सीधी आपस में मुक़ाबिल और ऐसी कोई नहीं जिस में गाड़ी न जा सके, दूकानें ऊंची खूबसूरत और एक सी, मकान जाली झरोखों से आरास्ता, गुम्जियों पर सुनहरी कलसियां चढ़ी हुई, चूना उनका ऐसा सफेद साफ और चमकदार कि संगमर्मर भी उसके आगे पानी भरे, सब के सब बराबर एक क़तार में लैन डोरी डालकर और दाग़बैल लगाकर बनाये हैं, अब मक़दूर नहीं कि कोई अपना मकान उस लैन से बाहर बढ़ा सके, यदि बढ़ावे या घटावे तो उसी दम राज का गुनहगार ठहरे, मन्दिर सरावगियों के लाखों रुपये की लागत के बने हैं, ठाकुरद्वारे भी अच्छे अच्छे इफ़रात से, कहते हैं कि यह शहर जयसिंह ने एक फरंगी कारीगर

इटाली के रहनेवाले से बनवाया था। महल महाराज के चौथाई शहर रोके खड़े हैं, और निहायत उमदा बने हैं, बाग हौज़ फव्वारे मकान तसवीरें सब देखने लाइक हैं, गोविंददेवजी का मंदिर महलों के अन्दर है, दर्बार का करीना अब तक भी पुरानी हिन्दुस्तानी चाल पर चला जाता है, मशालची और कहार भी बिना खूंटेदार पगड़ी और जामा पहने हुए महलों के दर्वाजे पर नहीं जाने पाता, और यदि कोई आदमी दुशाला और रूमाल दोनों साथ ओढ़कर वहां जावे तो दर्बान उन में से उसी दम एक चीज उतार कर ज़ब्त कर लेता है, ऐसा ही उन्हे राजा का हुक्म है। बारह बरस की उमर तक वहां के राजा को कोई मर्द नहीं देखने पाता, रनवास में रहा करता है। औरतें यहां की बहुत शौक़ीन वज़ादार और मर्दों के शिकार में होशयार होती है। आदमी झूठे। बर्तन वहां बालू से मलकर कपड़े से पोंछ डालते हैं, पानी से कदापि नही धोते। कबूतर दूकान्दारों से दाना पाने के कारन बाज़ार में इतने इकट्ठा रहते हैं, कि पांव तले दब जाने की दहशत हुआ करती है। बरसात में तो बड़े आराम की जगह है, नंगे पाव सारे बाज़ार फिरकर घर में चले आओ, फर्श पर कीचड़ का दाग न लगेगा, क्योंकि ज्योंही मेह पड़ता है बालू सोख लेता है, पहाड़ों पर भी सबज़ी जम जाती है और झरने हर तरफ जारी होते हैं, पर गरमी मे निहायत तकलीफ है, जब धूप से बालू तप जाता है तो भाड में चनों की तरह पैर भुनने लगते है, और बालू भी कैसा कि जिस मे पिंडली तक धस जावे। तीन मील पूर्व अग्निकोन को झुकता पहाड़ के बीच गलता में सुन्दर मन्दिर और पानी के कुण्ड बने है. बरसात में सैर की जगह है। शहर से चार मील पर पहाड़ों मे आमेर उस राज की

पुरानी राजधानी है, वहां भी महाराज के महल निहायत उमदा बने हैं, विशेष करके शीशमहल जिसके झरोखों में रंगीन शीशे अत्यन्त खूबसूरती से लगाए हैं। क़िला आमेर का पहाड़ के ऊपर बहुत बड़ा और मज़बूत है, उसके अन्दर कुए की तरह कई खत्ते हैं, जिसे वहां वाले खाश कहते हैं, जिस आदमी से राजा नाराज़ होता है उस में डाला जाता है, और जव की रोटी और खारा पानी खाने पीने को पाता है, खाश के अन्दर से जीता बिरला ही निकलता है, ग़ैर आदमी उस क़िले के अन्दर नहीं जाने पाता, साहिब लोगोंने भी अब तक उसे नहीं देखा। क़िले इस अमल्दारी में बहुत हैं पर रणथंभौर का क़िला जयपुर से ७५ मील अग्निकोन सब मे मज़बूत है, उसके अन्दर भी गैर आदमी अथवा साहिब लोग नहीं जाने पाते। यह वही किला है जिसके अन्दर सन् १२९८ में हमीर चौहान अलाउद्दीन खिलजी में लड़कर बड़ी बीरतौ के साथ मारा गया, और उसके रनवास की सारी रानियां, मुसल्मानों की ज़ियादती से बचने के लिये चिता मे आग लगाकर जलीं, जयपुर से साठ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता विराट के पास एक पहाड़ पर महाराज अशोक की आज्ञानुसार वही धर्म लिपि खुदी है, जो इलाहाबाद के शिलास्तंभ पर है, केवल इतना अधिक है, कि वेद मुनियों ने बनाये। राजा जयसिंह विद्या की बड़ी क़दर करता था, ब्रजभाषा ने उसी के समय में रौनक पाई, बिहारी को सतसई के दोहरों के लिये वह एक एक अशरफ़ी देता था, बनारस दिल्ली मथुरा उज्जैन और जयपुर उसी ने पांचों जगह में ज्योतिष संबंधि वेधशाला और यंत्र बनाये हैं।–१६–करौली उत्तर और पश्चिम जयपुर की अमलदारी से घिरा हुआ, और दक्षिण को ग्वालियर, और पूर्व को धौलपुर

से मिला हुआ। विस्तार उसका उन्नीस सौ मील मुरब्बा आमदनी पांच लाख रुपया साल। राजधानी करौली २६ अंश ३२ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५५ कला पूर्व देशांतर में पुशपेरी नदी के तट पर बसा है। किला राजा के रहने का शहर के बीच में है।—१७—धौलपुर पश्चिम करौली, दक्षिण ग्वालियर, उत्तर भरथपुर, पूर्व्व सरकारी ज़िला आगरे का। विस्तार सवा सोलह सौ मील मुरब्बा। आमदनी सात लाख रुपया साल। राजधानी धौलपुर २६ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ४४ कला पूर्व देशांतर में चंबल के बांएं कनारे कोस आध एक के तफावत पर बसा है।—१८—भरथपुर दक्षिण धौलपुर, उत्तर अलवर, पश्चिम जयपुर, पूर्व आगरा और मथुरा के सरकारी जिले। विस्तार दो हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी बीस लाख रुपया साल। रूपबास के परगने में लाल पत्थर की खान है, इमारत के वास्ते दिल्ली आगरे इत्यादि आस पास के शहरों में बहुत जाता है। राजधानी भरथपुर २७ अंश १७ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश २३ कला पूर्व देशांतर मे कच्ची शहरपनाह के अन्दर प्राय आठ मील के घेरे में बसा है। शहरपनाह बहुत चौड़ी और ऊंची है, यदि मरम्मत अच्छी तरह रहे तो तोप के गोलों से हर्गिज़ उसको सदमा नहीं पहुंच सकता, जो गोला आवेगा उसी में रहजावेगा, पत्थर की दीवार से कच्ची दीवार का ढाहना बहुत मुशकिल है, बहुतेरी ऐसी जगह हैं जहां सख़्ती से नर्मी जियादः काम आती है। शहरपनाह के गिर्द खाई भी खुदी है, और झीलें इस तरह की हैं कि यदि उनके बंध काट देवे तो शहर से बारह कोसों तक पानी ही पानी हो जावे, दुश्मन की फ़ौज को कभी खड़े रहने की भी जगह न मिले। शहर के

बीच में पक्का किला है, उस में राजा रहता है। किले के गिर्द ऐसी चौड़ी खाई है, कि अच्छी खासी एक छोटी सी नदी मालूम होती है। भरथपुर से कोस आठ एक पर डीग में महाराज का बाग़ बहुत उमदा और लाइक़ देखने के है, मकान भी उस में अच्छे अच्छे बने हैं, और नहर फ़व्वारे और चादरें इफरात से हैं एक बारहदरी में जिसे मच्छी भवन कहते हैं, इतने फव्वारे लगे हैं, कि दर दीवार खंभे हर जगह से पानी निकलता है, और उनकी फुहार ऐसी उड़ती है कि जब सूरज उनके साम्हने रहता है तो उसकी किरणों से उस मकान के अंदर उन फुहारों मे दो इन्द्र धनुष बहुत रंगीन और चटकीले बन जाते हैं। राजा वहां का अभी बालक है इस कारन मुल्क का इन्तिज़ाम साहिब अजंट करते हैं। क़िला बयाने का भरथपुर के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता हुआ एक दिन के रस्ते पर प्रसिद्ध है, किसी समय में बहुत बड़ा शहर था, और आगरा आबाद होने के पहिले यही शहर उस सूबे की राजधानी था, बरन सिकन्दरलोदी ने उसे अपना पायतख़्त किया। क़िला पहाड़ पर मजबूत बना है, कुंड पानी के ऐसे गहरे हैं कि उन में घड़ियाल तैरते हैं, बीच से एक लाट पत्थर की खड़ी है उस पर कुछ पुराने हर्फ भी खुदे हुए हैं, और महलों के खंभे पर दो थापे पंजो के लगे हैं, वहां वाले बतलाते है कि जब बादशाही फौज का चढ़ाव हुआ तो रानियो ने जौहर किया, और यह एक रानी ने उस समय आप अपने लहू से थापे लगाए थे।—१९—अलवर अथवा माचेड़ी दक्षिण भरथपुर, और जयपुर और पश्चिम केवल जयपुर, बाकी दोनों तरफ़ मथुरा और गुड़गांवे के सरकारी जिलो से घिरा है। विस्तार इसका ३५०० मील मुरब्बा। जंगल पहाड़ बहुत हैं। वह इलाक़ा जिसे तवारीखों में मेवात

के नाम से लिखा है इसी अमल्दारी में आगया, केवल थोड़ा सा भरथपुर के राज में है। आमदनी अठारह लाख रुपया साल। कुछ न्यूनाधिक पैंतालीस बरस का अर्सा गुज़रता है कि वहां के राजा को यह जुनून सूझा कि जैसे मुसल्मानो ने किसी ज़माने मे हिन्दुओं को सताया था उसी तरह वह उनको सताने लगा, वहुत से मुसल्मान मुल्लाओं के नाक कान काटकर फीरोज़पुर के नव्वाव के पास भेज दिये, कबरें सारी खुदवाडालीं और हड्डियां गधों पर लदवाकर अपने इलाक़े से वाहर फिकवा दी, और मस्जिदे ढहाकर उनके पत्थरो पर तेल सेंदुर चढ़ा भैरव वना दिया। राजधानी अलवर २० अंश ४४ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ३२ कला पूर्व देशांतर मे एक पहाड़ के तले वसा है, और उस पहाड़ पर जो वहां से प्राय १२०० फुट ऊंचा होवेगा एक क़िला वना है।—२०—किशनगढ़ पूर्व और दक्षिण जयपुर, और उत्तर और पश्चिम जोधपुर और अजमेर के सरकारी जिले से घिरा हुआ है। विस्तार ७०० मील मुरब्बा। आमदनी तीन लाख रुपया साल। राजधानी किशनगढ २६ अंश ३७ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ४३ कला पूर्व देशांतर मे शहरपनाह के अन्दर वसा है।–२१–जोधपुर अथवा माड़वाड़ पूर्व जयपुर सरकारी जिला अजमेर का और उदयपुर से, दक्षिण उदयपुर सिरोही और वड़ोदे से, पश्चिम सिंध और जैसलमेर से, और उत्तर जैसलमेर और वीकानेरसे घिरा हुआहै। अनुमान अढ़ाई सौ मील लंवा और डेढ़ सौ मील चौड़ा और विस्तार में पैंतीस हज़ार मील मुरब्बा होवेगा। ज़मीन विलकुल रेगिस्तान है, कुए वहुत गहरे खोदने पड़ते हैं, तिसमें भी पानी खारा निकलता है। संस्कृत मे रेगिस्तान को जहां पानी न हो मरु-भूमि कहते हैं, इसी

कारन इस इलाक़े का नाम माड़वाड़ रहा। सीसे और संगमर्मर की खान है। आमदनी सत्तरह लाख रुपया साल। ऊंट और बैल अच्छे होते हैं, दो दो सौ रुपए तक की बैल की जोड़ी बिकती है, और ऊंटों को वहां अकसर हल में भी जोत देते हैं। आदमी वहां के अफ़यून बहुत खाते हैं, यहां तक कि पान इलायची की तरह अपने मुलाकातियों की तवाज़ो अफ़यून की गोलियों से करते हैं। राजधानी जोधपुर अनुमान ८०००० आदमी की बस्ती २६ अंश १८ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश पूर्व देशांतर में छ मील के घेरे में बसा है, क़िला बहुत मज़बूत है।—२२—बीकानेर दक्षिण जोधपुर, और जयपुर उत्तर बहावलपुर और पटियाला, पश्चिम जैसलमेर, और पूर्व सरकारी ज़िला हरियाने का। बीकानेर और जैसलमेर और बहावलपुर की अमल्दारीयों के बीचमें बड़ाभारी रेगिस्तान का मैदान पड़ा है, कि जिसके दर्मियान सैकड़ों कोसके घेरों में नाम को भी बस्ती नहीं मिलती, पानी के बदले मृगतृष्णा का जल, अथवा कहीं कहीं बड़े बड़े जंगली तरबूज़ होते हैं, उन्हीं से मुसाफ़िर लोग अपनी प्यास बुझा लेते हैं। क्या महिमा है सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की जहां देखने को भी बूंद भर पानी नहीं मिलता, वहां वालू में आप से आप ऐसे रसीले फल पैदाकर दिये हैं। धरती इन दोनों इलाक़ों की अर्थात् बीकानेर और जैसलमेर की रेतल है, सौ सौ दो दो सौ हाथ गहरे कूए खोदने पड़ते हैं। खेती ज्वार बाजरे के सिवाय और चीज़ों की बहुत कम, दरख़्तों का नाम नहीं, बाग कौन जानता है, करील फोक झड़बेरी और आक तो अलबत्ता दिखलाई देते हैं, नदी नाले क़सम खाने को भी इन इलाक़ों मे नहीं है। लंबान इसकी डेढ़ सौ मील से ऊपर और चौड़ान प्राय सवा सौ मील

विस्तार सत्तर हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी साढ़े छ लाख रुपया साल । राजधानी बीकानेर २७ अंश ५७ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश २ कला पूर्व देशांतर में शहरपनाह के अन्दर बसा है, बगल में क़िला भी ऊंचा और दीदारु बना है ।—२३—जैसलमेर पूर्व बीकानेर, पश्चिम सिंध, उत्तर बहावलपुर, दक्षिण जोधपुर । विस्तार बारह हज़ार मील मुरब्बा । इस में बीकानेर से भी बढ़कर रेगिस्तान और उजाड़ है । बस्ती फी मील मुरब्बा सात आदमी की भी नहीं पड़ती । आमदनी अनुमान एक लाख रुपया साल । राजधानी जैसलमेर २६ अंश ४३ कला उत्तर अक्षांस और ७० अंश ५४ कला पूर्व देशान्तर में बसा है । जोधपुर के रस्ते में गर्मियों के दर्मियान यहां से तीन मंजिल तक बिलकुल पानी नहीं मिलता, मुसाफिर लोग मशकें भरकर ऊंटों पर अपने साथ रख लेते हैं । ये ऊपर लिखे हुए पंदरहों इलाक़े अर्थात् सिरोही से जैसलमेर तक राजपुताने में गिने जाते हैं, और सब के सब अजमेर की अजण्टी के ताबे हैं ।–२४–बहावलपुर दक्षिण जैसलमेर और बीकानेर, उत्तर पंजाब के सरकारी जिले, पश्चिम सिंध, और पूर्व बीकानेर और पटियाला । यह इलाक़ा सतलज और सिन्धु के कनारे कनारे तीन सौ दस मील तक लम्बा चला गया है, और चौड़ान मे एक सौ दस मील है, विस्तार प्राय बीस हज़ार मील मुरब्बा होवेगा । नदियों के तटस्थ तो भूमि उपजाऊ है, पर दक्षिण की तरफ़ निरा बालू का मैदान उजाड़ पड़ा है । आमदनी अनुमान पंदरह लाख रुपया साल । नव्वाब के रहने की जगह बहावलपुर २९ अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७१ अंश २९ कला पूर्व देशांतर मे सतलज के बाएं कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अन्दर

प्राय बीस हज़ार आदमियों की बस्ती है। यहां सतलज को गर्रा पुकारते हैं। मकान इस शहर में कच्ची ईंटों के बहुत हैं, लुंगी और रेशमी खेस वहां अच्छे बनते हैं, ऊंट भी वहां के चालाक होते हैं बहावलपुर से ५० मील दक्षिण रेगिस्तान में देवरावल अथवा देरावल का मजबूत क़िला है, नव्वाब का खज़ाना उसी में रहता है। बहावलपुर से पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता अनुमान तीस मील के तफ़ावत पर पंजनद के बांए कनारे जो सतलज का चनाब के साथ मिलने पर वहां नाम पुकारते हैं ऊच का पुराना शहर बसा है।–२५– अम्बाले की अजएटी के ताबे रजवाड़े बहावलपुर के पूर्व। यह इलाक़े पश्चिम और दक्षिण तरफ़ कुछ दूर तक बीकानेर की अमल्दारी से मिले हैं, बाकी सब तरफ़ सरकारी ज़िलों से घिरे हैं। इन मे सब से बड़ा इलाक़ा महाराजे पटियाले का जो सिखों की क़ौम में है बहावलपुर की हद से लेकर पहाड़ों में शिमला की छावनी तक चला गया है, उसके बीच बीच में दूसरे इलाक़े इस ढब से आगए हैं लम्बान और चौड़ान अनुमान करना बहुत कठिन है, यदि बटिंडे से शिमला तक इस अमल्दारी को नापो तो १७५ मील होती है, परन्तु विस्तार उसका साढ़े चार हज़ार मील मुरब्बा से अधिक नहीं है। आमदनी बीस लाख रुपये साल की होवेगी। राजधानी पटियाला ३० अंश १६ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश २२ कला पूर्व देशांतर में कच्ची शहरपनाह के अन्दर बसा है, बीच में क़िला है, उसके अन्दर महाराज के रहने के महल अच्छे अच्छे बने हैं। शहर से पांच छ कोस के तफ़ावत पर बहादुर गढ़ का क़िला और उसमें महल जो महाराज ने अब बनवाए हैं देखने लायक़ हैं। बहावलपुर की हद की तरफ लुधियाने से ७५ मील नैर्ऋतकोन को

बटिंडे का क़िला रेगिस्तान के मैदान में बहुत मजबूत बना है, खजाना महाराज का उसी मे रहता है, इस के गिर्दनवाह को लखी—जंगल कहते है, घोडो की चराई के लिये वहां कोई चालीस कोस के घेरे में बहुत अच्छी जगह है। पटियाले से ३५ मील उत्तर सरहिंद जो बादशाही ज़माने मे एक बहुत बड़ा आबाद शहर था अब वीरान पड़ा है, खंडहर पुरानी इमारतों के दूर दूर तक दिखलाई देते हैं, पर बस्ती अच्छे क़सबे के बराबर भी नही है। इस अमल्दारी के दर्मियान शिमला की राह में पहाड़ों के नीचे कालका से दो कोस इधर पिंजौर के बीच औरंगजेब बादशाह के कोकाफिदाईखां का बाग बहुत नादिर बना है, वहां पहाड़ से जो पानी का सोता आता है उसी को उस बाग के फ़व्वारो का खज़ाना बना दिया है, निदान इस पहाड़ के पानी की बदौलत उस बाग मे सैकड़ों फव्वारे चादरें और नहरें आप से आप रात दिन जारी रहती हैं, कहीं हौज़ो के बीच मे बारहदरियां बनी हैं, और कहीं बारहदरियों के बीच मे हौज बने हैं। पिंज़ौर जगह बहुत रम्य और सुहावनी है, पर बर्सात मे वहां की हवा बिगड जाती है। बाक़ी रजवाड़े जिन के रईसों को अपने इलाक़े में दीवानी फौजदारी का इख़्तियार हासिल है, इस अजंटी मे नाभा जींद मालेरकोटला फरीदकोट ममदौत बूढ़िया छिछरौली और रायकोट हैं। विस्तार इन सब का डेढ़ सौ मील मुरब्बा से अधिक नही है। इन मे नाभा जींद और मालेरकोटला यह तीनों तो तीन तीन लाख रुपए साल की आमदनी के हैं और बाक़ी सब इलाके बहुत छोटे छोटे हैं। मालेरकोटला फरीदकोट और ममदौत मे मुसलमानों की अमल्दारी है, यह तीनों रईस नव्वाब कहलाते हैं। नाभा पटियाले से पंद्रह मील पश्चिम वायुकोन

को झुकता, जींद पटियाले से सत्तर मील दक्षिण, मालैरकोटला पटियाले से पैंतीस मील वायुकोन, फरीदकोट पटियाले से १०५ मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता, ममदौत पटियाले से १३० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता, बूढ़िया पटियाले से ६० मील पूर्व अग्निकोन को झुकता, छिछरौली पटियाले से ६० मील पूर्व और रायकोट पटियाले से ४० मील ईशानकोन को बसा है।—२६—कपूरथला अथवा सिखराजा आलूवालिये का इलाका सतलज और व्यासा के बीच चारों तरफ पंजाबके सरकारी ज़िलों से घिरा हुआ, आमदनी दो लाख रुपया साल, राजधानी कपूरथला ३१ अंश २१ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश २१ कला पूर्व देशांतर में व्यासा नदी के बांएं कनारे दस मील हटकर-बसा है।—२७—रुहेलों का रामपुर मुरादाबाद और बरेली के सरकारी जिलो से घिरा हुआ। बिस्तार सात सौ मील मुरब्बा। आमदनी दस लाख रुपया साल। रामपुर नव्वाब के रहने की जगह २८ अंश ४९ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ५२ कला पूर्व देशांतर में कौशिल्या नदी के बांएं कनारे बसाहै।—२८—मनीपुर ब्रह्मपुत्र के पार हिन्दुस्तान की पूर्वहद पर है। पश्चिम और उत्तर सिलहट और आशाम के सरकारी ज़िलों से, और पूर्व और दक्षिण बर्म्हा की अमलदारी से मिला हुआ है। बिस्तार साढ़े सात हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी लाख रुपए साल से कम है। मुल्क जंगल पहाड़ों से भरा हुआ है, और पहाड़ चार हज़ार फुट तक ऊंचे हैं। लोहे की खान है। आदमी वहां के खसिये जिनकी सूरत और बोली भोटियों से मिलती है प्राय जंगली से हैं। नागे वहां बहुत बसते हैं, देवी के उपासक हैं, और आदमी का बल देते हैं। राजधानी मनीपुर २४ अंश २० कला उत्तर अक्षांस और ९४

अंश ३० कला पूर्व देशांतर में उसी नाम की नदी के दहने कनारे बसा है। इसे अंगरेज़ कसाइयों का मुल्क कहते हैं क्योंकि बम्हीवाले उन्हें काशी पुकारते हैं और बंगाली उन्हें मघालु कहते हैं, पर वे अपना नाम मोइते बतलाते हैं ॥

अब इस से आगे नर्मदा पार दक्षिण के इलाके लिखे जाते हैं—१-हैदराबाद, यह बड़ा इलाक़ा तापी नदी से लेकर जहां वह संधिया की अमलदारी से मिलता है दक्षिण मे तुङ्गभद्रा और कृष्णा नदी तक चला गया है। ईशानकोन की तरफ वरदा नदी प्राणहत्या में और प्राणहत्या गोदावरी में मिलकर इस इलाके को नागपुर के इलाके से जुदा करती है, और बाक़ी सब तरफ वह बंगाल बम्बई और मंदराज हाते के सरकारी जिलों से घिरा हुआ है। जिस जमीन का नाम संस्कृत मे तैलंग देश है वह बहुत सी इस इलाक़े के अन्दर आ गई है। यह इलाक़ा २८० मील लंबा और ११० मील चौड़ा और प्राय लाख मील मुरब्बा विस्तार रखता है। बादशाही अमलदारी मे यह एक सूबा गिना जाता था, पर अब उसकी हदों मे बड़ा फ़र्क़ पड गया क्योंकि बिदर और औरंगाबाद के सूबों के हिस्से भी दाखिल हो गये हैं। जमीन बलद उपजाऊ और पहाड़ी है, पर पहाड़ ऊंचा कोई नहीं, हवा मोतदिल, बेइंतिज़ामी के सबब जमींदार कंगले, और जमीन बहुधा परती, जहां किसी समय में सुंदर नगर बस्ते थे वहां अब गीदड़ रोते है। मुल्क डेढ़ करोड़ रुपये से ऊपर का है, पर इंतिजाम अच्छा न होने के सबब नव्वाब के ख़जाने में अब इसका आधा रुपया भी नहीं आता। वहां के नव्वाब के पास एक पलटन औरतों की है, नाम उसका ज़फ़रपल्टन, वरदी और क़वाइद अंगरेजी पल्टन के सिपाहियों की सी, तन-

ख़ाह पांच पांच रुपया महीना । ये औरतें जो सिपाहियो का काम करती हैं, गारदनी कहलाती हैं । सन् १७९५ में जब वहां के नव्वाब ने दौलतराव सेंधिया से लड़कर शिकस्त खाई थी, तो उस लड़ाई मे करदला के मैदान के दरमियान दो पलटनें इन गारदनियों की मामा वर्ख़न और मामा चंबेली के जेर हुक्म उसके साथ थीं, और बहरसूरत वह नव्वाब के सिपाहियों से कुछ बुरा नहीं लड़ीं । राजधानी हैदराबाद अथवा भागनगर १७ अंश १५ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ३५ कला पूर्व देशांतर में मूसा नदी के दहिने कनारे जिस पर पक्का पुल बना हुआ है पक्की शहर पनाह के अन्दर चार मील लंबा तीन मील चौड़ा बसा है । रस्ते तंग और फर्श भी उन में बुरा, बस्ती उस मे अनुमान दो लाख आदमियो की है । नव्वाब के महल और कई एक मस्जिदें देखने लायक़ हैं । छ मील पश्चिम एक पहाड़ पर गोल कुंडे का प्रसिद्ध मज़बूत किला है, वहां नव्वाब का खज़ाना रहता है । तीन मील उत्तर सिकन्दराबाद मे सरकारी फौज की बहुत बड़ी छावनी है, कि जो नव्वाब की हिफ़ाज़त के वास्ते बमूजिब अहदनामों के वहां रहती है, ख़र्च उस का नव्वाब देता है और उस के सहज में वसूल हो जाने के वास्ते बराड़ का इलाका अपनी अमलदारी के वायुकोन में सरकार के सिपुर्द कर दिया है । सरकार की तरफ से एक साहिब रज़ीडंट उस दरबार के वास्ते मुकर्रर है । हैदराबाद के वायुकोन की तरफ प्राय तीन सौ मील के फासिले पर औरंगाबाद का शहर, जो मुसल्मानों की बादशाहत में उस नाम के सूबे का राजधानी था, और फिर बहुत दिन तक हैदराबाद के नव्वाब का भी राजधानी रहा, अब वीरान सा होगया, अब और बेरौनक पड़ा है । साठ हजार आ-

दमी से अधिक नहीं बसते पुराना नाम उस का गर्क है, पहाड़ से काटकर शहर में पानी की नहर लाये हैं, हर तरफ साफ पानी से भरे हुए हौज़ और उन मे फव्वारे छुट रहे हैं, बाजार लम्बा चौड़ा, औरंगजेब के महल खंड़हर, एक तरफ को उसकी बेटी का मक़बरा संगमर्मर के गुम्बज का और एक फक़ीर की कबर है, उसमें बहुत से हौज़ चादरें और फव्वारे बने हुए हैं। औरंगाबाद से सात मील वायुकोन को दौलताबाद का मशहूर किला है, यह किला महादेव की पिंडी की तरह एक खड़े पहाड़ पर बना है, प्रायः ५०० फुट वहां से ऊंचा और चारों तरफ़ से बेलाग है, उस पहाड़ का अधोभाग प्राय एक तिहाई तक छील छील कर दीवार की तरह सीधा कर दिया है, राह चढ़ने की उस पर क़िसी तरफ भी नही, पहाड़ के गिर्द खाई है, और फिर खाई के गिर्द तिहरी दीवार, उन तीनों दीवारों के बाहर शहर बसता है, और शहर के बाहर फिर शहरपनाह है, क़िले के अन्दर जाने के लिये सुरंग की तरह पहाड़ के अन्दर ही अन्दर पत्थर काटकर सीढ़ियां बनाई हैं, जैसे किसी मीनार पर चढ़ते हैं उसी तरह उसमें भी मशाल बालकर जाना होता है, पहले तो वह रास्ता ऐसा तंग है कि आदमी को झुककर दुहरा हो जाना पड़ता है, पर फिर तीन गज़ चौड़ा और तीन गज़ ऊंचा है. बीच बीच में एक आदमी के जाने लाइक़ जीने काटकर पानी लाने के लिये खाई तक रस्ते बना दिये हैं, जखीरे रखने के वास्ते बड़े बड़े तहख़ाने बने हैं, और फिर जहां वह रास्ता पूरा उसके मुंह पर एक बड़ा भारी लोहे का तवा रखा है, कि यदि शत्रु इस रास्ते में भी आ घुसे तो उस तवे को उसके मुंह पर डालकर आग फूंक दें. जिस में मारे गर्मी के वह उसी रास्ते मे भुनकर कबाब हो जावे, क़िले के

अन्दर एक मीनार १६० फुट ऊंचा बना है, पहाड़ की चोटी पर जहां नव्वाब का निशान खड़ा है एक तोप पीतल की १८ फुट लंबी बारह सेर के गोलेवाली रखी है, क़िले के अन्दर कई एक पानी के कुण्ड हैं, मालूम नहीं कि यह किला किस ज़माने में और किस ने बनाया, पर जब पहाड़ छीलने और सुरंग काटने की मिहनत पर खयाल करते है, तो अक़्ल भी हैरान सी रह जाती है, लड़कर इस क़िले को फतह करना कठिन है, केवल किलेवालों की रसद बन्द करने से हाथ आ सकता है। पहले इस जगह का नाम देवगढ था, चौदहवीं सदी के शुरू में मुहम्मद तुगलक़शाह दिल्ली उजाड़कर वहां वालों को देवगढ़ में बसाने के लिये ले गया था, और उसका नाम दौलताबाद रखकर अपनी राजधानी मुकर्रर किया, पर फिर अन्त में उसे दिल्ली ही को आना पड़ा। दौलताबाद से सात मील वायु· कोन को इल्लूरू गांव के पास, जिसे अंगरेज लोग इलोरा कहते हैं, और किसी समय में संगीन शहरपनाह के अन्दर अच्छा खासा श· हर बसता था, कोई एक मील लम्बे अर्धचन्द्राकार पहाड़ को काटकर महा अद्भुत मन्दिर बनाए हैं। पहाड़ में काटे हुए जिन सब मंदिरों का वर्णन इस पुस्तक में हुआ है ये इल्लूरूवाले मन्दिर उन सब से अधिक उत्तम हैं, उनकी खूबी देखने ही से समझ में आ सकती है, इस जगह केवल कैलास जिसमें निहायत उमदा काम किया है, और बड़े मंदिर का बिस्तार मात्र लिख देते हैं ........ .. फुट

कैलास का दर्वाज़ा ऊंचा.... ........ .. .. ..............१४

रास्ता दर्वाज़े के अन्दर जिसमें दुतरफ़ा मकान बने हैं लम्बा· ....४२

भीतर का चौक........लम्बा.. ............ .............. . २४७

चौड़ा .... .... ...................................................१५०

बड़ा मंदिर दर्वाजे से पिछली दीवार तक लम्बा ... ... ....१०३
चौड़ा ......... .. ... ........ .. .......... .....६१
ऊंचा... .. .. ... ........ .......... ..... .. ...... ... १८

आदिनाथसभा जगन्नाथसभा परशुरामसभा इन्द्रसभा लंका तीनलोक नीलकण्ठ दुग्धधर जनवासा रावन की खाई इत्यादि और सब मन्दिरो में भी इन दोनो के सिवाय निहायत वारीकी और कारीगरी के साथ तरह तरह की मूर्तें और सुन्दर सुन्दर सूरतें वनाई हैं, और तमाशा यह कि ये सारे मन्दिर एक उसी पत्थर के पहाड़ को काटकर निकाले हैं वड़ा आश्चर्य्य वहां इस वात से आता है कि उत्तर तरफ के मंदिर तो जैन और दक्षिण के वौध और वीचवाले शैनमत के वने है। विश्वकर्मा की सभा मे एक वहुत वडी वुध की मूर्ति रखी है, वहांवाले उसे विश्वकर्मा वतलाते है, कैलास मे मध्य महादेव का लिग है, वाक़ी चारो तरफ और सव देवता हैं, जैन मंदिर मे नंगी मूर्त्ति दिगम्वरी आमनाय वालो की वनी हैं। वरसात मे जव पहाड़ों से झरने झरते हैं, और कुण्ड सव भर जाते हैं, तो यह जगह वड़ी वहार दिखलाती है। मालूम नहीं कि यह मंदिर किसने और किस समय मे वनाये थे, पर वडा ही रुपया खर्च पड़ा होगा। दौलतावाद से छ मील इल्लूरू के रास्ते में ४५० फुट ऊंचे उसी पहाड के घाटे पर जिस्मे मंदिर काटे है शहरपनाह के अन्दर रौजा नाम एक वस्ती है, यद्यपि अव वीरानी पर है तो भी स्थान सुहावना है, वहां सय्यद जैनुलआविदीन और औरंगजेव वादशाह की क़वरें है, सिवाय इन के और भी जियारतगाहें कई है। हैदरावाद से ७३ मील वायुकोन को ग्वाड और शहरपनाह के अन्दर जिसका दौर छ मील होवेगा विदर का

पुराना शहर बसा है । बादशाही अमल्दारी में उसके साथ उसी नाम का एक सूबा गिना जाता था और शास्त्रों में उसका नाम विदर्भ लिखा है, पर बहुत लोग नागपुर को विदर्भ मानते हैं। वहां के हुक्के रकाबी आबखोरे इत्यादि रूप जस्त के प्रसिद्ध हैं, और उस शहर के नाम से बिदरी कहलाते हैं । अमीर बरीद का मक़बरा वहां देखने लाइक़ है । हैदराबाद से १३५ मील उत्तर वायुकोन को झुकता गोदावरी के बांएं कनारे नांदेड में, जो किसी समय उस नाम के सूबे की राजधानी था, सिख लोगों का तीर्थ है। गुरु गोविंदसिंह उसी जगह मारा गया था। औरंगाबाद के उत्तर ईशानकोन को झुकता हुआ तिरपन मील पर अजन्ती अथवा अजयंती के घाटे के पास पहाड़ खोद कर गुफा के तौर किसी जमाने के मंदिर बने हुए हैं, देखने लाइक़ हैं। अजंती से पच्चीस मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ असाई अथवा असूस्ये का गांव है, वहां सन् १८०३ में जनरल विलिज़ली ने ४५०० सिपाहियों से महाराजे नागपुर और दौलतराव सेंधिया दोनों की इकट्ठी फौज को जो ३०००० से कम न थी शिक़स्त दी थी।—२—मैसूर, हैदराबाद के दक्षिण, चारों तरफ़ सरकारी ज़िलों से घिरा हुआ २०० मील लंबा और १५० मील चौड़ा विस्तार में सैंतीस हज़ार मील मुरब्बा है। यह इलाक़ा पूर्व और पश्चिम दोनों घाटों के बीच समुद्र से बहुत ऊंचा चबूतरे की तरह पड़ा है। जो कोई उस इलाक़े में जाना चाहे, पहले उसे घाटों पर चढ़ना होगा, पर सब जगह से बराबर बहाढाल नहीं है, कहीं १८०० फुट कहीं २००० कहीं २५०० कहीं इससे भी न्यूनाधिक ऊंचा है, और फिर इस बलंदी पर भी ऊंचे ऊंचे पहाड़ हैं, शिवगंगा का पहाड जो सबसे बड़ा है ४६०० फुट ऊंचा

है। इसी ऊंचाई के कारण यहां की आबहवा बहुत अच्छी है, और मौसिम एतिदाल के साथ रहता है, बरन सदा बहार है। जंगल भी बड़े बड़े हैं, बहुधा खजूर के। धरती अकसर लाल और पथरीली। लोहे की खान है। दीमक बहुत होते हैं, यहां तक कि घर में तसवीर लगाओ और थोड़े ही दिनों उसकी खबर न लो तो केवल शीशा ही दीवार मे चिपका रहजायगा, कागज और चौकठा बिलकुल नदारद, पर ऊंचे पहाड़ों पर नहीं होते। वहां के हिन्दू दान देने से दान लेने में अधिक पुण्य समझते हैं, यहां तक कि जब बीमार होते हैं, तो कितने ही मन्नत मानते हैं, कि जो अच्छे होजांय तो इतने दिन भीख की रोटी खाकर जीयें, और जब किसी से गांव में तकरार होजाती है तो गधा मारकार रास्ते मे डाल देते हैं, उसी दिन वह सारा गांव वीरान होजाता है, यदि वह गधा मारने वाला भी उसी गांव में रहता हो तो उसे भी अपना घर छोड़ना पड़ेगा, क्योंकि वहांवाले जिस गांव में गधा मारा जाय फिर उस्मे नहीं बस्ते। आमदनी इस इलाक़े की सत्तर लाख रुपया साल है। राजधानी मैसूर, जिसका शुद्ध नाम महिशासुर अथवा महिशुर बतलाते हैं, १२ अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ४२ कला पूर्व देशांतर में लाल मिट्टी की शहरपनाह के अन्दर बसा है। क़िला अंगरेजी तौर का बहुत बड़ा बना है, और उसी के अन्दर राजा के महल हैं। थोड़े ही फासिले से एक ऊंची ज़मीन पर एजंटी का मकान है। किले के पास से पहाड़ तक जो शहर से पांच मील पर १००० फुट का ऊंचा होवेगा एक बड़ा तालाब है और उस पहाड़ की चोटी पर साहिब एजंटने एक बंगला बनवाया है. यहां से बहुत दूर दूर तक की सैर दिखलाई देती है, पहाड़ की बगल में सान्द

फुट ऊंचा एक पत्थर का नन्दी बहुत उमदा बना है। राजा के यहां हाथियों के रथ है, एक उन में इतना बड़ा जिस में दो सौ आदमी सवार होते हैं, सड़कें वहां की बहुत चौड़ी हैं। मैसूर से नौ मील उत्तर कावेरी के टापू में श्रीरंगपट्टन जो टीपूसुलतान के वक़्त में उस मुल्क की राजधानी था शहरपनाह के अन्दर बसा है, पास ही एक बाग में टीपू और उसके बाप हैदरअली का मक़बरा संगमूसा का बना है, उसके महल शहर के अंदर जो अब टूटे फूटे पड़े हैं, कुछ देखने योग्य नहीं हैं बाज़ार सीधा और चौड़ा है, पर गलियां ख़राब, श्रीरंगनाथ जी का मंदिर और बड़ी मसजिद देखने लायक है, दो पुल निरे पत्थर के कावेरी की दोनों धारा में बने हैं, दोनों हिन्दुस्तानी डौल पर हैं, मिहराब किसी मे नहीं, एकही एक पत्थरके चौखुंटे खंभे तराश कर पानी मे खूब मज़बूती के साथ खड़े करदिये हैं, और फिर उनपर पत्थर की सिला पाट दी है, उत्तर की धारा मे जो पुल बना है उस में सरसठ सरसठ खंभों की तीन क़तार खड़ी हैं, और दक्षिण धारावाले पुलपर से पानी की नहर भी आई है। बंगलूर का शहर श्रीरंगपट्टन से सत्तर मील ईशानकोन की तरफ समुद्र से ३००० फुट ऊंचा लाल मिट्टी की शहरपनाह के अन्दर बसा है। बाजार चौड़ा दुतरफा नारियल के दरख़्त लगे हुए, किला बहुत मज़बूत, खाई गहरी पहाड़ में कटी हुई, कोस एक पर सरकारी फौज की छावनी है। साहिब अजण्ट वा कामिश्नर के रहने का यही सदर मुक़ाम है। बंगलूर से ३६ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता चिकाबालापुर है, कि जहां मिसरी और कन्द निहायत उमदा बनता है, पर मंहगा बहुत चिकाबालापुर से अनुमान अस्सी मील वायुकोन को चितलदुर्ग अथवा

चित्रदुर्ग का क़िला, जिसे वहां वाले सीतलदुर्ग भी कहते हैं, पहाड़ों के झुण्ड पर जो ८०० फुट तक ऊंचे हैं बहुत मज़बूत बना है, दीवार के अन्दर दीवारें और दरवाज़ों के अन्दर दरवाज़े कोई ऐसी जगह बिना रोके नहीं छोड़ी जिधर से दुश्मन हल्ला कर सके, पानी इफ़रात से, फौज इस में सरकारी रहती है। इस गिर्दनवाह में भी लोग बंगाले की तरह चरख पूजा करते हैं, अर्थात् अपनी पीठ लोहे की हुक से छेदकर महादेव के साम्हने बांस में लटकते और चर्खी की तरह घूमते हैं। बंगलर से बीस मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता सुवर्ण दुर्ग एक पाव कोस ऊंचे खड़े पहाड़ पर बहुत मज़बूत क़िला बना है। मैसूर से ४० मील ईशानकोन को, जिस जगह कावेरी दो धारा होकर शिवसमुद्र अथवा सीवनसमुद्र का टापू बनाती है, जिस पर किसी समय में गंगपारा अथवा गोंगगोदपुर का शहर बसता था, उसका जल सौ फुट से लेकर दो सौ फुट तक के ऊंचे पत्थरों से कई धारा होकर इस जोर शोर के साथ चद्दरों की तरह नीचे गिरता है कि जब उसके आस पास के मनोहर जंगल पहाड़ों पर और उस स्थान के निर्जल एकान्त होने पर नज़र करो विशेष करके बरसात के दिनों में तो शायद ऐसी रम्य और सुहावनी दूसरी जगह दुनियां में मुश्किल से मिलेगी। हमने यह इलाका मैसूर का रजवाड़ों में इसलिये लिखा है कि आमदनी वहां की सरकारी खज़ाने में नहीं आती, हुकूमत का खर्च काटकर बिलकुल वहां के राजा को दे दी जाती है, पर इतना याद रखना चाहिये कि राजा को मुल्क के बन्दोबस्त में कुछ भी इख़्तियार नहीं है, यह काम साहिब कमिश्नर और उनके असिस्टेंटों के सिपुर्द है, एजण्टी और कमिश्नरी दोनों काम एक ही साहिब करते हैं, और कुर्ग का

इलाक़ा भी जो मैसूर और कानडे के बीच में पड़ा है, और वहां के राजा की सर्कशी के सबब सरकार की ज़ब्ती में आ गया, इसी कमिश्नर के ताबे है, वहां मरकाडे में जो समुद्र से ४५०० फुट ऊंचा है, उसका एक असिस्टेंट रहता है। कुडग सारा जंगल पहाड़ों से भरा है, और वहांवालों का चलन मलवारियों से बहुत मिलता है।–३–कोच्ची अथवा कच्छी, जिसे अंगरेज़ लोग कोचीन कहते हैं, मैसूर के दक्षिण। उस के पश्चिम को समुद्र है, और दक्षिण को त्रिवाङ्कोड्ड की अमलदारी से मिला है, बाक़ी दोनों तरफ़ सरकारी ज़िले हैं। विस्तार उसका प्राय दो हज़ार मील मुरब्बा। पहाड़ों की जड़ में तो ताड़ केले और आम के पेड़ों में ज़मींदारों के घर हैं, और ऊपर बड़ेबड़े भारी दरख़्तों के जंगल हैं। ईसाई और यहूदी इस इलाक़े में बहुत रहते हैं यहां तक कि गांव के गाव उन्हीं के बस्ते हैं। उस तरफ़ के बेवक़ूफ़ लोग कोच्ची और त्रिवाङ्कोडूके आदमियोंको जादूगर ख़याल करते है। आमदनी वहां की प्राय पांच लाख रुपया साल। राजधानी कोच्ची जिसका ज़िकर मलबार के ज़िले में हुआ है सरकार के क़ब्जे में है। –४–त्रिवाङ्कोडू अथवा तिरुवनंतपुर। उत्तर उस के कोच्ची दक्षिण और पश्चिम को समुद्र, पूर्व की तरफ़ सरकारी ज़िले मथुरा और तिरुनेल्लूवालि के। लंबान अनुमान १४० मील और चौड़ान ४० मील। विस्तार पांच हज़ार मील मुरब्बा है। पहाड़ों पर बड़े भारी जंगल हैं, पानी की इफ़रात से खेतों में अन्न बहुत पैदा होता है, और सब्ज़ा हर तरफ़ दिखलाई देता है। चाल यहां की मलयालवालों से बहुत मिलती है, स्त्री बिलकुल मालिक रहती हैं, खाविंद का इख़्तियार कुछ भी नहीं। मनुष्य यहां के बहुधा झूठे और बदकार। प्राय लाख आदमियों के उस इलाक़े में क्रिस्तान

हैं। आमदनी चालीस लाख रुपया साल। इस इलाके में खारे पानी के दर्मियान एक जानवर जलचर सील की किस्म से और ऊदबिलाव से मिलता हुआ चार फुट लंबा मुंह गोल कान छोटे गर्दन मोटी पैर के पंजे बतक की तरह जुड़े हुए बाल तेलिये बदन और दुम मछली की तरह होता है, शायद लोगों ने उसी को देखकर कहानियों में जलमानसों की बात बनाली। राजधानी त्रिविंद्रम् ८ अंश ९ कला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ३७ कला पूर्व देशांतर में बसा है, उसी में राजा के रहने का किला और मकान अंगरेजी तौर का और रजीडंटी है।—५—कोलापुर हैदराबाद के पश्चिम। चारों तरफ सरकारी जिलों से घिरा और उन के साथ ऐसा मिला हुआ कि उसका लंबान चौड़ान बतलाना कठिन है। विस्तार साढ़े तीन हज़ार मील मुरब्बा है। यह इलाक़ा कुछ तो घाट के पहाड़ों में है और कुछ घाट से नीचे। आमदनी पंदरह लाख रुपया साल है। राजधानी कोलापुर १६ अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश २५ कला पूर्व देशांतर में पहाड़ों के बीच एक नदी के समीप बसा है। क़िला कुछ मज़बूत नहीं है, लेकिन शहर से दस मील के तफावत पर वायुकोन को पवनगढ़ और पिनौलगढ़ के क़िले ३०० फुट ऊंचे पहाड़ के ऊपर अलबत्ता मज़बूत बने हैं. पिनौलगढ़ साढ़े तीन मील के घेरे से कम नहीं है।–६–सावंतवाड़ी कोलापुर के नैर्ऋतकोन. की तरफ और गोवे के उत्तर, पश्चिम घाट और समुद्र के बीच में, साथ हज़ार मील मुरब्बा का विस्तार रखता है। धरती बीहड़ पहाड़ी और ऊसर, जंगल बहुत, खेतियां हलकी. आमदनी दो लाख रुपया साल है। राजधानी वाड़ी १५ अंश ५३ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश पूर्व देशांतर में बसा है, पर राजा के

नालाइक होने के सबब इंतिजाम इस इलाक़े का बिलफैल सरकार करती है, जो कुछ रुपया हुकूमत के खर्च से बचता है वह राजा को मिलता है ॥

सिवाय सरकारी और हिंदुस्तानी अमल्दारियों के जिनका ऊपर वर्णन हुआ कुछ थोड़ी थोड़ी सी जमीन इस हिंदुस्तान में फरासीस डेनमार्क और पुर्टगाल के बादशाहों के दखल में है। फरासीस के दखल में पटुच्चेरी कारीकाल और चंदरनगर है। पटुच्चेरी का सुंदर शहर जिसे अंगरेज पांडिचेरी कहते हैं दक्षिण में पालार और कावेरी के मुहानों के बीच समुद्र के तट पर ११ अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ५१ कला पूर्व देशांतर में मंदराज से ८५ मील एक बालू के मैदान के दर्मियान बसा है, और कारीकाल १० अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ४४ कला पूर्व देशांतर में मंदराज से १५० मील दक्षिण तंजाउरु के पूर्व ईशान कोन को जरा झुकता हुआ समुद्र के तट कावेरी के मुहाने पर है, और चन्दरनगर बंगाले से २२ अंश ५१ कला उत्तर अक्षांस और ८८ अंश २९ कला पूर्व देशांतर में कलकत्ते से बीस मील उत्तर गंगा के दहने कनारे पर पड़ा है। पटुच्चेरी फरासीसियों ने सन् १६७४ में वहां के हाकिम से मोल लिया था, और चन्दरनगर सन् १६८८ मे औरंगजेब से उन्हें मिला था। ९२ गांव पटुच्चेरी के साथ हैं, और १०७ गांव कारीकाल के इलाक़े में, और कुछ थोड़े से गांव चंदरनगर के भी आस पास हैं, सिवाय इस के कुछ थोड़ी थोड़ी जमीने और भी चार पांच शहरों में हैं। आमदनी इन सब की सन् १८३८ में ३७९६६३ रुपये साल की हुई थी, और आदमी इस अमल्दारी के अन्दर सन् १८४० मे कुछ ऊपर एक लाख सत्तर हजार गिने

गये थे, उन की हिफाज़त के वास्ते दो कम्पनी सिपाहियो की मुक़र्रर हैं। गवर्नर फरासीसियों का पदुच्चेरी में रहता है। वहां सूत कातने की एक कल फरासीस से बहुत अच्छी आई है, उस्से बहुत गरीबों का गुज़ारा होता है। सिवाय इसके वहांवालो ने एक कारखाना ऐसा मुक़र्रर किया है, कि उसमें जो मुहताज क्रिस्तान उस जगह का जाकर मिहनत करे उसे खाने को मिलता है, और दो चार पैसे भी रोज दिये जाते हैं, फिर जब वे चीज़े जो उन से बनाते हैं बिक जाती हैं, तो उनका फायदा रुपये में बारह आना उन्हीं लोगो को मिलताहै, और बीमारी में भी उनकी खबर ली जाती है, निदान इस कारखाने की बदौलत बहुतेरे आदमी भीख मांगने से बचते हैं, और हलाल की रोटी खाते हैं यदि और शहरो के लोग भी मिलकर ऐसे कार-खाने खड़े करें तो दीन दुखियो का क्या ही उपकार हो॥

डेनमार्क के बादशाह के दखल मे तिरकम्बाडी कारीकाल से ६ मील उत्तर समुद्र के तट कावेरी की एक धारा के मुहाने पर १० अंश ६७ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ५४ कला पूर्व देशां-तर में मंदराज से १४५ मील दक्षिण तेरह गाव के साथ है। आदमी उस में सन् १८३५ मे २३१८३५ गिने गये थे। अठारह बीस बीघे ज़मीन इस बादशाह की बलेश्वर में भी है॥ पुर्टगालवाले बादशाह के दखल मे गोवे का इलाक़ा सावंतवाडी के दक्षिण और कानड़ा के उत्तर पश्चिमघाट और समुद्रके बीच मे ६३ मील लम्बा और १६ से ३१ मील तक चौड़ा है। आमदनी वहां की सब मिलाकर नौ लाख रुपया साल है। राजधानी पुरानी अर्थात् गोवा जो १५ अंश ३० कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश २ कला पूर्व दे-शांतर में बम्बई से २५० मील दक्षिण अग्निकोण को झुकता बसा

था अब बिलकुल बे रौनक और वीरान सा पड़ा है, गवर्नर पुर्टगीज़ों का गोवे से ५ मील पश्चिम समुद्र के तट पर पंजिम में रहता है, और अब वही उस इलाक़े की राजधानी हो गया है, वहां किवाड़ों मे शीशे की जगह सीप लगाते हैं, और पालकी की जगह पहाड़ियों की तरह बांस मे झोली बांधकर उसी में बैठते हैं, और उसको दो आदमी सिर पर उठाते हैं, नाम इस सवारी का डराडी है ॥

निदान इस भारतवर्ष में जो सब देश प्रदेश और नदी पर्वत हैं थोड़ा बहुत उन सब का वर्णन हो चुका, यदि उन्हें किसी नक़शे में देखो तो साफ़ नज़र पड़ जायगा कि ऊपर ( १ ) अर्थात् उत्तर मे सिंधु नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र तक बराबर हिमालय पहाड़ की श्रेणी चली गई है जिस में उत्तर खण्ड के सुन्दर ठंढे और अतिरम्य मनोहर मुल्क बस्ते हैं। शास्त्र में भी उसकी बड़ी प्रशंसा की है, उदासीन जनो के चित्त को उस से अधिक प्यारा दूसरा कोई स्थान नहीं है। इन पहाड़ों की जड़ में कोई तीस चालीस मील चौड़ा बड़े भारी घने जंगलों से घिरा हुआ वह स्थान है। जिसे तराई कहते हैं, गर्मी और बरसात में इस तराई की हवा विशेष करके नयपाल से नीचे नीचे ऐसी बिगड़ जाती है कि बहुधा पशु पक्षी भी अपनी जान बचाने के लिये वहां से निकल भागते हैं। बांएं हाथ अर्थात् पश्चिम जो जोधपुर जैसलमेर बीकानेर और सिंध और बहावलपुर के वे हिस्से जो सतलज और सिंधु के कनारों से दूर हैं

( १ ) अंगरेज़ी क़ाइदे बमूजिब नक़शे पर हर्फ़ सदा उसकी उत्तर अलंग ऊपर रखकर लिखते हैं, इसलिये जब नक़शे को दीवार में सीधा लटकाओगे उस की उत्तर अलंग ऊपर और दक्षिण नीचे होगी, और पूर्व दहने और पश्चिम बांए हाथ पड़ेगी ॥

रेगिस्तान के पटपर मैदान में वसे है, जहां पानी भी कम और तृण वीरुध का भी अभाव, जिधर देखो समुद्र की लहरों की तरह वालू के टीले दिखलाई देते हैं। जव गर्मियों मे लुएं चलती हैं और आंधियां आती हैं, और वह वालू गर्म होकर हवा में उडती है, तो मानो वदन पर छर्रे वरसने लगते है, देखते ही देखते वे टीले उड़ कर एक जगह से दूसरी जगह इकट्ठा होजाते हैं, अकसर आदमी इस तरह के खतरे में आए हैं, और रेत के नीचे दवकर मर गये है। वहां सिवाय ऊंट के और किसी भी सवारीका गुज़र नहीं होसकता, वहुधा मुसाफिर लोग रात को तारो के निशान से चलते हैं, नहीं तो रेगिस्तान में सडक पगडंडी वस्ती पेड़ इत्यादि चीजों का आसरा और पता कुछ भी नहीं मिलता, केवल कहीं कहीं फोक झड़वेरी आक और करील अवश्य नजर पड़जाते हैं। अरवली पहाड़, जो सिरोही और जोधपुर को उदयपुर सरकारी जिले अजमेर और किशनगढ़ से जुदा करता शेखावाटी और अलवर की अमलदारी में होता हुआ दिल्ली के पास जमना के कनारे तक चला गया है, इस मरु देश की पूर्व सीमा है। दहने हाथ अर्थात् पूर्व की तरफ सूवे वंगाला समुद्र और हिमालय के वीच सीधा वट्टाढाल, जिस्मे पहाड तो क्या कहीं पत्थर का रोड़ा भी देखने को नहीं मिलता, नदियों की वहुतायत से ऐसा सेराव है कि वरसात में प्राय आधे से अधिक जलमग्न होजाता है। आवादी वहुत, धरती उपजाऊ परले सिरे की, धान हरतरफ लहलहाते हैं, । पूर्व भाग में वर्म्हा की सरहद पर ऐसे सघन और अगम्य जगल पड़े है, कि जैसा उत्तर में इस देश को हिमालय से वचाव है वैसा ही इधर इन जंगलों की मानों दीवार खड़ी है. शत्रु उस राह से कदापि नहीं आ सकता। निदान यह वं-

गाले का मैदान नदियों से सिंचा हुआ गंगा के दोनों तरफ हिमालय और विंध के बीच हरिद्वार तक चला गया है, और गंगा यमुना के बीच जो देश पड़ा है उसे अन्तरवेद और दुआबा भी कहते हैं, और यही दो चार सूबे अर्थात् दिल्ली आगरा अवध और इलाहाबाद यथार्थ मध्यदेश अर्थात् असली हिंदुस्तान है। वायूकोन में सिखों का मुल्क पंजाब है, जिसके पांचो दुआवे जिन जिन नदियों के बीच में पड़े हैं उन दोनो नदियों के नाम के हर्फों से पुकारे जाते हैं, जैसे व्यासा और सतलज के बीच में दुआबैवस्तजालन्धर, व्यासा और रावी के बीच में दुआवैबारी, रावी और चनाव के बीच में दुआवै रचना, झेलम और चनाब के बीच मे दुआवैजच, और झेलम और सिंधु के बीच सिंधुसागर दुआव। मध्य मे विन्ध्याचल के तटस्थ नर्मदा और शोण के कनारों पर, और फिर शोण के कनारे से सूबै उड़ेसा और नागपुर की अमलदारी के बीच गोदावरी तक, वे सब जंगल और झाड़ झंखाड़ और उजाड़ हैं जिनमें झील गोंद धांगड़ कोल चुवाड़ और संठाल इत्यादि असभ्य अर्धवनमानस तुल्य प्राय जंगली मनुष्य बसते हैं। नीचे नर्म्मदा पार दक्षिणदेश पूर्व और पश्चिम घाटों के बीच एक चबूतरा सा उठा हुआ, ज्यों ज्यों दक्षिण गया ऊंचा होता गया, यहां तक कि मैसूर की धरती प्राय तीन हजार फुट समुद्र से वलन्द है, और वलंदी के सवव वहां मौसिम भी अच्छा रहता है, गर्मी की शिद्दत नहीं होती। यह ऊंचा देश दोनों घाटों के बीच कृष्णा नदी से दक्षिण वालाघाट कहलाता है, और घाटों से उतरकर समुद्र की तरफ जो नीचा देश है वह पाईघाट। असल मे कर्नाटक उसी वालाघाट का नाम था, पर अब अंगरेज लोग पाईघाट को भी उसी नाम से पुकारते है, और कृष्णा

के मुहाने से कावेरी के मुहाने तक समुद्र के तटस्थ देश को कारोमंडल भी कहते हैं। कारोमण्डल चौलमण्डल का अपभ्रंश है, कि जो नाम अब तक भी वहांवालों की ज़ुबान पर जारी है ( १ ) इस कनारे समुद्र के निकट धरती बिलकुल रेतल और ऊसर है। कृष्णा पार दक्षिणदेश में मुसलमानों का राज्य पक्का न जमने के कारण वहां अबभी बहुतेरी बातें असली हिंदू धर्म की देख पड़ती है, मन्दिर औ शिवालय बहुत बड़े बड़े प्राचीन बने हुए, धर्मशाला और सदावर्त हरतरफ मुसाफिरों के लिये, ब्राह्मण वेदपाठी और अग्निहोत्री जगह जगह इफ़रात से, और नाम नगर और ग्रामों के अहमद महमूद पर कोई नहीं वही पुराने हिंदी चले जाते हैं। यद्यपि हिसाब से प्राय दो तिहाई मुल्क अर्थात् प्राय सात लाख मील मुरब्बा अब भी हिन्दुस्तानियों के दखल में है, परन्तु वो आबादी और आमदनी में सरकारी मुल्क के आधे हिस्से की भी बराबरी नहीं कर सकता। सरकारी अमलदारी में नौ करोड़ आदमी बसते हैं, हिन्दुस्तानी अमलदारी में कुल पांच करोड़। सरकार के यहां तीस करोड़ रुपया तहसील होता है, हिन्दुस्तानियों को ग्यारह करोड़ भी पल्ले नहीं पड़ता। यह केवल नियम की बर्कत है, और इंतिज़ाम की खूबी॥

---

( १ ) रामस्वामी अपनी किताब में लिखता है कि कारोमण्डल कारोमस-तान का अपभ्रंश है, और कारीमनाल उन नाव का नाम है जो पुर्तगालवालों ने पहले ही पहल उस कनारे पर देखा था॥

इति

नकशा हिन्दुस्तान के रजवाड़ों के विस्तार और आमदनी का वर्णमाला के क्रम से।

| संख्या | नाम इलाके का | विस्तार मील मुरब्बा | आमदनी साल में |
|---|---|---|---|
| १ | अंबाले की अजएटी . | २३०० | |
| | जींद ... | | ३००००० |
| | पटियाला ... | ४५०० | २०००००० |
| | मालैरकोटला | | ३००००० |
| २ | अलवर .. | ३५०० | १८००००० |
| ३ | इन्दौर . | ८००० | २२००००० |
| ४ | उदयपुर | ११६०० | १२५०००० |
| ५ | कच्छ (तूल १६० अर्ज़ ८५ मील) | | ८००००० |
| ६ | कपूरथला | | २००००० |
| ७ | करौली . | १९०० | ५००००० |
| ८ | कश्मीर . | २५००० | १०००००००० |
| ९ | किशनगढ़ . | ७०० | ३००००० |
| १० | कोची | २००० | ५००००० |
| ११ | कोटा ... | ६५०० | ४५००००० |
| १२ | कोलापूर .... | ३५०० | १५००००० |
| १३ | गढ़वाल .... | ४५०० | १००००० |
| १४ | ग्वालियर .. | ३३००० | ७८००००० |
| १५ | चम्बा .... | | १००००० |
| १६ | जयपुर | १५००० | ८५००००० |
| १७ | जैसलमेर .... | १२००० | १००००० |
| १८ | जोधपुर . | ३५००० | १७००००० |
| १९ | टोंक . | १८०० | १०००००० |

| संख्या | नाम इलाके का | विस्तार मील मुरब्बा | आमदनी साल में |
|---|---|---|---|
| २० | डूंगरपुर . | १००० | २००००० |
| २१ | त्रिवाङ्कोड़ू | ५००० | ४०००००० |
| २२ | देवास . | | ४००००० |
| २३ | धार . | १००० | ४७५००० |
| २४ | धौलपुर . | १६२५ | ७००००० |
| २५ | नयपाल . | ५४५०० | ३२००००० |
| २६ | पर्तापगढ़ . | १५०० | २००००० |
| २७ | वघेलखण्ड . | १०००० | २०००००० |
| २८ | वड़ोदा ... | २४००० | ७०००००० |
| २९ | वहावलपुर | २०००० | १५००००० |
| ३० | वांसवाड़ा . | १५०० | २००००० |
| ३१ | वीकानेर | १७००० | ६५०००० |
| ३२ | वुंदेलखण्ड . | १०००० | |
| | दतिया | | १०००००० |
| | उरच्छा | | ७००००० |
| | चारखाडी | | ४००००० |
| | छतरपुर | | ३००००० |
| | अजयगढ़ | | ३२५००० |
| | पन्ना | | ४००००० |
| | समथर . | | ४५०००० |
| | विजावर | | ३२५००० |
| ३३ | बूंदी .. | २२०० | १०००००० |
| ३४ | भरतपुर | २००० | २०००००० |
| ३५ | भूटान ( तूल १०० मील अर्ज ५० मील) | | |

| संख्या | नाम इलाके का | बिस्तार मील मुरब्बा | आमदनी साल में |
|---|---|---|---|
| ३६ | भूपाल ... | ७००० | २२००००० |
| ३७ | मनीपुर ... | ७५०० | १००००० |
| ३८ | मैसूर | ३७०० | ७०००००० |
| ३९ | मंडी .. | | ३५०००० |
| ४० | रामपुर .... | ७०० | १०००००० |
| ४१ | शिक्कम .... | १६०० | |
| ४२ | सतलज और जमना के बीच के रजवाड़े | | |
| | कहलूर ... | | १००००० |
| | बिसहर .... | | १००००० |
| | सिरमौर .... | | १००००० |
| ४३ | सावन्तवाडी .... | १००० | २००००० |
| ४४ | सिरोही ... | ३००० | १००००० |
| ४५ | सुकेत . | | ८०००० |
| ४६ | हैदराबाद ... | १००००० | १५०००००० |

## अनुक्रमणिका

### दूसरा हिस्सा

अ

थ



द

॥ इति ॥

# भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [A DROP OF] CLEAR WATER IN HAND

IN THREE VOLUMES

तीन जिल्दों में

---

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत
नव्वाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

---

राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द ( ३ ) ने बनाया

BY

RAJA SIAVAPRASAD, C.S.I.

---

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब में देखा

---

*VOLUME I.*

पहली जिल्द

PART III.

तीसरा हिस्सा

---

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेखाने में छापा गया
विद्यार्थियों के लाभ के लिये

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेखाने में छपा
मार्च सन् १८९७ ई०

1st edition. 6,00 copies. पहली बार ६०० पुस्तकें

# भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [ A DROP OF ] CLEAR WATER IN HAND

IN THREE VOLUMES

तीन जिल्दों में

---

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत
नव्वाब लेफ्टिनेंट गवर्नर वहादुर की आज्ञानुसार

---

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ( ३ ) ने वनाया

BY

RAJA SIAVAPRASAD, C.S.I.

---

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी   यह तमाशा किताब में देखा

---

*VOLUME I.*

पहली जिल्द

PART III.

तीसरा हिस्सा

---

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेखाने में छापा गया
विद्यार्थियों के लाभ के लिये

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेखाने में छपा

मार्च सन् १८९७ ई०

## तीसरे भाग का सूचीपत्र



## नक़शों का सूचीपत्र

# भूगोल हस्तामलक

## तीसरा भाग

---

### लंका अथवा सिंहलद्वीप

---

ईश्वर ने जिस तरह और सब चीजें इस भारतवर्ष के लिये अच्छी से अच्छी बनाई, एक टापू भी उसके वास्ते बहुत सुन्दर रचा है। नक़्शा देखने से मालूम होगा कि जैसे किसी धुगधुगी में आवेज़ा लटकता है उसी सूरत से यह सिंहल का टापू हिन्दुस्तान के दक्खिन तरफ पड़ा है। शास्त्र में इसका नाम लंका और सिंहल द्वीप लिखा है, मुसलमान सरन्दीप और सीलान पुकारते हैं, और अंगरेज उसे सीलोन कहते हैं। इस टापू के लंका होने में कुछ सन्देह नहीं है, क्योंकि सेतबन्ध रामेश्वर के साम्हने है, और सेत उसी से जाकर मिलता है, और प्राचीन यूनानी ग्रंथों में इसका नाम टापरोबेन अर्थात् रावन का टापू लिखा है (१) फिर सिवाय इन बातों के दूसरा कोई टापू उधर ऐसा है नहीं जिसे लंका ख़याल करें, फ़रंगियों के जहाज़ों ने सारा समुद्र छान डाला, और जो कहो कि शास्त्र में लंका के दर्मियान सोने का कोट और विभीषण का राज लिखा

---

(१) कोई कोई ऐसा भी कहते हैं कि टापरोबेन ताम्रपर्णी का अपभ्रंश है, बौद्ध लोगों के पुराने ग्रंथों में इस टापू का नाम ताम्रपर्णी ही लिखा है।

है, तो हम यह पूछते है कि क्या उसी शास्त्र में काशी को भी सो की नहीं लिखा, अथवा साक्षात महादेव को वहां का राजा न कहा। निदान लंका २७० मील लम्बा और २४५ मील चौड़ा ७५० मील के घेरे मे एक टापू है। कुछ ऊपर ८००० फुट तक ऊंचे उस मे पहाड़ हैं। नदी सब से बड़ी महावलि गंगा है, प्राय २०० मील लम्बी, और उस मे नाव बेड़े चलते हैं। लोहे और फिटकिरी की वहां खानें हैं, और माणक लसनिया नीलम कटैला गोमेदक बिल्लौर नदियों के बालू मे मिलता है। नमक भी वहां बनता है, दारचीनी बहुत होती है, और निहायत उमदा, क़हवा इलायची और कालीमिर्च की भी इफरात है। जंगलों में वहां के हाथी इतने होते है, कि एक अंगरेज़ ने दो बरस के शिकार मे चार सौ हाथी मारे, मज़बूती और चालाकी मे वहां का हाथी सब जगह मशहूर है। हुमा पक्षी भी, जिसके परो की कलगियां बादशाह टोपियों मे लगाते हैं, वहां बहुत होते हैं। समुद्र के कनारे गोतेखोर सरकार की तरफ से मोती निकालते हैं, सन् १८३५ मे ३८०००० रुपये इन मोतियो के नीलाम से सरकारी खज़ाने मे आये थे, उस में पहले ९ साल की आमदनी का पड़ता फैलाने से १४५०००० रुपया साल पड़ता है, शंख भी समुद्र से वहां बहुत निकलते हैं। आब हवा बहुत अच्छी, मौसिम मोतदल। आदमी वहां सिंहली मलबारी और मुसल्मान इन तीनो क़िस्म के बहुत हैं, सिंहली मालूम होते हैं कि वहां के असली रहनेवाले और हिन्दुस्तानियो से मिलकर पैदा हुए हैं। मत उनका बौध, सीधे सच्चे गरीब मिलनसार और खूबसूरत, मर्दों और हिन्दुस्तानवालों से मिलते हुए, बोली उनकी जुदी है, पर ग्रंथ उन के प्राकृत अथवा संस्कृत में लिखे हैं। मलबारियों का

मज़हब शैव और चालचलन उन के अपने देश के से, पर अक्सर अब अंगरेजी तरीक़ा इख़्तियार करते चले हैं, कुरसी मेज लगाकर खाते हैं, और अपनी स्त्रियों के साथ मजलिसों में नाचते हैं। इस्कूल सन् १८३३ में १७ तो सरकार की तरफ से और ९९४ पादरी इत्यादि लोगों की तरफ से गिने गये थे। एक क़ौम वहां विद्दुस लोगों की है जो भील गोंद चुवाड़ों की तरह जंगल पहाड़ों में रहा करते हैं, और वन के फल फूल और कंदमूल अथवा शिकार से अपना गुज़ारा करते हैं, अंगरेज लोग उन्हें वहां के असली भूमिये ठहराते हैं। सिंहलियों की तवारीख बमूजिब जो बहुधा ठीक मालूम होती है यह टापू राजा विजय सूर्यवंशी ने सन् ईसवी से प्राय ५४३ बरस पहले वहां के असली भूमियों से छीना था, और श्री विक्रमराजसिंह उसके घराने में आखिरी राजा हुआ, जो सन् १८१५ ईसवी में अंगरेज़ों के हाथ से निकाला गया। पहले वहां के राजा ने अरब और मलवारियों के हल्लों से बचने के लिये पुर्टगीज़ों की मदद चाही थी पर जब पुर्टगीज़ों ने उसी को ज़ेर करना चाहा, तो उसने डचलोगों को बुलाया, उन्हों ने भी धीरे धीरे उसका मुल्क दबाना शुरू किया, लेकिन जब फ़रंगिस्तान में डच लोगों ने अंगरेजों के साथ लड़ने पर कमर बांधी, तो सन १७९६ में अंगरेज़ों ने उन्हें इस टापू से भी बेदखल करदिया. और जब वहां वालों ने अपने राजा के ज़ुलम से तंग होकर विशेष इस दाग से कि उसने अपने मंत्री के लड़के उन्हीं की मा के हाथ से ऊखली में कुटवाए, अंगरेजों की हिमायत में आना चाहा तो सरकार ने भी मस्लहत समझकर उनकी अभिलाषा पूरी की. और सन १८१५ में राजा को निकालकर सारा टापू अपने कब्ज़े में करलिया. तब से वह बराबर इंगलिस्तान के बादशाह के हुक्म में चला [illegible]

मदनी वहा की सब मिलाकर तेतीस लाख रुपया साल है। फौज चार पलटन गोरे की और एक मलवारियो की रहती है। राजधानी कोलम्ब जहां गवर्नर रहता है। ६० अंश ५७ कला उत्तर अक्षांस और ८० अंश पूर्व देशांतर मे उस टापू के पश्चिम वगल मंदराज से ३६८ मील दक्षिण है, क़िला ठीक समुद्र के तट पर अच्छा मजबूत बना है, तोपे उसपर तीन सौ चढ़ी हुई हैं। आदमी उस शहर के अंदर सन् १८३२ मे ३२००० गिने गये थे, सूरत शहर की अंगरेजी छावनियो से वहुत मिलती है। कोलम्ब से ६० मील ईशान कोन कांडी के दर्मियान, जहां उस टापूके पुराने राजा रहते थे, एक मदिर के अंदर पिंजरे की तरह लोहे के कटहरे मे सोने के छ ढकनों से ढका हुआ एक दांत रखा है, और उन छओ ढकनो के ऊपर एक सातवां ढकना पीतल का घंटे की सूरत ढका है, और फिर उसके ऊपर अनुमान डेढ़ लाख रुपये का जेवर और जवाहिरात रखा है। उस लोहे के कटहरे, मे जिसके अंदर ये सब चीज़ हैं, ताला वंद रहता है, और कुंजी उसकी हाकिम के पास रहती है, क्योंकि सिंहलियो का यह निश्चय है कि वह दांत वुध का है, और जिसके पास रहे वही उस टापू का राजा होवे, सरकार ने इस दूरदेशी से कि कोई वदमाश उसे लेकर वलवा न उठावे अपने क़बजे मे रखा है, जव साल मे एक वार मेला होता है तो साहिव कलेक्टर ताला खोलकर लोगो को दर्शन करा देते है। कोलम्ब से ४५ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता हमालल पहाड के ऊपर, जिसे अंगरेज आदम का शिखर कहते है, और समुद्र से ७००० फुट ऊंचा है, एक पत्थर की चटान पर आदमी के पैर का निशान बना है, पर दो फुट लम्बा। सिंहली लोग कहते हैं कि वह वुध के पैर का निशान है, और

वुध उसी जगह से स्वर्ग को चढ़ा था, और मुसलमान उसको आदम के पैर का वतलाते हैं, और कहते है, कि वह उसी जगह स्वर्ग से गिरा था॥

---

## वर्म्हा

यह मुल्क जो एशिया के अग्निकोन की तरफ़ हिंदुस्तान के पूर्व है ९ अंश से २६ अंश उत्तर अक्षांस तक और ९२ अंश से १०४ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। असल नाम उस मुल्क का वहां के आदमी म्रन्मा पुकारते है, और म्रह्मा वर्म्हा और वर्मा इत्यादि सब उसी म्रन्मा का अपभ्रंश है। पश्चिम तरफ उसके हिंदुस्तान और वंगाले की खाड़ी, और पूर्व तरफ उसकी सरहद कम्बोज देश जिसे अंगरेज़ कम्बोडिया कहते हैं और चीन के मुल्क से लगी है. उत्तर को उसके चीन है, और दक्षिण स्याम और समुद्र और मलाका है। लंबान उसकी साय एक हज़ार मील और चौड़ान साय छ सौ मील और विस्तार अनुमान १९४००० मील मुरब्बा गिनाजाता है। आदमी उसमे ७४ फी मील मुरब्बा अर्थात् १४०००००० वसते हैं। दक्षिण तरफ अर्थात् समुद्र के निकट तो इस इस मुल्क में मैदान है, और उत्तर भाग में विलकुल जंगल और कोहिस्तान। नदियों मे एरावती सब से अधिक मशहूर है, वह तिव्वत के पूर्व से निकलकर १८०० मील वहने के वाद कई धारा होकर समुद्र मे मिलता है. उसमे नाव वहुत दूर तक चलती है। और उसके पानी से कनारे की खेतियों को भी वड़ा फाइदा है, अमरपुर के नज़दीक १४ मील लंबी एक झील वहुत गहरी है. और उसके चारों तरफ पहाड़ों के होने से वहुत रम्य और सुहावनी मालूम होती है। गल्लों मे वहां चावल वहुत इफ़रात से पैदा होता है. और उसी का वड़ा खर्च है। चाय इस मुल्क मे

खराब होती है। केवल तर्कारी और अचार बनाने के काम में वहां के आदमी लाते हैं। सागौन की जंगलों मे इफरात है। टांगन वहां से बिहतर कहीं नहीं होता, गाय भैंस का दूध वहां कोई नहीं पीता, शेर और हाथियों का जंगल पैगू के नजदीक है, लेकिन गीदड़ उस विलायत भर मे नहीं। खान से उस मुल्क मे सोना चांदी माणक नीलम लोहा रांगा सीसा सुरमा गंधक हरिताल संखिया कहरुवा कोयला और कई क़िस्म के कीमती पत्थर बहुतायत से निकलते है। अमरपुर के नजदीक संगमर्मर की बहुत उमद: खान है, लेकिन उस पत्थर से सिवाय देवताओ की मूर्ति के और कुछ नही बनने पाता, सब से ज़ियाद: रुपया इन खान की चीज़ों में राजा को नफ़्त अर्थात् मटियातेल से वसूल होता है, लोग उसको जमीन से तीस तीस पुर से गहरे कूए खोद कर निकालते हैं, वह वहां चराग जलाने के काम मे आताहै। मौसिम वहां भी हिंदुस्तान के से हैं, लेकिन एतिदाल के साथ, अर्थात् न तो वहां कभी जियाद: जाड़ा पड़ता है, और न कभी सख्त गर्मी होती है। राजधानी वहां की अइन्वा जिसे अंगरेज़ आवा और वहांवाले रत्नपुर भी कहते हैं २१ अंश ४५ कला उत्तर अक्षांस और ९६ अंश पूर्व देशांतर मे ऐरावती के बाएं कनारे बसा है, उसकी शहरपनाह दस गज़ ऊंची, और बहुत गहरी और चौड़ी खाई से घिरी हुई है। क़िला चौखूंटा २४०० गज लम्बा और चौवीस सौ गज चौड़ा है। मकान बिलकुल काठ के हैं, ईंट का घर सिवाय राजा के और कोई नहीं बनाने पाता। शहर मे एक मन्दिर बौध मतका बहुत खूब सूरत और आलीशान है, और उस मन्दिर के अन्दर एक मूर्ति गौतम की आठ गज़ ऊंची एक संगमर्मर की बैठी हुई बनी है। आदमी उसमें प्राय ३०००० बसते हैं। लोग वहां के

खुशदिल तेज मिजाज और वेसवरे होते हैं, हिंदुस्तानियों की तरह सुस्त और आलसी नहीं होते। औरतें वहां की शर्म और परदा नहीं करतीं, और घर का सारा काम और मिहनत उन्हीं के जिम्मे है, मर्द मजे से बैठे पान चवाया और हुक्का पिया करते है, हक़ीक़त मे उन औरतों की ज़िन्दगी लौंडी और बांदियों से भी बत्तर है, मिहनत मजदूरी के सिवाय वहां के आदमी अपनी बहू बेटियों से कस्ब भी करवाते हैं, और इस बात से शर्म नहीं खाते, बरन जो औरत जितना जियाद: रुपया कमालाती है उतनाही अपने घरवालों मे नाम पाती है। सूरत शकल मे वहां के आदमी चीनियों से मिलते हैं, औरतें गोरी होती हैं, लेकिन भद्दी, मर्द नाटे गठीले, हजामत नहीं बनाते दाढ़ी मूछों के बाल मुचने से उखाड़ डालते हैं, सुरमा और मिस्सी मर्द औरत दोनो लगाते हैं। शादी कम उमर मे नहीं करते, और एक औरत से अधिक नहीं व्याहते। जाति भेद उन लोगों मे नहीं है, और मत बुध का मानते हैं, जीव की हिंसा करनी उस मज़हब के विरुद्ध है, परन्तु वे लोग वेखटके मांस मछली खाते हैं, और शराब भी पीते है। पुनर्जन्म का निश्चय रखते हैं, और अपने मुर्दों को आग मे जलाते हैं। ज़ुबान उन लोगों की मुश्किल है, और किसी दूसरी से नहीं मिलती। हर्फ़ भी उन के गोल गोल न्यारे एक तरह के हैं, और हिन्दी की तरह बांयें से दहनी तरफ़ लिखे जाते हैं। पोथियां उनकी तालपत्र पर लिखी रहती हैं और कभी कभी सोने के पत्रों पर लिखते हैं। कहानियां और शास्त्र उस भाषा मे भी बहुत हैं, और कई उनकी मज़हबी पोथियां भाकृत बोली में लिखी हैं। मुलम्मे का काम वे लोग खूब करते हैं, और धात और मिट्टी के बर्तन और रेशम के कपड़े और संगमर्मर की मूर्ते और न

हाज़ भी अच्छा बनाते हैं। रुपये पैसे की जगह वहां चांदी और सीसे का कुर्स चलता है। बाहर की आमदनी मे अंगरेजी बनात और कपडे और हथियार और धातु के बरतन और रेशमी रूमाल बहुत ख़र्च होते हैं, और निकासी के माल मे सागौन इत्यादि कीमती लकड़ियों की वहां बड़ी पैदा है, सिवाय इसके वे लोग रुई कहरुवा हाथीदांत जवाहिर पान और एक क़िस्म की चिड़यों के घोसले जो उस देश के आदमी बहुत मज़े के साथ खाते है, चीनियों को देते हैं, और उसके बदले रेशम धात के बरतन मखमल मुरब्बे और सोने के तबक़ उन से लेते हैं। तहसील में वहां का राजा जो कुछ कि मुल्क में पैदा होता है और जो कुछ कि बाहर से आता है सब का दसवां हिस्सा लेता है, और वहां का यह आईन है कि जब कोई लड़ाई या हंगामा आ पड़े तो मुल्क के सारे मर्द राजा की चाकरी में हाज़िर होवें, और इसी बाइस से वहांका राजा बडाभारी लश्कर मैदान मे ला सकता है, लेकिन ऐसी गबर्दल की भरती को हम फौज नहीं कह सकते। नाव भी लड़ाई की वहां के राजा ने बहुतसी तयार कर रक्खी हैं, उन पर अक्सर सुनहरा काम किया हुआ है। और पानी मे बहुतही जल्द चलती है। यद्यपि धर्मशास्त्र तो वहां भी मनु का जारी है, परन्तु मुआमले मुक़दमो में बड़ी बेइंसाफ़ी होतीहै, ऐसा कोई मुजरिम नहीं जो मक़दूर मुवाफिक नज़राना अदाकरने से रिहाई न पा सके। यह भी इस मुल्क का आईन है कि राजसंबंधी जो बात कही जावे उस के साथ सोने का शब्द ज़रूर कहना चाहिये. जैसे हमको कहनाहै कि राजा के कान तक यह बात पहुँची अथवा राजा की नाक मे इतर की ख़ुशबू गई तो अवश्य कहना पड़ेगा कि सोने के कानतक यह बात पहुँची और सोने की नाक में

इतर की खुशबू गई। वहां के राजा का निशान हंस है। सब से ज़ियादा तअज्जुब की बात इस राज में यह है, कि राजा की सवारी का जो सफेद हाथी है, उसका भी दरजा राजा के बराबर समझा जाताहै, उस हाथी का दरबार जुदाही लगता है, और उसके वज़ीर दीवान मुन्शी मुतसद्दी नकीब चोबदार अलग नौकरहै, जो एलची वकील कारदार इत्यादि राजा के दरबार में जाते हैं, उनको इस हाथी के साम्हने भी मुजरा बजा लाकर नज़र दिखलानी पड़ती है. उसके रहने का मकान राजा के महल से कुछ कम नहीं. ज़र दोज़ी मखमल की गद्दी उसके सोने के वास्ते बिछाई जाती है. और रत्न जटित सोने के बरतनों में उसका खाना पीना होता है, इतरदान पानदान और पीकदान भी उसके साम्हने रहता है। वहां का राजा आदमी के कंधे पर उसके मुँह में रूमाल की लगाम देकर घोड़े की तरह सवार होता है!! कहते हैं कि उस देश के पहले राजा मगध अर्थात् बिहार से वहां गये थे, और इस बात को वे लोग कुछ कम अढ़ाई हज़ार बरस बीते बतलाते हैं। सन् १८२४ में सरहद पर उन लोगों के ज़ियादतियों के सबब क़रीब ५००० सिपाहियों के सरकारी फ़ौज का चढ़ाव हुआ था, और दो बरसतक बराबर लड़ाई होती रही. यद्यपि नया और अजनबी मुल्क होने के सबब सरकारी फ़ौज को सख्तियां बहुत झेलनी पड़ीं लेकिन आखिर जब दुश्मन के आदमियों को शिकस्त देती हुई और फ़तह के निशान उड़ाती हुई आवा से कुल दो मंजिल के तफ़ावत पर यंडाबू में जा दाखिल हुई, तो नाचार राजा ने पैग़ाम सुलह का भेजा. सरकार ने भी उससे जुर्माने के तौर पर एक करोड़ रुपया लड़ाई का खर्च और टेनासेरिम अर्थात् मौलमीन का इलाका हमेशः के वास्ते इस शर्त के साथ फिर उन्हीं राजा का

राजा सरहद पर कुछ जियादती न करे और सरकारी रअय्यत से जो उसके मुल्क में व्यौपार के वास्ते जावे सिवाय मामूली महसूल के और कुछ जियादा तलवी न करे लेकर अपनी फ़ौज उसके मुल्क से हटाली। सन् १८५१ में वहां के राजा के सिर मे फिर खुजली आई, अर्थात् जब अहदनामे के बरखिलाफ़ उसके नाज़िम ने रंगून में सरकारी रअय्यत के जहाज़वालों को तंग करके उन से ज़बरदस्ती रुपये लिये, और गवर्नर जेनरल बहादुर ने उन जहाज़वालों का रुपया लौटवाने के लिये और उस नाज़िम को सज़ा देने के लिये राजा को ख़त लिखा, तो उसने दोनों से एक काम भी न किया। नाचार सरकार ने फ़ौज भेजी, और वह मुल्क भी समुद्र के तटस्थ जो आराकान और मौलमीन के बीच उसके क़बज़े में था अपने दख़ल में कर लिया, न उसके पास समुद्र के तटस्थ कोई जगह रहेगी, न वह फिर सरकारी जहाज़वालों पर ज़ियादती कर सकेगा। निदान बर्म्हा में आराकान तो सरकार के पास पहले ही से था, और मौल मीन सन् १८२४ की लड़ाई में लिया था, अब इस नये मुल्क अर्थात् रंगून पैगू इत्यादि के हाथ आने से बर्म्हा के राज्यका पूर्व भाग चटगांव से लेकर मलाका की हद तक बंगाले की खाड़ी के तटस्थ बिलकुल सरकार अंगरेज बहादुर का होगया। यह सरकारी बर्म्हा तीन कमिश्नरियों मे बटा है, उत्तर आराकान की कमिश्नरी, दक्षिण मौलमीन की, और बीच में पैगू का और इन कमिश्नरियों के नीचे मजिस्ट्रेट कलेक्टरों की तरह डिपुटी कमिश्नर और असिस्टेंट मुक़र्रर हैं। आराकान का कमिश्नर आवा से दो सौ मील नैर्ऋतकोन आकयाब में रहता है, मौलमीन का कमिश्नर आवा से चार सौ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता मौलमीन में रहता है, और पैगू का कमिश्नर

आवा से तीन सौ मील दक्षिण पैगू में रहता है। पैगू से साठ मील दक्षिण ऐरावती के दहने कनारे रंगून में एक मंदिर सोमदेव का अष्ट-कोण ३६१ फुट ऊंचा बना है, और उसके शिखर पर लोहेका छत्र सुनहरी मुलम्मा किया हुआ पचास फुट घेरे का चढ़ा है, यह मंदिर बौधमती देहगोप की तरह अन्दर से ठोस है, और दर्वाज़ा उस में कहीं नहीं॥

---

स्याम

यह मुल्क जिसको बर्म्हा के आदमी स्यान और शान पुकारते हैं १० अंश से १९ अंश उत्तर अक्षांस और ९९ से १०५ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। हदे उसकी उत्तर और पश्चिम तरफ़ बर्म्हा, दक्षिण तरफ स्यामकी खाड़ी और पूर्वतरफ़ कम्बोज से मिली है। प्राय ६५० मील लंबा और प्राय ३६० मील चौड़ा। विस्तार १५५००० मील मुरब्बा। आबादी फी मील मुरब्बा १९ आदमी के हिसाब से २९४५००० आदमी की। यह मुल्क दो पहाड़ों के दर्मियान एक बड़ा मैदान है, और उसके बीच में मीनम नदी बहती है। बरसात में अक्सर जगह दलदल होजाने के बाइस आबहवा वहां की खराब रहती है.परन्तु ज़मीन उपजाऊ जो जो चीजें बंगाले में पैदा होती हैं वे सब यहां भी हो सकती हैं, बरन चावल तो इस इफ़रातसे शायद सारी दुनिया में कहीं पैदा न होता होवेगा, सिवाय इस के इलायची दारचीनी तेजपात कालीमिर्च और अगर भी बहुत होता है। मेवों में मंगोस्तीन आम से भी अधिक सुस्वाद है, इस से बढ़कर दुनियां में कोई मेवा अच्छा नहीं होता। गीदड़ और खरगोश का उस मुल्क में अभाव है। खान से वहां हीरा नीलम माणक पश्म लोहा रांगा सीसा तांबा और सुरमा निकलता है, और नदियों का

रेत धोने से सोना भी मिलता है, चुम्बुकका वहां एक पहाड़ है। राजधानी इस मुल्क की बंकाक है, वह शहर १३ अंश ४० कला उत्तर अक्षांस और १०१ अंश १० कला पूर्व देशांतर में मीनम नदी के दोनों कनारोंपर बसा है। बाजार वहां का बिलकुल पानी के ऊपर है. बांस के बेड़े बनाकर उन्हीं पर दूकानदार रहते है, और अपना माल बेचते है, वरन मकान भी जो लोग नदी के तीर बनाते है तो जमीन से बांस और शहतीरें गाड़कर इतना ऊंचा रखते हैं कि बरसात मे दर्या चढ़ने से डूब न जावे, मकान सब काठ के होते है, और उन मे जाने के वास्ते सीढी जरूर चाहिये। उस शहर मे सड़क बिलकुल नही है, लोग घोड़े गाड़ियों की बदल एक एक छोटी सी नाव अपने घरों में बंधी रखते हैं; उसी से सब काम निकल जाते हैं। बस्ती इस शहर की प्राय ४०००० आदमी के है। नामी मन्दिर इस शहर का दो सौ फुट ऊंचा होवेगा। चाल चलन और मजहब इस मुल्कवालो का बर्म्हा के आदमियो से बिलकुल मिलता है। नाखून ये लोग बढ़ने देते है तराशते नही, और वैद उनके यदि बीमार को आराम न हो तो उस से कुछ भी नही लेते। जुबान इनकी जुदी है, और गाने बजाने का बड़ा शौक़ रखते है। ये लोग तिजारत के वास्ते अपने देश मे बाहर नही जाते, गैर मुल्क के आदमी बाहर से भी माल लाते है और वहां का भी माल बाहर लेजाते है। राजा खुद तिजारत करता है, बिना उसकी आज्ञा के रांगा हाथी दांत सीसा इत्यादि का कोई भी सौदा नही करसकता। वहा के आदमी सोने के तबक़ खूब बनाते है, और बुरी भली बारूद भी अपने काम लाइक़ तयार कर लेते है, वहां का राजा लड़ाई के वास्ते अपनी रअय्यत को उसी तरह जमा करसकता है कि जैसे बर्म्हा मे दस्तूर है॥

जिसे वहां के आदमी मलयदेश कहते हैं १ अंश २२ कला उत्तर अक्षांस से लेकर ९ अंश तक चला गया है। वह तीन तरफ समुद्र से घिरा है, और चौथी तरफ अर्थात् उत्तर को उसका नाम डमरुमध्य वर्म्हा के मुल्क से मिलाता है। लम्बान उसकी प्राय ८०० मील और चौडान प्राय १२० मील होवेगी। इस मुल्क में छोटे छोटे कई राज हैं। लौंग जायफल कालीमिर्च चन्दन सुपारी और चावल वहां इफ़रात से होता है, मंगोस्तीन मेवों का राजा है। भेडी बैल और घोडे कम होते हैं, पर भैंस बहुत। रांगा खान से निकलता है, और नदियों का वालू धोने से सोना भी मिलता है। आब हवा मोतदिल, और खास मलाका के जिले की तो बहुत ही अच्छी और निरोगी है, अकसर साहिब लोग बीमारी में वहां हवा खाने के वास्ते जाते हैं, पर धरती उपजाऊ नहीं है। आदमी वहां के मलाई कहलाते हैं, और लूट मार में बड़े चालाक और दिलेर हैं, समुद्र में जाकर जहाजों को लूट लेते हैं, सिवाय इसके कीना भी दिल में बड़ा रखते हैं, और जब कभी घात पाते हैं दुश्मन से बिना बदला लिये नहीं छोड़ते, परदेसियों के साथ अकसर दगाबाजी कर जाते हैं, पर सभी एक से नहीं हैं, कितने ही उनमें सच्चे और मिलनसार भी होते हैं। पहाड़ों के दर्मियान एक कौम जंगली इस तरह की बस्ती है, कि उसकी सूरत हवशियों से मिलती है. रंग काला होंठ मोटे नाक चिपटी बाल घूंघरवाले मगर कद में बहुती नाटे डेढ गज़ से अधिक ऊंचे नहीं होते नंगधिडंग जंगलों में फिरा करते हैं. और फल फूल कन्द मूल अथवा शिकार से अपना पेट भरते हैं। इस मुल्क के आदमी जूवा बहुत खेलते हैं, विशेष करके मुर्गे की लड़ाई में, यहां तक कि अपने जोरू लड़के और बदन के कपड़े तक हार देते हैं। अन्नास बहुत

खाते हैं, और बाज़े वक़्त उसके नशे मे दीवाने बनकर बड़ी ख़राबियां करते हैं। हाकिम वहां का सुलतान कहलाता है, क़ौम का सुन्नी मुसलमान है। सन् १२७६ तक वहां के राजा हिन्दू थे। ज़ुबान मे उनकी बहुत से शब्द अरबी और संस्कृत के मिले हुए है, और हर्फ़ उनके अरबी से मुवाफ़िक़ हैं। जहाज़ और किश्तियां वे लोग बहुत अच्छी बनाते हैं। लौंग जायफल काली मिर्च मोम बेत सागू रांगा हाथी दांत वहां से दिसावरों को जाता है, और अफयून रेशम इत्यादि वहां बाहर से आता है। राजधानी वहां की मलाका २ अंश १४ कला उत्तर अक्षांस और १०२ अंश १२ कला पूर्व देशांतर में समुद्र के तट पर बसा है, यह शहर खास मलाका के ज़िले के साथ सरकार के क़बज़े में है। विस्तार उस ज़िलेका माय ८०० मील मुरब्बा होवेगा सन् १५१० में उसे पुर्टगालवालों ने मुसलमानों से लिया था, सन् १६४० में उसे डच लोगोंने फतह किया, अब सन् १७९५ से अंगरेज़ों के कबज़े में है। मलाका के अग्निकोन १२० मील के तफ़ावत से सिहपुर और वायुकोन २४० मील के तफावत से पूलोपिनांग ये दोनो टापू भी सरकार के दख़ल मे और मलाका की गवर्नरी के ताबे हैं। सिहपुर २६ मील और पिनांग १५ मील लंबा है। सिहपुर की आब हवा बहुत अच्छी है। अंगरेज़ पिनांग को वेल्स के शाहज़ादे के नाम से पुकारते हैं, और हिन्दुस्तानी इन टापुओं को कालापानी कहते हैं, भारी गुनहगार बंधुए क़ैद रहने के वास्ते इन टापुओं में भेजे जाते है। आब हवा अच्छी होने के कारण कितनेही साहिब लोग वहां जा रहे हैं, और बहुतेरी कोठियां और बाग और बंगले बन गये हैं॥

———

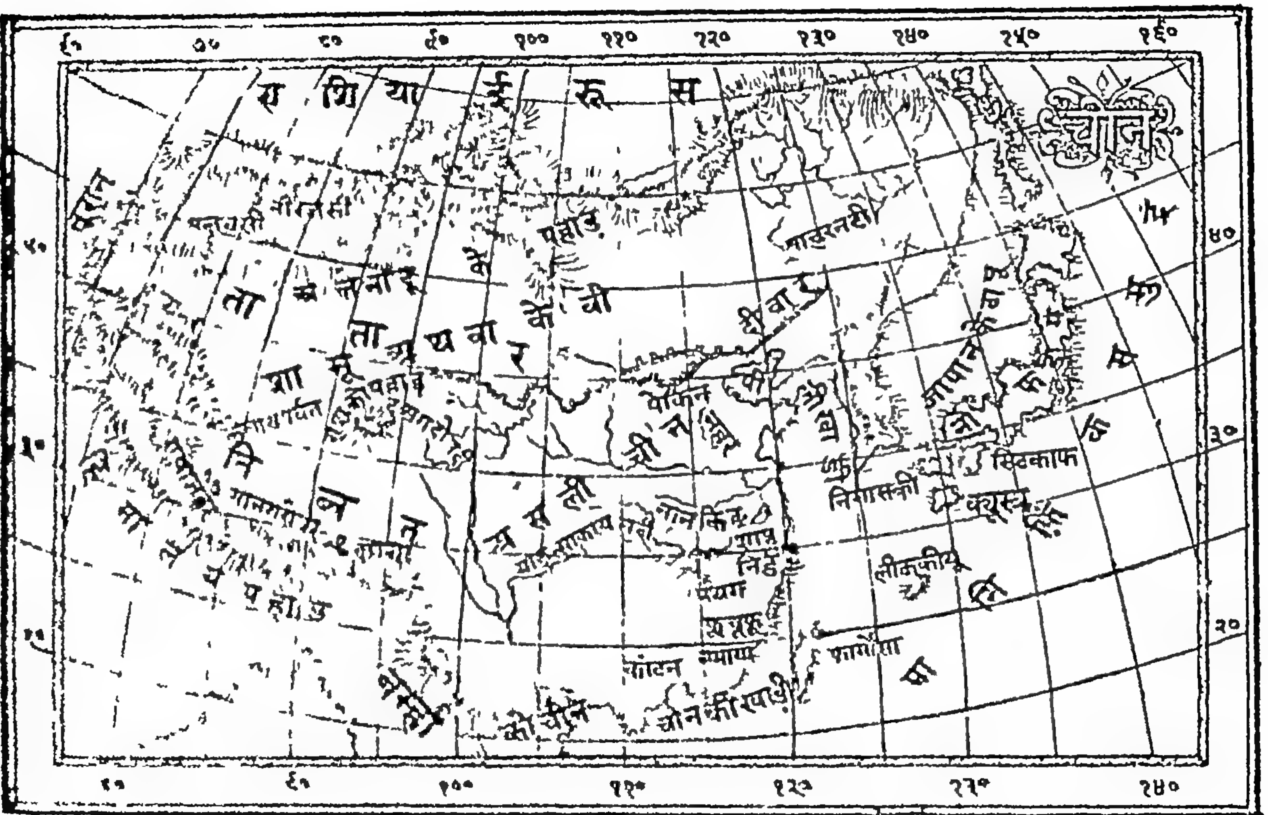
वहां के बादशाह के कबज़े तीन मुल्क हैं कोचीन, टांकिंग अथवा ऐनम, और कम्बोज जिसे अंगरेज़ कम्बोडिया कहते हैं। कम्बोज ८ अंश से १५ अंश उत्तर अक्षांस तक, औ कोचीन ८ अंश से १८ उत्तर अक्षांस तक, और टांकिग १८ अंश से २३ अंश उत्तर अक्षांस तक, १०५ और १०९ अंश पूर्व देशांतर के बीच चला गया है। उत्तर तरफ़ उसके चीन है, दक्षिण और पूर्व समुद्र और, पश्चिम को उसकी सरहद स्याम ब्रह्मा और चीन से मिली है। विस्तार इन मुल्कों का प्राय डेढ़ लाख मील मुरब्बा है, और आबादी फ़ी मील मुरब्बा ९३ आदमी के हिसाब से १३९५०००० आदमी की। इस विलायत मे मैदान और पहाड दोनों हैं। नदी सब मे बडी कम्बोज की है, चीन के मुल्क से निकलकर सात सौ कोस बहने के बाद समुद्र में गिरती है। पैदाइश वहां भी उन्हीं मुल्कों की सी होती है कि जिनका बयान ऊपर लिखागया। बैल वहां बहुत कम, हल भैंसों से चलाते हैं, भेड़ा और गधा बिलकुल नहीं होता, हाथी बहुत बड़े होते है। खान से लोहा चांदी और सोना निकलता है। धरती उपजाऊ है, साल में दो फसलैं धान की पैदा होती है। ह्यू वहां के बादशाह की दारुस्सलतनत एक नदीके किनारेपर बसाहै, और क़िले के अंदर बहुत खासा बादशाही महल और एक मंदिर बना है। कहते है कि वह क़िला बहुत मज़बूत है, और दो हज़ार तोपें उस पर चढ़ी हुई हैं। आदमी वहां के नाटे और गठीले और चालाक और मज़बूत होते हैं. पायजामा पगड़ी और आधी जांघ तक के लंबी आस्तीनवाले कुर्ते पहिनते हैं, बाल लंबे और जूड़ेके तौर पर बंधे रहते हैं. औरतें सिरपर टोपी रखती है. जूता कोई नहीं पहिनता. मिहनतका काम अकसर औरतों के हिस्से मे आता है. यहां तक कि बेचारियां हल जोततीं हैं और नाव

खेती हैं, मिस्सी से दांत काले और पान से होठ लाल मर्द और औरत दोनो रखते हैं, हाथी का गोश्त ये लोग बहुत मज़े से खाते है। जुबान वहा की चीन से मिलती है, और मजहब बुध का मानते है। जब किसी का कोई मरता है तो उसे दो बरस तक संदूक मे बंदकरके घर मे रख छोडते है, और नित्य उसके साम्हने गाना बजाना हुआ करता है भोग भी चढ़ाते हैं, और लोग भी उसके दर्शनो को आते है, फिर दो बरस बाद उसको बड़ी धूमधाम से जमीन में गाडते है। कारीगर वहां के चीनियो की तरह बहुत चालाक और होशियार है, विशेप करके रेशम तयार करने मे। आमदनी वहां बनात और छींट शोरा गंधक सीसा चाय रेशम अफयून और गर्म मसालों की है, और निकास वहां से रेशम घासके कपड़े सीप की चीजे चटाई हाथी दांत कचकडा आवनूस दारचीना इत्यादि का होता है। फौज वहांके बादशाह की माय पचास हजार होवेगी, सिवाय इसके जब काम पड़े तो वह अपने मुल्क के सारे आदमी अठारह बरस से साठ बरस तक की उमरके बेगार मे चाहे जिस खिदमत पर भेजसकता है, और आदमी वहां के बादशाह की आज्ञा विना अपने मुल्क से कहीं बाहर नहीं जा सकते। किसी जमाने मे यह मुल्क चीन के बादशाह के ताबे था॥

---

## चीन

साबिक मे इस मुल्क के दर्मियान जिल्ले जिल्ले के जुदाजुदा राजा थे. और हमेशः आपस मे लड़ा भिड़ा करते पहला बादशाह जिसने उन सब छोटे छोटे राजाओं को अपने बस मे करलिया चीन हुआ था कि जिसको माय दो हजार बरस गुजरते है. इस बादशाह के संतान चीनवंशी कहलाये, और उसी वंश से वह मुल्क चीन कहलाया।


चीन

सहांवालों के उच्चारण मे यह शब्द त्सिन है कि जिसको अरबवाले सीन बोलते है, और अंगरेजी मे चायना कहते हैं। यह मुल्क २१ अंश से ५५ अंश उत्तर अक्षांस तक और ७० अंश से १४२ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। उसके पश्चिम तरफ़ तूरान, पूर्व तरफ पासिफिक समुद्र, उत्तर तरफ एशियाई रूस, और दक्षिण तरफ हिमालय का पहाड़ बर्म्हा और कोचीन का मुल्क है। लंबान उसकी पूर्व से पश्चिम को प्राय ४७०० मील और चौड़ान उत्तर से दक्षिण को प्राय २००० मील है, और विस्तार कुछ न्यूनाधिक ५०००००० मील मुरब्बा होवेगा। यद्यपि वस्तुतः इस विस्तार के दर्मियान चार मुल्क बसते हैं, अर्थात् असली चीन तिब्बत तातार जिसे महाचीन भी कहते है और कोरिया का प्रायद्वीप, लेकिन एक बादशाह के आधीन रहने के कारण अब यह सब एक ही नाम से अर्थात् चीन का मुल्क पुकारा जाता है। असली चीन उत्तर तरफ़ तातार से मिला है, और उस के पूर्व और दक्षिण पासिफिक समुद्र की खाड़िया हैं, नाम उन का पीली नीली और चीन की खाड़ी है, और दक्षिण कोचीन और बर्म्हा से, और पश्चिम बर्म्हा और तिब्बत से घिरा है, और २१ से ४१ अंश उत्तर अक्षांस तक और ९७ अंश ४२ कला से १२२ अंश ५३ कला पूर्व देशान्तर तक चला गया है। उस मे १८ सूबे है, बहुतेरे उनमें सूबे बंगाला से भी बड़े और अधिक आबाद है। तिब्बत हिमालय के उत्तर है, उसी पहाड़ की तराई से ८१ अंश से लेकर १०० अंश पूर्व देशांतर तक और २८ अंश से ३५ अंश उत्तर अक्षांस तक चला गया है, वह लंबा पूर्व से पश्चिम प्राय १३०० मील और चौड़ा उत्तर से दक्षिण ४५० मील है। तातार जो ३५ अंश से ५५ अंश उत्तर अक्षांस तक और ७२ अंश से १४२ अंश पूर्व देशान्तर तक चला

गया है माय २५०० मील लम्बा और १००० मील चौड़ा होवेगा, उत्तर तरफ अलताई का पहाड उसको रूस से जुदा करता है, दक्षिण तरफ तिव्वत है, पश्चिम में तूरान पड़ा है, और पूर्व को असली चीन और समुद्र से घिरा है। कोरिया का मायद्वीप जो असली चीन के ईशानकोन की तरफ़ ३४ और ४३ उत्तर अक्षांस और १२४ और १३० पूर्व देशान्तर के वीच में पडा है माय ७००० मील लम्वा और २०० मील चौड़ा होवेगा, और तीन तरफ़ समुद्र से और चौथे अर्थात् उत्तर की तरफ़ तातार से घिरा है। सिवाय इन मुल्कों के वहुत से टापू भी पासही पासिफिक समुद्र में फार्मोसा और लीऊ कीयू इत्यादि वहां के वादशाह के दखल मे हैं, यहां तक कि उसकी रय़ैयत उसको खुशामद की राह से दस हजार टापुओं का मालिक पुकारती है। यह मुल्क दुनियां के सारे मुल्कों से अधिक आवाद है, तीस करोड़ आदमी उसमे वस्ते हैं कि जो दुनियां की वस्ती का माय तीसरा हिस्सा होता है, और फी मील मुरव्वा ६० आदमी पड़ते हैं, लेकिन इन तीस करोड़ से तिव्वत तातार और कोरिया में पूरे करोड़ भी नहीं वस्ते और असली चीन की आवादी फी मील मुरव्वा २७७ आदमी का अनुमान करते है। यह राज इतना पुराना है कि उसकी इब्तिदा से कोई भी पक्की खवर नहीं देता, अंगरेज़ लोग खयाल करते है कि तूफान से थोड़े ही दिनो वाद यह सल्तनत खड़ी हुई, हिन्दू के शास्त्रों मे भी इस मुल्क का चरचा वहुत जगह लिखा है, और दूसरी क़ौमों की पुरानी किताबो मे भी जहां कहीं उसका वयान है वडाई और मान ही के साथ किया है। इस देश के आदमी खेती करना रेशम वुन्ना माचीन समय से जानते हैं, चुम्बक का गुण उन्हीं लोगों ने मकट किया। विद्या अभ्यास में वे लोग वहुत दिल्ल देते हैं, गांव गांव मे

बादशाह की तरफ़ से इस्कूल मुक़र्रर हैं, उन में लिखना पढ़ना हिसाब और नीति शास्त्र सिखलाया जाता है, और लड़कों को आठ बरस की उमर होतेही उनके मा बाप वहां भेज देते हैं, उस मुल्क में गरीब और अमीर लिखना पढ़ना सब जानते है। इक्सीर और कीमिया-गरी इस वाहियात की बुनियाद भी उसी मुल्क से उठी बतलाते हैं। उत्तर और पश्चिम तरफ़ यह मुल्क कोहिस्तान है, बाकी सब जगह बराबर मैदान, और नदी नाले और नहरों के पानी से बिलकुल सिंचा हुआ। कोरिया के मध्य मे पहाड़ों की एक श्रेणी है, दक्षिण भाग तो उपजाऊ और आबाद है, पर उत्तर वह मायद्वीप बिलकुल ऊसर और वीरान है। तातार की धरती आस पास की विलायतों के बनिस्बत बहुत बलन्द है, और मैदान उसके दर्मियान बहुत बड़े बड़े। शामू का पटपर जिसे कोबी अथवा गोबी भी कहते हैं माय १४०० मील लम्बा है, और उस में अक्सर काला रेगिस्तान है। तातार की धरती बहुधा वीरान और पटपर पानी से खाली है। ज़मीन तिब्बत की भी तातार की तरह बलन्द है. पर इस में मैदान कम और कोहिस्तान बहुत, और दरख्तों से दोनों खाली, इस मुल्क में आबादी बहुत कम है, और गल्ला भी थोड़ा पैदा होता है, कैलास का पहाड़, जिसे हिन्दू लोग महादेव के रहने की जगह बतलाते हैं, हिमालय का टुकड़ा तिब्बत के मुल्क में समुद्र से तीस हज़ार फुट ऊंचा है. वहां के पहाड़ अकसर बहुत ऊंचे और बारहों महीने बर्फ़ से ढके रहते हैं। चीन और बर्म्हा के बीच में हिमालय की शाखा समुद्र तक चली गई है. ज्यों ज्यों पूर्व को बढ़ी नीची होती गई। नदियां चीन में बहुत हैं. लेकिन हुयंगहो और याङ्क्सीक्यांग मश-हूर और बड़े दर्या हैं। हुयंगहो तो तिब्बत और तातार के बीच

रथिको पहाड़ से निकलकर २६०० मील वहने के वाद समुद्रमें गिरती है, और याङ्गत्सकायङ तिव्वत से निकलकर २२०० मील वहने के वाद नानकिङ शहर से कुछ दूर आगे वढ़ कर हुअंगहो से मिल जाती है। इन में वहुतेरी छोटी छोटी नदियों का पानी आताहै और इन से कितनी ही नहरें काटी गई हैं, कि जिनसे खेतियां भी सींची जाती हैं, और तरी का रास्ता भी किश्तियों के आने जाने के वास्ते खुला रहताहै। वादशाही नहर कांटनके पाससे पेकिन तक प्राय आठ सौ मील लंवी होयगी, चौड़ी एक सौ फुट है, और गहरी ६॥ फुट। आमुर नदी जिसे साघालियन भी कहते हैं २००० मील तातार में वहकर साघालियन के टापू के साम्हने समुद्र से मिलगई है। झीलें चीनके मुल्क में वहुत सुथरी सुहावनी निर्मल नीर से भरी हुई रम्य और मनोहर स्थानों में है, विशेष करके पयंगकी झील, कि जिसके चारों तरफ पहाड़ और जंगल पड़ा है। तातार में नोरजैसां झील १५० मील लंवी और ४० मील चौड़ी, और पलकसी झील २०० मील लंवी और १०० मील चौड़ी है। तिव्वत में कैलास और हिमालय के वीच मानसरोवर और रावणह्रद जिन्हें वहांवाले मापां अथवा मानतलाई और राकसताल कहते हैं दो झील हैं, मानसरोवर प्राय १५ मील लंवा और ११ मील चौड़ा है और वैदिक और वौध दोनो मजहववालों का तीर्थ है। धरती चीन की उपजाऊ है, वहां के आदमी खेतों के सींचने और खाद से दुरुस्त करने में वड़ी मिहनत करते हैं। चावल इफ़रात से पैदा होता है, और वहुधा इस मुल्क के आदमियों की वही खुराक है फ़सल इस की साल में दो और कहीं कहीं तीन भी पैदा करलेते हैं, गेहूं इत्यादि अन्न और तरह वगैरह के फल फूल भी अच्छे पैदा होते हैं, पर सब में ज़ियादः

क़ीमती चीज़ खास उस मुल्क की पैदाइशों में चाय है। दो प्रकार के पेड़ वहां ऐसे पैदा होते हैं, कि उन में से दो चीज़ें मोम और चर्बी की तरह निकलती हैं, और बत्ती बनाने के काम आती हैं। कपूर के पेड़ भी वहां बहुत होते हैं, काट काट कर घास के साथ लोहे के देगो मे उनका मुंह बंद करके आग पर चढ़ा देते हैं। कुछ देर में काफ़ूर उन दरख्तों के पत्ते और टहनियों से जुदा होकर घास में जम जाता है (१) जंगलों मे चीन के हाथी गैंडे अरने शेर जंगली बैल और हिरन इत्यादि की बहुतायत से हैं, और घरेलू जानवरो मे घोड़े कुत्ते सूवर मुर्ग और बतक इत्यादि गिने जाते हैं। कस्तूरिये हिरन याक अर्थात् सुरागाय भेडी शाल की बकरी और जंगली गधे तिब्बत में होते है, और गोरखर तातार मे। खान से चीन में सोना चांदी तांबा लोहा पारा और कई प्रकार के जवाहिर निकलते हैं। कोरिया में सोने चांदी दोनो की खान है। और समुद्र से मोती निकालते हैं। तिब्बत में नमक सुहागा और शंगर्फ की खान है, और सोना भी कई जगहों से निकलता है। उत्तराखंड इस मुल्क का सर्द है, पर आब हवा दक्षिण की भी जो गर्मसेर है अच्छी बतलाते हैं। तातार के दर्मियान गर्मी के दिनों मे शिद्दत से गर्मी और जाड़ो में सख्त जाड़ा पड़ता है। तिब्बत में जाड़ा हद्द से ज़ियाद: पड़ता है, और हवा वहां की निहायत खुश्क है। चीन की दारुस्सलतनत का नाम पेकिन अथवा पेचिन है, वह शहर ४० अंश उत्तर अक्षांश और ११७ अंश

---

(१) सुमित्रा और बर्मियों के टापुओं में दरख्तो के पिंडों के अंदर गुदे की जगह कपूर रहता है, चीर कर निकाल लेते हैं, आग पर नहीं चढ़ाना पड़ता।

पूर्व देशांतर में पच्चीस मील के घेरेका बसता है, और उसकी शहर पनाह तीस फुट ऊंची है, दरवाज़े उसमे नौ वहुत खूबसूरत है, और उसके अंदर वादशाही महल बड़े शानदार वने हैं, रास्ते चौड़े और सीधे है, और नहर उनके दर्मियान से वहती है। लार्डमेकार्टनी साहिव इस शहर मे तीस लाख आदमीकी आवादी अनुमान करते हैं। चोरी न होने के वास्ते वहां हुक्महै कि शाम वाद विना रौशनी लिये कोई घर से वाहर न निकले। शहर के वीचोवीच एक तालाव कोस एक लम्वा और कुछ कम चौडा वहुत उमदा वना है, उसके चारो तरफ़ वेदमजनू के दरख्त लगे हैं, और वीच मे एक टापू है, उसपर एक मंदिर वना है, और पुल उस तालाव के ऊपर संगमर्मर का वांधा है। तातार मे यार्क़न्द पेकिन से २४०० मील पश्चिम और काशगर यार्क़न्द से १५० मील वायुकोन को मशहूर है। तिव्वत का वड़ा शहर लासा पेकिन से १८०० मील नैर्ऋतकोन है, लामा गुरु उसी जगह रहता है, वह शहर प्राय चार मील लम्वा और एक मील चौड़ा है। शहर के वीच में एक वहुत वड़ा मन्दिर वना है, उस पर तमाम सोने का काम हुआ है। आदमी की वनाई हुई तअज्जुव की चीज़ो से इस मुल्क मे एक वहुत वड़ी दीवार है, यह दीवार असली चीन की उत्तर हद पर है, पन्दरह सौ मील अर्थात् साढे सात सौ कोस से अधिक लंवी और वीस फुटसे लेकर तीस फुट तक ऊंची है और चौडी भी इतनी है कि उसके ऊपर छ सवार वरावर रकाव्से रकाव मिलाकर चल सकते हैं, और सौ सौ गज़ के तफावत पर वुर्ज रखे हैं, जहां पहाड और दर्या दर्मियान में आगये है वहा भी इस दीवारको उन पर पुल डालकर लगाये हैं, अर्थात् खड और नदियोंपर पुल वनाया है और फिर पुलके ऊपर दीवार उठाई है। चीनी का

मीनार यङ्गत्सीकायङ् के दहने कनारे नानकिङ् के शहर में अष्टकोन दो सौ फुट ऊंचा बना है, उसका व्यास अर्थात् दल ४० फुट होगा और नौ उस में मरातिब हैं, ऊपर चढ़ने के लिये ८८४ सीढ़ियां लगी हैं। वहांवाले उस की लागत अस्सी लाख बतलाते हैं (१) आदमी असली चीन के खुदपसंद कायर कपटी हासिद शक्की कीनःवर चालाक मिहनती मुतहम्मिल हलीम और खुश अखलाक़ होते हैं। चिहरे उन के ज़र्द पेशानियां बलन्द आंखें छोटी और बाल काले। औरतों के पैर के पंजो का छोटा होना इस मुल्क की खास और मशहूर बातों से है, जितना जिस औरत के पैर का पंजा छोटा होता है उतनी ही वह खूबसूरत गिनी जाती है, यहां तक कि उस मुल्क में जनाने जूते चार इंच से अधिक लम्बे नहीं बनते, यह रस्म वहां हज़ार बरस से निकली है। कहते हैं कि एक दफा औरतों ने मिलकर बादशाहपर हमला किया था, तभी से यह आईन जारी हुआ, छोटी ही उमर में उन के पैर के पंजे ऐसे कसकर पट्टियों से बांध रखते हैं; कि फिर बड़े होने पर वे बढ़ने नहीं पाते, और यही कारन है कि यद्यपि वहां की औरतें पर्दा नहीं करतीं, जाली झरोखों में मुंह खोले बैठी रहती हैं, पर तौ भी घर से बाहर कम नज़र पड़ती हैं, क्योंकि पंजा पैर का छोटा रहने से चलना फिरना उन को बहुत कठिन है। लड़कियों को वहांवाले भी रजपूतों की तरह हलाक करडालते हैं, पर बहुत कम। मज़हब चीनियों का बौध है, गोश्त चीन के बादशाह की अमलदारी में सब खाते हैं। देवी देवतो की वहां हिन्दुस्तान से भी ज़ियादती है पेगा पहाड़ दून जंगल

---

(१) सुनते हैं कि बदमाशों ने बल्वा करके अब इस मीनार को बिलकुल ढाह डाला॥

जिला घर और दूकान कोई नहीं कि जिसका एक जुदा देवता मुकर्रर न हो वरन गरजना चमकना वरसना आग अन्न, दौलत जन्म मृत्यु सीतला नदी झील चिड़ियें मछली जानवर इत्यादि के भी अलग अलग देवता हैं, एक पादरी वढ़ावे की राह से कहता है कि चीनियों के देवता दर्या के वालू से भी अधिक है। वे लोग ज्योतिप और यंत्र मंत्र में भी वड़ा निश्चय रखते हैं, वौध मत के अनुसार पुनर्जन्म का होना सत्य मानते हैं, और हिंसा करना वहुत वुरा जानते है। उस मत में नीचे लिखे हुए पांच महावाक्य है। हिंसा मत करो १। चोरी मत करो २। झूठ मत वोलो ३। शराव मत पीयो ४। और जो साधु सत वनो तो विवाह न करो ५। मुसल्मान भी उस अमल्दारी मे वहुत रहते हैं। तातार के आदमी खूंखार लड़ाक आजादमनिश और शिकार दोस्त हैं, घोड़े वहुत रखते हैं, उन का गोश्त भी खाते हैं, और घोड़ियों का दूध वड़े स्वाद के साथ पीते हैं। वे गांव और शहरो मे नहीं वस्ते जहां अच्छी चराई और नजदीक पानी पाते हैं उसी मुक़ाम पर कुछ दिनो के वास्ते अपनी भेड़ी वकरी और शकट लेजाकर खेमे खड़े कर देते हैं, कोई उन में से अपने मुर्दों को आग मे जलाता है कोई मिट्टी मे गाड़ता है कोई कुत्तों को खिला देता है, और कोई काट काट कर आपही खा जाता है। तिब्वत के आदमी मिहनती और संतोषी हैं, लेकिन आदमीयत की वूवास कम रखते है, वे हमेशः गर्म कपड़े पहनते हैं, गर्मी में केवल ऊनी और जाड़ों में पोस्तीन समेत। चीनके आदमी तीरंदाज़ी में उस्ताद है, कुर्सियों पर वैठते हैं। और मेज पर खाना खाते है, कांटे की जगह दो पतली पतली सलाइयां हाथीदांत अथवा सोने चांदी की रखते है, उसी से उठा उठाकर खाना खाते हैं, हाथ नहीं लगाते। खाना वहुत क़िस्म का पकाते है, रीछ के पंजे, घोड़े के सुम,

चौपायों के खुर, और चिड़ियों के घोंसलां तक उन के शोरवे में काम आते हैं, बिरली चीज़ दुनियां में ऐसी होवेगी कि जिसको चीन के आदमी नहीं खाते। अमीरों के मकान की दीवारें साटिन इत्यादि क़ीमती कपड़ों से मढी रहती हैं, और उन पर नीति के वचन बहुत खूबसूरती के साथ लिखे रहते हैं! औरतें सिर के ऊपर बालों का जूड़ा बांध कर उन मे फूल लगाती है। यद्यपि वहां विधवा औरतों को दूसरी शादी करने का इख्तियार है, लेकिन तौ भी न करना बड़ी इज्ज़तकी बातहै। मसहरी में वहां के गरीब ज़मींदारभी सोते हैं। चाय और तंबाकू वे लोग बहुत पीते हैं, यहां तक कि हर शख़्स एक ज़रदोज़ी बटुआ तंबाकू से भराहुआ कमर मे रखताहै, बरन औरतें भी तंबाकू पीती है। पोशाक वहांवालों की लंबी आस्तीन वाला कुरता पाजामा पोस्तीन और चुगा है, लेकिन टोपियां मरदों की इतनी चौडी होती हैं कि मेह पानी में छतरी की कुछ ऐसी इहतियात नहीं पड़ती। पंखी एक छोटीसी सदा सब के हाथ मे रहती है, बांएं हाथ के नाखून वहां के आदमी नहीं तराशते बढने देते है, कि जिस में लोग उनको मिहनती मज़दूर न समझें, पतंग उड़ाने का बड़ा शौक रखते है; लाखों आदमी वहां अपने घरबार समेत किश्तियों हीं पर गुज़ारा करते है, और रात दिन जल ही में डेरा रखते है, एक क़िस्म की चिड़िया को ऐसा साधते हैं कि वह पानी में से मछली पकड़ कर उन्हे ला देती है, इन चिड़ियों के गले मे छल्ले पड़े रहते है जिसमें मछलियों को निगलने न पावें, जब हज़ारों चिड़ियें इस तरह की एक बारगी छुटती हैं तो देखते ही देखते शिकारी के साम्हने मछलियों का ढेर लग जाता है। सती अगले ज़माने मे चीन और तातार के दरमियान होती थीं, अब यह खराब रसम बहुत दिनों से मौक़ूफ़ हो गई।

पीला रंग वहां के बादशाह का है, अर्थात् इस रंग का कपड़ा सिवाय बादशाह के और कोई नहीं पहिन्ने पाता, जिस किसी के पास इस रंग का कपड़ा दिखलाई देवे उसको जरूर शहज़ादों से खयाल करना चाहिये। चीनी लोग अपने मुरदों को जमीन पर रख के ऊपर से कबर बना देते हैं, अकसर वहां के आदमी अपने बुज़ुर्गों की लाश को मसाले लगाकर मुद्दत तक संदूक़ के दरमियान घर में रख छोड़ते हैं, जो हो वहां के आदमी अपने पुरखा और पित्रों को बहुत मानते हैं, और मुद्दतों तक याद रखते है। इल्म की क़दर होने के बाइस वहां के आदमी पढ़ने लिखने में बड़ी मिहनत करते हैं, भिसकानर लिखती है कि एक गरीब का लड़का जो दिन भर अपने मा बाप का पेट भरने के वास्ते उद्यम करता था और इतना भी मक़दूर न रखता था कि रात को चिराग जलाने के लिये तेल बाज़ार से खरीद लावे तो वह क्या काम करता कि जंगल से जुगनू पकड़ लाता और उनको बारीक कपड़े में रखकर उन्हीं की रौशनी से किताब पढ़ा करता, और इसी तरह पढ़ते पढ़ते कुछ दिनो में ऐसा फाज़िल हुआ कि बादशाह ने उसको अपना वज़ीर बनाया, निदान वहां विद्या का बड़ा प्रचार है, विरला ऐसा होगा जो लिखना पढ़ना न जाने। जब से तातारियो ने चीन को फ़तह किया वहांवाले उन के हुक्म बमूजिब सारे सिर के बाल मुड़वाकर केवल एक पतली सी पैर तक लंबी चोटी रखतें है। चीन में सिपाही की बनिस्बत मुंशी की इज्ज़त बहुत जियादः है, और वहांवाले महाजन और सौदागर की बनिस्बत किसान और जमींदारों की बड़ी कदर करते है, यहां तक कि साल मे एक दिन खुद बादशाह अपने हाथ से हल जोतताहै, और उस दिन को बड़ा त्योहार मानते है। जब बादशाह मरजाता

है तो सारे मुल्क के आदमी सौ दिन तक मातम रखते हैं, और कोई काम खुशी का नहीं करते। वहां के हाकिम जब बाहर निकलते हैं, उन के जलेब मे जल्लाद और कोड़े बर्दार और जंजीरवाले आगे चलते हैं, यदि रास्ते में किसीको कुछ बुरा काम करते हुए पाते हैं, तो उसी दम और उसी मुक़ाम पर उसे सज़ा दे देते हैं। रुपये अशरफ़ियों के बदल वहां चांदी सोने के कुर्स (१) और छेदवाले (२) तांबे के पैसे चलते हैं। तिब्बतवालो की ज़ुबान वही है जिसे भोटिया बोली कहते हैं, पर शास्त्र उन के बहुधा प्राकृत भाषा मे लिखे हैं। ये लोग अपनी विद्याकी जड़ काशी बतलाते हैं। चीनियो की भाषा में भूगोल खगोल वैदक काव्य अलंकार इत्यादि सारी विद्या मौजूद हैं, और तवारीख अर्थात् इतिहास तो उनके यहां सारी क़ौमो से बढ़कर है। शब्द उन के समस्त एकाक्षरी है, अर्थात् प्रत्येक शब्द के वास्ते एक जुदा अक्षर मौजूद है, और इसी कारण उन की वर्णमाला में ८०००० अक्षर गिने जाते हैं, इन में २१४ तो असली हैं, और बाक़ी संध्यक्षर अथवा युक्ताक्षर हैं, और इसी वास्ते गैर मुल्कवालो को उन की ज़ुबान का लिखना पढ़ना सीखना बहुत मुश्किल है। वहांवालो के लिये गांव गांव में इस्कूल मुकर्रर हैं, छ बरस धर्मशास्त्र कंठ करनेमें जाता है, और छ बरस मे व्याकरण काव्य अलंकार और इबारत लिखना

---

(१) कुर्स सौ सौ पचास पचास तोले के और इस से न्यूनाधिक भी होते हैं सूरत उनकी नाव की तरह ॥

(२) पैसो के बीच मे छेद रहता है और उनको एक रस्सी मे माला की तरह पिरो रखते है, जिसको जितने पैसे देने होते है उतने पैसो पर गिरह देकर रस्सी काट देते हैं ॥

सीखते हैं, निदान बारह बरस बाद वे परीक्षा देने के योग्य होते हैं और हर जिले में तीन साल के बीच दो बार परीक्षा ली जाती है, जो विद्यार्थी इस पहली परीक्षा में पूरे उतरते हैं वे उस सूबे के जिस मे वह जिला होता है हाकिम के पास दूसरी परीक्षा के लिये भेजे जाते हैं, और जो विद्यार्थी उस हाकिम की परीक्षा में जचते हैं उन को वह एक एक सार्टीफिकट देकर बडे सूबेदार के पास भेज देता है, इस तीसरे स्थान में बड़ी कडी परीक्षा होती है, पहले सारे विद्यार्थियों की तलाशी लेलेते हैं कि जिस में उन के पास कोई लिखा हुआ कागज़ या किताब न रहे, और फिर एक एक को जुदा जुदा कोठरी में बंद करदेते हैं, वहां वे प्रश्नों का उत्तर लिखकर दूसरो के साथ मिल न जाने के लिये उन पर चिन्ह मात्र कर देते हैं नाम लिखने की मनाही है कि जिस में परीक्षक किसी की तरफ़दारी न करे, निदान इस तीसरी परीक्षा मे जो निपुण ठहरता है उसे पहले दर्जे का विद्यार्थी कहते हैं, और वह नीले रंगका कपडा सियाह गोट लगा हुआ पहनता है, और अपनी टोपी पर एक चांदी की चिडिया रखता है, चौथी परीक्षा सूबे के सदरमुक़ाम में तीसरे साल बादशाह के दीवान और उस सूबे के सारे हाकिमों के साम्हने होती है, कोठरियों पर पहरे तैनात रहते हैं, यदि प्रश्नों का उत्तर लिखने में एक अक्षर की भी भूल रहे तो परीक्षकलोग उस कागज को फेंक देते है, और उस में से विद्यार्थी का निशान काटकर दर्वाज़ेपर चिपका देते हैं, जिस में विद्यार्थी को इस बात की खबर भी पहुँच जाय और सभा के सामने लज्जित भी न होना पडे, जो विद्यार्थी इस चौथी परीक्षा से पारहुए उन के मानो भाग्य जागे उन के नाम टिकटों पर लिखकर शहर मे हर तरफ लटकाए जाते हैं, हाकिम उन के मा बाप और रिश्तेदारों

को बुलाकर बडी ख़ातिर करते हैं, उमराव उन की दावत करते हैं, और ख़िलत देते हैं, फिर उन को वहांवाले क्यूजिन अर्थात् श्रेष्ठजन पुकारते है, और वे ऊदेरंग का कपड़ा कालीगोट लगाकर पहनते है, और टोपी पर सोने की चिड़िया रखते हैं, उन को सब तरह के सरकारी उहदे मिल सकते हैं, और यदि वे बुद्धि और विवेक के साथ काम करें थोड़ेही दिनो में धनवान और बड़े आदमी बन जाते हैं, पर चौथी परीक्षा के ऊपर दो दर्जे और भी रखे हैं, जो क्यूजिन लोग उन दर्जों के पाने की चाह रखते है उन्हें पेकिन मे जाना पड़ता है, और वहां उनकी परीक्षा तीसरे साल राजधानी के बड़े पाठशाला हानलिनकालिज मे ली जाती है, प्राय दसहजार क्यूजिन, जो परीक्षा देने के लिये आते है, उन मे से प्राय तीन सौ पक्के ठहरते है, और तब उन तीन सौ की परीक्षा बादशाह के साम्हने ली जाती है, इस आखिरी परीक्षा में जो जीते वह अपने मन की मुराद को पहुंचे, डंके निशान के साथ बड़े जुलूस से शहर में घुमाते है, और उसी दम हानलिनकालिज मे भरती होजाते है, वजीरी इत्यादि बड़े उहदे खाली होने पर उन्हीं को मिलते हैं, और इस बन्दोबस्त से गांव के कारदारो को भी सारा धर्मशास्त्र जिसके बमूजिब काम करना पडता है कण्ठ याद रहता है। हिक्मत और कारीगरी चीनियो की मशहूर है, यद्यपि वे लोग अबतक धूंएं के जहाज़ और गाड़ियां और टेलिग्राफ अर्थात् तार की डाक इत्यादि काम की चीज़े और तरह बतरह की कलें जो इंगलिस्तान मे तयार होती हैं बनानी नहीं जानते, पर तौ भी बारीकी सफाई नजाकत और खूबी मे वहां के कारीगरो की किसी मुल्क के भी आदमी बराबरी नही करसकते। ये लोग छापना और बारूत बनाना और चुम्बक को काम मे लाना

अर्थात् दिशा देखने के लिये कम्पास इत्यादि तयार करना उस में भी पहले जानते थे कि जव से वह फ़रंगिस्तान में ईजाद हुए। वर्तन चीनी के स्वच्छ और सुन्दर होते हैं (१) यह हिक्मत चीनियों ने वारह सौ वरस से पाई है। कंदील चीन की मशहूर है, निहायत उमदा रंग वरंग की वड़ी हिक्मत से तयार करते है, और इस को मकान की सजावट में पहली चीज समझते हैं, जो क़ंदील दर्वाजे पर लटकाई जाती है उसपर मकान के मालिक का नाम भी वहुत खूब सूरती के साथ लिखा रहता है आगे ये लोग शीशा वनाना नहीं जानते थे, लेकिन अव यह फ़न भी उन लोगों ने फ़रंगियो से सीख लिया। इस वातमें वहां के आदमी वड़े उस्ताद हैं कि जैसी चीज़ देखें वैसी ही वना लेवें, एक फ़रंगिस्तान का सौदागर वड़ा क़ीमती मोती वेचने के लिये उस मुल्क में ले गया था, वहां के आदमी हर रोज उस मोती के देखने को आया करते, एक दिन एक चीनी ने कई सौ रुपये वयाने के देकर उस मोती की डिविया पर मुहर कर दी, और यह क़रार किया कि जव विलकुल रुपया दूंगा मोती ले जाऊंगा, ग़रज़ वह चीनी फिर न आया, और उस सौदागर के जहाज खुलने का दिन पहुंचगया, यद्यपि मोती न विका पर तौभी उसका मन निश्चिन्त था, क्योंकि वयाने में उसका राहखर्च से भी अधिक रुपया मिलगया था, निदान जव घर आकर उस चीनी की मुहर को तोड़कर मोती डिविया से वाहर निकाला, और एक जौहरी को

---

(१) वहां एक तरह का पत्थर होता है, उसको एक प्रकार के मिट्टी के साथ कि वह भी खास उसी मुल्क में होती है मिलाकर ये वर्तन बनाते है॥

बेचने के वास्ते देने लगा तो मालूम हुआ कि वह मोती झूठा है, चीनी ने हथ फेर किया, सच्चा मोती तो उड़ा लिया और वैसा ही मोती झूठा बनाकर उस डिबिया में रख दिया । यहां के आदमी हाथीदांत पर ऐसी नक़ाशी करते हैं कि गोले के अन्दर ही अन्दर दूसरे जालीदार गोले तराशते और उन पर नक़ाशी करते चले जाते हैं। यद्यपि बारूत का बनाना ये लोग बहुत दिनों से जानते थे, परंतु तोप का ढालना डेढ़ ही सौ बरस से सीखा है। चाय रेशम नानकीन कपड़ा चीनी के बर्तन शक्कर दारचीनी काफर काग़ज हाथीदांत और कचकड़े की चीजें और खिलोने इत्यादि वहां से दिसावरों को जाते हैं। पौने सात लाख मन चाय हरसाल कांटन से जहाजों पर लदती है। छींट बनात कपड़े ऊद बिलाव के चमड़े गैंडे के खाग मोर के पर और शंख इत्यादि अंगरेजी और हिन्दुस्तानी चीज़ें अकसर तिब्बत की राह भी चीन मे पहुंचती है। तिब्बत से पशमीना कश्मीर में आता है, और फिर वहां से शाल दुशाले बनकर चीन को जाते हैं। यद्यपि चीन के आदमी अपनी तवारीखों मे बहुत पुराने जमानों का हाल लिखते हैं, लेकिन जिनपर कि एतमाद हो सकता है वह इकतीस सौ बरस से इधर के हैं कि जब चौ बादशाह और कानफ्यूशियस हकीम पैदा हुए, प्राय ८०० बरस वहां की बादशाहत चौ के खानदान मे रही, परंतु उस समय खंड खंड के जुदा जुदा राजा थे बादशाह केवल नाम को था, चीन बादशाह ने उन सब को अपने अधीन किया, और तातारियों के हमले से बचने के वास्ते वह बड़ी दीवार बनाई कि जिसका हाल ऊपर लिख आये हैं, प्राय सौ बरस बादशाहत उसके खानदान में रहकर फेर हान के वंश में आई। सन् ६२२ से ८०७ तक नांग के खान-

दान में रही, फिर ५३ वरस वदअमली रहकर सुंग के घराने में आई। तेरहवीं सदी के अखीर में मुगलो ने उस विलायत को फ़तह किया, और ८५ वरस अपने कवजे में रखा। कावलेखां चंगेज़खां का पोता इस खानदान में वड़ा नामी हुआ। सन् १३६६ से सन् १६४४ तक यह सल्तनत फिर चीनियों के हाथ में अर्थात् मिग के खानदान मे रही। सन् १६४४ मे तातारियों ने उसे दवाया, और शंची नाम उनका वादशाह वहां के तख़्त पर वैठा, तव से अव तक उसी घराने मे वह सल्तनत चली आती है, और चीन और तातार दोनों विलायतो की एक ही वादशाहत गिनी जाती है। इन तातारी वादशाहों ने विलकुल चालचलन और तरीक़े चीनियों के इख़्तियार करलिये, इस वाइस से वह वादशाह उनको परदेशी नहीं मालूम होते। इन लोगों का यह आईन है कि परदेशी को अपने मुल्क मे नही आने देते, केवल एक वंदर कांटन का ग़ैर मुल्क के सौदागरों के वास्ते मुकर्रर था, उसी मुक़ाम पर फिरंगिस्तान के भी सव सौदागर लोग आकर चीनियों के साथ लेन देन किया करते थे, अंगरेज़ लोग अफ़यून की तिजारत से वड़ा फाइदा उठाते थे, और वादशाह के यहां से अफयून वेचने की इन लोगों को मनाही थी, क्योंकि इसके खाने से उसकी रअय्यत का नुक़सान था, और सव लोग अफ़यूनी हुए जाते थे, नाचार जव अंगरेज़ अफ़यून वेचने से न रुके तो उसने सन् १८३९ मे उनके जहाज़ो की तलाशी लेकर प्राय वीस हजार अफ़यून के संदूक़ दरया में डुवा दिये, उसको सरकार अंगरेज़ी की कुदरत और ताक़त मालूम न थी, वह तव तक दुनियां मे अपने से अधिक वरन वरावर भी किसी को नहीं समझता था, निदान इस ज़ियादती का वदला लेने के वास्ते कई एक

दुखानी (१) और जंगी जहाज़ कुछ फौज के साथ सरकार की तरफ से चढ़ गये, और वाद वहुत सी लड़ाइयों के यह सरकारी फ़ौज फ़तह फीरोज़ी के निशान उड़ाती हुई नान्‌किङ्ग शहर में दाखिल हुई, और करीब था कि दारुस्सल्तनत पेकिन को लेलेवे, परंतु उनतीसवीं अगस्त १८४२ को वादशाह के मोतमदों ने आकर वमूजिव सरकारकी तजवीज़ की हुई शर्तों के सुलह करली, और सुलहनामे पर दस्तखत कर दिये, इस सुलहनामे की रूसे चीन के वादशाह को हाङ्गकाङ्ग का टापू हमेशः के वास्ते अंगरेज़ों के हवाले करदेना पड़ा, और एक वंदर कांटन की जगह पांच वंदर अर्थात् कांटन एमायफूचूफू निङ्गपो और शांघे उन के वास्ते खोलना और चार करोड़ साढ़ेवहत्तर लाख रुपया लड़ाई का खर्च और अफयून का नुक़सान अदाकरना पड़ा। एक साहिव जो उस लड़ाई में मौजूद थे चीनियों की जवांमर्दी और लड़ने का हाल इस तरह पर वयान फर्माते हैं, कि जव सरकारी फौज की किश्तियां एक क़िले के नज़दीक पहुंची कि जो दर्या कनारे था तो क्या देखते हैं कि उस क़िले के सव आदमी वाहर दर्या कनारे आकर वड़े वड़े कागज़ के अज़दहे और देव अंगरेज़ी फौज को दिखला दिखला कर कलों के ज़ोर से उन के हाथ और मुंह हिलाते हैं, निदान जव सरकारी फौज ने देखा कि उनके पास न तोप है न कोई दूसरा हथियार केवल लड़कों की तरह खिलौनों से डराना चाहते हैं तो उन के लड़कपन पर रहम खाकर सिपाहियों ने फौरन् कारतूसों से गोलियां दांत से क़ाट काटकर निकाल डालीं और खाली वंदूकें छोड़ीं, आवाज़ की भी वंदूक़ की उन पर ऐसी दहशत गालिव हुई

(१) दुखानी जहाज़ उसे कहते हैं जो धूंएं के ज़ोर से चलता है॥

कि सब के सब एक लहज़े में काफ़ूर हो गये। बादशाह वहां का शहंशाह कहलाता है, मुसल्मान उसको ख़ाक़ां और फगफूर कहते हैं (१) और रऐयत उसको अपने बाप की तरह जानती है, और बाप के नाम से पुकारती है। अंगरेज लोग वहां के सर्दारों को मैंडरिन कहते हैं। तिब्बत का मालिक लामा गुरु कहलाता है, लेकिन वह केवल पूजने के वास्ते है, चीनी लोग उसको साक्षात बुध का अवतार मानते हैं, और कहते हैं कि वह अमर है, जब उसका बदन बुढ़ापे से जीर्ण होता है तो शरीर बदल लेता है, पर अंगरेज़ लोग इस बात को केवल उसके कार्दारोंका फरेब समझते हैं, और इसतौर पर ख़याल करते है, कि जब लामा गुरु मरजाता है तो उसके कार्दार किसी तुर्त के जनमे हुए लड़के को लाकर गद्दीपर बैठा देते हैं और फिर उसको ऐसे ढब से सिखाते पढ़ाते हैं, कि वह सारी बातें पहले लामाओं के वक्त की बतलाने लगता है, और उसके चेले और शिष्य उन को करामात समझकर निश्चय मान जाते हैं। सन् १७८३ में जब कप्तान टर्नर साहिब सरकार की तरफ से सफीर अर्थात् दूत बन कर तिब्बत को गये थे तो उस वक्त लामा की उमर कुल अठारह महीने की थी, लेकिन कप्तान साहिब अपनी किताब मे लिखते हैं कि मुलाक़ात के वक्त वह बड़े गौरव और प्रतिष्ठा के साथ मसनद पर बैठा रहा, और बराबर इन की तरफ मुतवज्जिह रहा, जब कप्तान साहिब कुछ बात कहते तो जवाब में वह इस अंदाज़ से गर्दन हिलाता कि जैसे कोई बड़ा आदमी किसी बात को समझकर इशारा

---

(१) फग़फ़ूर का असल बगपूर है, अर्थात् भगवान का बेटा, बग प्राचीन फारसी भाषा में भगवान को और पूर पुत्र को कहते हैं॥

करे, जब कप्तान साहिब का पियाला चाय से खाली होता तो वह मंत्र चढ़ाकर और सिर हिलाकर चिल्लाता और अपने आदमियों को चाय देने का इशारा करता, वरन एक सोने के पियाले से कुछ मिठाई निकाल कर अपने हाथ से कप्तान साहिब को दी। लामा जो शरीर छोड़ता है सुखलाकर और उसपर चांदी की खोल चढ़ाकर मंदिर में पूजा के वास्ते रखदेते हैं। मुल्क का कारबार उसका नायब जिसे राजा कहते है करता है, लेकिन हकीक़त मे इख़्तियार बिलकुल उस सूबेदार का है कि जो चीन के बादशाह की तरफ़ से वहां रहता है। आईन और इंतिज़ाम चीन का एशिया के सब मुल्कों से बिहतर है, वहां का बादशाह चार वजीर रखता है, और उनके नीचे छ महकमे है, पहले महकमे के हाकिमों का यह काम है कि हर एक उहदे पर उसके लाइक़ आदमी मुक़र्रर करें और देखें कि हर एक उहदेदार अपना अपना काम बखूबी अनजाम देता है, दूसरे के ज़िम्मे माल का काम है, तीसरे का काम यह है कि लोगों का चाल तरीक़ा और दस्तूर दुरुस्त रखे, चौथे के ज़िम्मे लशकर है, पांचवे के ज़िम्मे सजा देना गुनहगारों को, और छठे महकमे के हाकिम इमारत और सड़क दुरुस्त रखते है, सिवाय इन महकमों के दारुस्सल्तनत में हानलिन नाम एक बड़ा पाठशाला है, जबतक वे लोग जो जिले के इस्कूलों में विद्या उपार्जन करते हैं इस मदरसेवालों के साम्हने परीक्षा में नहीं उतरते कोई बड़ा उहदा नहीं पाते। रिशवत लेने की सज़ा वहां फांसी है। वहां कुछ यह दस्तूर नहीं है कि अमीर ही के लड़के या बादशाह के संबंधी बड़े कामों पर मुक़र्रर हों, वरन जो मनुष्य जैसा पढ़ा लिखा होता है और इस्कूल में जिस दर्जे की परीक्षा देता है उसी दर्जे का उसको काम मिल जाता है, चाहे वह गरीब से गरीब जमींदार का लड़का क्यों न हो। यह

भी वहां का आईन है कि यदि किसी ने फांसी दिये जाने का अपराध किया हो, और उसके मा बाप बूढे हों, और उनके कोई दूसरा वेटा या पोता सोलह वरस से जियादः का न हो, तो उसका अपराध सरकार से क्षमा होता है, निदान वहां मा बाप की वड़ी इज्जत और क़दर है, एक आदमी ने अपनी मा पर हाथ चलाया था सो उसने वादशाह के हुक्म से उसी दम फांसी पाई, और उसका घर ढाहा गया, और उसकी स्त्री और उस जिले के हाकिम को भी सज़ा मिली, सच मा वाप का ऋण लड़का लड़कियो पर ऐसा ही है कि यदि हम लोग अपनी ज़ान तक भी उनकी नज़र करें तो उनके ऋण से कदापि अदा न हों । वहां का यह भी आईन है कि जब साल पूरा होने को एक दिन वाकी रहे तो सब लोग अपना हिसाब किताव फैसल करके जिस किसी का जो कुछ देना दिलाना हो दे ले डालें, यदि कोई उस दिन अपना कर्ज अदा न करे तो लेनदार को इख्तियार है जो चाहे उस पर ज़ियादती करे, वादशाह उसकी नालिश फर्याद हर्गिज़ नहीं सुनता, इसी वास्ते वहां के आदमी किफायती होते है, वाहियात मे रुपया नही उड़ाते । यह भी वहां का एक दस्तूर है कि यदि कोई बात किसी आदमी से बेजा या गुनाह की बनजावे तो उस आदमी के साथ उस जिले के हाकिम को भी थोड़ी बहुत सज़ा मिलती है, क्योंकि वादशाह कहता है कि यदि हाकिम उस आदमी को नीति और धर्मशास्त्र अच्छी तरह समझा देता तो वह ऐसा अपराध क्यों करता, वरन यदि कभी किसी हाकिम के ज़िले में कुछ ज़ियादः ख़रावी पड़जाती है तो उस महकमे के हाकिम तक वादशाह की ख़फगी में पड़ते हैं कि जिसके ज़िम्मे हर एक उहदे पर उस उहदे के लाइक आदमी मुकर्रर करने का काम है, और इसी वास्ते गांव

गांव के हाकिम प्रत्येक अमावाश्या के दिन लोगों को धर्मशास्त्र पढ़कर सुनाते है, और साल में एक वार ज़िले का हाकिम गांव गांव के हाकिमो को जमाकरके इसी तरह उपदेश देता है। इस धर्मशास्त्र की पुस्तक में चीनियों की आईन वमूजिव पिता माता की सेवा करना पित्रों को मान्ना, आपस में मेल मुवाफक़त रखना, किसानी और ज़िमींदारी को सब में अच्छा काम जान्ना, किफायत और मिहनत के फाइदे, विद्या अभ्यास का फल, बादशाह की आज्ञाकारी, ऐसी वातें लिखी है। उदाहरण के लिये कुछ थोड़ा सा हाल मेल और मुवाफक़त रखने के विषय में उनके धर्मशास्त्र से तर्जुमा करके इस जगह लिखते हैं, वादशाह तुम लोगों को हुक्म देता है कि आपस में मेल और मुवाफक़त रखो जिस से लड़ाई झगडे और नालिश फर्याद यहां से दूर रहे, इस हुक्म को अच्छी तरह दिल देकर सुनो, तुम्हारे रिश्तेदार और वाक़िफकारों में बहुतेरे आदमी बूढ़े भी होंगे, और बहुतेरे तुम्हारे हमसवक़ और हमजोली, जब शाम सुबह तुम बाहर जाते हो यह मुमकिन नहीं किसी से तुम्हारी मुलाक़ात न हो, या किसी को तुम न देखो, गांव उसको कहते हैं जिस में कई घर बसें, इन मे गरीब भी होते हैं और दौलतवाले भी, कोई तुम से बड़े हैं, कोई छोटे, और कोई वरावर। एक पुराने आदमी ने खूब अक़ल्मंदी की वात कही है कि ऐसी जगहों में जहां बूढ़े भी रहते हैं और कम उमर भी वहां मुनासिव है कि कम उमर ज़ियादः उमर वालों की ताज़ीम करें, इस वात का हर्गिज़ खयाल न करें कि वे गरीब हैं या अमीर और पंडित हैं या मूर्ख, केवल उमर का लिहाज़ रखें, यदि दौलतमंद होकर तुम गरीब से मुँह फेरोगे अथवा ग़रीब होकर अमीरों पर डाह खाओगे तो इस वात से हमेशा के वास्ते तुम्हारे

दिलों में फ़र्क़ वना रहेगा, बादशाह कि जो तुम लोगों को हद से ज़ियादः प्यार करता है, नालिश फर्याद और मुआमले मुक़द्दमों से वहुत नाराज़ है, और जो कि वह दिल से तुम्हारी खुशी और विहबूदी अर्थात् आपस की मुवाफ़क़त चाहता है, वह आप तुम्हें उपदेश देता है, कि जिस मे तुम्हारे दर्मियान वैर विरोध न पैद होवे, तुम लोगों ने बादशाह का इरादा वखूवी समझ लिया, तुम को उचित है कि उसके अनुसार काम करो, और यदि तुम उसके अनुसार काम करोगे इस आज्ञाकारी से तुम्हारा अनंत उपकार होगा, और मुझे निस्संदेह निश्चय है कि तुम उसके अनुसार काम करोगे, इसलिये अब तुम घर जाकर बादशाह की अभिलाषानुसार काम करो और अपने पिता अर्थात् बादशाह के मन प्रसन्न होने के कारन हो। फौज चीन के बादशाह की गिन्ती के लिये माय १०००००० होवेगी, परंतु काम की सिपाह वही ८०००० जंगी और जरीर आदमी हैं जो तातार के मुल्क से भरती हुए है। आमदनी वहां के बादशाह की ६०००००००० से अधिक नहीं और इससे मालूम होता है कि वहां की रऐयत को महसूल वहुत कम देना पड़ता है॥

---

## जपान

चीन के पूर्व २६ अंश ३५ कला और ४९ अंश उत्तर अक्षांस के दर्मियान जपान के टापू है। नींफ़न सिटकाफ और क्यूस्यू ये तीन तो बड़े है और बाक़ी छोटे हैं, सब में वडा नीफ़न कुछ ऊपर ८००मील लंबा और ९० से लेकर १७० मील तक चौड़ा है। विस्तार तीनों टापुओं का नव्वे हज़ार मील मुरब्बा से अधिक नहीं है। आवादी उस मुल्क में तीन करोड आदमी की अनुमान करते है। जंगल उजाड़ कहीं

नहीं, गांव से गांव मिल रहे हैं। ज़मीन बहुधा कोहिस्तान और पथरीली है, ऊंचे पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ़ पड़ी रहती है, और कई एक उन में से ज्वालामुखी भी हैं। नदी और झीलें बहुत हैं, परंतु छोटी छोटी। धरती यद्यपि उर्वरा नहीं है लेकिन किसानों की मिहनत से अन्न बहुत उपजता है, और उन्हीं प्रकारों का जो चीन में होता है, चप्पे भर ज़मीन भी खेती से खाली नहीं है, पहाड़ों पर जहां बैलों का हल नहीं चल सकता आदमी हाथ से ज़मीन खोदते हैं, खेती बारी की उन्नति के लिये वहांवालों ने यह आईन जारी रखा है कि जो धरती बरस दिन तक जोती बोई न जावे वह सरकार की ज़ब्ती में आवे। घोड़े और मवेशी की इस मुल्क में कमी है, और गधा खच्चर ऊंट हाथी वहां बिलकुल नहीं होता, दीमक बहुत हैं। खान से सोना चांदी लोहा और तांबा रांगा सीसा पारा गंधक हीरा अक़ीक़ यशम कोयला निकलता है, समुद्र किनारे मोती और मूंगा बहुत उमदः मिलता है, और अम्बर भी हाथ लगता है। मेंह वहां बहुत बरसता है, और तूफ़ान अकसर आया करता है। आदमी वहां के चालाक मिहनती निष्कपटी उदार अत्यन्त संतोषी सच्चे ईमान वाले वफ़ादार मिलनसार मुतहम्मिल मुहब्बती मिहमांपर्वर होशयार दूरंदेश, चिहरों पर संतोष की खुशी छाई हुई, चुगली को बहुत बड़ा ऐब समझते हैं, परदेसी का कभी एतबार नहीं करते, छोटे आदमी भी अदब क़ायदे और शऊर सलीक़े के साथ रहते हैं, क्या मक़दूर कि कोई शख़्स गाली या सख़्त बात ज़ुबान पर लावे, या बद ज़ुबान अथवा झिड़क कर बोले। मकफ़ालेन साहिब अपनी किताब में लिखते हैं कि वहां कुली मज़दूर को भी जब तक तुम नर्मी से न पुकारोगे वह तुम्हारी बात का जवाब न देवेगा। बदन

उन लोगों का भरा हुआ, पर मोटे कम, क़द मियाना, रंग जरदी मायल, आंखें छोटी चीनियों की तरह, भवें ऊंची, और गरदन तंग, सिर बड़ा, और नाक छोटी और फैली हुई, वाल काले और मोटे तेल से चमकते हुए, डाढ़ी मुंडवाते हैं, हजामत वनवाते हैं, टोपियां सींक की नुकीली जव धूप पानी में वाहर जाते हैं तब पहिनते हैं, घोड़े की लगाम हाथ में लेना वेइज्जती है इसी लिये जब सवार होते हैं लगाम साईसों के हाथ में रहती है। मकान उनके वहुत साफ और वड़े क़रीने के साथ, हर चीज़ के वास्ते मुनासिव जगह और हर जगह के वास्ते मुनासिव चीज़, असवाव कम और सफाई अधिक, यह नहीं कि सौदागरी दूकानों की तरह भरे हुए। हम्माम सब मकानों में, वदन साफ, कपड़ा भी साफ, वक़्त वटा हुआ, व्यर्थ समय किसी का भी नहीं जाता, पुत्र माता पिता के आज्ञाकारी, जहां लड़के ने होश संभाला और वाप ने उसे अपना घर सौंपा, खुराक उनकी वहुधा चावल, मास का अहार उनके मत से विरुद्ध है परन्तु खाते हैं, मखन और दूध का मज़ा बिलकुल नहीं जानते, भोजन ये भी चीनियों की तरह सलाइयों से करते है, और वरतन उनके वहुत सुन्दर और हलके जप्पानी रोगन से रंगे रहते हैं। सुवह को जो मुलाक़ाती आता है उसके साम्हने चाय और कागज़ के तख्ते पर कुछ मिठाई रखी जाती है, और दस्तूर है कि मिहमान के खाने से जो मिठाई बचे उसे वह उसी काग़ज़ में वांधकर जेब में रख ले जावे। नाम उमर भर में तीन दफा वदलते हैं मुरदों को जलाते और उनके नाम की छतरियां वनाते हैं, जलते समय उनके मित्र और भाई वंधु पुष्प वस्त्र मिठाई इत्यादि चिता में डालते हैं। दर्या की सैर का वड़ा शौक़ रखते हैं, संध्या के समय स्त्री पुरुष सब नाव पर चले जाते हैं शराब पीते हैं

और गाते बजाते हैं, नावें बहुत सुन्दर और और सजीली, रंग बरंग की क़ंदीलो से रौशन, औरतें वहां की अकसर पतिव्रता, मजलिसों मे तीन तीन दफा कपड़ा बदलती हैं, और बीस बीस गौन तक एक पर एक पहिनती हैं, । घड़ी के बदल तोड़े सुलगा रखते हैं, एक एक घंटे में जितना तोड़ा जले उतने तोड़े पर निशान रहता है, और उसी से समय का प्रमाण मालूम करते हैं । मजहब वहांवालों का बौध। भाषा वहां की निराली, एक ही शब्द के गरीब अमीर स्त्री और पुरुष के बोलने मे जुदा जुदा अर्थ हो जाते है । अक्षर भी स्त्री पुरुष के वास्ते जुदा जुदा दो प्रकार के हैं, और लिखने मे ये भी चीनियों की तरह खड़ी पंक्ति लिखते हैं, आडी नहीं लिखते पाठशाला वहां लड़का लड़की दोनो के वास्ते बने हैं, गरीब से गरीब जमींदार भी लिख पढ़ सकते हैं, स्त्रियें भी ग्रंथ रचती हैं लोगो को पढ़ने लिखने का शौक़ है, वहां गरमियों के मौसिम में अकसर यह बात देखने मे आवेगी कि हर जगह नहर के कनारों पर पेड़ों की घनी घनी ठंढी छाया मे औरत और मरद दोनों हाथों मे किताब लिये हुए बैठे है । कपड़े सूती और रेशमी फौलादी चाकू और तलवार और बरतन चीनी के यहां भी अच्छे बनते हैं, और रोगन तो जपान का सा कहीं भी नहीं होता, यह संदूक़ क़लमदान इत्यादि जिनको यहां जप्पानी कहते हैं उसी मुल्क से रंग रोगन होकर आते हैं, वे लोग इस रोगन को उरुसी के दरख्त से जो उसी मुल्क में होता है पछना लगाकर निकालते हैं। डच लोगों से सीख कर दूरबीन थर्मामेटर इत्यादि यंत्र भी अब बनाने लगे है । एक हिकमत वहांवालों को ऐसी आती है कि सिवाय चीनियों के और किसी को भी उस से खबर नहीं है, अर्थात् तीन इंच लंबी और एक इंच चौड़ी डिबिया के अन्दर चील और बांस का पेड़ और

आलूचे का दरख्त कलियों समेत दिखला देते हैं। परदेसी आदमियों को ये भी चीनियों की तरह अपने मुल्क मे नहीं आने देते। वनज व्यौपार इनका चीन के सिवाय केवल थोड़ा सा और लोगों के साथ है सो भी निगास की इत्यादि उन्ही बंदरों मे जो परदेसियों के वास्ते मुक़र्रर है। चीनियो से चावल चीनी हाथीदांत फिटकिरी कपड़ा और फरंगिस्तान वालों से विलायती असबाब दवा मसाले शोरा इत्यादि लेते हैं, और तावा सूखी मछली जप्पानी रोग़न और रोगनी चीज़े उनको देते हैं, बादशाह वहां दो हैं एक दीन का दूसरा दुनियां का दीनी अर्थात् पारलौकिक बादशाह के लिये जागीर मुक़र्रर है, उसी की आमदनी पर गुजारा करता है, सल्तनत के काम मे दख़ल नहीं देता, केवल जब कोई भारी मुहिम्म आ पड़ती है तो उस से सलाह पूछी जाती है, अथवा जब दूसरा बादशाह कुचाल चलना चाहताहै तो वह उसे खबरदार कर देता है, वह पृथ्वी पर पांव नहीं रखता आदमी के कंधों पर चलता है, उसके बाल नींद में काटे जाते हैं, सारे दिन ताज पहिनकर एक आसन से उसे सिंहासन पर बैठे रहना पड़ता है बारह बिवाह करता है, और जो वस्त्र आभूषण बरतन इत्यादि उस के और उसकी स्त्रियो के काम में एक बार आ जाते है उन्हें फिर उसी दम तोड़ मरोड़ कर फेंक देते हैं, न वह दूसरी बार उसके काम में आते हैं और न उन को दूसरा आदमी काम में ला सकता है। बाल बच्चे सूबेदारों के राजधानी मे रहते हैं, और सूबेदारो को भी बारी बारी से एक साल अपने सूबे में और एक साल राजधानी में रहना पड़ता है। दीवान सूबेदारो का बादशाह के यहांसे मुक़र्रर होता है। पांच सूबेदारोंकी एक कौंसिल है, यद्यपि उनकी बर्तरफी बहाली का बादशाह को इख्तियार है पर बिना उनकी सलाह के वह कुछ भी काम

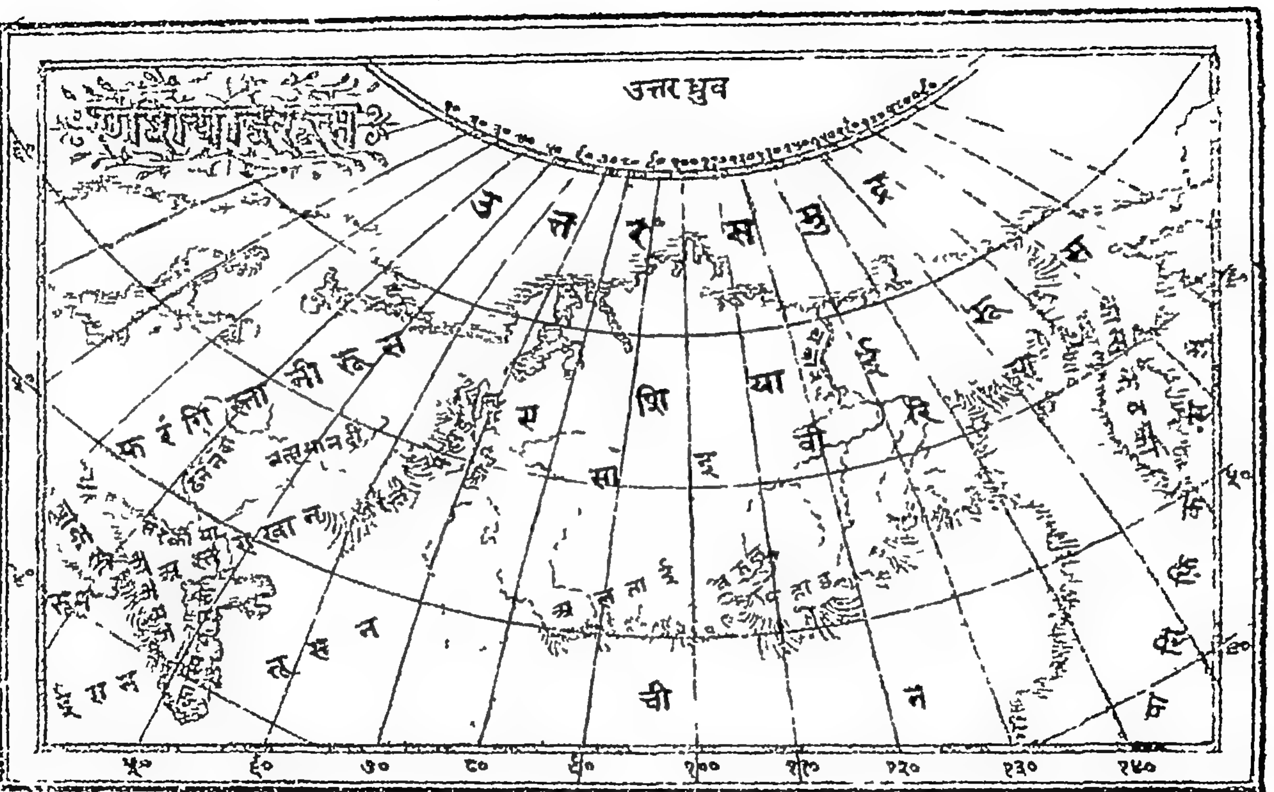
नहीं करसकता, और न उनको विना क़सूर मौकूफ कर सकता है, नहीं तो मुल्क में तुरंत बलवा होजावे, यदि कौंसल और वादशाह की राय में कभी कुछ फ़र्क़ पडे, और वादशाह कौंसल के तजवीज़ी कागज़ पर दस्तखत न करे तो उसका अपील वादशाह के भाई वेटों से तीन शाहज़ादो के साम्हने पेश होता है, पर ऐसा काम वहुत कम पड़ता है, क्योंकि इस अपील मे कौंसल की राय ठीक ठहरे तो वादशाह तख्त से खारिज होजाता है, और जो वादशाह की राय ठीक ठहरे तो फिर वज़ीर समेत सारी कौंसल का पेट चाक होता है। वहां का यह आईन है कि जव तक पुराने पड़ौसियो से नेकमआशी का सार्टीफ़िकट और नये पडौसियो से रहने की इजाज़त न मिले कोई आदमी अपने रहने का मकान नही वदल सकता। चोरी वहां वहुत कम होती है, सौदागर सोने चांदी से वैल भर कर अकेले चलते हैं। सज़ा अकसर क़तल की, क्योंकि वहांवालों की समझ में क़तल के सिवाय और कोई सज़ा गरीव अमीर को वरावर नहीं पहुंच सकती, और इसी लिये वहां जुर्माना कभी नही लिया जाता। फौज वहांकी एक लाख पैदल और वीस हज़ार सवार अनुमान करते हैं। आमदनी इस वादशाहत की अठाईस करोड़ रुपया साल है। दारुस्सलतनत जेडो में जो ३६ अंश उत्तर अक्षांस और ४० अंश पूर्व देशांतर मे २२ मील लंवा वसा है पंदरह लाख आदमी की वस्ती वतलाते है। मकान अकसर लकड़ी और वांस के, नदी और नहरें शहर के वीच से वहती है, दुतरफा उनपर सुंदर दरख्त लगे हुये और जगह जगह पर पुल वने हुये। वादशाह का महल शहर के अंदर आठ मील के घेरे में वना है, दीवानआम ६०० फुट लंवा ३०० फुट चौड़ा विलकुल देवदारकी लकड़ी का वना

है, और उसपर निहायत उमदः जप्पानी रंग रौग़न किया है ॥



## एशियाईरूस

एशियाई इस वास्ते कहते हैं कि रूस का मुल्क कुछ तो एशिया में पड़ा है और कुछ यूरुप अर्थात् फ़रंगिस्तान में गिना जाता है, इस लिये एशियाई का वयान जो एशिया में पड़ा है एशिया के साथ और यूरुपी अर्थात् फरंगिस्तान के रूस का वर्णन जो यूरुप में गिना जाता है फ़रंगिस्तान के साथ किया जावेगा, वरन इस वादशाह का जियादः वयान फ़रंगिस्तान ही के साथ होवेगा, क्योंकि राजधानी इसकी पीटर्सवर्ग फ़रंगिस्तान में वसी है। जानना चाहिये कि एशिया रूस, जो सिवाय ककेसस के कोहिस्तानी ज़िलों के ४८ से ७८ अंश उत्तर अक्षांस तक और ५९ अंश पूर्व देशांतर से १७० अंश पश्चिम देशांतर तक चलागया है, उत्तर तरफ़ उत्तर समुद्र से, और दक्षिण तरफ़ चीन तूरान ईरान और एशियाईरूमसे, पूर्व और पासिफ़िक समुद्र से, और पश्चिम फ़रंगिस्तानीरूस से घिरा हुआ है। वह पश्चिम से पूर्व को ५००० मील लंवा और उत्तर से दक्षिण को १५०० मील चौड़ा होवेगा। विस्तार तीस लाख मील मुरब्बा, और आ- वादी फ़ी मील एक आदमी अर्थात् कुल तीस लाख आदमी की, और १७ सूवों में वांटा गयाहै, और साईवीरिया इस्तराखान और ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले ये तीन उसके बड़े हिस्से हैं। साई- वीरिया यूरल पहाड़ से पासिफिक समुद्र तक चला गया है, उस के नैर्ऋतकोन डन और वलगा नदी और कास्पियनसी के वीच इस्तराख़ान, उसके नैऋतकोन कास्पियनसी और व्लाकसी के वीच ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले है। जंगल उजाड़ वहुत है। दक्षिण


उत्तर ध्रुव
चीन
५०
६०
७०
८०
९०
१००
११०
१२०
१३०
१४०

ग में धरती उपजाऊ है, और घोड़े और मवेशी भी वहुतायत से होते
परन्तु उत्तर भाग में केवल झील और दलदल और वर्फ़िस्तान
। पहाड़ों के दर्मियान इस मुल्क में अलताई और यूरल और कके-
र की श्रेणियां प्रसिद्ध हैं, इसी ककेसस को फ़ारसी में कोहक़ाफ
हते हैं, और इसी ककेसस के घाटे को वंद करने के लिये जिस मे
उत्तरवाले ईरान पर हमला न कर सकें सिकन्दर ने वह वड़ी दीवार
नाई थी जिसे फारसी किताबों मे सद्दे इस्कंदरी लिखा है, उसका
लवुर्ज नामी एक शिखर प्राय १८००० फुट समुद्र से ऊंचा है।
अलताई इस मुल्क को तातार से और यूरल उसे फ़रंगिस्तान से
दा करता है। सव मे वड़ी नदी इस मुल्क मे ओवी है, वह २५५०
ल लंवी होवेगी। लेना दो हजार मील लंवी है, दोनों अलताई
निकलकर उत्तर समुद्र में गिरती हैं, और वलगा इस मुल्क को
रंगिस्तानी रूस से जुदा करती हुई कास्पियनसी में गिरती है।
झील वेकल की ३५० मील लंवी और ५० मील तक चौड़ी है,
नवम्वर से मई तक सर्दी के सवव जमी रहती है। खान से वहां सोना
चांदी प्लाटिनम् तांवा लोहा सीसा सुरमा पारा शोरा गन्धक फिट-
री हीरा लसनिया पुखराज इत्यादि वड़ी वड़ी क़ीमती चीज़ें निक-
ती हैं, लोहा वहुत है, पहाड़ के पहाड़ लोहे के चुंवक का स्वभाव
रखते हैं। साईवीरिया का इलाक़ा रूस के मुल्क का कालापानी है,
कोई संगीन मुजरिम या राजद्रोही होता है उसको साईवीरिया
ले जाकर वहां उससे खान खोदने का काम लेते हैं। साईवीरिया
अग्निकोन की तरफ़ कम्सकटका का प्रायद्वीप प्राय ६०० मील
ा है और उस मे कई एक ज्वालामुखी पहाड़ भी हैं, दूसरे ती-
साल जव वे अपने जोर पर आते है तो सैकड़ो हाथ ऊंची ज्वाला

उठती है, गली हुई धातुकी नदियां जारी होजाती हैं, और उनके अन्दर से इतनी राख निकलती है कि तीस तीस मील तक छाजाती है। वहां लकड़ी अच्छी होती है, परन्तु सर्दी की शिद्दत से खेती वारी नहीं होसकती। वहां के आदमी शिकार मारकर अथवा दरख़्तों की छाल जंगली फलों के साथ मिलाकर अपना पेट भरते हैं, और नाव की तरह बिना पहिये की गाड़ी बनाकर और उस में कुत्ते जोतकर वर्फ़िस्तान पर चलते हैं। इन कुत्तों का अजब स्वभाव है, गरमी के मौसिम में तो वहां के आदमी उन को जंगलों में छोड़ देते हैं, वहां वे अपनी खुराक आप तलाश करलेते हैं, और फिर जाड़े के आरंभ में खुद बखुद जंगलों से लौटकर अपने अपने मालिकों के पास चले आते हैं। सितम्बर से मई तक वहां जाड़े का मौसिम रहता है। समूर क़ाक़ुम और संजाब इत्यादि पोस्तीन बहुत उमदः होते हैं, और उन को बेचकर वहां के लोग बड़ा फ़ाइदा उठाते हैं। जंगलों के दर्मियान हिरन की क़िस्म से एक तरह के बारहसिंहे भी बहुत होते है, और उत्तर के इलाक़ों में लोग उनको मवेशी के तौर पर पालते हैं। आदमी इस मुल्क में रूसी क़ज़ाक़ और तातारी बहुत क़िस्म के बसते हैं, और वे लोग बडे वीर और साहसी और परा क्रमवाले होते हैं। घोड़े की सवारी और बाज़ के शिकार से बड़ा शौक़ रखते हैं, बहुतेरे उनमे क्रिस्तान है, और बहुतेरे मुसलमान औ बुतपरस्त। सर्केशिया की स्त्रियो का रूप सारी दुनियां मे मशहूर है उत्तर भाग मे समुद्र के तटस्थ लोग नाटे, मज़बूत, गर्दन उन की त सिर बड़ा, मुंह चकला, आंखे काली, पेशानी चौड़ी नाक चिपटे मुंह लंबा, होठ पतले, रंग गेहुआं, बाल कड़े और काले कंधों पर ल कते हुए, डाढी बहुत कम, और पैर छोटे होते है। जल के जीव म

कर पेट भरते हैं, और वस्त्र की जगह चमड़े पहनते हैं। जाड़ों के मौसिम मे जब वहां महीनों की लंबी राते होती हैं ( १ ) तो ये लोग बर्फ़ में गढ़ा खोदकर और उसके ऊपर बर्फ़ के ढोकों से कुटी सी बनाकर उसी के अंदर चुप चाप बैठ रहते हैं, और घास फूस और मछली की चरबी जलाकर उसी की आग तापा करते हैं। इस शिद्दत से सर्दी पड़ती है कि आग जलने पर भी वे बर्फ़ के मकान कदापि नहीं गलते, और जो लोग उसके अंदर रहते हैं। उन को बखूबी हवा की सख्ती से बचाते हैं। सूरत इन बर्फ़ी कुटियों की औंधी हुई नांद की तरह, धूंआं निकलने के लिये ऊपर एक छेद रहता है। साईबीरिया का इलाक़ा पहले तातार के शामिल था, सोलहवें शतक मे रूस के शहंशाँह ने उसको फतह करके अपने मुल्क में मिला लिया, जार्जिया इत्यादि इलाक़े भी उसने थोड़े ही दिनो से अपने क़बजे मे किये हैं। जार्जिया के इलाक़े में कास्पियनसी के पश्चिम कनारे दरख्त और पानी से ख़ाली एक पटपर मे बाकू का शहर बसा है, वहां की सारी धरती नफ्त अर्थात् मटियेतेल से तरह है, और जहां कहीं छेद या दरार है उसके अंदर से उसी प्रकार की गैस अर्थात् प्रज्वलित वायु निकलती है जैसी यहां कांगड़े के पास ज्वालामुखी से निकलती है, और जिससे रात्रि के समय कलकत्ते का सारा शहर रोशन रहता है। बाकू के भी लोग इस गैस को नलों की राह अपने मकानों मे लेजाकर चराग की एवज उसी से काम करते हैं, अर्थात् जहां कहीं वह गैस ज़मीन से निकलती है वहां से अपने मकान तक एक नल लगा देते

---

( १ ) ध्रुव के समीप महीनों की लंबी रात होने का कारण इस ग्रंथ के अंत मे वर्णन होगा॥

है उसी नलकी राह धूएं की तरह वह गैस उनके मकान में आ निकलती है, वरन वहां के आदमी अपना खाना भी उसी गैस से पकाते हैं। शहर के पास उस स्थान पर जहां से वह गैस वहुतायत के साथ निकलती है चार नल वहुत वड़े वडे आतिशदानों के दूदकश की तरह खड़े लगा रखे हैं, उन नलों के अंदर से उस प्रज्वलित वायु की लाटें वड़ी भभक और तेजी के साथ दूर तक ऊंची निकलती है, उसके चौफेर आध कोस के घेरे में सफेद पत्थरों की ऊंची दीवारें खिची हैं, और उन दीवारों मे अन्दर की तरफ वहुत सी कोठरियां बनी है, और उन कोठरियों के अन्दर कितने ही हिंदू फक़ीर जोगी और जटाधारी वैठे रहते हैं, वे अपना खाना अपने हाथ से पकाते हैं दूसरे का छूआ नही खाते, जव मरते हैं तो उनको घी से नहलाकर एक कुंड के अंदर जो इसी काम के लिये वना रखा है उसी गैस से जलादेते हैं। जिन दिनों में उस मुल्क के आदमी अग्निहोत्री थे, और गब्र कहलाते थे, उसी समय का यह मंदिर बनाहै। अव भी जो वहां इस मत के आदमी वच रहे हैं उनकी मदद से उसका खर्च चलता है। हिंदू लोग वाकू को महा ज्वालामुखी कहते हैं। नदियों के मुहानों में जो उत्तर हिम समुद्र में गिरती है अकूसर करारों के टूटने पर अथवा वर्फ़ के गलने पर धरती के अंदर एक मकार के हाथियों के दांत वहुतायत से मिलते हैं, वरन सन् १८०३ में वर्फ़ के करारे के नीचे से एक समूची लाश निकली थी, नौ फुट चार इंच ऊंची, १६ फुट ४ इंच लंवी, दांत भैंस की सींगों की तरह घूमे हुए, नौ फुट छ इंच लंवे, और साढ़े चार मन भारी, चमड़ा गहरा ऊदे रंग का ज़रा ज़रा लाली झलकती हुई, वदन पर उसके ऊन की तरह काले काले वाल थे। वहांवाले इन दांतो को सौदागरों के हाथ वेचते हैं, और उस जानवर

को चौड़ा होवेगा। विस्तार चार लाख चौरानवे हज़ार मील मुरब्बा है, और आबादी फ़ी मील मुरब्बा २८ आदमी की, अर्थात् एक करोड़ चालीस लाख आदमी उस मे वसते हैं। इस मुल्क के तीन बड़े हिस्से हैं, उत्तर असली अफ़ग़ानिस्तान, दक्षिण बलूचिस्तान, और पश्चिम हिरात अथवा खुरासान। यद्यपि यह तमाम मुल्क अफ़गानिस्तान अथवा काबुल की सल्तनत कहलाता है, परंतु इन दिनों में वहां ज़िले ज़िले के हाकिम जुदा जुदा बन बैठे है सिर्फ नाममात्र को काबुल के अमीर के आधीन हैं, तिस में हिरात वाला तो अब जुदाही बादशाह कहलाता है। इस मुल्क में पहाड़ और जंगल बहुत हैं, परन्तु जो धरती पानी से तरहै वह अत्यन्त उपजाऊ और उर्वरा है। हिमालय की श्रेणी जो सिन्धु के दहने कनारे इस मुल्क के उत्तर भाग में पड़ी है उसे वहांवाले हिन्दूकुश कहते हैं, कई चोटियां उसकी समुद्र से बीस बीस हज़ार फुट तक ऊंची हैं, पेड़ उस पर बहुत कम और छोटे छोटे। बलूचिस्तान में रेगिस्तान का बड़ा जंगल ३०० मील लम्बा और २०० मील चौड़ा होवेगा। नदियां हीरमन्द और फ़रह दोनों ज़रह की झील में जो सीस्तान के दर्मियान प्राय १०० मील लम्बी होवेगी गिरती हैं, हीरमन्द ६५० मील से अधिक लम्बी है। मेवे काबुल के मशहूर हैं, तिस में भी सेव नाशपाती खूबानी अनार अंजीर सर्दे और अंगूर तौ बहुत ही उमद होते हैं। अनाज में जौ गेहूं चावल इत्यादि और दरख्तों में ची केलो देवदार बान सर्व अखरोट जैतून भोज तूत बेदमजनू इत्या बहुत होते हैं। बलूचिस्तान और हिरात के पहाड़ों में हींग के पे जंगलों मे पैदा होते हैं, और वहां के आदमी उनकी तरकारी बना है। शहतूत इस मुल्क मे बहुत होता है, यहां तक कि कंगाल आदम

उसी के आटे की रोटियां पकाते हैं। सोना चांदी लसनिया माणक लाजवर्द सीसा लोहा सुर्मा गंधक हरिताल फिटकिरी नमक और शोरा खान से निकलता है। कुत्ते शिकारी इस मुल्क में अच्छे होते हैं, और बिल्ली भी लम्बे बालोंवाली वहां की बहुत खूबसूरत है। दुम्बे की दुम वहां सात सेर तक भारी होती है, और बिलकुल चरबी से भरी हुई। जंगल मे शेर भेड़िये लकड़बघे लोमड़ी खर्गोश रीछ हिरन बन्दर सूवर साही के सिवा भेड़ी बकरी और कुत्ते भी रहते हैं। ऊंट और बैल वहां बड़ा काम देते है। और घोड़े तो उधर के प्रसिद्धही हैं। चिड़ियों मे उक़ाब बाज बगला सारस तीतर कबूतर बतक मुर्गाबियां इत्यादि सब होती है। सांप और बिच्छू बड़े होते है, पर नदियों में मगर और घड़ियाल नहीं हैं, और मछलियां भी थोड़ीही क़िस्म की होती हैं। गर्मी सर्दी उस मुल्क में बलन्दी और पस्ती पर मुनहसर है, अर्थात् कोहिस्तान और ऊंची जगहों में तो बर्फ़ और निहायत सर्दी, और रेगिस्तान और नीची जगहो मे शिद्दत से गर्मी रहती है। बरसात वहां नहीं होती। सराब अर्थात् मृगतृष्णा इस मुल्क मे अंजान आदमी के लिये बड़े धोखा खाने की जगह है, दूरतक ज़मीन पर पानीही पानी नज़र पड़ता है, बरन जिस तरह सच्चे पानी में तटस्थ चीज़ों की आभा पड़ती है उसी तरह उस में भी आसपास के दरख्त जानवर इत्यादि झलकते हैं, और समूम ऐसी एक प्रकार की गर्म हवा गर्मी के दर्मियान वहां के रेगिस्तानो मे चलती है कि जो कदाचित आदमी के बदन में लगे वह एक दम मे झुलस कर बेदम हो जावे। आदमी इस मुल्क के सुन्नी मुसल्मान हैं, हिन्दू भी थोड़े बहुत वहां बसते हैं। अफ़गानी यद्यपि अक्सर दुबले होते है, परन्तु मज़बूत और मिहनती और गठीले और नाक उनकी ऊंची

और चिहरे लंबूतरे। ये लोग दिलमें लाग लालच डाह हठ साहस और स्वच्छन्दता बहुत रखते हैं। बलूची जन्म के लुटेरे हैं, अक्सर कम्बल के तंबू तानकर मैदानों में पड़े रहते हैं, और क़ाफ़िलों पर छापा मारते हैं। ज़ुबान अफ़ग़ानिस्तान में कई बोली जाती हैं, दस से कम नहीं हैं, परन्तु पशतो बहुत जारी है। बलूचिस्तान में तिजारत और सौदागरी बहुत कम है, निकास तो कुछ भी नहीं होता। अफ़गानिस्तान से ऊन रेशम हिराती क़ालीन तर व खुश्क मेवा हींग मजीठ तंबाकू घोड़ा खच्चर फिटकरी गंधक सीसा जसता इत्यादि चीज़ों का निकास होता है, और विलायती हथियार कपड़ा शीशे चीनी का बरतन पशमीना नील दवा चमड़ा कागज़ हाथीदांत जवाहिर सोना चाय इत्यादि वहां बाहर से आता है। साबिक़ जमाने में यह मुल्क भारतवर्षीय राजाओं के आधीन था, सिकन्दर के समय में यूनानी सूबेदारों के तहत रहा, फिर धीरे धीरे ईरान के बादशाहों के क़बज़े में आया और ईरान के साथ वह भी ख़लीफ़ाओं की सल्तनत में शामिल हुआ। सन् ८६२ में जब इस्माईलसामानी ख़लीफ़ा के हुक्म से निकलकर बुखारे का स्वाधीन बादशाह हुआ, तो उस ने इस मुल्क पर अपना क़बज़ा रखा, अलपतगीं इस मुल्क का पहला स्वाधीन बादशाह हुआ और उसके बेटे के मरने के बाद सबुकतगी ने ग़ज़नी को उस मुल्क की दारुस्सल्तनत मुकर्रर किया, उसका बेटा महमूद ऐसा बड़ा और नामी बादशाह हुआ कि न उस मुल्क में पहले कभी हुआ था और न उसके पीछे आज तक हुआ है। सन् ११८९ में यह सल्तनत गोरियों के घराने में आई, और गोरियों का घराना नाश होने पर थोड़े थोड़े दिनों तातार मुगल और ईरानियों के हाथ में रही, यहां तक कि ईरान के बादशाह नादिरशाह के मारे जाने पर

अहमदशाह दुर्रानी अफ़गानिस्तान का स्वाधीन बादशाह हो बैठा, और बरन लाहौर मुल्तान इत्यादि हिन्दुस्तान का भी कोना दबाया। सन् १८०९ मे दोस्तमहम्मद बारकजई ने उसके पोते शाहशुजा और महमूद को तख्त से खारिज करके ताज बादशाही का अपने सिर पर रखा, और रूसियों से मिलकर हिन्दुस्तान की हद पर फ़साद उठाना चाहा, तब नाचार शाहशुजा उस मुल्क के असली मालिक को जिसने सरकार से मदद चाही थी तख्त पर बिठाने और दोस्तमहम्मद ख़ां को वहां से निकालने के लिये सन् १८३९ में उस मुल्क के दरमियान अंगरेज़ी फ़ौज गई लेकिन १८४१ में मुल्कियोंने दोस्तमहम्मद के बेटे अकबरखां की बहकावट से बड़ा बलवा किया, सरअलकज़ंडरबर्निस साहिब और सरविलियम मिकनाटन साहिब दोनो मारे गये, और फ़ौज भी सरकारी, चार हज़ार जंगी सिपाही अनुमान बारह हज़ार आदमियो की बहीर के साथ, इस अकबरखां की दगाबाज़ी और फरेब और बर्फ की सख्ती से बिलकुल गारत हुई, केवल जनरल सेल साहिब उसके मकर के जाल में न आये, और जलालाबाद के क़िले पर क़ाबिज़ बने रहे। यद्यपि सन् १८४२ में सरकारी फ़ौज ने फिर उस मुल्क में जाकर क़ब्ज़ा किया, परन्तु जो कि शाहशुजाउल मुल्क भी उस बलवे में मारा गया था, और उसके बेटे सल्तनत की लियाक़त न रखते थे, और सरकार को वह मुल्क अपने दखलमें रखना मंज़ूर न था, निदान सरकारी फ़ौज उस मुल्क को छोडकर लौट आई, और दोस्तमहम्मद को भी जो क़ैद मे था छोड़ दिया, अब वह उस मुल्क की बादशाहत करता है। आईन क़ानून वहां मुसल्मानों की शरा अर्थात् उनके धर्मशास्त्र बमूजिब चलता है। आमदनी कुछ न्यूनाधिक सत्तावन लाख रुपया साल है, इस

में चौंतीस लाख तो काबुल कंधार अर्थात् असली अफगानिस्तान की, और बीस लाख नक़द और जिस मिलाकर हिरात की बलूचिस्तान कुल तीन लाख का मुल्क है। राजधानी काबुल ३४ अंश १० कला उत्तर अक्षांस और ६९ अंश १५ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से कुछ कम साढ़े छ हज़ार फ़ुट ऊंचा कामा नदी के दोनों तरफ सुंदर मेवों के बाग़ और फूलों के जंगल के दरमियान तीन मील के घेरे में अनुमान साठ हज़ार आदमियो की वस्ती है। नैर्ऋतकोन को एक छोटे से पहाड़ पर बालाहिसार का क़िला बना है, और दक्षिण तरफ अकबर के दादा बाबरबादशाह की क़बर है। काबुल से ४० मील उत्तर ४०० फ़ुट ऊंचे एक पहाड़ की अलंग में २५० गज़ ऊंचा और १०० गज़ चौड़ा बालू का ढेर पडा है, जब कभी उस पर आदमी चढ़ता है अथवा हवा जोर से लगती है, तो उस बालू के अंदर से नक़ारे और नफीरी की आवाज़ निकलती है (१) वहांवाले उसको रेगरवां कहते हैं, और उसके पास एक गुफा है उसे इमाम मिहदी का मकान बतलाते हैं। गज़नी अथवा ज़ाबुल काबुल से ७० मील दक्षिण समुद्र से पोने आठ हज़ार फ़ुट ऊंचा सवा मील के घेरे में खंदक़ और पक्की शहर पनाह के अंदर दस हज़ार आदमियों की वस्ती है, शहर के उत्तर भाग में क़िला है,

---

(१) कारण इसका जो एशियाटिक जर्नल में लिखा है, वह विना इलमी किताबों के पढ़े लोगो की समझ में न आवेगा, इसलिये तरजुमा न करके जों का तो अंगरेज़ी में लिख देते हैं॥

"Cause–re-duplication of impulse setting air in vibration in a course of echo,"

पुराना शहर तीन मील के तफावत पर ईशान कोन को बस्ता था, सन् ११५१ मे अलाउद्दीनगोरी ने उसे ग़ारत किया, जो लोग उस मे नामवर और दर्जेवाले थे उन्हें वहां क़तल न करके जीता गोर में जो हिरात से १२० मील अग्निकोन को है पकड़ लेगया, और फिर छुरी से ज़िवह करके उनके लहू से अपने क़िले और मकान का गारा सनवाया। अब इस पुरानी गज़नी में जिसे महमूद ने हिन्दुस्तान उजाड़कर बसाया था महमूदशाह के मक़बरे के सिवाय केवल दो मीनार सौ सौ फ़ुट ऊंचे बाक़ी रह गये हैं। चंदन के किवाड़ों की जोड़ी अठारह फ़ुट ऊंची, जो महमूदशाह सोमनाथ के फाटक से उखाड़ लेगया था, इसी मक़बरे मे लगी थी, अंगरेज़ी फ़ौज अपनी बांह का बल जताने के लिये काबुल से लौटते समय उसे फिर हिन्दुस्तान को ले आई, अब वह आगरे के क़िले में रखी है। क़ंधार अथवा गंधार काबुल से प्राय २०० मील नैर्ऋत कोन को समुद्र से साढ़े तीन हज़ार फ़ुट बलंद तीन मील के घेरे में खाई और कच्चा शहर पनाह के अन्दर अनुमान पचास हज़ार आदमियों की बस्ती है। चौक जिसे वहांवाले चारसू कहते है पचास गज़ चौड़ा गुम्बज से पटा है। हिरात काबुल से कुछ कम ५०० मील पश्चिम खाई और कच्ची शहर पनाह के अंदर ४५००० आदमियों की बस्ती है। निहायत ग़लीज़ गलियां तंग बाज़ार मिहराबी छत से पटा हुआ चौक गुम्बज के तले। काबुल से पश्चिम वायुकोन को झुकता अफ़ग़ानिस्तान की उत्तर हद पर तुरकिस्तान की राह में समुद्र से साढ़े आठ हज़ार फ़ुट ऊंचे हिंदूकुश के घाटे पर बामियान के पास बहुत से पुरानी इमारतों के निशान हैं, दो खड़ी मूर्ति कपड़े समेत एक १८० और दूसरी ११७ फ़ुट ऊंची पहाड़ में तराशी हैं। वहां

वाले उनको संगसाल और शाहममा कहते हैं। पास ही उस पहाड़ मे वड़ी वड़ी गुफ़ा भी काट कर वनाई हैं। सिवाय इसके उस मुल्क में जो सब देहगोप और पुराने सिक्के मिलते हैं, उन से यह वात प्रत्यक्ष प्रकट है, कि मुसल्मानों का दीन फैलने से पहले वहांवाले भी हिंदुस्तानियों की तरह वुध और वेद को मानते थे, अव भी उन पहाड़ों में एक क़ौम सियाहपोशों की वसती है, मुसल्मान उनको काफ़िर पुकारते हैं, और वे मुसल्मानों के मारने में वड़ा पुण्य समझते हैं, स्त्रियां उन की अति रूपवान होती हैं, परन्तु आचार और व्यवहार उनके कुछ अद्भुत से हैं, न इस समय के हिंदुओं से मिलते न मुसल्मानों से न वौधों से न क्रिस्तानों से। क़िलआत वलूचिस्तान के ख़ां के रहने की जगह कावुल से ४२५ मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता समुद्र से ६००० फ़ुट ऊंचा एक पहाड़ के कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अंदर वसा है। पश्चिम तरफ़ क़िला है। आवादी गिर्दनवाह की भी मिलाकर १२००० से अधिक नहीं है। क़िलआत से अनुमान २५० मील के लगभग दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता और जहां हिंगुल नदी का समुद्र से संगम हुआ है उससे २० मील ऊपर उसी नदी के कनारे दो पहाड़ों के वीच एक गुफा सी है, उसी के ऊपर हिंगलाज देवी का छोटा सा कच्चा मंदिर वना है, मूर्ति नहीं है, केवल पिंडी की पूजा होती है। यह स्थान हिन्दुओं का वहुत प्रसिद्ध तीर्थ है। हमको उसका शुद्ध नाम हिंगला मालूम होता है, क्योंकि हिंगलाज शब्द किसी ग्रंथ मे नहीं मिलता, और हिंगुला चूडामणि तंत्र में उस पीठ का नाम लिखा है जहा शक्तिमतवालों के निश्चय वमूजिव देवी का ब्रह्मरंध्र गिरा वतलाते है। हिन्दुस्तान के जो यात्री वहा जाते हैं उनको करांची वंदर से दस मंज़िल पड़ता है॥

यहां की आसपास के मुल्कों से बहुत मिलती हैं। खान से लसनिया सोना चांदी पारा तांबा और लोहा निकलता है। बदख़्शां का इलाक़ा इस मुल्क के अग्निकोन में हिन्दूकुश के उत्तर लाल पैदा होने के वास्ते बहुत मशहूर है। जाड़ों मे सर्दी शिद्दत से पड़ती है, पर तौभी आबहवा उस मुल्क की अच्छी है। तातारियों में चरवाहों की क़ौम के बहुत हैं, अक्सर आदमी केवल मवेशी पालकर अपना गुज़ारा करते हैं, और जहां चराई और पानी का आराम देखते है, उसी जगह अपने डेरे जा गाड़ते है, जो लोग शहर और गांव में बस्ते हैं वे बनज ब्यौपार और खेती बारी भी करते है। आदमी वहां के सुन्नी मुसल्मान है, और बादशाह वहा का अमीरुल्मोमीनन कहलाता है। मुनशी मोहनलाल, जो सरअलकजंडरबर्निस-साहिब के साथ बुखारा गया था, अपनी किताब में लिखता है कि वहां का बादशाह क़ुरान के हुक्म बमूजिब न तो ज़र जवाहिर पहनता है और न सोने चांदी के बरतन काम में लाता है, एक रोज़ जब वह बाग़ को गया तो मुनशीसाहिब ने उसकी सवारी देखी थी, अच्छे खासे मौलावियों की तरह सादी पोशाक पहने घोड़े पर चला जाता था, दस पंदरह सवार साथ थे और खच्चरों पर तांबे के देग देगचे रकाब लोटे इत्यादि क़लई किये खाने के बरतन लदे थे। ये लोग डाढ़ी रखते हैं, और आंख की पुतलियां और बाल उनके काले होते है। फ़ौज यहां के बादशाह की २५००० । आमदनी अड़तालीस लाख रुपये साल की। बुखारा उसकी दारुस्सलतनत सुग़्द नदी के दोनों किनारों पर बसा है, वह बड़ी तिजारत की जगह है, वहां चीन हिन्दुस्तान रूस फ़रंगिस्तान सब जगह की चीज़ें आती हैं, बस्ती उस में प्राय डेढ़ लाख आदमियों की अनुमान करते हैं।

आवादी फ़ी मील मुरब्बा १८ आदमी के हिसाब से एक करोड़ आदमी की अनुमान करते हैं। नीचे इस मुल्क के सूबों के साम्हने उनके बड़े शहरों का नाम लिखते है।

| नम्बर | नाम सूबो का | नाम शहर का |
|---|---|---|
| १ | आजरबायजान वायुकोन की तरफ रूम और रूस की हद पर | तबरेज़ |
| २ | गुर्दिस्तान आज़रबायजान के दक्षिण .... .... .... | कर्माशाह |
| ३ | लूरिस्तान गुर्दिस्तान के दक्षिण | खुर्रमाबाद |
| ४ | खुजिस्तान लूरिस्तान के दक्षिण समुद्र की खाडी तक .... | दिज़फुल |
| ५ | फर्स खुजिस्तान के पूर्व .... | शीराज़ |
| ६ | लारिस्तान फार्स के दक्षिण समुद्र की खाड़ी तक .... | लार |
| ७ | कर्मा फ़र्स के पूर्व .... .... | कर्मा |
| ८ | खुरासान कर्मा के उत्तर .... | मशहिद |
| ९ | इराक़ फार्स के उत्तर .... | इस्फहान }<br>तिहरान } |
| १० | माजन्दरां इराक के उत्तर . | सारी |
| ११ | गीलां माजन्दरान के वायु कोन | रशद |
| १२ | अस्तराबाद गीलां के उत्तर | अस्तराबाद |

हुर्मज़ और करक इत्यादि कई टापू जो ईरान की खाडी मे हैं इसी बादशाहत मे गिने जाते है। ईरान की खाड़ी से मोती बहुत उमदः निकलता है। रेगिस्तान और पहाडो की इस मुल्क मे इफ़रात है, और उन के बीच बीच में सुन्दर रम्य और मनोहर दूने है, कि जिनमे

फूल फल आवादी और हरियाली सब कुछ मौजूद हैं। पहाड़ दक्षिण तरफ़ के तो थोड़े बहुत सवृक्ष हैं, बाक़ी बिलकुल नंगे। वह बड़ा रेगिस्तान जो कर्मा से माजन्दरां तक चला गया है ४०० मील से कम लम्बा नहीं है। नदी बहुत बड़ी कोई नहीं। झील रूमिया की कास्पियनसी और पश्चिम सीमा के बीच ३०० मील के घेरे में निर्मल परन्तु खारे जल से भरी है, और उसके अन्दर से गंधक की गन्धि आती है। धरती जो पानी से सिंची है खूब उपजाऊ। पैदाइश वहां गल्ले और मेवों की अफगानिस्तान सी, पर मेवा ईरान का बिहतर सारे जहान से। केसर और सना भी अच्छी होती है। जानवर वहां वेही होते हैं जिनका वर्णन अभी अफ़गानिस्तान में कर आये। घोड़ा ईरान का यद्यपि अरब सा खूबसूरत और तेज़ नहीं है, परन्तु मजबूती और कद में उससे बढ़कर होता है. मीयर साहिब लिखते हैं कि एक सवार तिहरान से दस दिन में बूशहर को जो सात सौ मील से अधिक है खत लेकर पहुंच गया था। जंगलों में गोरखर बहुतायत से है। खान से ईरान में चांदी सीसा लोहा तांबा संगमर्मर नफ्त गन्धक और फीरोजा निकलता है। मोमयाई वहां एक पहाड़ की गुफा मे पानी की तरह टपकती है, बरसवें दिन ज़िले का हाकिम उस गुफा को खोलता है, जो कुछ मोमयाई इकट्ठी हुई रहती है बादशाह के पास भेज देता है, इस मे घाव बहुतही जल्द चंगा हो जाता है। उत्तर भाग मे सर्दी और दक्षिण भाग मे गर्मी रहती है, आस्मान सदा साफ और निर्मल, हवा मे खुशकी मेह केवल गीलां और माज़न्दरां के सूबों मे जो कास्पियनसी के कनारे हैं बरसता है, बाकी और जगहों मे बहुत कम, जो हो आवहवा उस मुल्क की बहुत ही उमदा है। आदमी वहां के सुन्दर हँसमुख मि-

कि जब चार्डिन साहिबने उस शहर को २४ मील के घेरे में बसता देखा था। उस वक्त उस मे दश लाख आदमी ७४५ मस्जिद ४८ मदरसे १८०० कार्वांसरा और २७३ हम्माम थे। शीराज़ तिहरान से ५०० मील दक्षिण सुन्दर दरख़्तों के झुण्ड मे दूर से मस्जिदों के मीनार और गुंबज चमकते हुए चालीस हज़ार आदमियों की बस्ती है, मकान छोटे गली तंग लेकिन बाहर बाग बहुत सुन्दर खुशबूदार फूलों से भरे फव्वारे छूटते हुए, हाफ़िज़ और सादी इसी जगह गडे हैं। शीराज से तीस मील वायुकोन को ईरान की अति प्राचीन पहली राजधानी इस्तखर, जिसे अंगरेज पार्सिपोलिस कहते हैं, बसता था, सिकन्दर ने उसे गारत किया, एक खण्डहर, जिसे वहां वाले जमशेद का तख़्त कहते हैं, अब तक भी मौजूद है, उसके संगमर्मर की सफाई जो आइने की तरह चमकते हैं, उसके खम्भों की उंचाई जो इस दम भी कुछ न्यूनाधिक साठ खडे है, उसकी सूरत मूरत और नक्काशियो की बारीकी जो जीनो के दर्मियान बहुत खूबीके साथ बनाई है, देखकर बड़ा अचरज आता है, उस खंडहर पर बहुतसे प्राचीन पारसी अक्षर तीर के फल की सूरत पर खुदे है, अब उनको इस काल मे कोई भी न पढ़ सकता था, मेजर रालिंसन साहिब ने दस बरस की मिहनत में उस लिपि का मतलब निकाला, और उन अक्षरों की वर्णमाला भी बना ली, अब उसकी सहाय से उस देश में जहां जहां पुराने मकानो पर उस साथ के अक्षर लिखे थे सब पढे गये। इस पर्सिपोलिस के खंडहर पर बड़े बादशाह कैखुसरो जिसे प्राय चौबीस सौ बरस गुज़रते हैं और दारा का नाम लिखा है, और लिखा है कि हिन्दुस्तान से मिसर और यूनान तक सारे देश उनके राज मे थे। यह प्राचीन पारसी भाषा जो तीर के फल की सदृश

अक्षरों में लिखी है संस्कृत से विशेष करके वेद की वाणी से इतना मिलती है, और पोशाक हथियार सवारी और आकृति उन सूरतों की जो वहां पत्थरों पर खुदी हुई हैं हिन्दुस्तान के कई प्राचीन मंदिरों की नक़्क़ाशी से ऐसी बराबर होती है, कि उस समय हिन्दुस्तान और ईरान के चाल चलन मत जिन लोगों ने ईरान और हिन्दुस्तान के प्राचीन इतिहास अच्छी तरह देखे हैं उनके मन को दृढ़ निश्चय हो जाता है, कि व्यौहार इत्यादि में कुछ बड़ा बीच न था, हिन्दुओं का मूल मंत्र गायत्री सूर्य की वंदना है, ईरानी भी पहले मित्र अर्थात् सूर्य को मानते थे। हिन्दुस्तानियों के क़ौल बमूजिब अंगिराऋषि ने अग्नि प्रकट की, यज्ञ होम इत्यादि की बुनियाद बांधी, ईरानियों के कहने अनुसार जर्दुश्तने अग्निहोत्रियों का मुख चलाया। हिन्दुस्तान मे जैनी अथवा बौधोंने हिंसा त्यागकी, ईरानके दर्मियान सेवल साल में एकबार बादशाह अपनी सेना लेकर सुष्टु अर्थात् तृणचर पशुओं की रक्षा के निमित्त दुष्ट अर्थात् मांसाहारी जीवों के नाश करने को चढ़ता था वही मानो शिकार की असल हुई; बाक़ी वे भी हिंसा को अत्यन्त बुरा समझते थे। समय पाकर देशों के चाल चलन मत व्यवहार इत्यादि से भेद आ गया॥

---

## अरब

यह प्रायद्वीप एशिया के नैर्ऋतकोन में १२ अंश ३० कला से ३४ अंश ३० कला उत्तर अक्षांश तक और ३२ अंश ३० कला से ६० कला पूर्व देशांतर तक चला गया है। सीमा उसकी उत्तर रूम की सल्तनत, पूर्व ईरान की खाड़ी, पश्चिम रेडसी नाम खाड़ी जिसे बहर अहमर भी कहते है और स्वीज का डमरूमध्य, और

दक्षिण अरब का समुद्र है। उत्तर से दक्षिण को १७०० मील लंबा और पूर्व से पश्चिम को १२०० मील चौड़ा है। विस्तार दस लाख मील मुरब्बा। बसती फी मील मुरब्बा १२ आदमी के हिसाब से एक करोड़ बीस लाख की। हिजाज़ का इलाक़ा तो जिस में मक्का और मदीना है रूम के बादशाह के ताबे है, और बाकी सारा मुल्क जुदा जुदा हाहिमों के तहत में बटा हुआ है। वे हामिम शेख शरीफ़ खलीफ़ा अमीर और इमाम कहलाते है, बादशाह उन में कोई नहीं। इस मुल्क को मरुस्थल कहना चाहिये, क्योंकि बिलकुल रेगिस्तान है, केवल कहीं कहीं उर्वरा धरती टापू की तरह दिखलाई देती है। निदान बस्ती थोड़ी और उजाड़, अधिक है। पहाड़ समुद्र के कनारे कनारे यद्यपि बहुत ऊंचे नहीं हैं पर फिर भी पहाड़ों मे हवा कुछ मोतदल रहती है और बाक़ी सब जगह अर्थात् रेगिस्तान के पटपर मैदानों में निहायत गर्म है, वही समूम जिसका अभी अफगानिस्तान में बयान हुआ अरब मे बड़े ज़ोर शोर के साथ बहती है। नदी और झील वहां क़सम खाने को भी नहीं पहाड़ के बरसाती नालों को हम शुमार में नहीं लाते। रेडली के उत्तर कनारे से पासही तूर का पहाड़ है, जहां मूसा पैगम्बर को उसके मतावलंबियो के निश्चय अनुसार आकाशवाणी हुई थी। जो सब जिले समुद्र के कनारे बसे हैं उन में क़हवा बबूल का गोंद धूप मुसब्बर संबुल सना छुहारा कालीमिर्च इत्यादि बहुत प्रकार की चीज़ें पैदा होती हैं। खेतियां भी वहां लोग गेहूं ज्वार बाजरा ऊख तंबाकू कपास इत्यादि की करते है, चावल नहीं होता। घोड़ा अरब का तमाम दुनियां में मशहूर है, वहां से बिहतर यह जानवर कहीं नहीं होता, दो दो हजार बरस तक की वंशावली वहावाले अपने घोड़ों की याद रखते हैं, और ऊंट और

गधा भी वहां बहुत अच्छा होता है, गधे की सवारी मे वहां ऐब नही समझते, वरन बड़े चाव से चढ़ते हैं, और ऊंट तो मानों ईश्वर ने उसी देश के वास्ते रचा, जो यह जानवर न होता तो अरबवालों को उस देश में रहना कठिन पड़ जाता, इसका पेट अंदर से ऐसा खानेदार बना है, कि वह सात दिन का पानी इकट्ठा पी सकता है, इसके तलुए इस्पंज की तरह ऐसे नर्म और फूले फूले हैं कि वह रेत में नहीं गड़ते, आंख नाक कान इस जानवर के सब रेगिस्तान के गौं के बने हैं सच है ईश्वर ने जहां जिस काम के लिये जिसे पैदा किया वैसा ही उसे सब सामान दिया। शुतुरमुर्ग एक चिड़िया वहां आठ फुट ऊंची होती है, डेढ़ डेढ़ सेर के अंडे देती है, उड़ नही सकती, पर भागती बहुत है, आदमी का बोझ बखूबी संभाल लेती है, और कपड़ा लकड़ी लोहे तक भी खा जाती है टिड्डियों का वह घर है, वहांवाले उनको भून कर बड़े मज़े से खाते है। खान से सीसा लोहा और चांदी निकलती है पर बहुत कम। बहरैन का टापू ईरान की खाड़ी मे अरब के साथ गिना जाता है, उस टापू के आदमी समुद्र से मोती निकालते हैं, और सकूतरा के टापू में जो अरब के दक्षिण कनारे से २४० मील दूर और अफरीका के पूर्व तट से अति निकट है मूंगा और अम्बर (१) मिलता है आदमी वहा के मियानः क़द गंदुमरंग जवांमर्द अच्छे घुड़चढ़े हथियार चलाने में उस्ताद मुसाफ़िरपर्वर मिहमानवाज़ दियानतदार और भलेमानस होते हैं, चिहरे पर उनके बोझ भार के साथ एक उदासी सी छाई रहती है, परन्तु इन मे बहुत आदमी

---

(१) अम्बर एक जलजतु का गूह है, समुद्र के जल पर तिरता अथवा कनारे पर पड़ा हुआ मिलता है॥

खानःबदोश अर्थात् पर्यटक हैं, और तातारियों की तरह डेरों मे रहा करते हैं, और मवेशी पालकर और सौदागरों के काफिले लूटकर अपना गुजारा करते हैं। टोपियां वहां के आदमी रूई अथवा ऊन की एक पर दूसरी पंदरह पंदरह तक रंग बरंग की पहनते हैं, ऊपर वाली सब मे बढ़िया रहती है. गरीब से गरीब भी दो जरूर पहनेगा, और फिर उन पर दुपट्टा बाधते है। इस मुल्क के आदमी ऊंट का गोश्त और ऊंटनी का दूध बहुत खाते पीते है। मुहम्मद से पहले अरबवाले भी हिन्दुस्तानियों की तरह मूर्तों की पूजा करते थे और नर बलि देते थे, मुहम्मद ने मूर्तों को तोडकर उन्हे निराकार निरंजन अरूपी सर्वशक्तिमान जगदीश्वर को पूजने का उपदेश किया। इसी मुहम्मद की गद्दी पर जो बादशाह बैठे वह खलीफा कहलाए। अरबी जुबान संस्कृत की तरह कठिन है, और उस भाषा में भी बहुत सी पुस्तकें विद्या की मौजूद है। कहवा सना गोंद धूप मुसव्वर संबुल इत्यादि वहां से बाहर जाता है, और लोहा फौलाद सीसा रांगा तलवार छुरी शीशे चीनी के बरतन इत्यादि बाहर से वहा आते हैं। मक्का २१ अंश २८ कला उत्तर अक्षास और ४० अंश १५ कला पूर्व देशान्तर में एक छोटी सी रेतल और पथरीलीदून में बसा है; न उस शहर में कोई बाग है न किसी तरफ दरख्त और सबजा नजर पड़ता है, बरन पानी भी पीने लाइक दस कोस से लाना पड़ता है, शहर क़रीने से बसा है; और बाजार भी चौड़ा और पुर रौनक है, बस्ती उसमें प्राय ३०००० आदमियों की होवेगी। काबा अर्थात् मुसल्मानों का मन्दिर मक्के के दर्मियान चौखूंटी चारदिवारी के अंदर जिसके कोनों पर मीनार बने हैं एक छोटा सा चौखूंटा मकान है, छत्तीस फुट ऊंचा और तेतीस फुट चौडा काले कपड़े से ढका हुआ,

कुस्तुंतुनीया उसी खंड में बसी है। फ़रंगिस्तान वाले इस मुल्क को एशियाटिक टर्की अर्थात् एशियाई तुर्किस्तान पुकारते हैं, परन्तु इसमें शाम की सारी विलायत और अरब और ईरान के भी हिस्से हैं। गये तीन हज़ार बरस के अर्से में जैसा उलट फेर बादशाहतों का ज़मीन के इस टुकड़े पर रहा है, कदापि दूसरी जगह सुनने मे नही आया, कभी यूनानियों ने लिया, कभी रूमियों ने दबाया, कभी ईरानियों के अमल में आया, कभी अरबों के दखल मे गया, कभी तातारियोंने उसे लूटा, कभी फरंगियोंने उस पर चढ़ाव किया, और तमाशा यह कि जब जिसने इस मुल्क को फ़तह किया नयेनये नामो से नये नये सूबे और नये नये ज़िलो में बाटा। ईसाइयों की प्राचीन पुस्तकों में लिखा है कि ५८५८ बरस गुज़रते है ईश्वर ने पहला मनुष्य इसी मुल्क में पैदा किया, और तूफान के बाद नूह का जहाज इसी मुल्क मे लगा, इसी मुल्क से मनुष्य सारी दुनियां में फैले, और इसी मुल्क में पहले प्रतापी राजा हुये। धरती खोदने से अद्यावधि मूर्ति इत्यादि ऐसी ऐसी वस्तु अति प्राक्तन निकलती हैं कि जिन से उस देश का किसी समय में महापराक्रमी राजाओं से शासित होना बखूबी साबित है। ईसा मसीह इसी देश में पैदा हुये थे, और इसी कारण वहां उस मतावलंबियों के बडे बड़े तीर्थ स्थान है। निदान यह एशियाई रूम ३० से ४२ अंश उत्तर अक्षांश और २६ से ४८ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। सीमा उसकी पूर्व ईरान, दक्षिण अरब, पश्चिम मेडिटरेनियन, और उत्तर डार्डेनल्स मार्मोरा बासफोरस और ब्लैकसी नामक समुद्र की खाडियां। पूर्व से पश्चिम को हज़ार मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को नौ सौ मील चौडा चार लाख नब्बे हज़ार मील मुरब्बा के विस्तार में है। आदमी उस में अनुमान

एक करोड वीस लाख होवेंगे, और इस हिसाब से आबादी उसकी पच्चीस आदमियों की भी फी मील मुरब्बा नही पडती। शाम का मुल्क फ़ुरात नदी और मेडिटरेनियन के वीच मे पडा है, उसी के दक्षिण भाग मे फिलिस्तीन है, जहा से ईसाई मत की बुनियाद बँधी. और जिसे ईसाई लोग पवित्र-भूमि कहते हैं। फ़ुरातके पूर्व दियारबक्र है उसका दक्षिण भाग अरबी इराक़ और पूर्व भाग गुर्दिस्तान अथवा कुर्दिस्तान कहलाता है, और उसके उत्तर तरफ इर्म का इलाक़ा है, जिसे अगरेज़ आर्मिनिया कहते हैं। एशियाई रूम में पहाड वहुत है और मैदान कम। शाम के अग्निकोन मे वडा भारी उजाड रेगिस्तान है। पहाडों में टारस और अरारात मशहूर है, टारस की श्रेणी मेडिटरेनियन के तट से निकट ही निकट खल दूनिया अंतरीप से फुरात नदी तक चली गई है, और अरारात जिसे जूदी का पहाड भी कहते हैं इर्म में रूस और ईरान की सर्हद पर १७००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा है, ईसाइयों के मत वमूजिव तूफान के वाद नूह का जहाज़ इसी अरारात पर आकर लगा था। नदियो में दजला और फ़ुरात जो वसरे से कुछ दूर ऊपर मिलकर शातुलअरव के नाम से ईरान की खाडी में गिरती हैं नामी है। फुरात १५०० मील लंबी है और दजला ८०० मील। वालवक से अनुमान ४० मील पश्चिम मेडिटरेनियन के तट से निकट जवैल के नीचे इवरिम नदी वहती है, उसका पुराना नाम अडोनिस है, और उसका पानी गेरू इत्यादि के मिलने से जो अवश्य उसके कनारे पर कहीं होगा साल मे एक वार लाल हो जाता है, वहा के नादान आदमी खयाल करते है कि किसी जमाने में अडोनिस नाम एक आदमी को शिकार खेलते हुए सूवर ने मार डाला था उसी का लहू हर साल उस नदी में आता है। झील डेडसी

की जिसे वहरेलूत भी कहते हैं फिलिस्तीन के दक्षिण भाग में प्राय ५० मील लंबी होवेगी, पानी उसका निरा खारा, और आस पास के पहाड़ बिलकुल उजाड़ दरख़्त उन में देखने को भी नहीं, क्या ईश्वर की महिमा है कि इस झील के नजदीक न तो कोई दरख़्त जमता है. और न उसमें कोई जीव जन्तु जीता है। आवहवा अच्छी और मोतदल पर सब जगह एकसी नहीं हैं, ऊंचे पहाड़ों पर यहां तक सर्दी पड़ती हैं कि वे सदा वर्फ से ढके रहते हैं, और रेगिस्तानों के दर्मियान सम्म चला करती हैं। आदमी वहां के काहिल और गलीज हैं, इस कारण वबा अर्थात् मरी अकसर फैल जाती है। भूंचाल उस मुल्क में बहुत आता है। धरती अकसर जगह उपजाऊ है, पर वहां वाले खेती में मिहनत नहीं करते, जौ गेहूं मक्की रूई तमाकू क़हवा अफ़यून मस्तकी जिसे लोग रूमीमस्तगी कहते हैं जैतून अंगूर सालिव मिसरी इत्यादि बहुत प्रकार के अनाज मेवे और दवाइयां पैदा होतीहैं। बकरियों से वहां एक क़िस्म का पशमीना हासिल होता है, और रेशम भी वहां की पैदाइशों में गिना जाता है। गधे घोड़े खच्चर, ऊंट लकड़बघे रीछ भेड़िये गीदड़ इत्यादि घरेलू और जंगली जानवर इफरात से हैं, पर टिड्डियों का दल वहां अरब के रेगिस्तानों से ऐसा बादलसा उमड़ता है कि बहुधा खेती बारियां बिलकुल नाश हो जाती हैं, यदि अग्निकोन की हवा जो वहां अधिक बहती है उन्हें समुद्र में ले जाकर न डुबाया करे तो वे शायद सारे पृथ्वी के तृण वीरुध को भक्षण कर जावें। खान तांबे की उस मुल्कमें एक बहुत बड़ी है। रोड्स और सिपरस के टापू मेडिटरेनियनसीमें इसी बादशाहत के ताबे हैं। यह वही रोड्स है जहां के बंदर पर किसी जमाने में एक मूर्ति पीतल की सत्तर हाथ ऊंची खड़ी थी और उसकी टांगों तले से जहाज पाल उड़ाए निकल जाते थे,

सिपरस को कुपरस भी कहते हैं। आदमी इस मुल्क के तुर्कमान यूनानी अर्मनी गुर्द और अरब मुसल्मान और अकसर ईसाई भी हैं, जुबानें तुर्की यूनानी शामी अर्मनी अरबी ईरानी सब बोली जाती है। चीज़ों मे वहां रेशमी कपड़े क़ालीन और चमड़े बहुत अच्छे तयार होते हैं, और दिसावरों को जाते हैं। बगदाद हलब दमिश्क़ अर्ज़रूम समिर्ना बसरा मूसिल और बैतुलमुक़द्दस इस मुल्क मे नामी शहर हैं। बग़दाद ३३ अंश २० कला उत्तर अक्षांश और ४४ अंश २४ कला पूर्व देशांतर में दजला नदी के दोनो कनारो पर शहरपनाह के अन्दर बड़ा मशहूर शहर है, सन् ७६२ में मुहम्मद के चचा अब्बास के पड़पोते खलीफा मंसूर ने उसे अपनी दारुस्सलतनत ठहराया था, और फिर उसके जानशीनो के समय मे जिनके नाम का खुत्वा (१) गंगा से लेकर नील (२) नदी वरन अटलांटिक समुद्र पर्य्यंत पढ़ा जाता था, उसने ऐसी रौनक पाई कि जिसका वर्णन अलफ़लैला की महाअद्भुत कहानियो मे किया है। अब उसमें अस्सी हज़ार आदमियों से अधिक नहीं बस्ते। सन् १२५७ में जब चंगेज़खां के पोते हलाकू ने वहा के ख़लीफा मुस्तासिमबिल्लाह को मारकर शहर लूटा आठ लाख आदमी उसके अन्दर मारे गये थे। सन् १४०१ मे उसे अमीर तैमूर ने लूटा और जलाया, और सन् १६३७ में रूमके बादशाह चौथे मुराद ने, जिसे अंगरेज अमूरात कहते हैं, तीन लाख फ़ौज से चढ़ाव करके उसे अपने क़बज़े मे कर लिया। हलब बगदाद से ४७५ मील पश्चिम वायुकोण को झुकता शहरपनाह के अन्दर आठ

(१) ख़ुतबा मस्जिद में बादशाह के नाम से पढा जाता है।
(२) अफरीक़ा मे मिसर के नीचे बहती है॥

मील के घेरे में अढ़ाई लाख आदमियों की बस्ती बड़ी तिजारत की जगह है, उसकी मसजिदों के सफेद सफेद मीनार और गुम्बज़ बड़े बड़े लंबे सर्व के दरख्तों में बहुत भले और सुहावने मालूम होते हैं, बाज़ार ऊपर से बिलकुल पटे हुए हैं. इसलिये धूप और मेह का बड़ा बचाव है, रौशनी के लिये दुतरफा खिड़कियां खोल दी हैं. किसी समय में वह शाम की दारुस्सलतनत था। दमिश्क़ बगदाद से ४७५ मील पश्चिम पहाड़ों से घिरा हुआ एक बड़े मैदान में सुन्दर बागों के दर्मियान पारफार नदी के दोनों कनारों पर दो लाख आदमियों की बस्ती है। वहां से पचास मील उत्तर वायुकोन को झुकता बालबक में बाल देवता अर्थात् सूर्य का एक मन्दिर अति अद्भुत प्राचीन खंडहर पड़ा है, उसके संगमर्मर के खंभों की बलन्दी देखकर अक़ल भी हैरान रह जाती है, एक पत्थर उसके खंभे का जो अब तक नीचे पड़ा है ७० फुट लम्बा १४ फुट चौड़ा और चौदही फुट मोटा नापा गया था, फिर कल मालूम नहीं किस बूते और बल से इन पत्थरों को उठाते थे। अर्ज़रूम बगदाद से [illegible] मील वायुकोन उत्तर को झुकता रूम के इलाक़े में, और स्मिर्ना पश्चिम सीमा पर समुद्र के कनारे है, इन दोनों शहरों में भी लाख लाख आदमी से कम नहीं बसते। बसरा जहां गुलाब का इतर बहुत उमदा बनता है बगदाद से २८० मील अग्निकोन सात मील के घेरे में शातुलअरब के दहने कनारे शहरपनाह के अन्दर बसा है, और बड़े व्योपार की जगह है, आदमी उसमें अनुमान साठ हज़ार होंगे। मोसिल बगदाद से [illegible] मील वायुकोन दजला के दहने कनारे पचीस हज़ार आदमियों की बस्ती है। उसी के सामने जहां अब नूनिया गांव बसा है नैनवा के पुराने शहर का निशान मिलता है, जिसका घेरा किसी समय साठ

मील का वतलाते हैं। वैतुलमुकद्दस, जिसे अंगरेज़ जरूज़लम् अथवा उर्शलीम कहते हैं, फ़िलिस्तीन अर्थात् किनआ के इलाक़े में डेडसी झील और मेडिटरेयिन की खाडी के वीच मे पहाड़ो से घिरा हुआ एक ऊंचे से मैदान मे तीस हजार आदमियो की वस्ती है, वह सुलैमान के वाप दाऊद का पाय तख्त था, और उसी जगह सुलैमान ने सर्व शक्तिमान जगदीश्वर का मंदिर रचा था, उसी जगह ईसा मसीह सलीव पर खींचे गये, और उसी जगह ईसा मसीह की कवर है। वहां से छ मील दक्षिण वैतुललहम् ईसा मसीह का जन्म स्थान है। पालमीरा अथवा तदमोर, जो सुलैमान ने वगदाद से ३५० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता शाम के रेगिस्तान मे जहां पानी भी कठिन से मिलता है और पेडो का तो क्या जिकर है दो हजार आठ सौ अठावन वरस गुजरे वसाया था, अव वहां उस नामी शहर के वदल कोसो तक टूटे फूटे मकानो के पत्थर पडे हैं, और सुन्दर सचिक्कण सगमर्मर के खंभो के ताड के दरख्तो की तरह मानों जंगल के जंगल खडे है, इन खंडहरो मे सुलैमान का वनाया सूर्य का एक मंदिर अव भी देखने योग्य है। हिल्ला में वगदाद से ५० मील दक्षिण फुरात के दोनो कनारे वाविल के पुराने शहर का निशान देते है, और मुसल्मान और फरंगी दोनो कहते है कि दुनियां मे सव से पहले वही वसा था, और सव से पहले वही निमरूद वादशाह की राजधानी हुआ, जैसे हिन्दू अयोध्या को वतलाते है। जिन दिनो यह शहर अपनी औज पर था ६० मील के घेरे मे वस्ता था, ८७ फ़ुट मोटी और ३५० फ़ुट ऊंची उसकी शहरपनाह थी, गिर्द खंदक, दरवाज़े पीतल के लगे हुए, महल वादशाही साढे सात मील के घेरे मे तीन दीवारो के अन्दर अच्छे खासे वने हुए, वाग महल के गिरद

ख



ग

नक्शा एशिया की विलायतों के विस्तार आबादी और आमदनी [illegible] के [illegible]

| संख्या | नाम विलायत का | विस्तार मील मुरब्बा | लम्बान मील | चौड़ान मील | आबादी फी मील मुरब्बा | कुल आबादी | आमदनी साल में | राजधानी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | अफगानिस्तान | ३२८४०० | १०५० | ५०० | ५७ | [illegible] | [illegible] | काबुल |
| २ | अरब .... | १०००००० | १५०० | १२०० | १२ | [illegible] | .... | मक्का |
| ३ | ईरान .... | ५६०००० | ८०० | ७०० | १८ | [illegible] | ३०००००० | तिहरान |
| ४ | एशियाई रूम | ४६०००० | १००० | ६०० | [illegible] | [illegible] | .... | .... |
| ५ | एशियाई रूस | ३०३०००० | ५००० | १५०० | .... | [illegible] | .... | .... |
| ६ | कोचीन .... | १५०००० | .... | .... | ८८ | १३२००००० | .... | हूए |
| ७ | चीन .... | ५०००००० | ४२०० | २००० | ६० | ३०००००००० | [illegible] | पेकिन |
| ८ | जपान .... | ६०००० | ... | .... | ... | .... | २८००००००० | जेडो |
| ९ | तूरान .... | १०००००० | १५०० | १००० | ५ | ५०००००० | ४८००००० | बुखारा |
| १० | बर्मा .... | १८४००० | १००० | ६०० | ७४ | १४०००००० | .... | आवा |
| ११ | मलाका .... | .... | ८०० | १२० | .... | .... | .... | मलाका |
| १२ | स्याम .... | १५०००० | ३५० | ३६० | १९ | २८४५००० | .... | बैंकाक |
| १३ | हिन्दुस्तान.... | १२००००० | १८०० | १६०० | ११६ | १४०००००००० | ३०००००००० | कलकत्ता |